वील्होजी की वाणी

(मूल एवं टीका)

सम्पादक तथा टीकाकार

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई

एम.ए., जे.डी., एल.एल.बी., पी.एच.डी.

प्रकाशक

जाम्भाणी साहित्य अकादमी

बीकानेर

श्री गुरु जम्भेश्वराय नमः

वील्होजी की वाणी

(मूल एवं टीका)

प्रकाशक : जाम्भाणी साहित्य अकादमी
सैक्टर-1, ई-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी
बीकानेर, (राजस्थान)
Email - jsakademi@gmail.com

संस्करण : तृतीय - 2016

मूल्य : 300/-

ISBN : *978-93-83415-26-7*

© : कृष्णलाल बिश्नोई

-: मुद्रक :-
तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, मोहता चौक, बीकानेर
मो.-9314962474/75

Vilhoji Ki Vani By
Dr. Krishanlal Bishnoi
Pages : 304

अनुक्रमणिका

	प्रस्तावना	23
	सम्पादकीय	26
1.	कथा ग्यानचरी	43
2.	साखियां	64
3.	कथा धड़ाबन्ध चौहजुगी	87
4.	मंझ अखरा दुहा-अवतार का	96
5.	कथा अवतारपात	101
6.	कथा गुगळियै की	125
7.	कथा पूल्हैजी की	141
8.	कथा सच अखरी विगतावळी	146
9.	विसन छतीसी	156
10.	कथा दूणपुर की	172
11.	परमोध रूपी छपइया	184
12.	हरजस	204
13.	कथा जैसलमेर की	218
14.	कथा झोरड़ा की	245
15.	छूटक साखी (दुहा)	252
16.	कवत परसंग	255
17.	बत्तीस-आखड़ी	257
18.	वील्होजी का आप्तोपदेश	264
	परिशिष्ट	
(क)	वील्होजी के सम्बन्ध में अन्य बिश्नोई कवियों के विचार।	266
(ख)	वील्होजी की शिष्य-परम्परा	276
(ग)	सन्दर्भ-सूची	278
(घ)	प्रथम समर्पण : केसोजी देहडू (लेखक के पूर्वज)	297
(ड़)	वील्होजी की आरती	300
(च)	वील्होजी सम्बन्धित हस्तलिखित ग्रंथों की फोटो प्रतियां	301

वील्होजी की स्तुति (साहबराम जी राहड़)

दोहा

परमेश्वर अरु परम गुरु, दोऊं एक समान।
साहबराम गुरुदेव ते, पावत केवल ज्ञान।1।
वील्होजी के चरण को, बंदत साहबराम।
ताकी महिमा कहत ही, पावत हरि को ध्यान।2।

श्री वील्हाष्टक (छंद भुजंग प्रयात)

प्रकाश स्वरूपं हृदय ब्रह्म ज्ञानं, सदाचार यही निराकार ध्यानं।
निरीहार निजानंद तजै भ्रम कूपं, नमो वील्ह देवं शिव-स्वरूपं।3।
अवेद अभेद अनंत अपारं, अगाधं अवाधं निराधार सारं।
भजे नाम वील्है शुभ के कोट भूपं, नमो वील्ह देव शिव-स्वरूपं।4।
हते काम क्रोधं, तजे काळ जाळ, भगे लोभ मोह गये सर्व पालं।
नहीं द्वंद कोऊ जीते सीत धूपं, नमो वील्ह देव शिव-स्वरूपं।5।
गुणातीत देहादि इंद्री जिहालूं, किये सर्व संहार वैरी तहांलू।
महा सूरवीर अनुपा जु ऊप, नमो वील्ह देवं शिव-स्वरूप।6।
मनो काय वाचं तजै है विकारं, उदय भान होते गए अंधकारं।
अजोनी अनायं स्वरूपं अरूपं, नमो वील्ह देवं शिव-स्वरूपं।7।
कृपावंत भारी दयावंत ऐसै, प्रमाणीक आगै भए संत जैसे।
मिलै मोक्ष भोगें लिखे शास्त्र सूपं, नमो वील्ह देवं शिव-स्वरूपं।8।
किये आप आपै बड़े तत्व ग्याता, बड़ी बुध पाई नहीं पक्षपाता।
बड़ी मूर्ति जाकी जीते जग जूपं, नमो वील्ह देवं शिव-स्वरूपं।9।
पढ़ै यहि नित्यं भुजंगप्रयातं, लहै ज्ञान सोई मिलै ब्रह्म तातं।
भोग सुरग मोक्ष आदि अमृत अनूपं, नमो वील्ह देवं शिव-स्वरूपं।10।

दोहा

परमेश्वर तोमै बसै, तू परमेश्वर मांहि।
साहबराम दोऊं परस्पर, भिन्न भाव कछु नांहि।11।
परमेश्वर व्यापक सकल, तुम निसतारे जीव।
साहबराम तव चरण कूं, मानत प्रीतम पीव।12।

मौलिक ग्रंथ-वील्होजी की वाणी

गुरु जाम्भेश्वर जी के परम शिष्य संत शिरोमणि वील्होजी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व को उजागर करने वाली उनकी समग्र वाणी का संग्रह एवं हिन्दी टीका इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ में अवतरित है। जन समुदाय को ईश्वरीय सता से जोड़ने वाली इस वाणी सरिता में स्वयं कवि सनातक होकर दीन-दु:खी, ज्ञानी-अज्ञानी सभी कोटि के जन-जन को सनातक बनाते हुए दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

वील्होजी एक कुशल उपदेशक एवं प्रशासक बनकर जाम्भाणी बिश्नोई पंथ में अपनी लौकिक एवं आध्यात्मिक शक्ति शस्त्र एवं शास्त्र से नियमों से विलग हुए जीवों को नियम की और चलाने के लिये प्रयत्नशील हुए थे। ऐसी मान्यता है कि वील्होजी पूर्व जन्म में भी एक कुशल प्रशासक थे। वे इस जन्म में भी आध्यात्मिक ज्ञान वेत्ता, नियमों के संवाहक तथा प्रेरणा स्त्रोत बनकर विशेष रूप से गुरु जाम्भोजी की बताई हुई मर्यादा के संवाहक बनकर जन समुदाय में उभरे थे। वील्होजी ने स्वयं लेखन कार्य प्रारम्भ किया और अपने शिष्यों सुरजनजी, केशोजी को भी आशीर्वाद दिया जिससे ये दोनों ही अपने पूज्य गुरु की तरह महान कवि, लेखक एवं समाज उद्धारक हुए। इन तीनों की त्रिवेणी ही इस समय जाम्भाणी साहित्य रूपी सरिता बह रही है।

वील्होजी ने बिश्नोई पंथ में प्रवेश वि.सं. 1601 में किया और अपने गुरु नाथोजी से गुरु दीक्षा वि.सं. 1611 में ली थी। साधु की गुरु दीक्षा संस्कार ही उसका द्वितीय जन्म होता है। गुरु तार बाबा.....साखी उद्‌गार प्रगट करके प्रवेश किया था और अन्तिम रामड़ावास जोधपुर में वि.सं. 1673 की चैत्र शुक्ल एकादशी को उमाहो- बाबो जम्बू दीपे.....। गाकर अन्तिम विदाई ली थी। वहीं रामड़ावास में उनकी दिव्य भव्य समाधि बनी हुई है जो उनके जीवन को प्रदर्शित अवलोकित करती है। इस समय वील्होजी का निर्वाण हुए 400 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस उपलक्ष्य में जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन वील्होजी की यादगार में किया जा रहा है। दिनांक 15-16 को दो दिवसीय संगोष्ठी जोधपुर में तथा दिनांक 17 अप्रैल को एक दिवसीय रामड़ावास में होगी।

इसी पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई द्वारा संपादित वील्होजी की वाणी ग्रन्थ को जाम्भाणी साहित्य अकादमी द्वारा पुनः प्रकाशित किया जा रहा है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने ही रूचि, लग्न एवं श्रद्धाभाव से 'वील्होजी की वाणी' पर टीका, सम्पादन एवं प्रकाशन उस समय किया था, जब हमारे पास ये मौलिक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ नहीं थे। जो ग्रन्थ अब हमें मिले हैं वे उन्हें नहीं दिखाये गये थे। बिना मौलिक सामग्री के यह मौलिक कार्य करना बहुत ही कठिन कार्य है। उन्होंने वील्होजी सम्बन्धित अनेक प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ खोज निकाले हैं। उन्होंने 'वील्होजी की वाणी' ग्रंथ का प्रथम प्रकाशन अगस्त 1993 में करवाया था। डॉ. बिश्नोई की इस कार्य के लिये जितनी भी प्रशंसा की जाये वो कम है। अब इस ग्रन्थ के प्रकाशन की महति आवश्यकता बिश्नोई समाज में महसूस की गई। इस कमी को पूरा करने के लिये जाम्भाणी साहित्य अकादमी ने इस ग्रन्थ को प्रकाशन का बीड़ा उठाया। इसके लिये श्री जगदीश जी बिश्नोई भामाशाह बनकर सामने आये जिन्होंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग प्रदान किया है। इस पुण्यार्थ कार्य के लिये उनका कोटिस धन्यवाद। अंत में डॉ. बिश्नोई को पुनः शुभाशीष।

आचार्य कृष्णानन्द
अध्यक्षः जाम्भाणी साहित्य अकादमी
9897390866

भूमिका

मुझे यह खुशी है कि 'वील्होजी की वाणी' का तीसरा संस्करण प्रकाशित हो रहा है। समाज के प्रबुद्ध लोगों ने इसको पुनः प्रकाशित करने की आवाज उठाई और श्री जगदीशचन्द्र जी बिश्नोई एक भामाशाह बनकर सामने आये। उन्होंने अपने स्व. पिताश्री एवं माताश्री की स्मृति को चिर स्थायी बनाये रखने के लिये यह पुण्य का कार्य किया है इसके लिये वे साधुवाद के पात्र हैं।

मैनें जो कष्ट इसके प्रथम संस्करण के प्रकाशन में उठाये थे वो तो मैं ही जानता हूँ। हां अब मैनें वे सभी हस्तलिखित ग्रंथ देख लिये हैं जो वील्होजी से सम्बन्धित थे तथा जो मुझे उस समय नहीं मिले थे। वील्होजी सम्बन्धित एक सूची के अनुसार 109 ग्रंथ वील्होजी सम्बन्धित बताये गये हैं, जिनमें 97 ग्रंथ वाणी से सम्बन्धित हैं और 12 ग्रंथ वंशावली आदि से सम्बन्धित हैं। इनमें मुझे 57 हस्तलिखित ग्रंथों को देखने का अवसर मिला है। शेष अन्य 52 हस्तलिखित ग्रंथ खुर्द-बुर्द हो गये हैं। जिनमें सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ क्रमांक 201 भी शामिल है, जो विक्रमी संवत् 1796 में लिपिकृत हुआ था। इसके अतिरिक्त परमानन्दजी एवं हरजी द्वारा लिपिकृत 152, 207, 67, 68, 81 आदि महत्वपूर्ण ग्रंथ भी खुर्द-बुर्द हो चुके हैं, जिन्हें प्राप्त करने के लिये समाज के प्रबुद्धजनों को जागरुक होना होगा। ग्रंथांक 201 इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें वील्होजी की सभी रचनाएं शामिल हैं। जो ग्रंथ अब मुझे देखने को मिले हैं उनमें- विसन छतीसी, छूटक साखियां (दोहे), कवित परसंग, मंझ अखरा दूहा अवतार का, आदि ग्रन्थों की अन्य कोई प्रतियां नहीं है। इसके अतिरिक्त बतीस आखड़ी एवं वील्होजी के आप्तोपदेश की भी कोई हस्तलिखित ग्रंथ नहीं मिला है।

उपरोक्त टिप्पणी से आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि आज से 25-30 वर्ष पूर्व मेरी क्या स्थिति रही होगी, जब मैं वील्होजी की समग्र वाणी पर शोध करने को निकला था। इस अवसर पर मैं स्वर्गवासी परम आदरणीय संत विवेकानन्दजी को याद करना चाहूंगा, जिन्होंने गुरु जाम्भोजी एवं बिश्नोई पंथ से सम्बन्धित प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रंथों का वृहत् भण्डार कर रखा

था। उन्होंने अपने वृहत भण्डार के द्वार मेरी शोध के लिये सर्वदा के लिये खोल दिये। उसी संग्रह में मुझे परमानन्दजी बणियाळ द्वारा लिपिकृत 1810-1819 का पोथा मिला, जिसमें वील्होजी की 13 रचनाएं मिली। मैनें परमानन्दजी के इस पोथे का नाम विवेकानन्द संग्रह वाला पोथा ही रख दिया था। इन सभी रचनाओं से सम्बन्धित मुझे अन्य रचनाएं भी विभिन्न संग्रहों एवं व्यक्तियों के पास मिली, जिनसे मैनें इन रचनाओं को मिला लिया और इनके छंदों की संख्या निश्चित हुई थी। जो आज अन्य प्राप्त ग्रंथों को मिलाने से इस बात की पुनः सम्पुष्टि हुई है। कथा झोरड़ा की जिसका अपर नाम 'कथा रावण गोविन्द की' है, इसकी मुझे तीन-चार प्रकाशित प्रतियां मिली थी। अब इसे हस्तलिखित प्रतियों से मिला लिया गया है। छूटक साखी (दूहा) एवं कवत परसंग विभिन्न हस्तलिखित एवं प्रकाशित ग्रंथों में मुझे मिले थे, जिनके लिये अब मुझे कोई भी ऐसी प्रति नहीं मिली है जिनसे मैं उनकी सम्पुष्टि कर सकूं।

अपने शोध के समय मुझे वील्होजी की दो अन्य रचनाएं मिली थी जो प्रकाशित ग्रंथों में थी। उनमें प्रथम रचना-बतीस आखड़ी है। यह रचना सर्वप्रथम शब्दवाणी जम्भसागर में पृ. 76-82 पर प्रकाशित हुई। इसके संशोधक थे श्रीरामदास एवं प्रकाशक थे श्री स्वामी ब्रह्मदास, टीबा, जिला फिरोजपुर (पंजाब) वि.सं. 1993 (सन् 1936) अनारकली मुहल्ला लाहौर। इसमें 76 पंक्तियां हैं। अंतिम चार पंक्तियां दोहे की है। पूर्व में प्रकाशित आखड़ी के छंद 19-20 की दो पंक्तियां भ्रष्ट एवं असंगत थी उन्हें हटा दिया गया है। यह लौकिक रचना है। इससे बिश्नोई धर्म के उनतीस नियमों का प्रतिपादन होता है। नियमों पर कैसे चलना चाहिये। विशेषकर अमावस्या व्रत का पालन कैसे करना चाहिये, इसकी विधि इसमें बताई है। वील्होजी ने ही बतीस आखड़ी में बताया है कि खेजड़ी और हरिण की रक्षार्थ बिश्नोइयों को अपना बलिदान देना चाहिये। वि.सं. 2025 में स्वामी ज्ञानप्रकाशजी ऋषिकेश ने ज्ञान भजन संग्रह नामक पुस्तक प्रकाशित की। उसमें भी यह आखड़ी प्रकाशित हुई है। बाद में संत कनीराम ने भी अपनी पुस्तक जम्भ चरित्र में इस बतीस आखड़ी को प्रकाशित किया है। तीनों संतों ने ही इसके प्रकाशन का कोई आधार नहीं बताया है। इसके प्रकाशन का आधार अवश्य होगा। हो सकता है वह आधार खुर्द-बुर्द ग्रंथों में हो। अथवा साहबराम जी के हस्तलिखित

ग्रंथ के संग्रह में हो। क्योंकि उन्होंने अपने जम्भसार में बतीस आखड़ी की ओर संकेत किया है। उन्होंने कहा है-29 धर्म नियम+बतीस आखड़ी+सात छोत का पालन करने का पुण्य अड़सठ तीर्थों के समान हैं। डॉ. माहेश्वरी ने भी इसका उल्लेख नहीं किया है। हो सकता है, उन्होंने इसे देखा ही नहीं होगा, क्योंकि उनका ध्यान तो हस्तलिखित ग्रंथों की ओर ही था। फिर यह विषय उनके अध्ययन का था भी नहीं था। फिर वे क्यों देखने लगे? मेरी शोध की यह उपलब्धि है और मैं इसे वील्होजी की धर्म नियमों सम्बन्धित महत्वपूर्ण रचना मानता हूँ।

वील्होजी की अन्य महत्वपूर्ण रचना है उनके आप्तोपदेश। पूर्व के किसी लेखक ने भी इसे वील्होजी की रचनाओं में शामिल नहीं किया है। कारण स्पष्ट है किसी ने भी इतनी सूक्ष्मता से वील्होजी पर अभी तक अध्ययन नहीं किया था। ये अति उतम आप्तोपदेश 'कथा जैसलमेर की' के अन्त में दिये गये हैं। इस रचना में 24 पंक्तियां है प्रथम एवं अंतिम छंद दोहा है। इन आप्तोपदेश में यज्ञ की शुद्ध सामग्री और दैनिक व्यवहार की बातें बताई गई है। जब गुरु जाम्भोजी रावळ जैतसी के निमन्त्रण पर जैसलमेर पधारे थे, तब उन्होंने रावळ को यज्ञ करने की विधि और सामग्री के विषय में बताया था। सच तो यही है कि ये आप्तोपदेश गुरु जाम्भोजी के ही है। जो वील्होजी ने इस कथा के रचना करने के पश्चात् लिखे थे। ये आप्तोपदेश सर्वप्रथम सुरजनदास जी विरचित श्री जाम्भाजी महाराज का जीवन चरित्र में श्री रामदासजी ने बीकानेर से वि.सं. 2007 में प्रकाशित किये थे। संत कनीरामजी ने मार्च 1997 में जम्भेश्वर दैनिक स्तुति में इन्हें प्रकाशित किया है। यज्ञ की विधि के सम्बन्ध में ये महत्वपूर्ण आप्तोपदेश हैं। इससे पूर्व एवं बाद में ऐसे आप्तोपदेश किसी भी कवि ने यज्ञ के सम्बन्ध में नहीं लिखे हैं। शोधार्थियों की अज्ञानतावश ही ये अभी तक प्रकाश में नहीं आ पाये हैं।

वील्होजी की सभी 10 साखियां विवेकानन्द संग्रह के पोथे में पत्र 24-56 तक प्राप्त हो गई है। इनकी पंक्तियों एवं छंदों की संख्या पूर्ण है। जम्मे की साखियां शीर्षक में ही वील्होजी की रचना धड़ाबन्ध चौहजुगी एवं मंझ अखरा दूहा अवतार का, पत्र 51-53 पर हैं। विसन छतीसी के छंद 'प' और 'ह' वील्होजी कृत पुस्तक कक्का सैंतीसी-सम्पा. रामदास, प्रकाशित संवत् 2003 बीकानेर से लिये गये हैं। इसी तरह वील्होजी के परमोद रूपी

छपइया के दो छपइया जो कथा जैसलमेर के हैं एवं दो अन्य उदाजी के हैं उनके स्थान पर अन्य प्रतियों से छपइयै लिए गये हैं। इनकी निर्धारित संख्या पूर्ण कर दी गई है।

मैनें 'वील्होजी की वाणी' को सम्पादित करते समय संत कवि की वाणी की मौलिकता को बनाये रखने की कोशिश की है। वही मूल भाषा जो परमानन्दजी ने लिपि करते समय उपयोग की थी। इसमें मैंने अपना ज्ञान विज्ञान नहीं लगाया है। वाणी का भावार्थ मैंने सहज और सरल लिखा है जो उस समय मुझे याद आया। इस समय मैं स्वर्गवासी करणीदान बारहठ को भी स्मरण करना चाहूंगा, जिन्होंने मेरे इस कठिन कार्य में बीकानेर में रहकर वाणी का अर्थ करने में मेरी सहायता की थी। मेरा यह आभार उनकी आत्मा को पहुंचे। वील्होजी की वाणी ग्रंथ की सम्मति के लिये आदरणीय भाई प्रो. (डॉ.) सोनाराम बिश्नोई, जोधपुर, सम्मानीय श्री बी.के. सिंहल, दिल्ली, सुभाष बिश्नोई, आर. ई. एस. बीकानेर एवं (डॉ.) भंवरसिंह सामौर चूरू को साधुवाद देना चाहूंगा। जिन्होंने अपने व्यस्त समय में इस वाणी को पढ़ने में अपना समय लगाया और अपनी सम्मति समय में लिख भेजी। आपके सुझावों के अनुसार ही इस ग्रंथ को सम्पादित करने की मैनें कोशिश की है।

परम श्रद्धेय स्वामी कृष्णानन्द जी आचार्य को भी प्रकाशकीय टिप्पणी लिखने के लिये साधुवाद। आपके सुझावों एवं संशोधनों का मैं हमेशा आदर करता हूँ। जाम्भाणी साहित्य अकादमी के सभी सदस्यगणों का भी मैं आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस ग्रंथ को प्रकाशित करने में अपना प्रयत्न किया है। विशेषकर अकादमी के महासचिव डॉ. सुरेन्द्रकुमार बिश्नोई। अंत में परम श्रद्धेया जांभाणी साहित्य अकादमी की संरक्षिका डॉ. सरस्वती बिश्नोई को नमन्।

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
एस.आर.एफ.
बी.-111, समतानगर
बीकानेर (राज.)
मो.नं.-9460002309

गुरु जांभोजी एवं उनकी वाणी का प्रतिबिम्ब है: वील्होजी की वाणी

परमगुरु परमेश्वर श्री जम्भेश्वरजी ने जगत के जघन्य अपराधों का मूलोच्छेद करने तथा मानव मात्र में एकता और साम्य का संदेश देने हेतु ''जीयां नै जुगती अर मूवां नै मुगती'' की प्रेरणा अपनी 'सबदवाणी' के माध्यम से इस जगत को प्रदान की थी। उसी 'सबदवाणी' को मूल स्वरूप में युग-युगान्तर तक सुरक्षित रखने एवं उसे लिपिबद्ध करने का कार्य उनके शिष्यों ने किया था। भगवान जम्भेश्वर जी के उस कल्याणकारी उपदेश को जन-जन तक प्रेषित करने एवं उसे आत्मसात् करवाने के उद्धेश्य से संत वील्होजी ने जन्म लिया था। वे अपनी बाल्यावस्था में ही अन्य पंथ छोड़कर जम्भेश्वर जी के पाटवी शिष्य नाथोजी द्वारा 'पाहळ' लेकर बिश्नोई पंथ में दीक्षित हो गये और उसी दिन से अपने परमगुरु की आज्ञा-पालनार्थ सक्रिय हो गये थे।

भगवान जम्भेश्वर जी के इस मानव-मंगल (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) के कार्यों को बिश्नोई समाज में करने का बीड़ा सर्वप्रथम वील्होजी ने ही उठाया था। गुरु जम्भेश्वरजी के अन्तर्ध्यान के पश्चात् उनके आदेशानुसार प्रथम उत्तरदायित्व ग्रहण करने वाले महान संत वील्होजी पर प्रथम शोधपूर्ण व प्रामाणिक ग्रंथ 'वील्होजी की वाणी' (मूल और टीका) है, जिसके सम्पादक व टीकाकार डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई है। डॉ. बिश्नोई का यह ग्रंथ वील्होजी के सम्बन्ध में प्रथम ग्रन्थ है, जो अत्यन्त महत्वपूर्ण एवम् प्रेरक है। विशेषकर भावी शोधार्थियों के लिये तो यह ग्रंथ स्वयं साक्षात् शोध-निर्देशक ही है।

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई द्वारा सम्पादित इस ग्रन्थ से प्रमाणित होता है कि संत शिरोमणी वील्होजी का व्यक्तित्व दिव्य और कृतित्व निश्चय ही कल्याणकारी था। डॉ. बिश्नोई ने इस मानव कल्याणकारी संत के प्रामाणिक जीवन परिचय और उनकी भक्ति, योग और ज्ञान परक काव्य रचनाओं (वाणी) हरजस, साखी, दूहा, सोरठा, चौपई आदि छंदों (मुक्तक रचनाओं) तथा प्रबन्ध काव्य की कोटि में विविध कथाओं से सम्बन्धित खण्ड काव्यों आदि ग्रन्थों का सुपरिमार्जित सम्पादन टीका सहित अपने इस ग्रन्थ 'वील्होजी

की वाणी' में किया है। साखियों-हरजसों आदि के संग्रह हेतु श्रुति परम्परा का सदुपयोग किया है। उन्होंने गायक जनों के लोक-कण्ठ में सुरक्षित इन गेय रचनाओं को उनसे गवाकर लिपिबद्ध किया है। विशेष रूप से शोध हेतु विभिन्न हस्तलिखित ग्रन्थ भण्डारों, व्यक्ति विशेष के निजी भण्डारों एवं हस्त लिखित ग्रन्थों के संरक्षक संतजनों से प्रामाणिक पाठ प्रतियां प्राप्त की है। राजस्थानी भाषा (तत्कालीन मरुवाणी या मरुभाषा एवं मरुगुर्जरी, जूनी गुजराती और पुरानी मरु भाषा) की मुड़िया, महाजनी आदि पुरानी व मूल लिपियों में हस्तलिखित इन ग्रंथों के मूल पाठ को प्रामाणिकता की कसौटी पर परख कर शुद्ध व मूल पाठ के रूप में उनकी मूल भाषा में ही लिपीबद्ध किया है। इसके साथ ही छात्र-छात्राओं, शोधार्थियों एवं जिज्ञासु पाठकवृन्दों की भावनाओं का ध्यान रखते हुए इस वाणी का भावार्थ नागरी लिपि में लिपिबद्ध किया है। वह लिपि देवनागरी व नागरी नाम से संस्कृत भाषा (देववाणी) की मूल लिपि है। संस्कृत से ही राजस्थानी तथा हिन्दी भाषाओं ने इस मरुभाषा में वील्होजी को अपनाया। मरुभाषा में वील्होजी द्वारा रचित इन प्रबन्ध काव्य कृतियों, मुक्तक छन्दों को डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने नागरी लिपि में लिपिबद्ध करके पाठकों के लिए सुगम बनाकर इनका सम्पादन किया।

इस प्रकार वील्होजी के प्रामाणिक जीवनवृत का पुष्ट परिचय तथा उनकी विविध वाणियों एवं अनेक खण्ड काव्यों के शुद्ध संकलन-सम्पादन एवं टीका के इस महत्वपूर्ण ग्रंथ 'वील्होजी की वाणी' का न केवल जांभाणी साहित्य में अपितु सम्पूर्ण भारतीय संत साहित्य में अति विशिष्ठ स्थान है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई का यह ग्रंथ निश्चय ही प्रेरणादायी बनकर डॉ. बिश्नोई की यशोवृद्धि व उनकी ख्याति में अभिवृद्धि हेतु प्रामाणिक सिद्ध हुआ है।

आज कई विश्वविद्यालयों में अनेक शोध छात्र-छात्राओं के लिए प्रस्तुत ग्रंथ केवल प्रेरक ही नहीं अपितु वांञ्छित एवं प्रामाणिक तथ्यों की पुष्टि के लिए अतिमहत्वपूर्ण सिद्ध हो रहा है। इस माध्यम से जाम्भाणी साहित्य की विशिष्टता सम्पूर्ण भारतीय साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित करने के लिए 'जांभाणी साहित्य अकादमी' डॉ. कृष्णलाल की आभारी है तथा डॉ. बिश्नोई अभिनन्दनीय है।

बिश्नोई पंथ मूलत: निर्गुण-निराकार ईश्वर (परब्रह्मपरमेश्वर) का

ही उपासक है। इस पंथ के संत कवियों की वाणियों (साखियों) व अन्य काव्यकृतियों में परमगुरु जम्भेश्वर ज्योति स्वरूप परमात्मा के रूप में ही पूज्य बताये गये हैं, उनकी मूर्ति का प्रावधान ही नहीं हैं। परम ज्योति अर्थात् परब्रह्म के रूप में ही इन साखियों (वाणियों) में वर्णित है। वे अपने मूल रूप में निर्गुण-निराकार अर्थात् अलख-निरंजन ही है। जहां अलख की आराधना (उपासना) होगी वहां ऊंच-नीच, छूआछूत व वर्णभेद-वर्गभेद आदि का कोई अस्तित्व नहीं है। अर्थात् परमगुरु परमेश्वर जम्भेश्वर के वील्होजी जैसे आराधक संत-कवियों की वाणियों व काव्यकृतियों में सर्वधर्म समभाव का मंगलमयी व कल्याणकारी उपदेश ही समाविष्ट है।

वील्होजी की वाणियों में समाविष्ट इसी ब्रह्मज्ञानामृत की आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति को उजागर करके लोगों को प्रेरित करने के महत्वपूर्ण उद्देश्य की सिद्धि हेतु वरिष्ठ शोध अधिकारी विद्वान डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने इस महत्वपूर्ण ग्रंथ 'वील्होजी की वाणी' का सम्पादन (टीका सहित) करके एक कल्याणकारी सुकृत्य सम्पन्न किया है। इस मंगलमयी साहित्य सेवा के लिये डॉ. बिश्नोई हम सबके लिये वन्दनीय है। इसके लिये वे अधिकृत रूप में यश के भागी बने हैं। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई का यह सुयश अमर रहेगा।

संत सिरोमणि वील्होजी निश्चय ही बिश्नोई पंथ के संत कवियों व परमगुरु जम्भेश्वर की शिष्य परम्परा में विशिष्ठ स्थान रखते हैं। इस विशिष्ठता के सभी उल्लेखनीय तथा प्रामाणिक कारण डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई द्वारा सम्पादित प्रस्तुत ग्रंथ में स्पष्ट रूप में वर्णित है। वील्होजी का जन्म रेवाड़ी (हरियाणा) में खाती परिवार में हुआ। उनके बचपन में ही चेचक द्वारा अंधे होने तथा परमगुरु जम्भेश्वर की आराधना स्वरूप साखी गाते ही नेत्र-ज्योति मिल जाने आदि सभी प्रेरक प्रसंगों का वर्णन डॉ. कृष्णलाल जी ने प्रस्तुत ग्रन्थ में करके इसे सर्वसाधारण से लेकर शोधार्थियों के लिये भी अति उपयोगी बना दिया है।

मरुवाणी का मरुभाषा (वर्तमान में राजस्थानी भाषा) की सधुकड़ी शैली (संत शैली) वील्होजी की वाणी में वील्होजी द्वारा रचित रचनाओं का संग्रह है- हरजसों, साखियों, दूहा, सोरठा, चौपई आदि फुटकर छंदों व विविध खण्ड काव्यों (अर्थात् मुक्तक व प्रबन्ध दोनों ही प्रकार की काव्यकृतियों) का प्रस्तुत ग्रन्थ के रूप में सम्पादन करके डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने संत

साहित्य भण्डार की श्रीवृद्धि में संत कविवर वील्होजी की अमूल्य देन को समाविष्ट करके यशस्वी कार्य किया है। मातृ भाषा और संत साहित्य की इस अमूल्य सेवा के लिये डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई कोटि-कोटि साधुवाद के सुपात्र है। ईश्वर आपको उत्तम स्वास्थ्य सहित शतायु करें, सुख-समृद्धि व यशोपार्जन में अभिवृद्धि करें। इसी मंगल कामना के साथ-

प्रो. (डॉ.) सोनाराम बिश्नोई
से.नि. प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय,
जोधपुर।
पूर्व अध्यक्ष
राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति
अकादमी, बीकानेर
मो.-8875927552

सन्त वील्होजी : आख्यानकार के रूप में

विष्णोई-रचनाकारों की चर्चा प्रारम्भ होने पर पंथ-प्रवर्तक, युगपुरुष, भगवत्स्वरूप जाम्भोजी महाराज के पश्चात् सर्वाधिक समर्थ एवं प्रभावशाली रचनाकारों में श्री वील्होजी का नाम आता है।

श्री वील्होजी विष्णु-नाम के अनन्य जापक, विष्णोई पंथ के महान् उन्नायक, संगठनकर्त्ता और विरक्त-साधु-परम्परा के जनक थे। इन्होंने जांभोजी की शिक्षाओं का मेले स्थापित करके, विरक्त साधु दीक्षित करके, राज्याज्ञा प्राप्त करके, अनेक प्रकार से सघन प्रचार-प्रसार किया। ये कुशल उपदेशक, निष्णात् गायक और स्थापित आख्यान-रचनाकार संत थे जो आजीवन जांभोजी की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार में लगे रहे।

यद्यपि इनका जन्म धुर उत्तर रैवाड़ी (हरियाणा) में बढ़ई जाति में हुआ तथापि इनका समग्र जीवन मारवाड़ देश के धुर दक्षिण से लगाकर उत्तरी-पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्र में व्यतीत हुआ और इनका मुख्य अनुयायी वर्ग कृषक जाट जाति का था।

जंभसार में साहिबरामजी राहड़ ने लिखा है कि इनके लिये स्वयं जांभोजी ने भविष्यवाणी की थी और ये आप्तवचनानुसार खरे भी उतरे थे। ये जितने कुशल संगठनकर्त्ता थे, उतने ही निष्णात् रचनाकार भी थे। इनकी रचनाएं संत परमानन्द बणिहाल के पोथो में लिखी मिलती हैं।

कहा जाता है, वील्होजी के पूर्व जांभोजी के सबद मौखिक रूप में ही विष्णोइयों में प्रचलित थे। वील्होजी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सुनते ही जांभोजी के समग्र वचनों को याद कर लिया और अवसरानुसार उन्हें लिपिबद्ध भी किया। परमानन्दजी बणिहाल लिखते हैं-

''बड़ पोथी गिण वील्ह की, दूजी सुरजन दाख।
तीजे मुकनू मुझ गुरु, सुरताण पिता मुख आख।''
''अनंत सबद सतगुरु कह्या, बरस पच्यासी परवांण।
नाथैजी के कंठ रह्या, अता लिखाया वील्ह सुजाण।।''

सबसे पहली (बड़ी, ज्येष्ठ, पूर्ववर्ती) पोथी वील्होजी महाराज की थी। दूसरी उनके शिष्य सुरजनजी की, तत्पश्चात् मुकनू जी, रासोजी व मेरे पिता सुरताणजी की पोथियां मेरे सामने थी जिनके आधार पर मैनें पोथा लिखा।

सद्गुरु जांभोजी महाराज ने 85 वर्ष की उम्र तक अनन्त सबद कहे किन्तु नाथौजी को जितने सबद याद थे, उतने उन्होंने वील्होजी को लिखवाये। अत: आज सबदों का जो लिखित रूप मिलता है, वह वील्होजी की देन है।

वील्होजी कुशल कथाकार थे तब ही उन्होंने अपनी अधिकांश रचनाएं आख्यानपरक लिखी हैं। जैसे ''कथा धड़ाबंध चौहजुगी'' में रचनाकार ने बताया कि कलियुग में जांभोजी का अवतार कब और क्यों हुआ?

कथा औतारपात में जांभोजी के प्राकट्य, उनकी बाल लीलाओं आदि का सजीव और प्रामाणिक विवरण लिखा मिलता है।

''कथा गूगळिये की'' में भी रचनाकार ने जांभोजी महाराज के जीवन की एक घटना विशेष का वर्णन किया है। जांभोजी महाराज ने मन: संकल्प से गुग्गल व घी से एक ऊंठ उत्पन्न किया जिस पर लादकर खिलहरी, किसान व राईका जाति के लोग सिंध देश से बीज लाये और खेत बोये। जमाना अच्छा होने पर इन सभी ने जांभोजी को गुरु माना और अनुगत हो गये।

कथा पूल्हैजी में भी जांभोजी के जीवन की एक विशिष्ट घटना का उल्लेख है। पूल्हौजी जांभोजी के सगे काका थे। इन्होंने जांभोजी से अवतार लेने का कारण पूछा और जांभोजी ने प्रह्लाद से वचनबद्ध होकर बारह कोटि जीवों का उद्धार करने को आना बताया।

कथा दूणपुर में मोती चमार नामक विष्णोई को द्रोणपुर के राव बीदा से छुड़ाये जाने की घटना का वर्णन है।

कथा जैसलमेर में रावल जैतसी द्वारा जाम्भोजी महाराज को जैसलमेर आमंत्रित करने की घटना का वर्णन है।

कथा झोरड़ा की में सोतर गांव के झोरड़ जाति के रावण और गोयंद के द्वारा बैल चोरी करने व जांभोजी द्वारा बैल का रंग पलटकर इन दोनों को दोष मुक्त करवाने का आख्यान वर्णित है।

वील्होजी ने साखी शीर्षक से 10 रचनाएं लिखी हैं, इनमें भी कोई न कोई प्रसंग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में अनुस्यूत है।

इस प्रकार हम देखते हैं, वील्होजी की कुल 18 रचनाओं में से 8 रचनाएं आख्यानपरक है।

वील्होजी सम्बन्धित प्रकाशित साहित्य के रूप में मुझे तीन पुस्तकें मिली है जिनका वर्णन निम्नानुसार है-

	वील्होजी की वाणी (1993)	**जांभोजी विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य (1970)**	**पोथा ग्रंथ ज्ञान (2013)**
क्र.	**डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई**	**डॉ. हीरालाल माहेश्वरी**	**आचार्य कृष्णानन्द**
1.	कथा ज्ञानचरी, छन्द-132	130+2	132
2.	साखी, संख्या-10	10	?

3.	कथा धड़ाबन्ध चौहजुगी, छन्द-53	53	53
4.	मंझ अखरा दुहा अवतार का, छन्द-27	26+1	27
5.	कथा अवतारपात, छन्द-142	142	143
6.	कथा गूगळिये की, छन्द-86	86	81+5
7.	कथा पूल्हैजी की, छन्द-25	25	23+2
8.	कथा सच अखरी विगतावली, छन्द-55	54+1	50
9.	विसन छतीसी, कुंडलियां-36	37-1	36
10.	कथा दूणपुर की, छन्द-65	63+2	62+3
11.	परमोध रूपी छपइया, 45	41	?
12.	हरजस, 8 रागों में पद-20	21 भूलवश	22 भूलवश
13.	कथा जैसलमेर की, छंद-113	112+1	149
14.	कथा झोरड़ा की-33	32	53 प्रकाशित
15.	छूटक साखी (दुहा)-14	13+1	?
16.	कवत परसंग का-4	13	?
17.	बतीस आखड़ी- 38 (दोहा-2, पंक्तियां-72)	?	?
18.	वील्होजी का आप्तोपदेश, (दोहा-2, छंद 20 पंक्तियां)-	?	?

डॉ. माहेश्वरी द्वारा प्रकाशित ग्रंथ (1970) में वील्होजी की रचनाओं की उपलब्ध करवाई गई सूची एवं डॉ. बिश्नोई की सूची में कई स्थानों पर अन्तर है। डॉ. माहेश्वरी व पोथे में बतीस आखड़ी (छंद 38) एवं आप्तोपदेश (दोहा-2 छेद 20 पंक्तियां) आदि दो रचनाएं नहीं मिली है। यह डॉ. बिश्नोई की उपलब्धि है। अन्य रचनाओं में कुछ पंक्तियां कम ज्यादा थी आशा है यह सब उन्होंने अपने अन्य प्राप्त ह.लि.ग्रं. से मिला लिया होगा। डॉ. बिश्नोई ने बताया कि उन्हें ह.लि.ग्रं. क्रमांक 201 परमानन्द का पोथा (1796) उस समय भी नहीं मिला था और अब भी नहीं मिला है। संभवत: यह पोथा अब खुर्द-बुर्द हो गया है। अत: किसी भी व्यक्ति की पहुंच से बाहर है। वैसे डॉ. बिश्नोई ने इस पोथे के बिना ही वील्होजी पर समग्र रूप में काम किया है और 'वील्होजी की वाणी' एक समग्र ग्रंथ है। वाणी का भावार्थ करके डॉ. बिश्नोई ने इसे शोधार्थियों के लिये भी सरल बना दिया है। इसके लिये वे प्रशंसा के पात्र हैं।

दूसरी पुस्तक है 'वील्होजी की वाणी (मूल एवं टीका)' सम्पादक है डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई। यह पुस्तक सन् 1993 में सम्पादित होकर संभराथल

प्रकाशन, अबूबशहर, सिरसा से प्रकाशित हुई है। इसमें श्री वील्होजी की वाणी का आधार मुख्यत: परमानन्दजी का सम्वत् 1810-1819 में लिखित पोथा है जो लेखक-सम्पादक को स्वर्गवासी संत विवेकानन्दजी, निवासी मंडी आदमपुर के पुस्तकालय में मिला। सम्पादक को इस पोथे के अलावा भी यदि किन्हीं अन्य हस्तलेखों में वील्होजी की वाणी मिली है तो उसका उल्लेख अनन्त स्थानों पर कर दिया है। ऐसा करने से इस पुस्तक में श्री वील्होजी की समग्र वाणी एक स्थान पर आ गई है।

तीसरी पुस्तक है-पोथो ग्रन्थ ज्ञान (2013) इसमें आचार्य कृष्णानन्द जी महाराज ने वील्होजी की रचनाओं को संग्रहित एवं प्रकाशित किया है। यह एक संग्रह मात्र है। शायद इसमें उनका ध्यान संग्रहित जांभाणी साहित्य को प्रकाशित करने का था न कि वैज्ञानिक एवं धार्मिक पाठालोचन की ओर था। मेरा यह कहना है कि जो भी प्राचीन पाण्डुलिपियों पर काम करते हैं अथवा करना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि वे ग्रन्थ के पाठालोचन विज्ञान की मान्य परिपाटी के अनुसार एवं धार्मिक दृष्टि से ही सम्पादित करें। वस्तुत: पाठालोचन विज्ञान यह नहीं कहता कि प्रतिलिपिकारों की असावधानी के कारण उपलब्ध पाठ यदि सर्वथा भ्रष्ट व अर्थानुसंगत से सर्वथा अनुपयुक्त है तब भी उसी को ग्रहण किया जाये। यह विज्ञान कहता है कि उपलब्ध समस्त हस्तलेखों के आधार पर पाठ मिलाकर प्राचीनतम पाठ को मूल में प्रस्तुत करके अन्यों को पाठांतर के रूप में प्रस्तुत करें।

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने संत श्री वील्होजी की वाणी को सर्वप्रथम सटीक प्रस्तुत कर प्रकाशित कराया, एतदर्थ वे सारस्वत-जगत के अतीव बधाई के पात्र हैं। अब पुस्तक का तीसरा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है। आशा है, विद्वान लेखक-सम्पादक तीसरे संस्करण में, पहले एवं दूसरे संस्करणों की भूलों का परिमार्जन कर इसको सर्वांग बनाने का प्रयत्न अवश्य किया होगा।

संत श्री वील्होजी की वाणी में विचारों के अनूपम रत्न भरे पड़े हैं। पाठकों से अनुरोध है, वाणी का पारायण करें और उन रत्नों को खोजकर अपने मनों में स्थापित करें।

ब्रजेन्द्र कुमार सिंहल
सम्पादक श्रीरामस्नेही-संदेश
60/60 रजतपथ मानसरोवर,
जयपुर (राज.) 302020
मो. 09351503555

जांभाणी काव्य परम्परा का उज्ज्वल ग्रंथ है: वील्होजी की वाणी

मध्यकालीन संत काव्य परम्परा में जांभाणी काव्य परम्परा का अपना महत्व है। इस काव्य परम्परा को अनेक कवियों ने अपनी वाणी से सींचा है। उन्हीं में एक नाम वील्होजी का आता है। वील्होजी जांभाणी साहित्य परम्परा के उज्ज्वल नक्षत्र थे। उनका व्यक्तित्व सन्त मार्ग के लिये वरदान सिद्ध हुआ। वे शंकराचार्य द्वारा स्थापित दशनामी सन्यासियां की परम्परा से आये थे तथा गुरु जांभोजी महाराज ने उनके बारे में जो भविष्य वाणी की थी वह अक्षरस: सत्य निकली थी।

वील्होजी ने बिश्नोई पंथ को संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्हें दीक्षित करने वाले नाथोजी थे। फिर तो उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा तथा रचनाओं की झड़ी लगा दी। वील्होजी का रचना संसार अप्रतिम है। उनकी रचनाएं उस युग के दस्तावेज हैं। ये रचनाएं दार्शनिक दृष्टि से अमूल्य है। उन्होंने सामाजिक चेतना को ऐसी ऊंचाई प्रदान की कि मरुभूमि के सामान्य जन दिव्य हो गए। वील्होजी की वाणी में जंभवाणी का प्रभाव परिलक्षित होता है। लोक एवं वेद का मार्ग एक ही होता है। कभी लोक वेद से चेतना प्राप्त करता है तो कभी वेद लोक वाणी में प्रस्फुटित होता है। इसी चेतना को संस्कृति से संबल मिलता है।

वील्होजी की भक्ति की चर्चा करें तो यह लोक भक्ति का सहज रूप कहा जा सकता है। वे संदेश देते हैं कि भक्ति का मार्ग अपनाकर हम सुधरें तो समाज भी सुधरेगा। वैयक्तिक सुधार से सामाजिक सुधार की ओर अग्रसर होने पर ही मार्ग मिलेगा। इसी संदर्भ में नैतिक चेतना का महत्व है उसी से थोथे सामाजिक आडम्बरों से मुक्त हुआ जा सकता है। वील्होजी की वाणी जीवन के लिये है। उनकी वाणी की सहजता जीवन को सहजता से जोड़ती है।

वील्होजी की वाणी मूलत: राजस्थानी भाषा का एक अनुपम ग्रंथ है। तत्कालीन मरुवाणी अथवा मरु गुर्जरी को ही उस समय आज की राजस्थानी भाषा थी। कालान्तर में मरु गुर्जरी से गुजराती अलग हो गई। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने वील्होजी की वाणी का सम्पादन किया है। डॉ. बिश्नोई एक वरिष्ठ शोध अधिकारी के रूप में राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में सेवारत

रहे हैं। इस संस्थान में एक लाख तीस हजार हस्तलिखित ग्रंथ हैं, जो विभिन्न भाषाओं में हैं। वील्होजी से सम्बन्धित कुछ हस्तलिखित ग्रंथ इस संस्थान से डॉ. बिश्नोई को मिले थे, ऐसा उन्होंने मुझे बताया था। इससे स्पष्ट है कि डॉ. बिश्नोई ने प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों का विशेष अध्ययन किया है। ऐसा प्रामाणिक ग्रंथ सम्पादित करने में डॉ. बिश्नोई का प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान में सेवा करने का अनुभव अत्यन्त उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। इसके साथ ही प्राचीन लिपियों तथा विविध ग्रन्थों के सम्पादन हेतु डॉ. बिश्नोई ने अपने पाठ सम्पादन के लिये पाठालोचन के विभिन्न सिद्धान्तों का पालन किया है। पाठ सम्पादन की वैज्ञानिक विधियों द्वारा मूल प्रामाणिक पाठ उन हस्तलिखित प्रतियों की प्रामाणिकता के आधार पर सिद्ध करके उनकी प्रामाणिकता की पुष्टि करके ही डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने प्रस्तुत ग्रन्थ 'वील्होजी की वाणी' टीका सहित सम्पादित किया है। बिश्नोई समाज के किसी भी विद्वान् का वील्होजी सम्बन्धित यह प्रथम शोधपूर्ण कार्य है। इसके लिए डॉ. बिश्नोई की जितनी भी तारीफ की जाये कम है।

वील्होजी की वाणी की भाषा पर विचार करें तो स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि वे भाषा की चेतना पर सत्य के आग्रह को महत्व देते हैं। वील्होजी लोकभाषा की गरिमा को महत्व देते हैं। उनके समय में कच्छ से काशी तक एक ही लोक भाषा राजस्थानी प्रवाहित है। उस लोक भाषा की शुद्धि पर उनका विशेष जोर है। भाषा की शुद्धि कितनी महत्वपूर्ण है इसके लिये उन्होंने कथा 'सच अखरी विगतावली' में अपनी बात स्पष्ट करते हुए लिखा है कि सच और झूठ को समझने के लिये भाषा ज्ञान जरूरी है। भाषा ज्ञान से ही हम सत्य पर आरूढ़ रहते हैं। विगतावली की यह परम्परा आगे के कवियों में मिलती है।

वील्होजी की वाणी का सम्पादन एवं भावानुवाद डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने किया है। ये जांभोजी महाराज के हुजूरी कवि केसोजी देहडू के वंशज हैं। यह शाखा भाटी क्षत्रियों के देहवड से निसृत है। जसहड़ एवं देहवड़ भाटियों में बहुत ख्याति प्राप्त व्यक्ति हुए हैं। साहित्य जगत में इस कृति का समादर होगा, ऐसी आशा है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई से जांभाणी काव्य की अन्य कृतियां सामने लाने की हम आशा कर सकते हैं। उन्हें इस काम हेतु बधाई।

डॉ. भंवरसिंह सामौर (से.नि. प्राचार्य)
राज. लोहिया कॉलेज, चूरु
मो.-9460528834

एक समग्र ग्रंथ:वील्होजी की वाणी

संत वील्होजी महाराज ने बिश्नोई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये जो कार्य किया, वह सर्वविदित है। प्रस्तुत पुस्तक में समाज के उत्साही साहित्यकार डॉ. (श्री) कृष्णलाल बिश्नोई ने वील्होजी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पुस्तक रूप में समाज के लिये उपलब्ध करवाकर सदैव के लिए स्थायी महत्व का कार्य किया है।

'वील्होजी की वाणी' में तत्कालीन भारत जिसमें विशेष रूप से मरुधरा, मरु गुर्जर आदि सभी प्रान्तों की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक सभी परिस्थितियों के प्रामाणिक परिचय के साथ ही यहां की जनता की दशा-दुर्दशा और कारूणिक स्थितियों का सजीव चित्रण है जो आज के पाठकों की जानकारी हेतु अति उपयोगी है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई का यह प्रयत्न अति प्रशंसनीय है। वील्होजी की वाणी में वील्होजी के प्रसंग अति हृदयग्राही है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रत्येक प्रसंग सत्य प्रतीत होता है, जिसे डॉ. बिश्नोई ने अपने प्रमाणों से और अधिक प्रामाणिक बना दिया है। मेरे विचार में यह ग्रंथ भावी पाठकों, अध्येयताओं एवं शोधार्थियों के लिये अति महत्वपूर्ण और उपादेय सिद्ध होगा।

लगभग तीन सौ पृष्ठों में लेखक ने न केवल वील्होजी की मूल वाणी ही विस्तार से प्रस्तुत की है, अपितु उसकी सरल टीका भी साथ-साथ प्रकाशित करके पाठकों के लिये उनकी वाणी को सहज, सुग्राह्य और पठनीय बनाया है।

वील्होजी ने अपनी वाणी में स्वयं के बारे में कुछ न लिखकर अपने आराध्य देव जाम्भोजी जो स्वयं विष्णु थे, उनको ही सम्बोधित करके लिखी है, जिनमें क्रमशः कथा ग्यानचरी, साखियां, कथा धड़ाबन्ध, चौहजुगी, मंझ अखरा दुहा अवतार का, कथा अवतारपात, कथा गूगळियै की, कथा पूल्हैजी की, कथा सच अखरी विगतावली, विसन छतीसी, कथा दूणपुर की, परमोध रूपी छपइया, हरजस, कथा जैसलमेर की, कथा झोरड़ा की, बतीस आखड़ी तथा दूहा कवित्त, चौपाई आदि फुटकर छन्दों में विचरित है। प्रस्तुत पुस्तक के सम्पादकीय में वील्होजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है तथा परिशिष्ट में वील्होजी के बारे में नाथोजी, सुरजनजी पूनियां,

गोविन्दरामजी, साहबरामजी राहड़, स्वामी ब्रह्मानन्दजी आदि द्वारा विरचित रचनाएं तथा वील्होजी व उनके गुरु भाई खिदरोजी की शिष्य-परम्परा भी दी गई है।

समग्र रूप में आंकलन किया जाये तो उक्त पुस्तक वील्होजी पर केन्द्रित एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शोध ग्रन्थ है, जिसमें अनेक महत्वपूर्ण संदर्भो का भी उल्लेख है। आकर्षक मुद्रण तथा आवरण पृष्ठ पर जाम्भोजी के नयनाभिराम चित्र ने इसकी गरिमा को द्विगुणित किया है।

समीक्ष्य पुस्तक को समाज तक सम्प्रेषण करने में भाव-भाषा एवं कला का अति मणिकांचन संयोग रहा है। इस दृष्टि से लेखक द्वारा सरल, सुबोध एवं प्रांजल भाषा में पाठक को रसास्वादन प्राप्त होगा।

डॉ. बिश्नोई का यह शोधपूर्ण काम प्राचीन एवं अप्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थों से किया गया है, जिससे इस ग्रन्थ का महत्व और भी बढ़ जाता है। बिश्नोई समाज एवं साहित्य के विषय में किसी भी बिश्नोई द्वारा किया गया उनका यह काम मौलिक एवं शोधपूर्ण है जो पठनीय संग्रहणीय एवं देखने योग्य है।

आशा है वे भविष्य में भी ऐसे महत्वपूर्ण सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक काम समाज के लिए करते रहेंगे और बिश्नोई समाज भी उन्हें पूर्ण सहयोग एवं सम्मान देगा। अन्ततः लेखक को इस उच्च कोटि के कार्य के लिये हार्दिक बधाई स्वीकार हो।

सुभाष बिश्नोई (आर.ई.एस.)
बीकानेर
मो.-9414264652

प्रस्तावना

धर्म प्रधान भारत में त्याग व तप की महत्ता सर्वोच्च रही है और इसीलिये त्याग तथा तप के प्रतीक साधु-संतों के प्रति यहां सदैव अनन्य भाव रहा है। देश की सामान्य जनता की बात तो अलग रही, लेकिन राष्ट्राध्यक्ष, धनाड्यगण और शासन के ऊंचे पदाधिकारी, सभी उनकी कठोर तपश्चर्या के सम्मुख करबद्ध नतमस्तक रहे हैं। इन तपः पूतों के सरल आध्यात्मिक जीवन में अपरिग्रह, अव्यभिचारिता (मनसा,वाचा,कर्मणा) और वैधानिकता ही मुख्य थी। अतः अशांति, अशुचिता व अशिव जैरी वस्तुएं उनके पास फटक भी नहीं पाती थी।

वैसे तो देश के हर प्रदेश में अनेक साधु-महात्मा हुए हैं और इनमें से अनेक तो सम्प्रदाय-प्रवर्तक थे, परन्तु राजस्थान तो वीरों के साथ संतों की अखूट खान रहा है, अतः यहां अनेक सम्प्रदायों का आविर्भाव होना तथा उनका देश के सुदूर भागों में प्रसरित होना स्वाभाविक ही है।

इन सम्प्रदायों की दो प्रमुख विशेषताएं रही हैं-एक ये मूल रूप में निर्गुण ईश्वर के उपासक थे और द्वितीय ये ऊंच-नीच के वर्गभेद व वर्णभेद के विरोधी तथा सर्व धर्म समभाव के उद्घोषक थे। सत्य तो यह है कि इन्हीं साधु-संतों की इसी उदात नीति के कारण हिंदू संस्कृति व सभ्यता का ध्वज सदा ऊंचा लहराता रहा।

इन्हीं साधु-संतों के उपदेशामृत के दो प्रमुख उद्देश्य ये रहे हैं- एक अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियों को वाणी देना और द्वितीय, जन समुदाय को आत्मज्ञान की प्रेरणा देना। यह कार्य इनकी वाणियों ने बखूबी किया। असंख्य लोगों ने जिनका कोई लेखा-जोखा नहीं है, इनसे प्रेरणा ली और शांति अनुभव की।

बिश्नोई सम्प्रदाय के प्रवर्तक श्री जांभोजी हुए, जिन्होंने बीस+नौ (बीसनोई>बिश्नोई) नियमों के माध्यम से जनसाधारण को उपदेश दिया। ये नियम देखने में सामान्य होते हुए भी, पालन करने में अति कठिन हैं।

आज जिस पर्यावरण की प्रदूषिता को लेकर सारा विश्व विपदाग्रस्त है, साढ़े पांच सौ वर्ष पूर्व दूरदर्शी जाम्भोजी ने इसे पहले से ही भांप लिया था और वृक्षोच्छेदन की धार्मिक मुनादी कर दी थी।

मुसलमानों का इस देश में आकर शासक बनना, यहां स्थायी रूप से बसना तथा अपने धर्म का प्रचार करना आदि से स्वभावतः उदार जन समूह हतप्रभ तो हुआ, परन्तु निराश न होकर और समन्वयवादी सिद्धान्त को अपनाकर उसने आगे बढ़ने का प्रयत्न किया। बिश्नोई सम्प्रदाय ने भी इसी सदाशय को

केन्द्र में रखकर कतिपय परम्पराओं को चलाया।

जाम्भोजी की शिष्य परम्परा में वील्होजी वास्तव में विलक्षण पुरुष थे। बचपन में ही शीतला के प्रकोप से जिनकी दृष्टि जाती रही, वे ही वील्होजी जब जाम्भोजी का स्मरण कर यह साखी कहते हैं 'गुरु तारि बाबा, बोह दुख सह्या सरण्य विण्य गुरु की, करि-करि करम कुफेरा।' तब उन्हें पुनः दृष्टि प्राप्त हो गई। सम्प्रदाय के लोग इसे जाम्भोजी का परचा मानते हैं। यहीं पर नाथोजी ने उन्हें पाहळ देकर बिश्नोई पंथ में दीक्षित किया। नाथोजी से दीक्षित हो जाने पर सर्वप्रथम वील्होंी ने ही 'कथा ज्ञानचरी' में गुरु-ज्ञान को लिखित रूप दिया।

जैसा कि प्रसिद्ध है इन साधु-संतों के सम्मुख अनेक राजा-महाराजा नतमस्तक रहते थे, जाम्भोजी के सम्बन्ध में भी यही हुआ, अपनी पोथी 'कथा जैसलमेर री' में वील्होजी ने अनेक ऐसे शासकों के नाम गिनाये हैं-

दिल्ली सिकंदर साह, दे परचो परचायो।
महमंदखान नागोरि, परच गुरु पाए आयो।
दुदो मेड़तियो राव, आय गुरु पाय विलग्गो।
रावळ जैसळमेर, परचतां सांसो भग्गो।
सांतिल सनमुखि आय, सुचील तां हुवो संनानी।
सांग रांण सुण्य सीख, जाय गुर कही स मानी।
छव राज्यंदर के के अवर, आचारे औळखीयो।
वील्ह कह मांगूं पुन्ह, जांह मुगति ने हाथो दीयो।

बिश्नोई धर्म के नियमों के पालन हेतु वील्होजी ने बत्तीस आखड़ी लिखी। राजस्थानी में आखड़ी का अर्थ होता है प्रतिज्ञा या नियम। एक उद्धरण है-

जीव दया नित राख, पाप नहीं कीजिये।
जांडी हिरण संहार, देख सिर दीजिये।

अपनी दूसरी पोथी 'मंझ अखरा दूहा अवतार का' में संत कबीर की साखी 'पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोई' की भांति वील्होजी ने कहा, 'पींडत पढ़ि पढ़ि थाह, ज्ञानी की नंद्या करे, दूसरी ओर 'विसन छत्तीसी' में संत कवि ने जीवन में कठोर परिश्रम और नाम जपन पर जोर दिया है-

उदिम करि रे आदमी, उदिम दाल्यद जाय।
जीभ विसन को नाम ले, अहनिस सांम्य धियाय।।

हरियाणा में वील्होजी का जन्म सुथार परिवार में हुआ था, परन्तु

इससे क्या होता है- 'जाति पांति पूछे न कोई, हरि को भजे सो हरि को होई' ऐसे वील्होजी ने लघु परन्तु अनेक बेशकीमती ग्रंथ रचे। हीरा बहुत छोटा होते हुए भी अनमोल है और इसके विपरीत बड़ी-बड़ी शिलाओं का भी नगण्य मोल होता है-'भाटो भाटो ई रवै, करे न हीरा होड'। 'कथा औतारपात, कथा ग्यानचरी, कथा गुगळिये री, कथा झोरड़ा री, कथा पूल्हाजी री, कथा धड़ाबंध चौहजुगी, कथा दूणपुर री, कथा सच अखरी विगतावळी, कवत परसंग का, छपइया, फुटकर दूहे व हरजस आदि वील्होजी ने लिखे हैं।

अपने गुरु जाम्भोजी की महत्ता को अतुलनीय बतलाते हुए उन्होंने एक ही छपइया बारह उपमाओं से उपमित किया है-

अंतरो थळी सुमेर, नाडी अर मानसरोवर।
अंतरो हंस'र काग, अंतरो तुरंगम अर खर।
अंतरो पायक पातसाह, अंतरो तारा अर सीसीहर।
अंतरो आक'र अंब, अंतरो चंदण लकड़घर।
काच कथीर कंचण हीर, अहनिस जीसो पटंतरो।
ओर गुरां अर जंभ गुर, सूर अंधेरे अंतरो।

अनेक ग्रंथों द्वारा अपने संप्रदाय की सेवा के साथ-साथ सारे ग्रन्थों को व्यवहृत राजस्थानी भाषा में रचकर और उससे भी बढ़कर उन्होंने इस बोलचाल की भाषा को सुधारने का जो कार्य किया, मैं समझता हूं ऐसा किसी अन्य संत ने नहीं किया।

वील्होजी ने उदारता अर्थात् साम्प्रदायिक समन्वय का उद्घोष किया है-

राम रहीम विसन विसमलाह, किसन करीम हमारे।
कुकरम जुलम गाय बकरी परि, रुस्यळ मीसल्य तुम्हारे।।
बांभण वांचे वेद पुराणा, काजी कुतब कुराणा।
पत्थर पूजे मसीत पुकारे, हरि तत्त दहुं न जाणां।।

श्री कृष्णलाल बिश्नोई एक शोध धर्मी युवक है और संयोग से वे सेवारत भी ऐसी संस्था में हैं, जहां शोध कार्य होता रहता है। उनका यह कार्य उनके सम्प्रदाय के साथ संयुक्त होते हुए भी राजस्थानी भाषा और उसके विविध प्रयोगों के लिए महत्वपूर्ण है। हमें आशा करनी चाहिये कि श्री बिश्नोई भविष्य में भी मातृभाषा की ऐसी सेवा सतत् करते रहेंगे

प्रो. भूपतिराम साकरिया
वल्लभ विद्यानगर (गुजरात)

सम्पादकीय

ईसा की 16 वीं शताब्दी के पहले पचास वर्ष बड़े संकट के थे। उस समय पानीपत की प्रथम लड़ाई सन् 1526 में लड़ी गई और दिल्ली पर बाबर ने मुगलिया झण्डा फहराया। परन्तु शीघ्र ही शेरशाह सूरी ने अपनी काबलियत और बहादुरी के बल से उसके बेटे हुमायूं के शासन को उखाड़ फैंका। दिल्ली का मुगल बादशाह राज्य से मुहताज होकर दर-दर भटकने लगा। मेवाड़ का राणा सांगा भी सन् 1527 में खानवा के युद्ध में हार चुका था। मेवाड़ में राज्य-प्राप्ति के लिए गृह-कलह शुरु हो गया था। मारवाड़ और बीकानेर के राठौड़ राजा भूमि के लिए आपस में लड़ रहे थे। मरुस्थल में एक ओर जहां अकाल का प्रकोप था, वहीं दूसरी ओर राजा लोग आपसी रंजिश के शिकार थे। देश के सभी भागों में ऐसी ही स्थिति थी। जहां एक ओर देश की राजनैतिक एकता टूट चुकी थी, वहीं दूसरी ओर देश की धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक एकता भी छिन्न-भिन्न हो रही थी। ऐसे ही संकट के समय में एक संत पुरुष का जन्म हुआ, जिनका नाम था-संत वील्होजी।

भारत-भूमि अपनी प्राचीनता, आध्यात्मिकता, विशालता और विभिन्नता में एकता के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यहां अनेक साधु संत और पीर-फकीर हुए हैं। यहां ऐसे बहुत से चमत्कारी और परोपकारी पुरुष हुए हैं, जिनकी पूजा यहां के लोग आज तक करते हैं और उन्हें भगवान मानते हैं। ऐसे ही एक संत पुरुष थे-वील्होजी।

पानीपत का द्वितीय युद्ध सन् 1556 में लड़ा गया। यह इतिहास प्रसिद्ध है कि अकबर ने हेमू को इस लड़ाई में हराकर दिल्ली का शासन प्राप्त किया था। यह हेमू रेवाड़ी (हरियाणा) का रहने वाला था। जहां एक ओर रेवाड़ी का यह नौजवान योद्धा एक विशाल राज्य की कल्पना कर रहा था, वहीं रेवाड़ी में जन्मा एक युवा संत मारवाड़ में मानव-कल्याण का कार्य कर रहा था। इस युवा संत का नाम था-वील्होजी। यह बात तो सभी जानते हैं कि हरियाणा प्रदेश अपने वीरों की वीरता और स्वाभिमान के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है परन्तु यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि यहां के संत और भक्त भी बहुत प्रसिद्ध रहे हैं। ऐसे ही एक संत कवि थे-वील्होजी।

वील्होजी का जन्म सन् 1532 में रेवाड़ी (हरियाणा) में एक खाती (सुथार) के घर हुआ था। इनके पिता का नाम श्रीचन्द्र (परसराम) और माता का नाम आनन्दा बाई था।[1] इनकी आंखें बचपन में ही चेचक से खराब

हो गई थी। एक बार गुजरात की ओर से वेदान्ती साधुओं की एक टोली इनके गांव में आई। वील्होजी के माता-पिता ने उन्हीं साधुओं को इन्हें सौंप दिया। वेदान्तियों के साथ रहने से उन्हें 'वील्हपुरी' की उपाधि मिली। उनके शिष्य महात्मा सुरजनदास जी पूनियां ने उन्हें विठ्ठलदास और विठ्ठलराय के नाम से सम्बोधित किया है। साहबरामजी के गुरु गोविन्दरामजी ने उन्हें वील्हाजी कहा है। साहबरामजी राहड़ ने तो अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'जम्भसार' में उन्हें वील्हदेव कहा है।[2] जम्भसार में इनके नाम है, यथा-वील्हो, बीठळ, वीठळ, वील्हेसुर, वील, वीलो, वील्ह, वील्हेश्वर आदि। महर्षि वील्हाजी की स्तुति में साहबराम जी ने इन्हें वील्ह कहा है। वील्होजी की वाणी में हमें उनके अनेक नाम पढ़ने को मिलते हैं, यथा-वील्ह, बील, बील्ह, वील्हा आदि। लेकिन बिश्नोई समाज में तो आप वील्होजी के नाम से अधिक प्रसिद्ध हुए हैं।

वील्होजी वेदान्तियों के साथ घूमते-फिरते एक बार गांव हिमटसर (जिला-बीकानेर) में पहुंचे। सुबह वे बाहर घूमने निकले तो उन्होंने जाम्भोजी के सबदों का पाठ सुना। एक स्त्री से पूछने पर उन्हें मालूम हुआ कि पास में तालवा गांव है, जहां जाम्भोजी का धाम है। यहां सुबह-सुबह होम होता है और साखी-सबदों का पाठ होता है। वील्होजी ने अपने साथी वेदान्तियों को वहीं छोड़ा और वे जाम्भोजी के धाम मुकाम पहुंच गये।

जाम्भोजी (सन् 1451-1536) के अन्तर्धान होने के आठ वर्ष बाद सन् 1544 में वील्होजी मुकाम आये थे। इसी समय उन्होंने 'गुरु तारि बाबा, बोह दुःख सह्या सरण्य विण्य तेरी, करि-करि करम कुफेरा।' नामक साखी जाम्भोजी को निवेदन करते हुए गाई थी।[3] इससे उनकी आंखों में पुनः ज्योति आ गई, मानो उनके ज्ञान-चक्षु खुल गये। लोगों ने यह एक चमत्कार देखा और उन्हें बहुत अचम्भा हुआ। उन्हें जाम्भोजी की भविष्यवाणी याद आई। जाम्भोजी द्वारा बताई गई सब बातें लोगों को वील्होजी में नजर आई। उसी समय जाम्भोजी के शिष्य नाथोजी ने उन्हें 'पाहळ' (दीक्षा) देकर बिश्नोई धर्म में दीक्षित कर लिया था।

बिश्नोई समाज में यह बात प्रचलित है कि जाम्भोजी ने वील्होजी के

(1) श्री महर्षि स्वामी वील्हाजी का जीवन चरित्र, वि.सं. 1970 (परिशिष्ट क)
(2) श्री जम्भसार-साहबराम जी राहड़, प्रयाग, वि.सं. 1978, प्र. प्रथम, पृ. प्रथम
(3) 'संत कवि वील्होजी और उनकी वाणी' पर लेखक द्वारा राजस्थान का संत साहित्य, राष्ट्रीय संगोष्ठी, 24 से 26 मार्च, 1993, जोधपुर में पत्र वाचन।

इस धर्म में आने की तथा इसे चलाने की भविष्यवाणी अपने जीवित काल में कर दी थी। जाम्भोजी ने अपने तीन चेलों को तो महंत बना दिया था और चौथे चेले के लिए जगह खाली छोड़ दी थी। जब अन्य चेलों ने पूछा तो जाम्भोजी ने कहा कि मेरा चौथा चेला लखनऊ का रहने वाला स्वांतीशाह है, जो आठ वर्ष बाद यहां आएगा। वह एक खाती के घर जन्म ले चुका है। वही पंथ की देखभाल करेगा। उसे मेरा ही रूप समझना। चेलों ने पूछा ''महाराज, हमें पता कैसे चलेगा?'' तब उन्होंने बताया कि वह मेरे सबदों को एक बार सुनकर ही याद कर लेगा। जब सन् 1536 में जाम्भोजी अपना शरीर लालासर में छोड़ने लगे तो चेलों ने पूछा-''महाराज, पंथ का धणी कौन होगा?'' तब, जाम्भोजी ने ऊपर वाली बात पुनः बतलाई।

जाम्भोजी महाराज ने मानवतावादी धर्म चलाया था और अनेक जन कल्याण के कार्य किये थे। जीवों को बचाने, पेड़ पौधों को लगाने, नशे को छुड़ाने आदि, जाम्भोजी द्वारा शुरु किये गये मानव कल्याण के कार्यों को संत वील्होजी ने भी जारी रखा।

वील्होजी के गुरु नाथोजी थे।[4] नाथोजी को जाम्भोजी के सभी सबद कण्ठस्थ थे। उन सब सबदों को वील्होजी ने एक ही दिन में मौखिक याद कर लिया था। गुरुमंत्र लेने से उनका अज्ञान खत्म हुआ और उन्हें ज्ञान का प्रकाश मिला। उनकी पुरी उपाधि हटा दी गई। अब उनका नाम था वील्होजी।

एक हस्तलिखित प्रति से पता चलता है कि सभी 'सबद' नाथोजी के कण्ठस्थ थे। फिर वील्होजी ने उन्हें अपने शिष्यों को लिखवाया था। देखिये-

''अनन्त सबद सतगुरु कह्या, वरस पच्यासी परवाण।
नाथैजी कै कंठ रह्या, अता लिखाया वील्ह सुजाण।[5]

परमानन्दजी बनियाळ के सन् 1753-62 के एक हस्तलिखित पोथे से यह पता चलता है कि सारा ज्ञान नाथैजी ने वील्होजी को दिया था और वील्होजी ने सबसे पहले 'कथा ग्यानचरी' कही थी।[6] इसके बाद उन्होंने कथा अवतारपात, कथा गूगळीयै की, कथा धड़ाबन्ध चौहजुगी, कथा झोरड़ा की, कथा जैसलमेर की, कथा दूणपुर की, विसन छतीसी, बतीस आखड़ी आदि

(4) श्री जम्भदेव चरित्र भानु-स्वामी ब्रह्मानन्दजी, प्रकाशक चौधरी धर्मसिंहजी, इटावा, 1-9-1901, भूमिका पृ. 2

(5) जाम्भोजी रा सबद श्री वायक-ह.लि. ग्रंथ, वि.सं. 1928, (व्यक्तिगत संग्रह)

रचनाएं लिखी। उनके हरजस और साखियां तो राजस्थानी लोक-साहित्य में विभिन्न राग-रागनियों में गाई जाती है। इस प्रकार उन्होंने राजस्थानी और हिन्दी भाषा में अनेक रचनाएं लिखी थी। लोक को विषय बनाकर उन्होंने अनेक कथा-काव्यों की रचना की थी।

कवि वील्होजी की वाणी से जाम्भोजी के जन्म एवं निवास सम्बन्धित बहुत महत्वपूर्ण जानकारियां मिलती है। 'कथा धड़ाबन्ध' चौहजुगी का यह छंद देखिये-

पंदरा सै अठोतरै, गुर आयो करि भाव।
कुपरि पलटण परे करण, थापण निरत्य नियाव। (50)

'कथा अवतारपात' का यह छंद भी देखिये, जिसे बिश्नोई समाज के लोग एक मंत्र के रूप में जपते हैं-

धन्य जंगळि धन्य संभर, धन्य ए बाळ गुवाळ।
जांही संग रामत्य रम्यौ, लाळण लीळ भुंवाल।।
हरी कंकेहड़ी हरया वन, जित प्रभु कियो प्रवेस।
रूंखां वळि रळि आवणी, जो रमतो बाळै भेस।।
परच्या पसु पंखेरवां, जां जीवां उतिम जात।
पवित्र किया जोत सूं, परची गुपत जमात।।
धन्य दीहाड़े रीण धन्य, गुर परगट संसार।
वील्ह कहै जां औळख्यौ, ते उतरसी पार।।

'कथा जैसलमेर की' के कवित नं. (18) से जाम्भोजी के समकालीन राजाओं के साथ उनके सम्बन्धों का भी पता चलता है। यह छंद इतिहास की दृष्टि से भी बड़ा महत्वपूर्ण है। इसमें इन ज्ञात राजाओं के अतिरिक्त अन्य राजाओं की ओर भी संकेत किया गया है, जो एक खोज का विषय है।

वील्होजी ने लोगों की आस्था धार्मिक नियमों में बनाये रखने के लिए जोधपुर के तत्कालीन नरेश की सहायता भी ली। राजा ने उन्हें 'खूंटा-कोरड़ा' प्रदान किया था। इसका अभिप्राय है-राजा का पूरा साथ और नियम न मानने वालों को दण्ड का भय। इस बात का एक उदाहरण बीकानेर जिले के गांव रासीसर में देखने को मिलता है। कहते हैं, जब वील्होजी इस गांव में नियम न मानने वालों को नियम बताने आये, तब उन्होंने एक खेजड़ी

(6) परमानन्द जी का पोथा-ह.लि. ग्रंथ, वि.सं. 1810-19, स्वामी विवेकानन्द संग्रहालय, मंडी आदमपुर (हरियाणा) परिशिष्ट 'ग' 1

की सूखी लकड़ी का खूंटा गाड़ा था। वह खूंटा आज खेजड़ी का एक हरा भरा वृक्ष, प्रतीक चिन्ह के रूप में बिश्नोई मन्दिर में खड़ा है।

यह बात बहुत प्रसिद्ध है कि जाम्भोजी के अन्तर्धान होने के बाद इस नवीन धर्म के नियमों में शिथिलता आने लगी थी। तब संत कवि वील्होजी ने अपनी वाणी एवं प्रभाव से इस धर्म को स्थिर रखा। उन्होंने धर्म-नियमों की पालनार्थ जगह-जगह अपने तम्बू लगाये, लोगों को धर्म-नियम बताये और उनकी व्याख्या की। आपने लोगों की अकाल में आर्थिक सहायता की। हरे वृक्ष न काटने का लोगों को संदेश दिया और अमल, तम्बाखू, भांग, मद, मांस आदि के नशे छुड़ाये। पानी छानने के लिये नातणा (कपड़े का छोटा टुकड़ा) दिया। उनकी बतीस आखड़ी का यह छंद देखिये-

तीसां ऊपर दोय आखड़ी गुरु कही।
जो बिश्नोई होय धरम पाळै सही।(32)[7]

वील्होजी ने जाम्भोजी और विष्णु भगवान को एक ही माना है। उनकी 'विसन छत्तीसी' का यह छंद यहां द्रष्टव्य है-

औउंकारे आदि गुर, निरंजण निराकार।
आकारे जुग जो गयो, आप रह्यौ निराकार।
आप रह्यौ निराकार, सांम्य सूनकार संमायौ।
अलख न लखीयो जाय, भेद कहीं विरलै पायौ।
आदि विसन बोहरूप किया, जुगे जुग जुवा।
वील्ह कहै जपो विसन, जो आपे तैं आपे हुवा।1।

वील्होजी ने बताया गुरु महाराज जाम्भोजी ने जो वाणी कही है हमें उसे ही सच मानकर अपने हृदय में धारण करना चाहिये। 'यथा-ग्यानचरी' का यह छंद देखिये।

सांभल्य प्राणी सुगर वांणी, साच करी हिरदे सही।
गुरमुखि जाणी मति परवाणी, ग्यानचरी वील्हजी कही। (130)

कवि वील्होजी के दोहे, सोरठे, कवित्त तो बड़े नीतिपरक और सटीक हैं। उन्होंने अपनी रचनाएं दोहा, चौपई, सोरठा, कुण्डलियां, कवित्त आदि छंदों में लिखी थी। आपने उस समय में प्रचलित लोक-कथाओं, जन-श्रुतियों, प्रवादों और पौराणिक आख्यानों को भी कथा काव्यों के रूप में

(7) शब्दवाणी जम्भसार, संशोधक रामदास, प्रकाशक स्वामी ब्रह्मदास जी, मेहराना टीबा, जिला-फिरोजपुर, संवत् 1993 (इसमें देखिये वील्होजी की बत्तीस आखड़ी)

लिखा, जो आज भी लोगों की जबान पर है। बातों का तो उन्हें विशेष कवि माना गया है। एक कवि ने उनके विषय में कहा भी है-

वातां वील्ह तेज कवि वाणी, सुरजन गीत धरम सुवांति।

उनकी कथा गूगळियै की से मालूम होता है कि वि. सम्वत् 1542 में मरुभूमि में अकाल पड़ा था-

संमत कहावै पनरासयो, कुसमू संभळ बयाळो पयो।
जीवां जुण्य संताई भूख, गउवां मिनखां इधको दूख।2।

वील्होजी महाराज साधारण वेस में भी एक बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनके इन सभी कार्यों से राजस्थानी भाषा-साहित्य समृद्ध हुआ है क्योंकि उनकी समस्त वाणी मरुभाषा में है। उनकी एक महत्वपूर्ण रचना है- 'कथा सच अखरी विगतावली' अर्थात् सच्ची और खरी बातों की विगत। इस रचना में दैनिक बोलचाल की भाषा को शुद्ध बोलने पर जोर दिया गया है। इसका महत्व केवल 'जांभाणी साहित्य' में ही नहीं है, बल्कि सारे राजस्थानी और हिन्दी साहित्य में भी है। कवि वील्होजी ने 17 वीं शदी में भी भाषा को शुद्ध बोलने पर विचार किया था। ऐसा काम उनसे पहले और बाद में किसी अन्य कवि ने नहीं किया है। इससे पता चलता है कि वे कितने जागरुक कवि थे। कुछ छंद देखिये-

दोपा चौपा पीया कहै, कूड़ साथि कुड़ीयारा वहै।
पाणी पीयो कहै विचारि, साचो आखर औ संसारि।11।
पंथ कित जायसी उं पुछाय, ओ पंथ जायसी उम गांव।
पंथ कित आवै नहीं जाय, कूड़ कह्या बोले बोलाय।16।

विश्व में आज लोग बिगड़ते हुए पर्यावरण को देखकर चिंतित है और पेड़ों की रक्षार्थ चिपको आंदोलन जोरों पर है परन्तु इस पर सर्वप्रथम कार्य संत-कवि वील्होजी ने ही किया था। बिश्नोई धर्म में तो वन्य-जीव संरक्षण और पर्यावरण रक्षार्थ कई आवश्यक नियम हैं यथा- थाट को अमर रखना अर्थात् भेड़-बकरियों को न मारना, हरे वृक्षों को न काटना और काटने देना, बैल को बधिया न करना, पानी को छान कर पीना, प्रातः काल हवन करना आदि। वृक्ष रक्षार्थ दो बिश्नोई स्त्रियों करमा और गौरां के वि.सं. 1661 में बलिदान का वर्णन सर्वप्रथम कवि वील्होजी ने ही अपनी साखी में किया है।

अध्यात्म के दृष्टिकोण से संत कवि वील्होजी के हरजस विशेष महत्व रखते हैं। इन हरजसों में हरि के निर्गुण और सगुण दोनों रूपों का वर्णन हुआ है। ये हरजस आज भी लोक-जीवन की थाती है और विशेष अवसरों

पर गाये जाते हैं। कवि का सम्बन्ध मन की भावना और भक्ति से हैं। वे जाति पांति से दूर, राम रहीम को एक मानने वाले थे।

अलाह अलेख निरंजण देव, किण्य विध्य करुं तुम्हारी सेव।1।
विसन कहूं जांकौ विस्तार, किसन सोई सिरज्यौ संसार।
गोम्यंद सौ ब्रमंडा गहै, सोई सांमी जुगे जुग्य रहे।2।
अलाह सोई जो उंमति उपाय, दस दर खोलै सोई खुदाय।
लख चौरासी रौह परवरै, सोई करीम जौ एती करै।3।
गोरख जो ग्यान गम की कहै, महादेव जो परमंन की लहै।
सिध सोई जो साझै अती, नाथ सोई जो त्रभुवण पती।4।
जोगी सो जीण्य जरना जरी, भगति सोई जीण्य भाव सूं करी।
आपा मुसस मुसळमांण, सतगुर कहै साच करि जाण।5।
सिध साधु पकंबर हुआ, जपै एक भेख जुजूवा।
अपरंपर का नांव अनंत, वील्हाजी सिंवरि सोई भगवंत।6।

महात्मा वील्होजी के सम्बन्ध में एक प्रवाद बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि एक बार मारवाड़ के शासक सूरसिंह (सन् 1535-1619) महात्मा वील्होजी से मिलने गये थे। उस समय एक चारण ने मौसम के विपरीत तीन परचे-बाजरे के सीट्टे, काकड़िया और मतीरिया मांगे थे। वील्होजी ने अपने सिद्धि बल से वे तीनों चीजें उसी समय उन्हें उपलब्ध करवाई थी। इससे राजा सूरसिंह बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उसी समय वील्होजी को ताम्रपत्र लिखकर दिये। इसी तरह ही उन्होंने 'अज्ञानो' नामक एक भूत साधक को भी 'परचा' देकर बिश्नोई पंथ में शामिल किया था। इस प्रकार आप आजीवन लोगों की भलाई का कार्य करते रहे। संत कवि वील्होजी के कार्यो से यह प्रगट होता है कि वे एक बहुमुखी व्यक्तित्व और कृतित्व के स्वामी थे। उनकी महिमा बहुत ऊंची है। बिश्नोई समाज में तो जाम्भोजी महाराज के बाद उनका ही स्थान सबसे ऊंचा है।

महात्मा वील्होजी अपने अंतिम समय में जोधपुर से 50 कि.मी. दूर रामड़ावास गांव में रहने लगे थे। यहीं पर ही उन्होंने वि.सं. 1673 (सन् 1616) की चैत्र सुदी एकादसी, रविवार को अपना नश्वर शरीर छोड़ा था। उस समय उन्हें अपने इष्टदेव जाम्भोजी के पवित्र धाम मुकाम से दूर रहने का बड़ा रंज था। अपने अंतिम समय में भी उन्होंने 22 दोहों की एक साखी की रचना की। उसी साखी (उमावड़ो) की दो पंक्तियां द्रष्टव्य है-

बल्य जाउ जाम्भजी रै नांव नै, साधां मोमीणां रो प्राण अधार।
तूं जांहरै हिरदै वस्यौ, तेरा जन पुंहता पार।(1)[8] टेक

वील्होजी ने अपना शरीर रामड़ावास (जोधपुर) में छोड़ा था। वहां उनका मन्दिर बना हुआ है, जिसे उनकी शिष्य परम्परा के प्रसिद्ध संत साहबराम जी राहड़ ने वि.सं. 1911 में बनवाया था। कवि राजूराम जी गायणा ने रामड़ावास को एक धाम मानकर इसकी प्रशंसा की है, देखिये-

रामड़ास मुख धर्म, नित ध्यावै जम्भ नरेश।
मंदिर शोभा क्या कहूं, जहां वील्ह कीयो उपदेश।
भए वहां वील्ह देवा, पंथ के बड़े रहे खेवा।
संत नित करै जहां सेवा, चढ़ै नित खीर खाण्ड मेवा।।

वील्होजी ने साहित्य निर्माण का कार्य तो किया ही, इसके साथ ही अनेक सामाजिक कार्य भी किये। उन्होंने जाम्भोलाव पर वि.सं. 1648 में दो मेले प्रारम्भ किये। प्रथम चैत बदी 11 से अमावस्या तक 'चैती मेला' और दूसरा भादवा की पूर्णिमा को माधी मेला। मुकाम में आसोज बदी अमावस्या का मेला (वि.सं. 1648 में) वील्होजी ने ही प्रारम्भ किया था। उन्होंने लोगों को धर्माचरण पर दृढ़ रहने का संदेश दिया। जीवों की रक्षा के लिये 'थाट अमर रखाये' वृक्षों की रक्षा करने की लोगों को प्रेरणा दी, पानी को छानकर पीना बताया। बीकानेर, जैसलमेर और जोधपुर से उन्हें धर्म रक्षार्थ अनेक ताम्र पत्र मिले। उन्होंने जाम्भोजी की परम्परानुसार अनेक लोगों को जिनका आचरण धर्मानुकूल था, उन्हें 'पाहळ' देकर बिश्नोई बनाया।

संत कवि वील्होजी का जन्म-स्थल हरियाणा था लेकिन उनकी कर्मस्थली मरुस्थल ही रहा। वे मरुधरा के जन कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए और उनकी वाणी का प्रचार सर्वत्र हुआ। आज उनकी वाणी मानव के लिये उपयोगी है, उनके प्रसिद्ध शिष्य महात्मा सुरजनदास जी ने कहा है-

'सुक्रत ग्यान सळेह, दीन पति पूरी दाखवै।
वीठळदास वळेह, मिलै न सारी मुरधरा।।'

महात्मा वील्होजी की कृतियां

(1) कथा ग्यानचरी- यह कथा 132 (26+106) दोहे-चौपाइयों की मुक्तक रचना है, जिसमें ज्ञानाचरण की बातें हैं। इसमें छंद 91 की एक पंक्ति हैं।

(8) साखियां-वील्ह बिश्नोई-पत्र 40, 20 वीं श. (इस हस्तलिखित ग्रन्थ में जम्मे की 93 साखियां है, जिनमें 7 वील्होजी की है, देखें-परिशिष्ट 'ख')

इसमें प्रमुखत: भगवद्-महिमा पाप-पुण्य विचार, नरकवास के कारण, नरक का दु:ख, स्वर्ग प्राप्ति के उपाय आदि बातों का वर्णन है। परमानन्दजी के पोथे में यह रचना जाम्भोजी की वाणी के बाद लिखी गई है। अत: इसका महत्व सबदवाणी के पश्चात् सबसे अधिक है। जाम्भोजी ने ये सभी धर्मसम्मत बातें वील्होजी के गुरु नाथोजी को बताई थी और फिर नाथोजी ने अपने शिष्य वील्होजी को बताई। बाद में वील्होजी के शिष्य सुरजनजी पूनिया ने अपनी रचनाओं-ग्यान महातम, ग्यान तिलक, धरमचरी आदि में इन बातों का विस्तार से वर्णन किया है।

(2) वील्होजी की साखियां-

1. गुर तारि बाबा, तूं साहिब साबे दुख भंजण, मैं अपती तो गुर मेरा।
   पंक्तियां-11, कणां की, राग-जंगळी गौड़ी।
2. आवो मिलो साधो मोमिणौ, रळि मिळि जमौ रचाय।
   पंक्तियां-11, कणां की, राग-सुहब।
3. भणौ गुणौ गुणवंतो देव, जैंह के गुणै न लाभै छेव।
   पंक्तियां-21, कणां की, राग-सुहब।
4. बाबो सांभळै छै वागड़ देस, पोहमी पीतंबर आवियौ।
   छंद-5, छंदां की, राग धनांसी
5. पहले मळै की मांड हुई, सोळा सै अठताळै।
   तेरा धरमी धरम करै, तीरथ कल्यौ उजाळै। छंद-7, छंदा की, राग सिंधू।
6. करि क्रपण कहियै विसनोई, धरम नेम तांह बुत न होई।
   धरम जुह न चालै जूता, धरम हारि के दीन विगूता। चौपई-10, राग आसा।
7. दोय तरवर इण वाग मां एक खारौ एक मीठ।
   नुगरां नजरि न आवही, सुगरां सनमुखि दीठ।। दोहे-5, राग धनांसी।
8. करमणि चलणौ इणि संसारि, सबळो करि करि चालियै।
   जीवड़ा नै जोखो होय, सोई डर पालियै। छंद-5, छंदा की, राग-आसा धाहड़ी।
9. आल्हाणी आतम थकै, आळोच्यौ मन मांहि।
   जां जां जुग मां जीवियै, ते दिन दुख मां जांहि। दोहे-17, राग रामगिरी।
10. 'उमाहो' बल्य जाऊं झांभ (रे नांव) नै, साधां (मोमिण रो) प्राण आधार।
    तूं जारै हिरदै वस्यौ, तेरा जन पंहता पार।।टेक।। दोहे-22, राग धनांसी।

प्रथम साखी वील्होजी ने मुकाम पर (वि.सं. 1601) सर्वप्रथम जाम्भोजी के सबद सुनने के बाद गायी थी। इससे उनकी आंखों में ज्योति आ गई थी। इस

आत्म निवेदन में जाम्भोजी से मुक्ति की प्रार्थना की गई है। इसके बाद नाथोजी ने उन्हें गुरुमंत्र देकर बिश्नोई पंथ में दीक्षित कर लिया था। यह घटना वि.सं. 1611 के कार्तिक सुदी सप्तमी की है। यह 11 पंक्तियों की कणां की साखी है और राग जंगली गौड़ी में गेय है।

द्वितीय साखी जम्मे की आठवीं साखी है और राग सुहब में गेय है। इसमें जागरण में आने और विष्णु भगवान का स्मरण करने का निवेदन है।

तृतीय साखी भी राग सुहब में गेय है। इसमें इक्कीस पंक्तियां हैं, जिनमें लोक व्यवहार की बातों का वर्णन है। वृक्षों को काटने पर कुंभीपाक नरक भोगना पड़ेगा, यह कथन बिश्नोई धर्म के प्रसिद्ध नियम 'हरे वृक्ष नहीं काटना' की ओर संकेत करता है।

चतुर्थ साखी पांच छन्दों की रचना है, जो राग धनांसी में गेय है। इसमें जाम्भोजी के मरुभूमि में अवतार लेने और तेतीस कोटि जीवों के उद्धार करने की बात कही गई है।

पांचवीं साखी सात छंदों की रचना है, जो राग सिंधू में गेय है। इससे पता चलता है कि जाम्भोलाव पर सर्वप्रथम मेले का प्रारम्भ वील्होजी ने वि.सं. 1648 में चैत बदी अमावस्या को किया था। वि.सं. 1664 को चैत बदी 14 को एक ब्राह्मण ने किसी श्रद्धालु की दोवड़ चुरा ली। भाखरसी राजपूत ने उस ब्राह्मण को अपने पास रख लिया। राजपूतों और बिश्नोइयों में लड़ाई हुई। चुखनू बिश्नोई ने भाखरसी को मार डाला। धानू पूनिया ने अपना बलिदान दिया। इससे लड़ाई शांत हुई। आत्म बलिदान की यह लौकिक घटना है।

छठी साखी 10 चौपाइयों की राग आसा में गेय एक सुन्दर रचना है। इसमें झूठ, अहंकार आदि दुष्प्रवृत्तियों को लोगों से छोड़ने का आग्रह है।

सातवीं साखी में पांच दोहे हैं, जो राग धनांसी में गेय है। इसमें चार ग्रहणीय गुणों और चार अग्रहणीय अवगुणों को बताया गया है।

आठवीं साखी पांच छंदों की रचना है, जो राग आसाधाहड़ी में गेय है। यह 'रामासड़ी' की साखी के नाम से प्रसिद्ध है। रामासड़ी (रैवासड़ी), जोधपुर में खेजड़ियों को काटे जाने के विरोध में करमा-गौरां (दो सगी बहनों) ने वृक्षों की रक्षार्थ अपना बलिदान दिया था, इस बात का वर्णन साखी में विस्तारपूर्वक किया गया है। किसी भी स्त्री का यह वृक्षों के लिये प्रथम बलिदान है।

नवीं साखी में 17 दोहे हैं, जो राग रामगीरी में गेय है। यह 'तिलवासणी'

की साखी के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें भी खेजड़ी की रक्षार्थ खींवणी, मोटो और नेतू नैण के आत्म बलिदान की कथा का सोल्लास वर्णन है।

दसवीं साखी 22 दोहों की रचना है, जो राग धनांसी में गेय है। यह वील्होजी की अंतिम रचना (वि.सं. 1673) है, जो उन्होंने अपने अंतिम समय में रामड़ावास में बड़े भावावेश में गायी थी। यह 'उमावड़ौ' नाम से भी प्रसिद्ध है और रात्रि-जागरण में इसे आवश्यक रूप से गाया जाता है।

(3) कथा धड़ाबंध चौहजुगी-यह पौराणिक पृष्ठ भूमि पर लिखी गई रचना है। इसमें 53 दोहे हैं, जो राग धनांसी में गेय है। इसके अनेक छंदों में (6) 'दान सील तप भाव' की टेक लगती है। इस कथा में चारों युगों में अवतरित दस अवतारों का वर्णन है। इस कथा के एक छंद (46) से यह प्रगट होता है कि जाम्भोजी स्वयं विष्णु हैं। कथा पर जाम्भोजी की वाणी का भी प्रभाव स्पष्ट झलकता है। इस कथा के एक छंद (53) में जाम्भोजी के जीवन चरित की प्रसिद्ध कथा 'कथा अवतारपात' का भी संकेत मिलता है।

(4) मंझ अखरा दुहा अवतार का- यह 27 सोरठिये दोहों की एक रचना है, जो राग खंभावची में गेय है। सोरठे के अन्त में 'देवजी' शब्द जाम्भोजी का प्रतीक है। इनमें जाम्भोजी का गुणगान, उनके लोकोपकारक कार्य, उनकी महिमा और भक्ति-भावना का वर्णन है। कुछ सोरठे नीतिपरक भी है।

(5) कथा अवतारपात- यह राग आसा में गेय 142 (40+102) दोहे-चौपाइयों की रचना है। इसमें छंद 48 एवं 54 की एक पंक्ति हैं। इसके अपरनाम कथा अनहरपात, औतारपात का बखाण, अवतार चिरत झांभाजी का आदि हैं। इस कथा में जाम्भोजी का समग्र जीवन चरित है, विशेषत: बाल्यकाल की घटनाओं का विशेष वर्णन है। इसमें अनेक ऐसे शब्द भी आये हैं, जो प्राय: बिश्नोई समाज में प्रचलित हैं। इस कथा के माध्यम से कवि ने तत्कालीन समाज में व्याप्त कर्मकाण्ड और पाखण्ड पर तीखा प्रहार किया है। कथा के छंद 131, 132, 133 और 142 को कालान्तर में जाम्भोजी की स्तुति के रूप में प्रयोग किया गया है।

(6) कथा गूगळियै की-यह 86 (19+67) दोहे-चौपाइयों की राग आसा में गेय रचना है। इसमें छंद 69 की एक पंक्ति है। परमानन्दजी के पोथे में इसके 81 छन्द हैं। इसके छंद 82 से 86 एक अन्य हस्तलिखित ग्रंथ से लिये हैं। इसमें संवत् 1542 में पड़े अकाल का, जाम्भोजी द्वारा गूगल का ऊंट बनाने का, लोगों का अकाल में अन्यत्र जाने का, संकट में लोगों को जाम्भोजी द्वारा सहायता करने आदि का वर्णन है। कथा के अंतिम छंद में कवि ने इस धर्म

को 'मुकती खेत को पंथ' कहा है।

(7) कथा पूल्हैजी की-यह राग आसा में गेय 25 (9+15) दोहे-चौपाइयों की रचना है। इसमें छंद 24 की एक पंक्ति है। पोथे में इसके 23 छंद है, अन्य दो छंद वि.सं. 1940 के एक ग्रंथ से लिये गए हैं। पूल्होजी-जाम्भोजी के चाचा थे। उनके मन में भी जाम्भोजी के प्रति अनेक प्रश्न थे। जाम्भोजी ने उन प्रश्नों का उतर उन्हें दिया और उनके सब संशय मिटाये। बिश्नोई पंथ में सर्वप्रथम पूल्होजी ही दीक्षित हुए थे।

(8) कथा सच अखरी विगतावली-इसके नाम से स्पष्ट है कि यह कथा वास्तव में सच्चे अक्षरों की विगत है। यह रचना भाषाशास्त्र की दृष्टि से बड़ी महत्त्वपूर्ण है। कवि ने 17 वीं शताब्दी में भी भाषा को शुद्ध बोलने की ओर ध्यान दिलाया है। इसमें 55 (12+43) दोहे-चौपई छंद है। छंद 23 की एक पंक्ति है। पोथे में इसके 50 छन्द हैं, 5 छन्द (50-54) जम्भसार से लिये गये हैं।

(9) विसन छतीसी- इस रचना में वर्णमाला के 36 अक्षरों के द्वारा विष्णु की महिमा बताते हुए 36 कुण्डलियां लिखी गई हैं। 36 अक्षर हैं-औ, आ, इ, उ, ए-पांच, क से य वर्ग तक (ञ को छोड़कर)- अठाईस, स, ष, और ह-तीन प्रत्येक कुण्डली की अंतिम पंक्ति में 'विसन जपौ संसारि' की टेक लगती है। इनमें जाम्भोजी की महिमा और धर्म नियमों पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया है।

(10) कथा दूणपुर की-यह राग आसा में गेय 65 (23+42) दोहे-चौपई छन्दों की रचना है। छंद 60 की एक पंक्ति है। पोथे में छंद आगे पीछे हैं और उनकी संख्या 62 हैं। वि.सं. 1940 के एक हस्तलिखित ग्रन्थ में तीन छंद अतिरिक्त हैं। इस कथा में जाम्भोजी द्वारा अपने भक्त मोती मेघवाल को राव बीदा की कैद से छुड़ाये जाने का विस्तृत वर्णन है। जाम्भोजी ऊंच-नीच और जाति-पांति के भेद को नहीं मानते थे।

(11) परमोधरूपी छपइया- वील्होजी के छपइयों की संख्या 45 हैं। पोथे में 41 छपइये मिले हैं, शेष अन्य हस्तलिखित ग्रंथों से लिये गये हैं। 'कथा जैसलमेर की' के कवत-दिल्ली सिकन्दर साह (18) और प्रथम दया करि भाव (19) इनमें शामिल है परन्तु इन्हें यहां नहीं लिखा गया है। इनमें कवि का अनुभव, आत्मविश्वास और ज्ञान भरा पड़ा है। ये छपइये आज भी कहावतों की भांति बिश्नोई समाज में प्रचलित हैं।

(12) वील्होजी के हरजस-

1. दिल दुरमति दुजै साध कहावै, ताको मोहि अचंभो आवै।टेक।

पंक्तियां-9, राग आसा।

2. दिल अवर मुखि अवर सुणावै, दिल का कपट धणी कूं न भावै।टेक।
   पंक्तियां-4, राग आसा।
3. अैसा मूल खोजो, भला तंत चीन्हौ, सतगुर सतपंथ बताय दीन्हौ।टेक।
   पंक्तियां-9, राग रामकली।
4. जन रे भरम छाड़ि भज्य केसो। छंद-6, राग गवड़ी।
5. राम रहीम विसन विसमलाह, किसन करीम हमारे। छंद-5, राग गवड़ी।
6. साधौ घरै ही झगड़ो भारी। छंद-5, राग गवड़ी।
7. साधौ गुरु वताई एक बूंटी। छंद-5, राग गवड़ी।
8. अब मैं ग्यान रस्य रुच्य माळी। छंद-5, राग गवड़ी।
9. अलाह अलेख निरंजण देव, किण्य विध्य करुं तुम्हारी सेव।टेक।
   पंक्तियां-11, राग भैरूं।
10. ओ संसार नदी जल पूरि, वीच अथघ ढ़िग पलो दूरि।टेक।
    पंक्तियां-5, राग भैरूं।
11. उनमन सेती राचे मनां, एक मतौ करि पांचे जणा।टेक।
    पंक्तियां-6, राग विलावल।
12. अवधू नै अभिमान न होई, दुनिया की मान्य न रीझै सोई।टेक।
    पंक्तियां-5, राग आसा।
13. हरि कौ अरणियौ मांडि रै लुहारा, कूड़ क्रतब छाड़ि गिंवारा।टेक।
    पंक्तियां-6, राग आसा।
14. संतों अैसा डर डरिये।टेक। पंक्तियां-8, राग आसा।
15. हरि का ढ़िकोलिया ढूलो मेरा भाई, अैसी सींचौ वाड़ी सूकि न जाई।टेक।
    पंक्तियां-5, राग आसा।
16. अमली रे भइया अमल चढ़ावौ, अपणां अपणां सत बुलावै।टेक।
    पंक्तियां-5, राग आसा।
17. सुजिया सीवणौ सींविले संवारौ, दिन वरतै निस होय अंधियारौ।टेक।
    पंक्तियां-5, राग सोरठि।
18. तेरी मूरति कूं बळि जांव झंभजी, तेरी मूरति कूं बळि जाव।
    छंद-4, राग मल्हार।
19. गवरी का गीत न गाय। समझे मन चोरी है। छंद-6, राग गवड़ी।
20. मोह न कीजै मानवी, मोह तां हुवै अकाज म्हारा प्राणियां।
    छंद-10, राग गवड़ी।

वील्होजी की यह रचना सबसे महत्त्वपूर्ण है। ये उनके हृदय के आध्यात्मिक उद्‌गार हैं, जो स्वाभाविक हैं। पोथे में इनकी संख्या 20 है। ये हरजस लोक जीवन में बहुत प्रचलित है और विभिन्न राग-रागनियों में गेय हैं। आज भी बिश्नोई समाज की स्त्रियां धार्मिक अवसरों पर ये हरजस गाती हैं। कवि वील्होजी ने लोकजीवन में प्रचलित वस्तुओं को प्रतीक के रूप में लेकर इनकी रचना की थी।

(13) कथा जैसलमेर की-यह राग आसा में गेय 113 छंदों की रचना है, जिसमें दोहा (30), चौपाई (62), और कवित (21) है। क्रमांक 32, 40, 53, 62, 68, 86 आदि छंद अधूरी चौपाइयां हैं। इसी प्रकार कवित 3,6,18 की आठ-आठ पंक्तियां हैं। इस प्रकार कुल 113 छंद हुए। यह एक प्रसिद्ध कथा-काव्य है, जो इतिहास की दृष्टि से भी बड़ी महत्त्वपूर्ण है। इस कथा में वह ऐतिहासिक कवित्त 'दिल्ली सिकन्दर शाह, दे परचो परचायो' (18) मिलता है, जिसमें जाम्भोजी के सम्पर्क में आये, उनके समकालीन प्रसिद्ध राजाओं के नामों का उल्लेख हुआ है। इस कथा में ही तेजोजी चारण और लषमण जी गोदारा का नाम आया है, जो प्रसिद्ध कवि हुए हैं।

कथा में रावल जैतसी द्वारा जैतसमंद की प्रतिष्ठा पर यज्ञ के आयोजन एवं उस पर जाम्भोजी के बुलाये जाने की घटना का वर्णन है। अन्य ऐतिहासिक प्रमाणों से यह पता चलता है कि जैतसी ने जैतबंद का निर्माण वि.सं. 1570 में

---

(9) पोथे की प्रमाणिकता के सम्बन्ध में स्वयं परमानन्द जी का कथन है-

अनन्त सबद सतगुर कह्या, पच्यासी वरस परवांण।
नाथै कंठि रहिया अता, सेई सीख्या वील्ह सुजांण।।
वड पोथी गिण वील्ह की, दूजी सुरिजन दाख।
तीजै मुकनू मुझ गुरु, सुरनाण पिता मुझ आख।।
दसूंधी दामो खीराजी, रासोजी सुरतांण।
अै पांचूं परत्यां बांच कै, पोथो लिख्यो परवांण।।
के वात सुंणी साधां कनां, के पोथा मो परवांण।
परमाणंद सुरतांण रै, लिखिया सबद सुजांण।
दीठा वाच्या मैं लिख्या, सासतर मां था सोय।
ग्याता कोई वांचि कै, दोष न देइयो मोय।

परमानन्द का पोथा, प्रथम पत्र

किया था। अत: जाम्भोजी इसी समय वहां गये थे। इसी समय उन्होंने रावळ जैतसी को हवन की विधि बताई। वहीं पर जाम्भोजी ने जैतसी को चार वचनों को पालन करने का संदेश दिया था। कथा में जाम्भोजी और रावल जैतसी, तेजोजी चारण और ग्वाल चारण के संवाद बड़े उपयोगी हैं। दो बिश्नोइयों लषमण और पांडू को रावल ने अपने राज्य (खरींघा गांव) में बसाया था।

(14) कथा झोरड़ा की- यह राग आसा में गेय 33 (16+17) दोहे-चौपाइयों की रचना है। इसमें सोतर गांव के झोरड़ जाति के, रावण और गोयंद के द्वारा, बैल चुराने पर, जाम्भोजी द्वारा छुड़ाये जाने का वर्णन है। यह एक दृष्टांत कथा है, जो उस समय लौकिक जीवन में बहुत प्रचलित थी। कवि ने इसे कथा-काव्य के रूप में लिखा। कथा का अपरनाम 'कथा रावण-गोविन्द की' भी है।

(15) छूटक साखी (दूहा)- ये संख्या में 14 है। वील्होजी के अनेक फुटकर दोहे, सोरठे आदि छंद बिश्नोई समाज में बिखरे पड़े हैं। फुटकर दोहे-सोरठे अनेक प्रसंगों में कहे गये हैं। इनका उपयोग जम्मे की साखियों में भी किया गया है। इनमें गुरु महिमा नीतिकथन और धर्म-कथन है।

(16) कवत परसंग- इनकी संख्या 4 है। इनमें छंद भंग भी है। इनकी संख्या अधिक भी हो सकती है ये समाज में बिखरे पड़े हैं। 'कवत प्रसंग के' में ऐसे कवित हैं, जो किसी अवसर विशेष पर कहे गये हैं। इनमें अतिथि सत्कार, सत्य भाषण और अच्छी करणी का संदेश है।

(17) बत्तीस आखड़ी- इसमें 76 पंक्तियां हैं जिनमें अंतिम चार पंक्तियां दोहे की हैं। यह रचना वि.सं. 1993 (1936 ई.) में लाहौर से प्रकाशित शब्दवाणी के एक गुटके से ली गई है। बाद में संत ज्ञान प्रकाशजी एवं संत कनीराम जी ने भी इसे शब्दवाणी में छपवाया है। इस रचना में लौकिक आचरण की व्याख्या की गई है। बिश्नोई धर्म के उनतीस नियमों का भी इसमें प्रतिपादन हुआ है। विशेषत: अमावस का व्रत रखना, उस दिन के आचरण का तरीका, हरा वृक्ष न काटना, जीव हिंसा न करना, नशे-पते छोड़ना आदि पर विशेष प्रकाश डाला गया है।

(18) वील्होजी के आप्तोपदेश- इस रचना में 24 पंक्तियां हैं। जिनमें प्रथम 1-2 एवं अंतिम 23-24 पंक्तियां दोहे की है। वील्होजी के आप्तोपदेश में, यज्ञ की शुद्ध सामग्री और दैनिक व्यवहार की बातें हैं। ये अति उत्तम आप्तोपदेश हैं, जो 'कथा जैसलमेर की' के अन्त में दिये गए हैं। इस प्रकार वील्होजी के अनेक फुटकर छंद बिखरे पड़े हैं, जिनका संकलन अभी शेष

हैं। शोध हेतु यह एक उपयोगी विषय है।

वील्होजी की वाणी के सम्पादन में मेरा प्रयास उनकी मूल वाणी तक पहुंचने का रहा है। यहां उनकी मूलवाणी को यथावत् रखने का प्रयास किया गया है। पोथे में ष और ल़ का उपयोग ष (ख) और ल़ (ळ) के रूप में भी हुआ है परन्तु वाणी में इनका उपयोग ख, ष तथा ल, ळ के रूप में बड़े ध्यान से किया गया है। सभी ष हमेशा ख नहीं होता तथा सभी ल हमेशा ळ नहीं होता है। अनावश्यक अनुस्वार (.) हटा दिये गये हैं। वील्होजी की वाणी से सम्बन्धित सबसे प्राचीन हस्तलिखित प्रति 'परमानन्द जी का पोथा' है[9]। इस पोथे से पूर्व भी एक पोथा परमानन्दजी ने ही वि.सं. 1796 में लिपिबद्ध किया था। उसमें भी ये सब रचनाएं हैं। किन्हीं अपरिहार्य कारणों से वह पोथा और बिश्नोई समाज के वील्होजी की वाणी से सम्बन्धित अनेक हस्तलिखित ग्रंथ मुझे प्राप्त न हो सके, इसके पीछे कुछ कुटिल लोगों का हाथ था, जिन्होंने मूल ग्रन्थों को खुर्द-बुर्द किया है। अब समाज के उत्साही एवं शोध-दृष्टि रखने वाले लोगों को भी जागरुक रहना है ताकि भविष्य में ऐसी कठिनाई अन्य शोधार्थी के सामने न आये।

वील्होजी की वाणी में, जाम्भोजी की मूलवाणी, उनकी महिमा, धर्मोपदेश, उनका महिमामय व्यक्तित्व और उनके चमत्कार आदि का वर्णन किया गया है। उनकी यह वाणी मूलत: जाम्भोजी को समर्पित है। उनका कहना है-

जब लग मेरु अडग है, तब लग ससी अरु सूर।
जब लग आ पोथी सही, रहज्यो गुरु भरपूर।
वसुधा सब कागज करूं, सारदा लेख बणाय।
उदध-घोरि मिस कीजिये, तो हरि गुण लिख्यो न जाय।।

उनके समकालीन एवं परवर्ती कवियों ने न केवल उनसे प्रेरणा ली, बल्कि उनकी वाणी को अपनी रचनाओं का आधार बनाया। उनकी शिष्य परम्परा को देखने से भी पता चलता है कि कालान्तर में उनके अनेक शिष्यों ने जाम्भाणी साहित्य के सृजन में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है और वील्होजी की साहित्यिक परम्परा को चालू रखा है। मुझे तो यही निवेदन करना है कि-

मैं तो मांड्या मोह कर, पुस्तक देखि विचार।
सबदां अरथ अनंत है, जाणै सिरजणहार।।

अब यह ग्रंथ प्रकाशित होने जा रहा है तो मुझे बार-बार उन स्वर्गवासी

साधु-संतों, बंधु-बांधवों और मित्रों की याद आ रही है, जो मुझे किसी न किसी रूप में सात्यिक कार्य में लगे रहने की प्रेरणा देते रहते हैं। मैं स्वर्गीय महात्मा रामप्रकाश जी (संभराथळ), लालूराम जी गीला (सफेदपोस), गणेशदास जी देहडू (सैणीवास), ब्रह्मदास जी (महराणा टीबा), पिता श्री चौधरी भागीराम जी देहडू (अबूबशहर) आदि के प्रति नत मस्तक हूँ।

बचपन में मैनें वील्होजी की साखी 'उमावड़ो' सर्वप्रथम किसी जागरण में श्रद्धेय स्वामी चन्द्रप्रकाश जी (संभराथळ) से सुनी थी। उन्हीं के आशीर्वाद से मैं इस कार्य की ओर लगा। पूजनीया माताजी रामीदेवी बिश्नोई का सदैव मुझ पर अपार स्नेह रहा है। उन्होंने ही मुझे इस काबिल बनाया कि मैं आज वील्होजी की वाणी को संकलित कर सका।

इस शुभ अवसर पर मैं स्वर्गवासी संत स्वामी विवेकानन्द जी (मण्डी आदमपुर) को भी याद किये बिना नहीं रह सकता। आपने मुझे अपने संग्रहालय से अनेक प्राचीन हस्तलिखित एवं प्रकाशित ग्रंथ देखने तथा पढ़ने के लिये दिये। विशेषकर वि.सं. 1818-19 का लिपिकृत 'परमानन्दजी का पोथा', जो कि 'वील्होजी की वाणी' का आधार ग्रंथ है, मुझे उन्हीं की कृपा से ही प्राप्त हुआ। वे समय-समय पर अपनी सम्मति और दिशा-निर्देश भी देते रहे हैं। आज वे होते तो इस ग्रंथ को देखकर कितने खुश होते, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

मैं डॉ. मनोहर शर्मा (बीकानेर) का बहुत कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपनी वृद्धावस्था में भी मुझे अपने अमूल्य समय, सुझाव और दिशा-निर्देश दिये हैं। ग्रंथ को इस रूप में प्रकाशित करने का श्रेय डॉ. साहिब को ही जाता है।

अन्त में मैं प्रो. भूपतिराम जी साकरिया, वल्लभ विद्यानगर (गुजरात) को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस ग्रंथ की प्रस्तावना लिखकर मुझे कृतार्थ किया।

डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई
बीकानेर (राजस्थान)

1. कथा ग्यानचरी

दुहा

पहली नुंवण्य निरंजणां, जिहंका नांव अनंत।
सुर ब्रंभादिक खोजतां, आदि नै लाधौ अन्त।1।

कवि वील्होजी सर्वप्रथम निरंजन देव को नमन करते हैं, जिसके नामों का कोई अन्त नहीं है। ब्रह्मा और अन्य देवतागण खोजते-खोजते थक गये हैं लेकिन वे इस देव का कोई आदि-अन्त नहीं खोज सके।

अवगति अकल अलेख तूं , अनन्त अपार अछेव।
हिरदे कुंवळ हरख्यो जपूं, देवा ही अति देव।2।

हे भगवान्! आप गति रहित, अलक्ष्य और अनंत हैं, न आपका कोई पार पा सकता है और न ही आपका कोई निश्चित स्थान है। मैं हर्ष के साथ आपको अपने हृदय में स्मरण करता हूँ, क्योंकि आप देवों के भी देव हैं।

न तै रूप न जात्य कुळ, न तै माय न बाप।
जुग अनंता वरतीया, रह्यौ निरालंभ आप।3।[1]

आपका कोई स्वरूप नहीं है, न ही कोई आपकी जाति है, न आपके माता-पिता हैं। अनंत युगों में भी आपका न किसी से सम्बन्ध रहा है।

नित ही थो अबही अछै, वळि वळि होयसी सोय।
तास निरंजण देव नैं, विरळौ चीन्है कोय।4।[2]

हे विष्णु भगवान्! आप हमेशा थे, अब भी हैं और बार-बार आप प्रकट होते रहते हैं। ऐसे निरंजन देव को कोई बिरला ही पहचान पाता है।

पुरेष लोय अलोय मां, गिगन पयांळे सोय।
पंणमी ज परतीति सूं, अवर न दूजो कोय।5।

हे प्रभु! आप उत्पत्ति-प्रलय तथा आकाश-पाताल में भी हमेशा स्थिर हैं। ऐसे देव को प्रेम सहित मैं नमन करता हूँ, आप जैसा कोई दूसरा नहीं है।

लोय अलोय अनंतपुरि, भवण्य भवण्य बोह भंति।
सीसटि सिरजणहार की, लेखो आदि न अंति।6।

यह उत्पत्ति-प्रलय चौदह भुवनों में अनेक बार हुई है लेकिन आप संसार सृजनहार हैं तथा आपके आदि-अन्त का कोई हिसाब-किताब नहीं है।

नांव लीयंतां अनंत गुण, गुण नहीं कोइ गिंन।
सिदक न मेटो सांम्य सूं, जंपो एक विसंन।7।

आपका नाम लेने से अनेक गुण प्राप्त होते हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती। ऐसे स्वामी से प्रेम न हटाओ। हमेशा एक विष्णु का स्मरण करो।

जुग चौथै दसवौं विसन, संतां करण सम्भाळ।
वील्ह कहै एक वीनती, कथा चौपई-ढ़ाळ।8।

कलियुग में विष्णु के दसवें अवतार जाम्भोजी महाराज संतों की रक्षा करने के लिये यहां प्रकट हुए हैं। कवि वील्होजी कथा को ढ़ाल-चौपई के छन्दों में उनके स्वरूप का वर्णन करते हैं।

चौपई

पहली प्रणउं आदि विसंन, देव चरण चित राखू मंन।
झांभेसर गुर आय नांब हुं, ग्यानचरी बुध्य सार कहुं।9।

वे कहते हैं-सर्व प्रथम मैं विष्णु भगवान को नमन करता हूँ। अपने मन को उन्हीं के चरण कमलों में रखकर अपनी बुद्धि से जाम्भोजी महाराज की कथा ज्ञानचरी का वर्णन करता हूँ।

सिवरूं सतगुर सुख दातार, दुख भंजण तेतीसां तार।
सुर नर गंद्रफ जैह की आस, जंबू दीप कीयो परगास।10।

मैं उन परम दातार सतगुरु जाम्भोजी महाराज का स्मरण करता हूँ जो तेतीस कोटि देवताओं के दुखों को हरने वाले हैं। देवता, मनुष्य, गन्धर्व भी जिनकी आशा करते हैं, उन्होंने जम्बूद्वीप में ही अवतार लिया है।

भगतां काज्य कीयौ परवेस, भरथ खंड मंहि बागड़ देस।
संभरथळि उभो साथरी, नवखंडि जोति जुगति परचिरी।11।[3]

भगतों के कार्य सुधारने के लिये आप यहां पर आये हैं। भारत में बागड़ देश के संभराथल नामक साथरी पर आप विराजमान हैं। आपके प्रकाश की ज्योति नवखण्ड में फैली हुई है।

तीहं नै मांनै छव दरसणां, हित करि सुरनर सींवरै घणां।
खुध्या तीसनां नींद नै व्यापै, जोति सरूपी आयो आपै।12।

उन्हें छः दर्शन भी मानते हैं। मनुष्य और देवता भी प्रेम के साथ उनका स्मरण करते हैं। उन्हें भूख, प्यास, नींद आदि कुछ भी नहीं लगती हैं। वे तो स्वयं निरंजन हैं।

सांभळि सुगर तणां उपदेस, पाप धरम का कह नवेस।
मन्त्र अभिमान न आणै ग्रव, ओपति खपति संभाळै स्रव।13।

ऐसे सतगुरु के उपदेश को सुनो जिससे पाप और धर्म का निर्णय होता है। मन में किसी प्रकार का अभिमान प्रकट नहीं होता। जन्म और मरण की चिन्ता मिटती है।

अप दीठो औचर गीयांन, नीहचै निरमळ केवल न्यांन।
सोह देख सोह जांणै सही, खरी साखी झांभेसर कही।14।

श्री जाम्भोजी महाराज का अखण्ड ज्ञान है जो स्वच्छन्द और अटल है। वे तो स्वयं त्रिकालदर्शी हैं, इसलिये वे सही चीज को जानते हैं। उनका

यह ज्ञान सत्य है।

बोहा विधि धरम करै संसार, जीव दया विण्य सभ इक्यार।
दया दया सोह कोई कहै, दया भेद कोई न्यानी लहै।15।

संसार में अनेक धर्म हैं परन्तु जीवों पर दया के बिना सब व्यर्थ हैं। दया का नाम तो सब कोई लेते हैं लेकिन दया का भेद कोई बिरला ही जानता हैं।

जीव जात्य चौरासी लख, सरब जीव की करतो रख।
पर आतमां विरोध्य पाप, परो उपगार सुखी होय आप।16।

जीवों की चौरासी लाख यौनियां हैं, जिनकी जाम्भोजी महाराज देखभाल करते हैं। वे पाप को नष्ट करते हैं और दूसरों की भलाई में सुख मानते हैं।

पाप तणां छ तीन्य परकार, मन्यसा वाचा क्रम विकार।
त्यौह परकारे बंधै पाप, जो बंधै सो भुगते आप।17।

पाप तीन प्रकार से होते हैं-मन से, वचन से और कर्म से। इस प्रकार मनुष्य पाप के बन्धन में फंसता है। जो इस बंधन में फंसता है, वही उस पाप का फल भोगता है।

पाप कुबधि मन्यसा चित वहै, घात बोल मुख हुंता कहै।
हतै जीव भंज परसास, मूवा पछै दौरै में वास।18।

बुरे काम का मन से चिन्तन करना, कहकर किसी से हत्या करवाना और स्वयं अपने हाथ से किसी की हत्या करना, इन तीनों से पाप करने वाले मनुष्य का मरने पर नरक में निवास होता है।

अणछांण्यो पांण्णी वावरै, अवही पाप अनंत करै।
अभख भखयो व बुध्यनास, मुवां पछै दोर मां वास।19।

बिना छाने हुए जल का प्रयोग करने से अनेक जीवों की हत्या होती है। इस पाप का कोई अन्त नहीं है। जो मनुष्य अपना उत्तम खाद्य पदार्थ छोड़कर मांस का भक्षण करता है, उसकी बुद्धि नष्ट होती है। वह मरने पर नरक में जाता है।

मही वीरोल्य घीरत संग्रहै, सवा घड़ी रस बाहरि रहै।
ता उपरांते तांवण्य करै, अनंत जीव उपजे अर मरै।20।

दही को बिलौकर घी का संग्रह करना, उसे बिना ढ़के छोड़ना और उसे काफी देर से तपाना-इससे उसमें भी अनेक जीव उत्पन्न होकर मरते हैं।

पोसत मसल्य छांण्य जळ पिवै, भांग अफीम अचुक्यौ लिवै।
कुसंगी करै कुमल की आस, रोर जुण्य भुंव सहंस पचास।21।[5]

पोस्त मसलकर पीने वाले तथा भांग-अफीम खाने वाले ये सब नशे की आशा करने वाले कुसंगी है। वे इन नशों के फलस्वरूप पचास हजार वर्ष

तक रोते हुए योनि भोगते हैं।

ब्याह विरध गावै अणचार, अपस जीव कौ करै प्रहार।
रूंख विरख रोपावै थंभ, पाप तणौ मांडै आरंभ।22।

वृद्धावस्था में विवाह करना, आचरण भ्रष्ट होना, अपाहिज जीवों पर चोट करना और हरे वृक्षों को काटना-ये सब बातें पाप की शुरूआत हैं।

गाज वाज मन विगसीयै, रहैस्यौ दान कुपातां दीयै।
गुर कौ कहयौ नै आवै दाय, कीयौ धरम बिरथौ जाय।23।

जिनका मन गाने-बजाने वालों तथा नर्तकियों से प्रसन्न होता है, जो इन कुपात्रों को दान देते हैं और गुरु की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, ऐसे लोगों का किया हुआ धर्म भी व्यर्थ जाता है।

मेल्ह मुगति धरम की रीति, परनारी सूं मडै प्रीति।
आप भरांती परती प्यास, मिनखा किसी भिसति की आस।24।

जो मुक्ति और धर्म की रीति को छोड़कर अन्य स्त्रियों से प्रेम करता है और अपनी स्त्री को छोड़ता है, ऐसे मनुष्यों को मुक्ति की आशा नहीं करनी चाहिये।

तपा संजोगे दीपग ठव, विण्य सीनाने दीपग छव।
अण सुंणी अणदीठी भाषै लोय, अनरथ पाप अैंसी पर होय।25।

तप का दीपक ज्ञान है और स्नान का दीपक शुद्धता है। जो बिना सुनी और बिना देखी बातें कहते हैं, वे बड़ा भारी अनर्थ करते हैं। जिसमें ज्ञान का प्रकाश होता है, वह ऐसी बातें नहीं कहता।

सुच सीनान न पालै सील, लबध्य सुवादी करै कुचील।
विसन नांव न मुखि अवचरै, जुलमै पाप जीभीयां तै करै।26।

जो न कभी स्नान करता है और न कभी ब्रह्मचर्य का पालन करता है जो जीभ के स्वाद से वशीभूत होकर अनर्थ करता है। ऐसे लोग विष्णु भगवान के नाम का अपनी जीभ से उच्चारण नहीं करते हैं, वे जुल्मी तो अपनी जीभ से पाप-कथन ही कहते हैं।

कारण क्रीया अति आदरै, दान पुंन बोहतेरा करै।
मुखि अभखल बोलै रीसाय, रतन कया मुखि सुवर थाय।27।

जो मनुष्य कारण क्रिया को बहुत मानता है और दान-पुण्य बहुत करता है, लेकिन अभक्ष्य (मांस) का भक्षण करता है तथा क्रोध से बोलता है, वह सुअर की योनि भोगता है।

कारण कीरिया घंणौ सरस, दिल खोटो मुखि मीठो रस।
तन कया अर काचो हीयो, नै टलै जीव जिसौ तैं कीयो।28।

जिसकी कारण क्रिया बहुत सुन्दर है परन्तु हृदय में खोट है, जो मुंह से मीठा बोलता है और शरीर को स्वच्छ रखता है परन्तु हृदय में मलीनता रखता है, हे जीव, ऐसे अच्छे और बुरे कर्मो का फल तुझे भोगना होगा, वह टलेगा नहीं।

गरब गुमानी हो हो करै, मछरी राग दोष मन्य धरै।
कण भीतरि घुण घातै हाण्य, करतब तोट अैसी परि जाण्य।29।[6]

जो मनुष्य अधिक अभिमान युक्त होकर मन में राग द्वेष पैदा करते हैं, उन राग द्वेषों को शरीर में अनाज के अन्दर घुन की तरह जानो। हे जीव, तुम्हारा कर्त्तव्य भी ऐसा ही जानो।

भूत परेती मांडै सेव, न्यान विहुणौं पूजै देव।
भरम्यौ धोकै काठ पषाण, हळति पळति जीवड़ा नै हाण्य।30।[7]

जो भूत-प्रेतों की सेवा करते हैं, बिना जानकारी के देवों की पूजा करते हैं और भ्रमवश काठ पत्थर की पूजा करते हैं, ऐसे लोगों को प्रत्येक स्थान पर हानि होगी।

एक पुरष दोय नारी वरै, मान्य दीयै तो अंतर करै।
मन मां इधकौ औछौ वहै, तिण्य पापि जीवड़ो दुख सहै।31।

जो व्यक्ति दो स्त्रियों के साथ विवाह करता है और उनमें भेदभाव रखता है, वह तुच्छ बुद्धि का है। ऐसे पापों का दु:ख जीव को सहना होगा।

कापड़ पहर्‌या करै निवाज, सो कापड़ क्यौं दीजै वेनिवाज।
तिह प्राणी सीरि खुदा लीखीजै, गयंद रंग लेखो लीजै।32।

जो शुद्ध कपड़े पहनकर निवाज तुम करते हो वे कपड़े निवाज न करने वाले को क्यों देते हो? जिसका हृदय शुद्ध है, उसके हृदय में भगवान निवास करते हैं। जैसे हाथी का रंग काला होता है परन्तु फिर भी उसका हृदय साफ होता है।

सीलता पती कीजै खड़ौ, पगि पर जल्य दाझका पड़ो।
पिंड परै जल्य जे दाझै सोय, गुर क अबकि अैसा फळ होय।33।

गुरु महाराज कहते हैं-जो स्त्री अपने पति को छोड़कर अन्य पुरुष से प्रेम करती है, उसकी स्थिति ऐसे ही है जैसे गर्म पानी पैर पर पड़ने से पैर जलता है और शरीर पर पड़ने से शरीर जलता है, उसी प्रकार उस स्त्री को इस पाप का फल भोगना होगा।

दुहा

संभल्य प्राणी गुर कह्यौ, पापां एह विचार।
जब लग सांस सरीर मां, करि कोई उपगार।34।

गुरु महाराज कहते हैं–हे प्राणियों, सुनो! पापों से बचने का यह उपाय है कि जब तक शरीर है, तब तक भलाई करो।

दोरै जाय स दुख सहिसै, माया मन न लगाय।
गुर कौ सबद चितारि करि, करणी आदरि काय।35।

वे पुन: कहते हैं–नरक में जाकर दु:ख सहने होंगे। माया में मन मत लगाओ। सत्गुरु के उपदेशों को याद करो। किन्हीं अच्छे कामों में लगो।

मानवी मरण संभाल्य रे, जुग सपनंतर जाण्य।
निहचै निरवाहो नहीं, जीव सहेंसी हाण्य।36।

हे मनुष्य–मृत्यु को याद रखो और इस संसार को एक स्वप्न के समान मानो। यह तो निश्चित है कि बिना भगवान के स्मरण के यह जीव दु:खी होगा।

परहरि प्राणी पाप बुध्य, धरम तणी परसाय।
जैह रंग विण दुख घणों, गुर वरजंता न जाय।37।

हे प्राणी, पाप बुद्धि को त्यागो और धर्म के कार्यों में मन लगाओ। बिना सत्गुरु की आज्ञा के कोई काम मत करो। इससे तुम्हें दु:ख होगा।

जो गुर कह्यौ स मन्य करि, मेल्हौ मन्य आपाण।
जीवड़ा करि संभळी, अगति तंणां इहनांण।38।

हे जीव, सुनो! जैसा गुरुजी ने कहा है वैसा मानकर अपने मन को दृढ़ रखो, ये सद्गति के चिन्ह हैं।

चौपई

संभळि अगति तणां इहनाण, जदि आ काया तजै पिराण।
तूटै सांस काया कुमळाय, जदि जम काळ पहुंचै आय।39।

हे प्राणियों सुनो, जब इस शरीर से प्राण निकलता है और यह सांस रहित शरीर कुमलाता है तब यम और काल वहां पहुंचते हैं। ये अगति जाने के चिन्ह हैं।

जीव र पिंड विछोड़ो होय, खिण एक धीर धरै न कोय।
माय न बाप न बैहण न वीर, संगपण साथि नहीं को सीर।40।[8]

जब जीव का शरीर से विछोह होता है तो क्षण मात्र भी नहीं लगता। तब न कोई माता है, न कोई पिता है, न कोई बहन है और न कोई भाई है। उस समय सगे–सम्बन्धि और साथियों से भी कोई मोह नहीं रहता।

धीय र पूत कळ त नहीं साथि, संची छोड़ि चल्यौ साह आथि।
आवै जंवर तणां जमदार, लेजै तंत वहंती वार।41।

तब पुत्री तथा पुत्र कोई साथ नहीं जाता। उस समय संचित किया

हुआ समस्त धन भी यहीं रहता है। वहां से यमदूत आते हैं, वे रास्ते में ही सब कुछ पूछ लेते हैं।

चीतब चीत तैंण चौतीरा, लेखौ लीजै खोटा खरा।
कली र कोट र काळी जाल्य, कीयो क्रतब आपरौ संभाल्य।42।

हे प्राणी! तूं अपने चित में प्रभु का स्मरण कर। वहां पर तो अच्छे और बुरे का हिसाब होगा। तूने जो भी कुकर्म किये हैं उन पर विचार कर।

परथम्य पाप बालापण्य कीया, नान्हां जीवां बोह दुख दीया।
दया धरम नैं जाण्यौ भेव, वाळी सुरति नै जाण्यौ देव।43।[9]

हे प्राणी, सर्वप्रथम तो तूने बचपन में पाप किये और छोटे–छोटे जीवों को दु:ख दिया। तुमने तो सुन्दरता को ही देव माना, परन्तु दया धर्म का मर्म तुमने नहीं जाना।

हुवो जवानी जोबन वेस, नैं सुण्या सतगुर का उपदेस।
आठ मदमातौ अग्यान, किनक कांमणी लायो मान।44।[10]

हे प्राणी, जब तूं जवान हुआ तो सतगुरु का उपदेश ग्रहण नहीं किया। आठ प्रकार के मैथुन से तुम्हें अज्ञानता हुई। स्वर्ण और स्त्री में मन को लगाया।

अभख भख्यौ जिभ्या कर स्वादि, सरवण कदै न त्रपता नादि।
नीण रूप नै तरस्यौ घणौं, नास तरस्यो बासा वल्य तणौं।45।

हे प्राणी, तूने जीभ के स्वाद के वशीभूत होकर मांस का भक्षण किया, कानों को राग–रागनी में डुबोये रखा। आंखें हमेशा रूप के लिये लुभायमान रही और नासिका सुगन्धी के लिये तरसती रही।

इन्द्री स्वाद रच्यौ परनारि, पांच पुलंता नै सक्यौ मारि।
चोरी करत न वरज्यौ मन, फिरि फिरि मुस्या पराया धन।46।

हे प्राणी, तूने इन्द्रियों के स्वादार्थ पराई स्त्री से मन लगाया, इन पांचों दुष्टों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) को तूं मार नहीं सका। लोभ के वशीभूत होकर तू चोरी की इच्छा से पराये धन को हड़पने लगा।

पर मुंठो परनंद्या करी, न सक्यौ काम किरोध परहरी।
सीष दीयतां मान्यौ रोस, जाण्य अदोस्यां दीन्हौ दोस।47।

हे प्राणी, तूने अपने मुख से दूसरों की निन्दा की और काम–क्रोध को त्याग नहीं सका। शिक्षा देने वाले पर गुस्सा किया और जानते हुए भी निर्दोषी को दोषी बताया।

वाद विरांव कीयो इहंकार, सत पंथ तणी न जाणी सार।
विसन संभाळ नांव नह्य लीयो, नां इण्य जीव हकीकत कीयो।48।

हे प्राणी, तूने वाद-विवाद अहंकारवश किया, सच्चे रास्ते को तूने न जाना। न तूने विष्णु का कभी स्मरण किया और न तूने कभी सत्कर्म किये।

जम आय नै सुणियो ग्यान, संत सुपात न दीन्हौ दान।
साध संगति नहीं बैठो पांति, मुरिख मन्यौ न मेल्ही भ्रांति।49।

हे प्राणी, कहीं जाकर तूने ज्ञान नहीं सुना, न तूने सुपात्र को दान दिया, न तू कभी सत-संगत की पंक्ति में बैठा। हे मूर्ख! तूने अपने मन की भ्रान्ति को कभी दूर नहीं किया।

खिमां तप जरणां नहीं जरी, मन्य अभेमान ममता मन्य धरी।
आप सुवारथ झंख्या आळ, कूड़ तणी बोह बंध्या जाळ।50।

हे प्राणी! तूने कभी क्षमा के तप से कटु वचन को सहन नहीं किया, अपने मन में अभिमान को रखकर ममता की। तू स्वार्थवश होकर झूठ ही झूठ बोला।

करि कलोभ कन्या द्रब लीयो, इधको ले अर घटतो दीयो।
दयाहीण काटी वणराय, जीव असंख दह्या दुंहलाय।51।[11]

हे प्राणी! तूने अति लोभी होकर कन्या को बेचा। लेते समय ज्यादा लिया और देते समय बहुत कम दिया। निर्दयी होकर हरे वृक्षों को काटा। असंख्य जीवों को दुहलायकर नष्ट किया।

लिख्यो उघाड़ चीतबचीत, सुक्रत पखो नहीं कोई मीत।
थरहर कांय डोलै घणो, संभाळ्यौ क्रतब आपणौ।52।

हे प्राणी! तू अपने कर्त्तव्यों को परख कर देख, तेरा सत्य कर्मों के सिवाय कोई साथी नहीं है। जब तूं अपने कर्त्तव्यों की जांच करेगा तो तेरा शरीर कांपने लगेगा।

दुहा

लेखो मांगै सांइयां, ज्यद कराड़े ढ़ोय।
जो करतो संसार मां, आखरि आडो सोय।53।

जब प्राणी ने मन में विचार किया कि स्वामी के सामने इस सबका हिसाब होता है, तब वह सत्कर्म के प्रति चिंतित हुआ। उसने सोचा, सत्कर्म से आज यह मुसीबत नहीं होती। वे सत्कर्म ही सहायक होते हैं।

गुण कोई करतो नहीं, पर आत्मां उपगार।
औगण बंध्यौ गांठड़ी, सहैंस कठी मार।54।

हे प्राणी! तूने कोई अच्छा काम नहीं किया, न ही किसी की भलाई की। बुरे कामों की तूने गठरी बांध ली, जिसके फलस्वरूप यहां कठिन मार सहनी पड़ती है।

गुर की सीख न मांनतौ, करतौ कांध क तांण।
गाफिल गळ्य बांध लीया, दुतम लेस्यै मांण।55।

हे प्राणी! तूने गुरु की शिक्षा को नहीं माना और अपने अभिमान में चूर रहा। हे मूर्ख! तूने बुरे कार्य ही किये हैं, अब तुम्हें इनका फल भोगना होगा।

विषम पंथ पसळाद को, खंडा तीखी धार।
वहणौ दिन वरस पांच सै, जीव सहेसी मार।56।

हे प्राणी! यह पहलाद-पंथ कठिन है, जो तलवार की तीखी धार जैसा है। इस कठिन रास्ते पर लगातार चलना होगा और कठिनाइयों का सामना करना होगा।

दोरह तप अकारणी, दुख झाळाहळ देह।
जो करतौ मन मोकळौ, ते फळ पाया एह।57।

हे प्राणी! तुझे कठिन तप करना होगा और बिना कारण भयंकर दु:ख भोगना होगा। जो तुमने अपने मन से किये हैं, उन पापों के ये फल हैं।

चौपई

दोरह अगन्य तप आकरी, अंतरि गति तिसनां परवरी।
अंति तिस लागी मांगै नीर, कायर जीव न बांधै धीर।58।

हे प्राणी! रास्ता कठिन है और धूप तेज है, ऐसे समय प्यास उत्पन्न हुई है। अधिक प्यास के कारण जल की आवश्यकता है। ऐसे समय में कायर व्यक्ति धैर्य खो देता है।

सांभल्य रे जीव क्रतब कीयो, मुरिख अणछाण्यो जळ पीयो।
मद अहमख सूं करतो ह्याव, दूत कहै तोहि पा पांणी काव।59।

हे प्राणी! सुनो! तूने ऐसे कर्त्तव्य किये हैं-बिना छाने हुए पानी पीया है। मद और मांस से प्रेम किया है। इसलिये यमदूत कहते हैं, तुझे पानी कहां से पिलायें।

रोवै झुरवै करै विलाप, जो करतो सो लागो पाप।
ए वड उतर मोहि न देह, दया करौ मेरी दाझै देह।60।

जब प्राणी रोता, चीखता और विलाप करता हुआ पश्चाताप से अपने पापों को फल स्वीकार करता है, तब वे यमदूत उसे बड़ा उत्तर देते हैं। तब वह प्राणी कहता है कि मेरी देह जल रही है। हे प्रभु मुझ पर दया करो।

हो हो तेज अगन्यै परजळै, तव कड़ाही सीसो गळै।
सो सीसो पाइजै जीव, देह गळती मेल्हे रीव।61।

सामने अग्नि की भट्टी पर चढ़ी हुई कड़ाही में सीसा गल रहा है।

यमराज की इधर आज्ञा होती है कि यह सीसा इस जीव को पिलाओ, जिससे इस प्राणी की देह भी सीसे की भांति गल जायेगी।

काम कसट काया गल्य जाय, तोउ जीव जो जुवो न थाय।
उपज्ये देह वळे वळि देह, वार अनंत अैसा दुख सेह।62।

यह बहुत कठिन काम है जिससे यह शरीर गलेगा लेकिन फिर भी इस जीव का पापों से छुटकारा नहीं होगा। यह देह फिर बार-बार जन्म लेगी और बार-बार ऐसे ही दु:ख सहन करने होंगे।

वरतै वरस हजार पचास, दिन एक पूरौ न्यर वास।
नागड़ दूत गहै करि छुरी, भिसट रूप दीसै मति बुरी।63।

ऐसा कष्ट सहते हुए उसे पचास हजार वर्ष बीत गये। एक दिन फिर उसे यमराज के सम्मुख हाजिर किया गया। यमदूत हाथ में छुरी लेकर उसे क्रूर दृष्टि से देखते हैं।

वाहै करद करारी धार, मुखतां बोलै मारो मार।
तिल तिल करि सोह काटै पिंड, काटि कुटि करै षंडि षंडि।64।

वे तेज धार वाली कटार का प्रहार करते हैं और मुख से मार-मार बोलते हैं। वे उसे थोड़ा-थोड़ा करके काटते हैं। और काट-काटकर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं।

वांटि वियचि करै जु जूवौ, तोउ जीव नैं छूटै मूवौ।
वावरि जाळ कूड़ मांडतो पास, जीव हतण को ओह अभेवास।65।

इस प्रकार उसके टुकड़े-टुकड़े करने पर भी उस जीव को छुटकारा नहीं मिलता है। जिसने जंगल के जानवरों को फंसाने के लिये जाल बिछाया था और जीवों की हत्या की थी, उसका यह अभिशाप है।

करि कुकरम बांध्या था छैणा, तांह पापां का औगण घैणां।
धारे दूत तरण्य को रूप, दीसै अति मोहणी सरूप।66।

तूने बुरे कर्मो की गठरी बांधी थी। उन पापों के बहुत दुर्गुण हैं। वे यमदूत सुन्दर स्त्री का रूप दिखाते हैं, जो अति मोहनी है।

मरत लोक वसंदर भणै, ताथै तेज अनै गणै।
तास मीलावो कीजै ढ़ोय, जल्यबल्य जीव अंगारा होय।67।[12]

मृत्युलोक में निवास करने वालों को आग में जलाया जाता है, इससे अग्नि अपवित्र होती है। ऐसा करने से जीव और प्रभु का मिलन नहीं होगा बल्कि वह जीव जलकर अंगारा बनता है।

दाझंतौ जीव पूठौ सिरावास, चोट गुरज की पड़ै तास।
खिण नै देइ दूत खंधार, जल्य बल्य जीवड़ो होय अंगार।68।

उस अग्नि की गर्मी से परेशान होकर वह जीव वापस आना चाहता

है परन्तु तब उस पर यमदूतों के गुरजों की चोट पड़ती है। वे यमदूत उस पर भी दया नहीं करते हैं और वह जीव जलकर अंगारा हो जाता है।

बळे चांब हाड मास संकल्य रहै, जीव नैं निकसै बोह दुख सहै।
घींस'र नागड़ नांखै परै, लागै पूण पिंड पांगरै।69।

चमड़ी, हाड-मांस जल जाते हैं, केवल सांकल रहती है, लेकिन फिर भी जीव नहीं निकलता है, बहुत दु:ख सहन करता है। उसको घसीट कर यमदूत अलग करते हैं। फिर हवा लगने से वह शरीर कुछ स्वस्थ होता है।

पांगरियो स लीये जब काय, नागड़ विलगै आय।
परनारी सूं करतौ मोह, चाल कुकरमी मेसु तौहि।70।

जब स्वस्थ हो गया तो यमदूत फिर पास आते हैं और कहते हैं-तू पराई स्त्री से प्रेम करता था, वह तुम्हारे अन्दर कुकर्मी चाल थी।

कुक कलय पायो जाय, अगन दहै दुख सहयौ न जाय।
बाळ्यो जाळ्यो विनड़ि विगोय, दया करौ अब छाड़ो मोय।71।

वह विलाप करता है कि अग्नि की जलन का दु:ख सहन नहीं होता। मुझे कई बार जलाया है, दया करके मुझे अब छोड़ दीजिये।

छुटै नहीं पाप कीया घणां, करि कुकरम बांध्या चीकणां।
मारै दूत थंभ गल्य देह, काछ-लपट का अवगण एह।72।

तुमने बहुत पाप किये हैं, इस कारण तुझे छुटकारा नहीं मिलेगा। बुरे कर्म करके पापों में तूं बंधा हुआ है। वे यमदूत उसे खम्भे से बांध कर पीटते हैं, यह सब व्यभिचार का फल है।

उपजि देह वळे वळे दहै, वार अनंत अैसा दुख सहै।
वरतै वरस हजार पचास, दिन एक गयौ निरवास।73।

शरीर बार-बार उत्पन्न होता है और जलता है, ऐसा दु:ख अनेक बार सहना पड़ता है। इस प्रकार पचास हजार वर्ष कष्ट भोगकर वह जल की शरण में जाता है।

नदी तणौ वेतरणी नांव, जीव जाण सरणाइ जांव।
देख दूत करि अरदास, मोहि मेल्हौ वेतरणी पास।74।

वहां वेतरणी नामक नदी है, जीव उसकी शरण में जाना चाहता है और यमदूतों से प्रार्थना करता है-मुझे वेतरणी के पास जाने दो।

हाथ पाव ले मेल्ह मांहि, तेतो वनै लै जैतो डांहि।
पांगर पिंड जिसौ कौ तिसो, भोगविं करतब करतौ जिसो।75।

हाथ और पैर उस वेतरणी नदी में डालता है और सारा शरीर उसमें डुबोता है। इससे वह शरीर पहले जैसा हो जाता है। वेतरणी नदी कहती है कि तुझे अपने किये कर्मो का फल तो भोगना ही होगा।

देख जीव विरख की छांह, जीव जांणै सरणागति जांह।
छांह जिसी हीवाळो दहै, खिर्‌यौ पान खांड ज्यौ वहै।76।

वह जीव वृक्ष की छाया देखकर उसकी शरण में जाता है। वह छाया बर्फ के समान ठण्डी है, मगर उस जीव के वहां जाने से उसके समस्त पत्ते झड़ पड़ते हैं।

पांन वहै करवत ज्यौं धार, वन वाढूयां का ए उपगार।
दोर कुंभ तणो ओ कारि, जीव नीपजता समै झारि।77।

उन पत्तों की आरे जैरी धार है जिनसे उसका शरीर कटता है। यह हरे वृक्षों को काटने का फल है। यह कार्य कुंभीपाक नरक में ले जाने वाला है। उस जीव को उस समय बांध कर उक्त नरक में डालते हैं।

सिर भीतरि धड़ बाहरे होय, ताण्य ताण्य तोड़ीजै सोय।
जीव पड़ै कीड़ा की कुंडि, कीड़ो छाण्य कर वेरुंडि।78।

इस नरक में जीव का सिर अन्दर होता और शरीर बाहर होता है, उस शरीर को खींच-खींच कर मांसाहारी जानवर त्रास देते हैं। वह जीव कीड़ों की कुण्ड में पड़ता है। वे कीड़े उससे चूंट-चूंट कर बेरुण्ड (कंकाल) कर देते हैं।

बाहरय काढ़यौ पिंड पांगरै, भीतरि नाख्यौ कीड़ो चरै।
उळट पुळट करंता जाय, जुग जुगनंतर कूकतां विहाय।79।

उससे बाहर निकलने से शरीर स्वस्थ हो जाता है, फिर कीड़ों में डालते हैं तो कीड़े खा जाते हैं। इस प्रकार उलटते-पलटते कई युग बीत जाते हैं, जिनमें वह रहता है।

पिंड छांण्य कीड़ा निरदई, ए वड ओ दिसां जीव नै पई।
दोर नाउं कोहकु बाण्य, अंति उछळ कु गंध्य कुहांण्य।80।

वे निर्दयी कीड़े उस शरीर को चूंटते हैं, ऐसी दशा उस जीव ने पाई है। उसे कोहक नामक नरक में डालते हैं, जहां अत्यन्त दुर्गन्ध होती है।

तिह थान्य क आतमां नीवास, मरनै जीव दोर वास।
दोर नांव घोप अंधार, तहां न सूझ एक लिगार।81।

इस अत्यन्त दुर्गन्धी के स्थान पर आत्मा को ठहराते हैं, वहां घोर अन्धकार नामक नरक है, जहां कुछ भी दिखाई नहीं देता है।

भूख दुख दोर सां सहै, हाहाकार नै कोई कहै।
भाहि भड़हड़ी जीवड़ो बळै, दाझंतो ऊंची उछळै।82।

उस नरक में भूख-दु:ख सब सहन करने पड़ते हैं, लेकिन वहां हाहाकार करने पर भी कोई नहीं सुनता है। वहां जो गर्मी है, उससे शरीर जलता है और वह ऊंचा उछलता है।

धारै दूत विहंगम रूप, चांच जिसी सारली सूप।
केई एक जोजनै ऊंचो चड़ै, चांचे मार्‌यौ पूठो पड़ै।83।

वे यमदूत पक्षी का रूप धारण करते हैं और चोंच बहुत पैनी बनाते हैं, कई प्रहार करते हैं, इससे वह नीचे पड़ता है।

आण न मानी असध अयाण, पाप कीयेतां आई हाण।
अजगै दूत दीय आकेरी, जीव तरास सहै अति षेरी।84।

हे मूर्ख! तूने नियमों का उल्लंघन किया, जिससे तुझे यह हानि हुई। अब ये यम दूत कठिन से कठिन त्रास तुझे देते हैं, जो तुझे सहन करनी पड़ती है।

डरतो नास अंग समाहि, बजर सूल पसै पग माहि।
वींझ अड़वड़ि आखड़ि पड़ै, नागड़ दूत आय आपड़ै।85।

जहां तुम शरीर के जरा सा कांटा लगने से डरते थे, वहां अब तेरे पैरों में वज्र का त्रिशूल फंसा हुआ है जिससे उलझकर तूं पड़ता है। तब वे नंगे यमदूत तत्काल आकर उसे पकड़ते हैं।

दुख दे दे मारै बोह मरी, जोर नजर बनै न संक करी।
ओर दीसा नै नास्युला जड़ै, लारै सुणहौ आप आपड़ै।86।

वे दुष्ट यमदूत बहुत दु:ख देकर मारते हैं, वे कोई शंका नहीं करते हैं। वे शरीर में तीर चुभोते हैं जिनकी त्रास से वह स्वयं ही गिर पड़ता है।

दांते नहरे नखै फाड़ि, अैसी पड़ी दोर मां धाड़ि।
नागड़ दूत लीये छांगणां, तन टुकड़ा करि नांखै घणां।87।

वे यमदूत दांतों से, नाखुनों से शरीर को फाड़ डालते हैं। वे नंगे दूत कुल्हाड़ा लेकर शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं।

ज्यौ'र कबाड़ी छांगै डाळ, हाथ पांव छांगै लगवाळ।
उपजि काया ऊभी होय, दूत सरां चड़ि मारै जोय।88।

जैसे वृक्षों को छांगने वाला डालियों को काट देता है, उसी प्रकार वे दूत उसके हाथ-पांवों को फालतू समझकर काट देते हैं। पुन: जब वह शरीर पैदा होकर खड़ा होता है तो वे यमदूत सिर पर चढ़कर पुन: मारते हैं।

चड़ि चड़ि जां दिन खेलतौ सिकार, रोवै झुरवै पाप चितार।
कीया कुकरम वहिस्ये माहि, दुख देखंतां सागर जाहि।89।

हे प्राणी! जब तूं वहां घोड़ों पर चढ़कर शिकार खेलता था, तो अब रोता-झुरता क्यों है। उन बुरे कामों को स्मरण कर। तुम्हारे किये हुए दुष्ट कर्म ही तुम्हें अथाह समुद्र के समान दु:ख देते हैं।

अैसा सहमै छै दोर मांहि, जीव भोगविसी पाप पसाहि।
इण्य परि अमलां मालीय माण, परबस्य पड़्यौ नै चालै ताण।90।

उस नरक में वह जीव ऐसा विचार करता है कि उन पापों के फल

तो भोगने ही होंगे। इस पर किसी का भी वश नहीं चलेगा। कर्मो के ही वश सब कुछ होता है।

गुर कौ कह्यौ न मान्यौ सही, पाप पहार असीसां सही।91।

मैनें गुरु का कहना नहीं माना। इसलिये इस पाप रूपी पहाड़ को सहन करना पड़ा है।

दुहा

जप विण्य तप विण्य सील विण्य, दान दया विण भाव।
जीवड़ौ दोर भोगवै, अंति तापण दुख दाव।92।

जप, तप, सील, दान और दया के बिना इस जीव को नरक मिलता है, जहां अत्यन्त कष्ट हैं।

वल्य अनेरा दुख छै, कैहतो न लहुं पार।
भोग विस्यै भूला भुंवै, जे मेल्हयौ गुर आचार।93।

वहां और भी अनेक दु:ख हैं जिनका मैं वर्णन नहीं कर सकता। इस संसार में प्राणी विषय भोगों में लिप्त होकर गुरु के आचार को भूल जाता है।

कुळ की कुळवटि छाडि करि, गुरवटि जे चालंत।
डावो डांडो परहरै, विसत विवांण्य चड़ंत।94।

हे प्राणी! यदि तूं अपने वंश की मान-बड़ाई और कुमार्ग को छोड़कर गुरु के बताये मार्ग पर चले तो निश्चय ही तूं स्वर्ग के विमान में चढ़ेगा।

गुर दया करि दाखवै, हेलै नै गंवि अयांण।
होये हरष करि सांभळी, सुरग तणां सहनांण।95।

गुरु ने जो भी दया करके बताया है, वह अमूल्य वस्तु है। उसको हर्ष सहित हृदय में ग्रहण करना स्वर्ग जाने का प्रतीक है।

जा किरीया गुर दखवै, हीयै हरष करि भाल्य।
जे लोड़ै सुरगापुरी, वल्य वल्य विसन संभाल्य।96।

जिस कर्त्तव्य के लिये गुरु कहते हैं, उसको हृदय में हर्ष करके देखो। यदि तुम्हें स्वर्ग की कामना है तो बार-बार विष्णु भगवान का स्मरण करो।

चौपई

विसन संभाल्य धरम चीत धरी, सुपह पिछाण्य पाप परहरी।
न्यान खोज्य मानुं गुरदेव, अकल'प करौ साध की सेव।97।

विष्णु भगवान को याद करके धर्म को अपने मन में रखो। अच्छे मार्ग पर चलकर पाप का त्याग करो। ज्ञान की खोज के लिये गुरुदेव की आज्ञा मानो और ज्ञानी संतों की सेवा करो।

अजर जरै बोह नुंवणी नुंवौ, संभल्य दोस दुनी का खुवौ।
ओगण कीये जे गुण करै, भवसागर तें दुतर तरै।98।

कटु वचन को धैर्य से सहन करके नम्रता रखो। संसार के दोषों को सुनकर उन पर क्षमा करो। यदि तुम बुरा करने वालों का भी भला करोगे तो निश्चय ही तुम भवसागर से तर जाओगे।

जे नर हुवै हकीकथ मांय, दसवंध खरचै गुर के नांय।
जोग जुगति सूं पाळै दया, तांहनै निहचै वासरे निरमळ कया।99।[13]

यदि कोई मनुष्य सच्चाई पर रहता हुआ विष्णु भगवान के नाम पर यह जीवन अर्पण करता है और योगी होकर दया का पालन करता है तो निश्चय ही उसको निर्मल कहना चाहिये।

दिन पांच टाळ रुत्यवंत, तीस दिन बालक जलम जळमंत।
ओठि उदम करि टाळै सही, उकस्ये अहार छोति गुर कही।100।[14]

गुरु जी कहते हैं-ऋतुवंती स्त्री से पांच दिन तक परहेज रखो और स्त्री से तीस दिन तक जब बच्चा पैदा होता है, तब दूर रहो। झूठे भोजन और पात्र से दूर रहो। ये सब अपवित्र है।

रूही रसी अछोप अभाड़ै, तया संजोग गंद्रफ झाड़ै।
छोति कुवै पेसाब पोषाळ्य, सात छोति नर सुधी टाळ्य।101।[15]

मृतक का स्पर्श न करें। उसके संयोग से उत्पन्न विकार का शमन गंदर्फ से सम्भव है। यदि कुए में अपवित्र पानी जाता है तो वह पानी पीना निषेध है। इस प्रकार की सात छोत टालें।

वसैंदर सुरहि अंतर, तंवण्य नजीके जिन्य संचर।
असुच्या खीरि नै दुहीय थणौं, धरती गवण नै कीजै घणौ।102।

अग्नि में कोई भी जीव-जन्तु नहीं पड़ना चाहिये, इससे अग्नि अशुद्ध होती है। थनों से बिना धोये दूध नहीं निकालना चाहिये और पृथ्वी पर ज्यादा यात्रा नहीं करनी चाहिये। इन कार्यो से जीव हत्या होती है।

भींट्यौ कापड़ लीजे धोय, सींवरण जाप करो सुचि होय।
सात छोति टाळ गुरमुखी, सुरगे वास जीव होय सुखी।103।

अपवित्र कपड़े को धो लेना चाहिये। भगवान का स्मरण शुद्ध होकर करना चाहिये। ये सात छोत गुरु की आज्ञा मानने वाले टालते हैं, जिनका स्वर्ग में वास होता है और वे सुखी रहते हैं।

मुख नै भाखी कूड़ो अळ्यौ, अणदीठो अण जुग्य सांभळ्यौ।
इह करणी तारेवो होय, मोमिण मुगति गया मळ धोय।104।

बिना देखा और सुना हुआ झूठा वचन नहीं कहना चाहिये। इन कार्यो से भव सागर से मुक्ति मिलती है और हृदय का मैल साफ हो जाता है।

सतजुग्य साधां सीधां काज, पांचै कोड़े गुर पहराज।
जीव काज बोह संगठ सह्या, गुर वायक बैकुंठे गया।105।[16]

सत्युग में संतों और सिद्धों के कार्यों के लिये गुरु महाराज ने प्रहलाद के साथ पांच करोड़ लोगों को मुक्ति दी, जिसने जीवों की रक्षा के लिये अनेक कष्ट उठाए, परन्तु गुरु के वचनों से वे वैकुण्ठ में गये।

तेता जुग्य तारेवो सही, नीहचै सात कोड़ि निरवही।
हरिचंद तारादे रोहितास, गुर वायक वैकुंठे वास।106।

त्रेतायुग में गुरु जी जाम्भोजी महाराज ने सात करोड़ मनुष्यों को हरिश्चन्द्र, तारादे और रोहिताश्व के साथ मुक्ति प्रदान की और उनको वैकुण्ठ में भेजा।

दवापुर दारंण दुकरत दया, निहचै नव कोड़ी नीरवह्या।
धरंम पूत गुर लील विलास, गुर वायक वैकुंठै वास।107।

द्वापर युग में गुरुजी ने दया करके निश्चय ही नव करोड़ मनुष्यों को युधिष्ठिर के साथ मुक्ति प्रदान की और वे गुरु वचनों से वैकुण्ठ में गये।

सो वायक कल्य मां परवर्‌यौ, जे मांन्यौ ते कारज सर्‌यौ।
जुग चौथे दसवैं अवतारि, साधे वायक लिया विचारि।108।

वही विष्णु भगवान अब जाम्भोजी के रूप में इस कलयुग में प्रगट हुए हैं। इनके वचन मानने वालों के समस्त काम पूर्ण होते हैं। इस चतुर्थ युग में ये विष्णु के दसवें अवतार हैं। इस बात को साधु-संतों ने जान लिया है।

सतजुग्य वाच लई पहराज, आयौ सुरग समांहण काज।
वायक मिलीया बारा कोड्‌य, वैकुंठे तेतीसूं कोड्‌य।109।[17]

सतयुग में जाम्भोजी महाराज से प्रहलाद ने वचन लिया था। उसी वचन को निभाने के लिये अब इस युग में भगवान का अवतार हुआ है। अब बारह करोड़ लोगों का उद्धार होगा और इस प्रकार वे तेतीस करोड़ वैकुण्ठ में पहुंच जायेंगे।

लाधी रतन कया निरमळी, निकळंक कीवी जौ उजळी।
वांणी विसवा पचीस, पारब्रंभ पुरव जगीस।110।

जाम्भोजी महाराज की वाणी रतन के समान है जिससे काया निर्मल हो गई। उसे भगवान ने कलंक रहित और उज्जवल बना दिया। इनकी वाणी पच्चीस विसवा है क्योंकि ये पारब्रह्म और जगत के स्वामी हैं।

कारेवां कोड करै सैतान, डैरू डाक वजावै तान।
तत ताळ वाव खुंण खुणां, राही रूप देखावै घणां।111।

जो शैतान होते हैं, वे कुकर्म से प्यार करते हैं और डैरू-डाक बजाकर प्रसन्न रहते हैं। वे लोग घुघरे आदि बजाकर अनेक प्रकार के स्वांग

करते हैं।

तूर पखा वजवावै वीण, मुरिख मोहि लीया लवलीण।
नटबाजी हासी पावसी, राग रंग मोह नाकम रसी।112।

वे लोग तुरी, ढ़ोलक और वीणा बजाते हैं। वे मूर्ख लोगों को शीघ्र ही मोह लेते हैं। वे नटबाजी, हंसी ठट्ठा और राग-रंग आदि से वशीभूत कर लेते हैं।

जदि सैतान समेटै खेल, अदे पावैणां दिखावै ढ़ेल।
दौलोली भुंयजळ के तीर, सु सैतान करै थो सीर।113।

जब वे शैतान उस खेल को समाप्त करते हैं तब मोहित हुए उन मनुष्यों पर पत्थर पड़ते हैं। उसकी टोली भवसागर के किनारे थी, जिसमें वह शैतान मिल गया।

संबळ गयो गांठड़ीयो खुल, आधो धंवण रहयौ नर भुल।
नारि सि छळ्या वरथ दोय, पूगी संध्य संमाहो होय।114।

उस संभाली हुई गठरी के तभी खुल जाने पर आधे लोग भ्रमित हो गये। स्त्री की छलना में दो पुरुष आ गये। सन्ध्या समय पर इसका निर्णय हुआ।

रथ्य बसै करणी का सूर, जे राता रहमाण नूर।
करणी हीण रथ देयाव, पग पाछै भारी होय थाव।115।

विष्णु के रंग में रंगे हुए कर्मवीर रथारुढ़ होकर विजय पथ पर बढ़ते हैं जबकि कर्महीन व्यक्ति के पैर पीछे की ओर पड़ते हैं तथा उनका रथ अन्य छीन लेते हैं।

जेको बेला बंधी होय, हाथी दीय चड़ावै सोय।
का का करै धरम की रीति, पोह पुरसुन कर प्रीति।116।

जिस मनुष्य का समय अच्छा होता है वह उसे हाथी पर चढ़ा देता है। उसे धर्म की रीति पर चलना चाहिये। उसे सज्जन पुरूषों से प्रेम रखना चाहिये।

ता दिन कुण बंधावै धीर, चालै रथ चीरी प सरीर।
सुर तेतीसां होय मीलाव, रथ खेवती हु लोकां राव।117।

उस दिन धैर्य कौन बंधायेगा जब यह जीव शरीर को त्याग देगा। तब तेतीस करोड़ देवी-देवताओं से मिलने हेतु रथ पर सवार होकर वह देवलोक जाएगा।

चौरा लाख भुंयजळ परवांण, एतौ भुंयजळ पहलो डांण।
मन परवांण वहै विवाण, पार गिराए होय मेल्हाण।118।

चौरासी लाख भवसागर का प्रमाण है। यह भवसागर का चक्र है। यह चक्र विष्णु भगवान की इच्छा से चलता है। भगवान जिसे चाहते हैं, उसे

इससे पार करते हैं।

सुरां सुरंगो पार गीरांवै, अमरापुरी अनोप मैं ठांवै।
रतन जोति उजला उजास, तेतीसूं नीहचल वास।119।

जिसे भगवान भवसागर से पार करा देते हैं, उसे अमर लोक में भेजते हैं। जहां रतनों की ज्योति का उज्ज्वल प्रकाश है। वहां तेतीस कोटि देवता निवास करते हैं।

अमीयां इम्रत मन्यसा भोग, हूर को सूर कामणी संजोग।
नरां नै खीरोदिक पटंबरा, नारी नै नाटिक कुंजर।120।

वहां अमृत मिलता है और मन इच्छा के अनुरूप भोजन मिलते हैं। वहां अप्सराएं शूरवीरों को वरती है। मनुष्यों को खीर आदि भोजन, अच्छे वस्त्र, सुन्दर स्त्रियां और नृत्य तथा सवारी के लिये हाथी मिलते हैं।

नै 'चीरीय पुराणो होय, मल नै लागै हिरनै कोय।
पहरंता अति सुखमै सुलास, कदे नै खुल्ह रंग नै पास।121।

न वहां पर मनुष्य वृद्ध होता है, न किसी प्रकार का कलंक लगता हैं। वहां वह अच्छे वस्त्र सुखपूर्वक पहनता है, जिनका रंग नहीं उतरता है।

बतीस बुध्य जीत नाटिक पड़ै, रंग रूप अंति ओपमैं चड़ै।
ताल महल नेवर डिणकार, कंण कंकण कामण्य सिणगार।122।

वहां बतीस लक्षणों वाली स्त्रियां नृत्य करती हैं, जो रंग-रूप में अति सुन्दर हैं। ताल के साथ उनके नेवरों की झंकार होती है और उन स्त्रियों के हाथों में कंगन का श्रंगार होता है।

नाचै पातिर निरखै लोय, सहजे गोठि छमासी होय।
हवदसर की हरषा घणीं, सुतौ सुरनर वर कांमणी।123।[18]

वे उन अप्सराओं को नाचते हुए देखते हैं। सहज ही में यह गोष्ठी होती है। वहां हवदसर (तालाब) है, जहां अत्यन्त हर्ष से स्त्रियां देवताओं और मनुष्यों को वरती है।

हवदसर को निरमळ नीर, तांसु लतां ने भीजै चीर।
पुण पाणी सहजे वां हिंडोळ, करै केल मंनसवा किलोळ।124।

उस हवदसर का स्वच्छ जल है, जिससे उन स्त्रियों के वस्त्र भीगते हैं। वहां उस हवदसर का स्वच्छ जल है, जिससे उन स्त्रियों के वस्त्र भीगते हैं। वहां हिण्डोले डले हुए हैं, जिन पर चढ़कर वर सहित स्त्रियां किलोल करती है।

जुग जुगंतर जांहि अनंत, तोउ सुखां नै आवै अंत।
पछ नै खुलक वराते जुरा, नै को रोग नै व्यापै जुर।125।

ये कार्यक्रम अनंत युगों से चला आ रहा है। इस सुख का कोई अन्त

नहीं है, जहां किसी प्रकार की खांसी-बुखार इत्यादि रोग नहीं व्याप्ते हैं।

नैं को विरधा नै को बाळ, जामण मरण नहीं भव काळ।
ताव नै सीव नै वरसे मेह, पुलीयां माछ नै उडै खेह।126।

वहां न कोई वृद्ध होता है, न कोई बालक है। न वहां पर किसी का जन्म-मरण है। न वहां गर्मी है, न वहां सर्दी है। न वहां वर्षा होती और न वहां आंधियों से धूल उड़ती है।

वैर विरोग नहीं वैराग, दाल्यद दुख नैही दुहाग।
आरति चींत नही को सोग, नै कौ सीणां पड़ै विजोग।127।

वहां पर वैर-विरोध नहीं है और न वहां गरीबी का दुख है। न वहां किसी प्रकार का शौक है और वहां सगे-सम्बन्धियों से विछोह होता है।

मन्यसा सवां सरै सोह काज, सुरां सुरैसौ कीजै राज।
सुरगां सुख व्रण व्यानै जांय, सुख अनै ताछै उण्य ठांय।128।

वहां इच्छानुसार सब कार्य पूर्ण होते हैं। वहां देवताओं के समान मनुष्य राज्य करते हैं। इस स्वर्ग के सुख का वर्णन नहीं किया जा सकता। इसे तो वे ही जानते हैं, जो स्वर्ग में निवास करते हैं।

ठाकर साकर मांनै एक, गुर फुरमाई वहै वमेक।
जीवत मरै सोई सुख लहैं, गुर परसादे वील्ह ऊं कहै।129।

जाम्भोजी के प्रताप से वील्होजी कहते हैं कि वहां सेवक और स्वामी एक समान होते हैं। गुरु महाराज ने ऐसा ज्ञान बताया कि जो मनुष्य जीवन्त मुक्ति प्राप्त करता है, वही इस सुख को प्राप्त करता है।

दुहा

सांभल्य प्राणी सुगुर बाणी, साच करी हिरदे सही।
गुरमुखी जांणी मति परवाणी, ग्यानचरी वील्ह जी कही।130।

संत कवि वील्होजी 'कथा ग्यानचरी' में जाम्भोजी भगवान के आशीर्वाद से कहते हैं कि हे प्राणी, सत्गुरु की वाणी को सच मानकर हृदय में धारण करो।

पाप तै डरिस्यै करणी करिस्य, कारज सरिस्यै ताह तणां।
पार गिराए वास लहिस्यै, सांभळीयो साधु जणां।131।

वील्होजी सभी संतजनों को कहते हैं कि जो मनुष्य पापों से डरेगा और अच्छे कार्य करेगा, उसके सभी कार्य सिद्ध होंगे। उसे विष्णु भगवान इस भवसागर से पार करके स्वर्ग में स्थान देंगे।

माड़ा सगते धरम कराइये, जा धरमां ऊपरि भाव।
दोनों पंथ वताइया, जींह भावै तिंह जाव।132।

अन्त में कवि सार रूप में मनुष्य के सामने एक पहेली रखते हैं और कहते हैं कि तुझे अच्छे और बुरे सब धर्म बता दिये हैं। जिस धर्म में तुम्हारी आस्था हो उसी रास्ते पर चलो।

संदर्भ टिप्पणियां

1. एक राम दशरथ घर डोले, एक राम घट-घट में बोले।
एक राम का सकल पसारा, एक राम त्रिभुवन से न्यारा।।
आकार राम दशरथ घर डोले, निराकार घट-घट में बोले।
बिन्दु राम का सकल पसारा, निरालंभ त्रिभुवन से न्यारा।।
कबीर ग्रन्थावली

2. तदि हुंता एक निरंजन सिंभु, कै हुंता धंधूकारुं।
म्हे तदि पणि हुंता, अब पणि अछां, वळि-वळि हुयस्यां।
कहि कदि कदि का कहुं विचारूं।।3।।
जाम्भोजी का सबद

3. (क) सिंवरो सिंवरो जांभेसर देव, कळिजुग कायम राजा आवियौ।
आय अवतर्‌यो वागड़ देस, सतगुर सुपह वतावियौ।।
केसोजी की साखी
(ख) बाबो सांभळिजै छै वागड़ देस, पोहमी पीतंबर आवियौ।
वील्होजी की साखी

4. जनम विणास्यौ जेह, जे बुध्यनास ज पीयो।
नीज विसन को नाव, सोच करि कदे न लीयो।।37।।
वील्होजी का कवित्त

5. वरज्या सतगुर साम्य, कुमल कुकरमी करंता।
मद मास पोसती, भांग खांता वीसरंता।।38।।
वील्होजी का कवित्त

6. (क) दीन गुमान करै लो खाली, ज्यौं कण घातै घुण हाणी।
साच सिदक सैतान चुकावौ, ज्यौं तिस चुकावै पाणी।।72।।
जाम्भोजी का सबद
(ख) काया कसट क्रम का कीड़ा, वावै मारगि डेरा।
कण मां घुण घातै ज्यौं हीणति, ग्रब कहै गुण मेरा।।
सुरजन जी का हरजस

7. धवणा धूजै पाहण पूजै, बेफुरमांण खुदाई।
गुर चेलै कै पाए लागै, देखो लोको अन्याई।।71।।
जाम्भोजी का सबद

8. माय न बाप न बहण न भाई, साखि न सैण न हुंता।
न हुंता पख परवारूं।।3।।
जाम्भोजी का सबद

9. दया धरम थापिलै, निरंजण सो बाळो ब्रंभचारी।।2।।
जाम्भोजी का सबद

10. नारी स्मरण श्रवण सुन, दृष्टि भाषण होय।
गुह्य वृतान्त अरु हास्य, रति बहुरि स्पर्श होय।।
सुन्दरदास जी का ग्रंथ ज्ञानसमुद्र

11. रुखां तणी नै पाळै दया, वाढ़ै वन कुंभी भया।
वील्होजी की साखी

12. ले काया वासंदर होमूं ला, दोष चड़ैलो भारी।।84।।
जाम्भोजी का सबद

13. दसवंध जीव जगति चुकावौ, हिरदै हरि सिंवरीजै।
केसोजी की साखी

14. तीस दिन सूतक, पांच रुतवंती न्यारो।
सेरी करो सिनान, सील संतोष सुच प्यारो।
ऊदोजी नैण का कवित्त

15. यह गुनतीस बतीस, विष्णु जन जानियै।
इकसठि सातूं छोत, अड़सठि एहि मानियै।।35।।
वील्होजी की बत्तीस आखड़ी

16. पांच करोड़ी ले पहराजा तरियो, खरतर करि कमाई।
सात करोड़ी ले राजा हरिचन्द तरियो, तारादे रोहतास हरिचन्द हाट विकाई।
नव करोड़ी ले राव दहूठळ तरियो, धन्य कुंतादे माई।
बारा कोड़ि समाहण आयौ, पहराजा सूं कोळ ज थाई।।99।।
जाम्भोजी का सबद

17. म्हे वाच लीवी पहराजा सूंई, तो वाचा परवाणौ।।81।।
जाम्भोजी का सबद

18. हवद सरोवर को म्हाने इधक उमाहो, नित हवद सरोवर न्हावो।
गुणदास की साखी

19. जीवत मरो रे जीवत मरो, जिण जीवण की विधि जाणी।।105।।
जाम्भोजी का सबद

20. ग्यान कथा मां संभल्यौ, तीन लोक को राय।
विसन जपो उदिम करो, पाप पराछित जाय।।4।।
वील्होजी की विसन छतीसी

21. पार गिराए पोह कियौ, चूकौ आवाजाण जी।
परमानन्द जी का साखी।

2. वील्होजी की साखियां

1. साखी कणां की (राग जंगळी गौड़ी)

गुर तारि बाबा, तूं साहिब सरबे दुख भंजण, मैं अपती तो गुर मेरा।1।

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज आप मुझे मुक्ति दो। हे स्वामी, आप सबके दु:ख निवारण करने वाले हो, मैं गरीब आपका सेवक हूँ।

गुरु तारि बाबा, मरि मरि गयौ जळम फिरि आयौ, तोउ मन्यौ न छोड़ी मेरा।2।[1]

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज आप मुझे मुक्ति दो। मैं अनेक बार मरा और जन्मा हूँ। मैं इस चक्र में बहुत फिरा हूं, लेकिन फिर भी इस मन ने मेर नहीं छोड़ी है।

गुरु तारि बाबा, जिवड़े लोभी लबधी खूंनी, इण्य खूंन किया बोहतेरा।3।

हे सतगुरु जाम्भोजी महाराज आप मुझे मुक्ति दो। यह जीव लोभी लालची और हत्यारा है। इसने बहुत हत्याएं की है।

गुरु तारि बाबा, बोह दुख सह्या सरण्य विण्य गुर की, करि करि क्रम कुफेरा।4।

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज, आप मुझे मुक्ति दो। मैनें गुरु की शरण के बिना बहुत दु:ख उठाये हैं और बहुत कुकर्म किये हैं।

गुरु तारि बाबा, लख चौवरासी चौहचकि भीतरि, भरम्यौ बोहळी वेरा।5।

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज आप मुझे मुक्ति दो। इस संसार में, मैं चौरासी लाख योनियों में बहुत बार घूमा हूँ।

गुरु तारि बाबा, सेतज इंडज उरधज भोगवी, भुगति खैण्य अजेरा।6।[2]

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज आप मुक्ति दो। मैं सेतज (जल में पैदा होने वाला), इंडज (अंडों से पैदा होने वाला), उरधज (जमीन में नमी में पैदा होने वाला) चारों खानों को भुगत चुका हूँ।

गुरु तारि बाबा, वैर किया वैरी उठि लागा, मैं सरणां ताक्या तेरा।7।

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज आप मुझे मुक्ति दो। मैनें दुष्कर्म किये हैं, इसलिये वे शत्रु मेरे पीछे लगे हैं। अब मैं आपकी शरण में आया हूँ।

गुरु तारि बाबा, मन परच्यो पूरो गुर पायौ, न भजुं आन अनेरा।8।

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज मुझे मुक्ति दो। अब मेरा मन परच गया है, और मैनें आपको पहचान लिया है। अब मैं अन्य किसी का स्मरण नहीं करुंगा।

गुरु तारि बाबा, अरज करुं साहिब जी कै आगि, मोहि संबहो अबकी वेरा।9।

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज मुझे मुक्ति दो। मेरा आपके सामने यही निवेदन है कि इस बार मुझे सहारा दो।

गुरु तारि बाबा, आवागुवण सह्या दुख संकट, फिरयौ अनंत ही फेरा।10।

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज मुझे मुक्ति दो। मैनें इस आवागमन के चक्र में अनेक दु:ख सहे हैं और अनंत चक्र काटे हैं।

गुरु तारि बाबा, वील्ह कहै विनती गुर आगै, द्यौ पार गिराय वसेरा।11।

हे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज मुझे मुक्ति दो। कवि वील्होजी गुरु के सामने विनती करते हैं कि अब मुझे भवसागर से पार करो।

2. साखी कणां की (राग सुहब)

आवो मिलो साधो मोमिणौं, रळि मिळि जमौ रचाय।1।[3]

हे साधो, आओ मिलकर सत्गुरु से प्रेम करें और मिल-जुलकर जागरण करें।

साच सिदक जमलै वोहरां, विसनो विसन जपाय।2।

जागरण में हम सच्चे सत्गुरु श्री जाम्भोजी महाराज की वाणी का विवेक करेंगे और उन्हें स्मरण करेंगे।

विसन जप्यां सुख सांपजै, जम गंजण तै छुटाय।3।

विष्णु का स्मरण करने से सुख की प्राप्ति होगी और दु:ख से छुटकारा मिलेगा।

जां संतां गुरु पोहई, जीवत जे र मराय।4।

विष्णु भगवान उन संतों को मिलते हैं जो अपने जीवन में अजरों से मुक्ति प्राप्त करते हैं।

जीवत मरै से उबरै, पोहंचै पार गिराय।5।

जो जीवित मुक्त होते हैं, वे भवसागर से पार पहुंच जाते हैं।

पार गिराए सुख भोगवै, हरि दीदार मिलाय।6।

पार पहुंचने पर उन्हें सुख मिलता है और भगवान के दर्शन होते हैं।

फूलो हलवी पाटौ कुंवळी, वीजळ इधक खिवांय।7।[5]

वहां अमृत की वर्षा होती है और ज्ञान के प्रकाश की बिजली

चमकती है।

मनसवां सुख भोगवै, आरत्य चित नै काय।8।

वहां मन इच्छा सुख भोगने को मिलता है और अपने चित में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता है।

सालोकी सा जुज सुं, सारुपी समाय।9।

वहां सलोकि मुक्ति (स्वर्ग में जाना) और सारूपी मुक्ति (दर्शन लाभ) होने पर वह विष्णु में लीन हो जाता है।

बिबां लोयण वेसुन्य वेसना, निस वासर्‌य जित नांहि।10।

वहां विष्णु के सिवाय किसी अन्य प्रतिबिम्ब को आंखें नहीं देखती है। वहां रात और दिन नहीं होते हैं।

वील्ह कहै विसनोइयो, साचो विसन सहाय।11।

कवि वील्हो जी कहते हैं-हे बिश्नोइयों! श्री गुरु जाम्भोजी महाराज ही सच्चे विष्णु हैं, जो अवश्य ही हमारी सहायता करेंगे।

3. साखी कणां की (राग सुहब)

भणौ गुणौ गुणवंतौ देव, जैंह गुणां न लाभै छेव।1।

ग्यान मन्य राखौ इकतारि, पाप धरम रा सुणौ विचारि।2।

श्री जाम्भोजी महाराज बहुत ही गुणवान हैं, जिनके गुणों का कोई अन्त नहीं है। मन को एकाग्र करके पाप और पुण्य का भेद सुनो।

ल्यै है अकोड़ करै अन्याव, चाड़ी चुगली सूं घणों हीयाव।3।

भान पर खर हांढ़ै लार, तातां थांभा र गल्य मार।4।

जो बुरे कर्मो से अन्याय करता है, चुगली करता है और जीवों को मारता है, उन्हें गर्म खम्भों से बांधकर वहां मारा जाता है।

बहण भाणजियां री लौ भाड़ि, दोरै मांहि पड़ैली धाड़ि।5।

वसत पराई पड़ी लहाय, दाबि रहै मैला मन मांय।6।

जो बहन भानजियों को बेचता है, वह नरक में जाता है। जो दूसरों की पड़ी हुई वस्तुओं को देखकर अपने मन में लालच करके उन्हें बताता नहीं

है, उनके मन में कलंक है।

पूछी नै कहै दिल रा चोर, गुरजां तणी सहैला ठोर।7।

मुरड़ि मजूरी राखै ताण, कीरिया मांहि पड़ैली हाण।8।

ऐसे चोर प्रवृति के लोग पूछने पर भी नहीं बताते हैं, उन्हें यमदूतों के मुगदरों की चोट सहनी होगी। जो लोग मजदूरों की मेहनत मारकर रख लेते हैं, ये दुष्कर्म हैं।

रुंखां तणी नै पाळै दया, वाढ़े वनी कुंभी भैं पया।9।

अणछाण्यौ पाणी वरताय, जीवां नीवैं नै घातै जाय।10।

जो हरे वृक्षों पर दया नहीं करता है, उसे कुंभी पाक नरक भोगना पड़ेगा। जो बिना छाने पानी का प्रयोग करते हैं व उन जीवों को नष्ट करते हैं। यह भी पाप कर्म है।

धांधा धुलै रहै अचेत, तां पापां तां हुवै परेत।11।

सुभ्यागतां न मेलै तार, थूलां सरसा हुवै खवार।12।

जो हड़बड़ी में अचेत रहते हुए ही काम करते हैं, वे प्रेत योनी में पड़ेंगे। जो अतिथियों का आदर नहीं करते हैं, वे लोग मूर्ख हैं।

जाति जैण रो नैं करै काण्य, पापी पाप कमावै जाण्य।13।

घासा मोस चालै घणौ, ते दुख सहिस्यै दोर तणौ।14।

जो कुकर्मियों से दूर नहीं रहता है, वह जान बूझकर पाप कर्म करता है। जो शंका शर्म में ही इस प्रकार के कार्य करता है, वह नरक में जाएगा।

धांधा धुलै चालै घणौ, रुड़ा नै टळै रुति आ भींटणौ।15।

रळि खोटै रळि पीसै छड़ै, इण्य विध्य घर सगळो आभड़ै।16।

जो उतावला होकर चलता है, ऋतुवंती स्त्री से परहेज नहीं करता है और उनसे रलमिल कर कार्य करता है, इससे सारा घर दु:खी होता है।

जूंवां लीखां करै सींघार, नागड़ दूत दिवैला मार।17।

सीख दीयां बोलै कड़कड़ी, दोरै दुख सहिस्यै बापड़ी।18।[6]

जो जूंवों-लीखों को मारते हैं, उन्हें नंगे दूतों की मार पड़ेगी। जो शिक्षा देने पर कड़वी बोलती है, वह नरक में पड़ेगी।

सुणियौ ग्यान नै करीयो रीस, सतगुर कह्यो विसोवा वीस।19।

करौ कमाई न करो ढ़ील, गुर फुरमाया पाळो सील।20।

हे सज्जनों, मन को शान्त करके इस ज्ञान को ग्रहण करो। सत्‌गुरु

श्री जाम्भोजी महाराज ने जो कुछ कहा है, वह पूर्ण सत्य है। तुम सच्चे मन से अपनी कमाई करो और शील धर्म की पालना करो।

सबद विचारी बोलै वील्ह, सुरगे जाय करो थे लील।21।[7]

कवि वील्होजी यह विचारपूर्वक कहते हैं कि सत्कर्म करने से तुम्हें स्वर्ग का आनन्द मिलेगा।

4. साखी छंदां की (राग धनांसी)

बाबो सांभल्य छ वागड़ देस, पोहमी पीतंबर आवीयौ।
कहीं पूरबलै सक्रमैं नरेस, रांकि रतन धन पावीयौ।
रांक पान रतन चड़ीयो, अैसी सुण ज सोय।
आप देव त्रभुण नायक, मील्यौ परगट होय।
आलीगार ओळ्ख्यौ, गुर गुदड़ियै स वेस्य।
संग साधां साम्य आयो, सांभल्य ज वागड़ देस्य।
पोहमी पीतंबर आवीयौ।1।[8]

इस बागड़ देश में श्री विष्णु भगवान ने जाम्भोजी के रूप में अवतार लिया है। किसी पूर्व जन्म के सत्कर्मो से इन गरीबों को यह रतन मिला है। रंकों के हाथ में रतन आया है, ऐसा हमने सुना है। तीन लोक के स्वामी यहां प्रगट हुए हैं। ज्ञानियों ने इन्हें साधारण वेस में ही पहचान लिया है। संतों के साथ स्वामी इस बागड़ देश में आये हैं।

साधो जाणौ जे जोवण जाय, नैणे नारायण देखिस्यां।
उथ्य मीलीया छै मोनीहर पात, माहै मदसुदन नै पेखिस्यां।
पेखणो कोड्यां तरण तारण, सुपह दाखण पार।
मोमीण मन्य हरष हुवौ, भेटिस्यां दीदार।
हीयो रस मन विगस, सांभल्यौ हरि नांव।
कीवो मयातै मोह छूटो, जाणौ जे जोवण जांव।
नैणे नारायण देषिस्यां।2।

जो उन्हें विष्णु रूप में जानते हैं, वे उनका दर्शन करने जाते हैं। वहां साधुओं में विष्णु भगवान स्वयं विराजमान हैं। वे करोड़ों मनुष्यों को सहज ही

मुक्ति देने वाले हैं। ज्ञानियों के मन में खुशी है कि उनके दर्शन करेंगे और मिलेंगे। उन्होंने जब भगवान का नाम हृदय में लिया तो खुशी हुई। जब उनके दर्शन किये, तो मोह माया से छुटकारा मिला।

पूगा पहल्य सहनाण, जाणी ज त्रभुणां धणी।
एह अचंभी वात, जाटे जीकारौ भणी।
जाटे जीकारौ भणी, नर बोलता होकारि।
सुसबुध्य संध्या विचारि लैणां, पुरष अथवा नारि।
पालटी कुपरि कुबाण्य मेल्ही, हुवा स मैडि सुजाण।
भाव सूं गुरमील्यौ भगतां, पूगा पहल्य सहनाण।
जाणी ज त्रभुणां धणी।3।[9]

उनकी पहली पहचान यह है कि वे तीनों लोकों के नाथ हैं। यह अद्भुत बात और हुई कि जाटों ने जीकारा देकर बुलाना सीखा, जो पहले क्रोध से बोलते थे। उन स्त्री-पुरुषों के हृदय में सद्बुद्धि का संचार हुआ। उनके दुर्जन भाव छूट गये और वे सज्जन हो गये। जब उनसे पहली पहचान हुई तो वे भक्तों से भाव करके मिले।

देवा हो अति देव, सारंगधर संभराथळे।
जीण्य सतगुर री सेव, कीजै मन्य सुध मीळे।
मन्य सुध सेव कीजै, हुवा मंगलाचार।
पांच सात नव कोड़ि बारा, आयो तारणहार।
आरती कीजै नांव लीजै, जीव काजै सेव।
संभरा परगट बाबौ, देवा ही अति देव।
सारंगधर संभराथळे।4।[10]

देवों के देव विष्णु भगवान संभराथल पर विराजमान हैं। जो सच्चे मन से उनकी सेवा करते हैं-उन्हें देवजी मिलते हैं। उनकी शुद्ध मन से सेवा करने से खुशी मिलती है। गुरु जाम्भोजी पांच, सात, नौ और बारह कोटि जीवों को मुक्ति देने वाले हैं। अपने जीव की मुक्ति के लिये उनकी आरती करो और उनका स्मरण करो। जो संभराथल में प्रगट हुए हैं, वे जाम्भोजी महाराज देवों के भी देव है।

मोमिणां मन्य मोटी आस, साचा नै सतगुर तारसी।
देसी अमरापुरि वास, आवागवण निवार्यसी।

आवागवण निवार्यसी, जे मन्य सुध ध्याइयौ।
जीवत मुवा खाक हुवा, ते अमरापुरि पाइयौ।
सुध गुर की आण वहिस्यौ, ताण थंदै हारिस्यै।
वील्ह जपै आस कीजै, साचां नै सतगुर तारसी।5।

ज्ञानियों के मन में यह बड़ी आशा है कि जो सत्य मार्ग पर चलते हैं, उन्हें जाम्भोजी मुक्ति देंगे। उन्हें स्वर्ग में स्थान देंगे और उन्हें जन्म-मरण से छुटकारा देंगे। उनका ही आवागमन मिटेगा, जिन्होंने उनका शुद्ध भाव से स्मरण किया है। जिन्होंने जीवित मुक्ति प्राप्त की है, उन्हें ही स्वर्ग मिलेगा। जो शुद्ध भाव से गुरु महाराज की आज्ञा में चलेंगे, उनके पाप कटेंगे। कवि वील्होजी जाम्भोजी का स्मरण करते हुए यह आशा करते हैं कि सच्चाई पर चलने वालों को अवश्य ही गुरु महाराज तारेंगे।

5. साखी छंदां की (राग सिंधू)

पहलै मेळै की मांड हुई, सोळा सै अठताळै।
तेरा धरमी धरम करै, तीरथ कल्यौ उजाळै।
उजळौ तीरथ कीयो सतगुर, पाप खंडण कारण।
कुफर भंजे राह कीयौ, काज्य भगतां तारण।
साहेब गरीबी गुण विचारौ, विगति नांहि जुजवी।
चेत मासे पख्य पहलै, मांड मेळे की हुई।1।

पहले मेले का प्रारम्भ संवत् 1648 में हुआ। वहां पर धर्मी लोग धर्म करते हैं और यह कलियुग में तीर्थ स्थान स्थापित हुआ। सत्गुरु ने इस उज्ज्वल तीर्थ को पापों को नष्ट करने के लिये बनाया है। पापों को नष्ट करने का यह रास्ता अपने भक्तों को दिखाया है। इसमें सत्गुरु महाराज के गुणों का विचार करो। अन्य कोई विचार न करो। चैत्र मास के पहले पक्ष में इस मेले का आरम्भ हुआ था।

निज तीरथ मेळ हुई, भाव कीयो भल सांई।
मोमीण माघ जुळै, जीवड़ा क तांई।
जीव काज काढ़ि माटी, पाल्य प परवाहीयै।

सबद सतगुर सच्या, कंण काज्य कंकर गाहीयै।
जपै जाप नीवाज रोजा, जुगति मीलीया सतपंथे।
आस पीयासा मीलै मोमीण, मेळ हुई निज तीरथे।2।

उस तीर्थ से सबका मेल हुआ, यह गुरु महाराज की कृपा है। अपने जीवन के उद्धार के लिये संत लोग ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में भी इकट्ठे होते हैं और तालाब से मिट्टी निकालकर पाल पर डालते हैं। सत्गुरु के सबद सच्चे हैं, उनमें से सार हमें ग्रहण करना चाहिये। लोग युक्तिपूर्वक इस सत्य के पंथ में मिले हैं और वे विष्णु का जाप करते हैं। जिन्हें मुक्ति की आशा है, वे साधुजन यहां इकट्ठे हुए हैं।

एक दोवड़ दुत हड़ी, सुख मां सोर उपायौ।
नाठो चोर पकड़ि लियो, भाखर जोरि छुड़ायौ।
जोर करि रजपूत रुता, चोर वांसै घातियौ।
धका धूण्य पग न छाडो, सारत्य मेळौ साथीयौ।
लिख्य कारण्य जोग जुड़ीयो, मरण आण्य मेल दई।
सुख मांह दुख उपनुं, दुत हड़ि दोवड़ लई।3।

किसी धूर्त ने उस मेले में एक दो लड़ी कम्बल चुरा ली। उस सुखी वातावरण में शोर मच गया। उस भागते हुए चोर को पकड़ लिया गया व पहाड़ पर छोड़ दिया। राजपूतों ने जोर जबरदस्ती करके उस चोर को छुपा लिया। खोजी ने पैरों के चिन्ह नहीं छोड़े और समस्त लोग उसके पीछे हो गये। यह कोई पूर्व जन्म के कर्मों का लेख था, इसलिये यह संयोग हुआ। मेले के लोगों ने आग्रह किया। इस प्रकार उस सुख में विघ्न पैदा हुआ। उस धूर्त द्वारा चुराई हुई दोवड़ उन लोगों ने ले ली।

सोक वाजै सर वहै, वाजै धणष कुबाणां।
हथेयारे हाथ पड़ै, भाखर ओर झांभाणां।
हथेयारे हाथ पड़ीया, सुरेवां गहि मंडियौ।
हुब हुई अर मंढयौ कंकळ, कायरे पग छड़ीयौ।
गुर्यौ सुगरा साल सुधा, संकड़ सुरा रहै।
चोर कारण्य कल्ह माती, सोक वाजै सर वहै।4।

वहां लड़ाई हुई, शस्त्र और धनुष-बाण चलने लगे। भाखर और उन साधुजनों में लड़ाई हुई। हथियारों के प्रभाव से उन शूरवीरों ने चोर पकड़

लिया। उन शत्रुओं में भय पैदा हो गया और उन कायरों के पैर उखड़ गये। जो सत्गुरु के वचनों को मानने वाले थे और सत् पर अडीग थे, वे शूरवीर वहां डटे रहे। उस चोर के कारण यह लड़ाई हुई और तीर चले।

भाखरसी क्यौं उबरै, जीह नै लागौ काळौ।
चुखनुं उठ्यौ कोप कर, जांणे स्यंघ पंचाळौ।
पंचाळ ज्यों पड़ताळै द्यैतो, पाधरो भाखरि गयौ।
सीकर न होई तौ सीस खेर, तुरति भड़ पाकड़ि लयौ।
लीख्य विण्य क्यौं लोह लागै, मरण तै मत को डरे।
चुखनुं की चोट आगी, भाखरौ कयौं उबरे।5।

भाखरसी किसी प्रकार नहीं बच सकता क्योंकि उसके कलंक लग गया। चुखनु क्रोध करके खड़ा हुआ जैसे पंचाला सिंह खड़ा होता है। सिंह की तरह तेज चलता हुआ, चुखनु भाखर के पास गया। उसने जाकर तुरन्त उसे पकड़ लिया। बिना लेख के शस्त्र नहीं लग सकता। इसलिये मरने से कोई डरो मत। चुखनु की चोट के सामने भाखरसी बचा नहीं।

धानु मांडी खरतर खड़ी,बलवा मोहे षड़ावौ।
गुर आयौ मरण कह्यौ, वैगा वार नै लावौ।
वार नै लावौ मेल्ह दावौ, धांनीयै कंध मंडीयो।
तुंवर बलव तेग वाही, कंवळ धड़ कुटका कीयो।
रजपूत न्हाठा मिट्यौ भारत, रहयौ तागो भलसीरी।
धानु पूनीयै कंध मांड्यौ, सत सीधौ खेली खरी।6।[11]

धानु नामक व्यक्ति ने अपने प्राण सत्य के लिये देने का निर्णय किया और बलवा के सामने खड़ा हुआ। उसने कहा गुरु के वचनों के लिये मुझे मरने दो, जल्दी करो, देर न लगाओ और धानु ने अपना कंधा मांड दिया। बलव तुंवर ने तलवार चलाई और उसका मस्तक धड़ से अलग कर दिया। रजपूत भाग गये और वह लड़ाई खत्म हुई। धानु पूनिये ने अपना कंधा मांडकर सत्य के लिये बलिदान दिया।

धानां दान सुमान सुरे, प्रभ मोटौ सार्यौ।
गुर आपौ मरण कह्यौ, गुरमुखि आपौ मार्यौ।
आपौ त मार्यौ प्रभ सार्यौ, संम छंमछर अर चोस्टे।
चेत मासे पख पहलै, लीखी कलम स नै घटै।

चवदसि क दिन चल्यौ धानुं, कह वील्ह वीचार्यो।
मुगति दान सनमान धानो, प्रभ मोटो सारीयो।7।[12]

इस धानु का यह आत्म बलिदान बहुत बड़ा है। उसने बहुत बड़ा काम किया है। गुरु महाराज ने स्वयं मरने के लिये कहा था। उस गुरुमुखि ने यह कर दिखाया। चैत्र के कृष्ण पक्ष संवत् 1664 में वह स्वयं बलिदान हुआ और अपना कार्य सिद्ध किया। जो भाग्य में लिखी है, वह मिटती नहीं। कवि वील्होजी कहते हैं कि धानु ने चवदस के दिन अपना बलिदान दिया। धानु को मुक्ति सम्मान से मिली, जिसने बड़ा भारी कार्य सिद्ध किया।

6. साखी (राग आसा)

चौपई

करि कीरपैंण कहीयै विसनोई, धरम नेम तांह बुत न होई।
धरम जुह न चालै जूता, जलम हारिवे दीन विगूता।1। टेक

जो बिश्नोई जन धर्म नियम मानने में कंजूसी करते हैं और धर्म के रास्ते नहीं चलते हैं। वे अपना जीवन व्यर्थ खो देते हैं और धर्म को हानि पहुंचाते हैं।

जीव क कारण जमै न आवै, आप भुला औरां भुलावै।
गुर क ग्यान न जागै सूता, जलम हारिवे दीन विगूता।2।

वे अपने जीव की भलाई के लिये जागरण में नहीं आते हैं। वे स्वयं तो भूले हुए हैं ही औरों को भी भ्रम में डालते हैं। जो सोये पड़े हैं और ज्ञान से भी नहीं जाग रहे हैं, उन्होंने अपना जीवन व्यर्थ खो दिया है।

घुरहर करै धरणी रुखवाळै, कटक गुर को कौल न पाळै।
दीसता नर लखणै कूता, जलम हारिवे दीन विगूता।3।

वे लोभवश अपने घर की ही रखवाली करते हैं। वे मूर्ख गुरु के वचनों को नहीं पालते हैं। वे देखने में मनुष्य लगते हैं और व्यवहारों से कुत्ते हैं। ऐसे मनुष्यों ने अपना जीवन व्यर्थ खो दिया है।

आपण खारा करै खुवारो, कहंता वात नै लहै वारो।
माया मेल्ह गरब मां सूता, जलम हारिवे दीन विगूता।4।

वे स्वयं तो खराब है ही और लोगों को भी खराब करते हैं। वे विचार

कर बात नहीं कहते हैं। वे मोह-माया के गर्व में डूबे हैं। ऐसे मनुष्यों ने अपना जीवन व्यर्थ खो दिया है।

जां सैतान सदा घटि जूकै, काग कळह घटहुं नहीं चूकै।
रुदि करै खर भज्यौ रूता, जलम हारिवे दीन विगूता।5।

जिनके हृदय में हमेशा शैतान बैठा रहता है। वहां हमेशा कलह मची रहती है। वे बदमाशी करते हैं और धर्म को भंग करते हैं। ऐसे मनुष्यों ने अपना जीवन व्यर्थ खो दिया है।

कूड़ न डरै कड़कतां बोलै, भव विण्य भार अरथ विण बोलै।
वेद भेद वीना भड़कै ज्यौं भूता, जलम हारिवे दीन विगूता।6।

वे झूठ बोलने से नहीं डरते हैं और क्रोध से बोलते हैं। वे संसार में बिना मतलब ही झूठ बोलते हैं। वेद के ज्ञान के बिना जैसे भूत भड़कते हैं इसी प्रकार ऐसे मनुष्यों ने अपना जीवन व्यर्थ खो दिया है।

गुर अखर की परखि न जाणै, सीर आयो सैतान वखाणै।
धूत धूत मिल्या ठग धूता, जलम हारिवे दीन विगूता।7।

वे गुरु के ज्ञान को नहीं जानते हैं। उनके सिर पर हमेशा शैतान सवार रहता है। वे लोग स्वयं तो बदमाश है ही और बदमाशों से मिल जाते हैं। ऐसे मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ खोते हैं।

आप अपरच गति नै परचावै, ठाले उपरि रीतौ नांवै।
अचगळ बोल कहै विपरीता, जलम हारिवे दीन विगूता।8।

वह खुद समझता तो है लेकिन अपने जीवन को नहीं सुधारता है। वह खाली के ऊपर खाली ही डालता है और वह अज्ञानी धर्म विरुद्ध बातें कहता है। ऐसे मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ खोते हैं।

उंहकार्‌या आंटा भाजै, चोरी जारी करत न लाजै।
सरम नहीं कोई माई न पूता, जलम हारिवे दीन विगुता।9।

वह अहंकार में हमेशा टेढ़ा चलता है और वह चोरी-जारी करते समय जरा भी नहीं शंकता है। ऐसे पुत्र को अपनी मां की भी कोई शर्म नहीं है। ऐसे मनुष्यों ने अपना जीवन व्यर्थ खो दिया है।

जप तप सील सभायै पहपूरा, दान दया सत संजम सूरा।
वील्ह कहै मन्य इंदी जीता, जलम जीत्य जैंण पारे पहूंता।10।[13]

जो मनुष्य जप, तप, शील और भाव से पूर्ण है तथा दान, दया, सत्

और संयम का शूरवीर है। कवि वील्होजी कहते हैं कि जिन्होंने मन और इन्द्रियों को जीत लिया है, ऐसे मनुष्यों ने अपना जन्म सार्थक करके भवसागर को पार किया है।

7. साखी (राग धनांसी)

दुहा-दोय तरवर इह बाग मां, एक खारौ एक मीठ।
नुगरां नजरि न आव ही, सुगरा सनमुखि दीठ।1।

इस संसार में सच्चे और झूठे नामक दो पेड़ हैं। उनमें एक मीठा और दूसरा खारा है। ये पेड़ अज्ञानियों को नहीं दिखते हैं परन्तु ज्ञानियों को सहज ही दिखते हैं।

एक इम्रत च्यारे फळ, दूजै विष फळ च्यार।
जें वाह्‌यौ ते भोगवै, सुरता लेह विचार।2।

एक पेड़ के तो अमृतरूपी चार फल लगे हैं और दूसरे पेड़ के विषरूपी चार फल लगे हैं। जिस मनुष्य ने जैसा पेड़ लगाया, उसे वैसा ही फल मिलेगा।

इम्रत पी अमर हुवै, विष पी मरे मरि जाय।
अै फळ सतगुर दाखव्या, विरला के बुझाय।3।

अमृत पीने से मनुष्य अमर हो जाता है लेकिन विष पीने से मनुष्य मर जाता है। ये फल गुरु महाराज जाम्भोजी ने बताये हैं, जो बिरलों के समझ में आते हैं।

क्रोध मांण माया कुलोभ, अै च्यारौं विष फळ जोय।
याथी अवगुण उपजै, जीव नै दोर होय।4।[14]

क्रोध, अभिमान, माया और लालच ये चार विषरूपी फल हैं। इनसे अवगुण पैदा होते हैं और जीव को नरक में जाना होगा।

दान सील तप भावना, अै इम्रत फळ च्यार।
वील्ह कहै गुण उपजै, जीवड़ा पहुंचै पार।5।[15]

दान, शील, तप और भावना ये चार अमृत रूपी फल हैं। कवि वील्होजी कहते हैं इनसे गुण उत्पन्न होते हैं और जीव भवसागर से पार हो जाता है।

8. साखी छंदां की (राग आसाधाहड़ी)

करमणि चलणौं इणि संसार, सबळो करि करि चालीयै।
जीवड़ा नै जोखो होय, सोई डर पाळीयै।।
पालि सो डर चेति ओसर, राखि मन अमरापुरी।
करो सोई गुर फुरमाई, साच करि करणी खरी।।
मानी आण पिछाणी सतगुर, पाप तैं मन पालीयै।
चेतणां संसारि करमणि, संबल करि करि चालीयै।1।

हे करमां, इस संसार में बहुत सोच समझकर चलना चाहिये। जिन कर्मों से इस जीव को दुख हो उनसे डरिये। इस भय से चेत और अवसर को मत गंवाओ। स्वर्ग जाने की इच्छा रखो। जो गुरु महाराज ने बताया है वह सत्य कर्म करो। सत्गुरु की मर्यादा को रखते हुए पापों से मन को हटाओ। इस संसार में, हे करमां, सावधान होकर चलना चाहिये।

करमणि जपै विसन को नांव, जगत गुरु मनि रहै।
कसवीं मन्यौ न मेल्है मांण, रीणौं बैंण न कहै।।
वैंण रीणौं न कहै कसवों, राहसिरि कंध मांडीयो।
सांमिरिण संग्राम हुवो, मरणैं को बीड़ो लीयो।।
मेल्हि मायाजाळ चाली, राखि तागो पंथ को।
सुरग साम्हां पाव परठै, जप नांव विसन को।2।

हे करमां विष्णु के नाम का स्मरण करो और उस जगतगुरु को अपने मन में रखो। जिनका मन शुद्ध है, वे अभिमान नहीं करते हैं और झूठ नहीं बोलते हैं। झूठा न कहकर सच्ची राह प्राप्त करने के लिये अपने प्राणों का उत्सर्ग करो। सत्य के लिये संग्राम करो और प्राण देने का बीड़ा लो। माया मोह को हटाकर सच्चे रास्ते चलो। स्वर्ग की ओर कदम रखो और विष्णु भगवान का स्मरण करो।

करमणि चलती सिंवर्यौ सामि, सरीर सत घणौं।
करमणि गोरां लई बुलाई, औ अवसर आपणौं।।
आपणौं औसर एम गोरां, लिखी कलम स नां घटै।
जाय चौहटै साको मांड्यो, लिखी सांई न मिटै।।
वाहि तेग समाहि आसू, हैहैकारो वरतीयो।

धन्य तेरो ध्यान करमणि, सीझती साको कीयो।3।

करमां ने प्राणोत्सर्ग पर जाते हुए जाम्भोजी महाराज के सत वचनों का स्मरण किया। करमां ने अपने साथ गोरां को बुला लिया और कहा यह अवसर अपना है। यह अपना अवसर आ गया और जो भाग्य में लिखा है, उसे कोई मिटा नहीं सकता। चौहटे के बीच में जाकर साका (बलिदान) किया। जो भगवान ने लिख दिया है, वह नहीं मिट सकता। उसने आंसुओं को काबू करके तलवार चलाई। इससे चारों ओर हाहाकार मच गई। हे करमां तूं धन्य है, जिसने सत्य के लिये बलिदान किया।

गुर फुरमाई खांडाधार, औसर आयो सारीयै।
आपणड़ो जीव कबूल, पर जीव उबारीयै।।
उबारीयै जीव जीव काजै, राखि सधीरो हीयो।
रोखां ऊपरि मरण मातो, कीजै ज्यौं करमणि कीयो।।
करणी पालि उजाळि सतपथ, प्रेम जोति पाइयो।
जीव काजै जिंद खरच्यौ, कीयो गुर फुरमाइयो।4।

गुरु महाराज ने खाण्डे की धार वाला यह पंथ बताया है। अवसर आने पर दूसरे जीव की रक्षार्थ अपने प्राण दे देने चाहिये। अपने हृदय में धैर्य धारण करते हुए दूसरे जीवों को बचाइये। वृक्षों की रक्षार्थ मरना चाहिये जैसे करमां ने अपना बलिदान किया। उसने अच्छी करनी करके इस सतपंथ को उज्ज्वल किया। इससे उसे परम ज्योति मिली। उसने जीवों की रक्षार्थ अपने प्राण दिये और गुरु महाराज की आज्ञा मानी।

करमणि खड़ी छै खेजड़ियां काजि, रैवासड़ी कै चोहटै।
संवत सोळासै संसारि, समैं छमछर इकसटै।।
इकसटै छमंछर जेठ मासे, किसन पखे थावर दिने।
बीज कै दिन कीयो पयाणौं, सारीयो सूधो मने।।
निरवाहि नांव नसीब मोटो, पांव दे बेड़ै चड़ी।
गुर परसादे वील्ह बोलै, करमणि अर गोरां खड़ी।5।

करमां ने खेजड़ियों की रक्षार्थ रैवासड़ी के चौहटे में अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। संवत् 1661 में जेठ का महीना, कृष्ण पक्ष की दूज और शनिवार के दिन स्वर्ग में प्रस्थान किया और शुद्ध मन से यह कार्य किया। विष्णु भगवान के नाम पर बड़े भाग से वह स्वर्ग जाने वाले विमान पर चढ़ी।

कवि वील्होजी गुरु कृपा से कहते हैं कि करमां और गौरां ने अपने प्राणों का बलिदान दिया।

केसोजी देहडू संग्रहालय हस्तलिखित प्रति 19 वीं श, सा. सं. 84, पत्र-31

9. साखी (राग रामगीरी)

दुहा

आल्हाणी आतम थकै, आळोच्यौ मन मांहि।
जां जां जुग मां जीवीयै, ते दिन दुख मां जांहि।1।

जब तक यह जीवन है तब तक आत्मा और शरीर का सम्बन्ध है, ऐसा इस मन में विचार करो। जब तक यह जीवन है, उतने तक दु:ख ही दु:ख हैं।

सिरि मतौ खोखर कियौ, झड़ न जोए काय।
पथ सतगुर को लाजवै, जे को इण परि थाय।2।

वृक्षों की रक्षार्थ खोखरों ने प्राण देने का निश्चय किया। यदि कोई वृक्षों की रक्षा न करे तो गुरु का धर्म लज्जित होता है।

खींवणि धन्य तूं ही, नेतू नैण सधीर।
रहि कारण रुंखां ऊपरै, वह सुंपीया सरीर।3।

खींवणी और नेतू को धन्य है, जिन्होंने धैर्यवान रहकर वृक्षों की रक्षार्थ अपने शरीर अर्पित कर दिये।

वन सिंघार्‌यौ भाटियां, कुबधी कागां सोय।
जींह ऊपरि मोटो खड्‌यौ, सुरगे पहुंतो सोय।4।

कुकर्मी भाटियों ने हरे वृक्षों को काटा। इनकी रक्षार्थ मोटे ने अपने प्राण दिये और वह स्वर्ग में गया।

मोट खोखर मेरी वारि, निहचळ राखि र चित।
तज्य काया जीत जाइये, सुष सुहावै नित।5।

मोटे खोखर ने निश्चित मन से कहा कि शरीर त्याग की अब मेरी बारी है। मैं स्वर्ग में जाना चाहता हूँ, जहां अनन्त सुख हैं।

पहलू नांव विसन को, सिंवरुं सिरजणहार।
जिण्य ओ पंथ चलाइयो, खरतर खंडाधार।6।[16]

सर्वप्रथम मैं उस सिरजनहार विष्णु के नाम का स्मरण करता हूँ, जिन्होंने यह पंथ बताया है, जो खाण्डे की धार के समान है।

विसनोई वसै तिलवासणी, सती लोक सुजाण।
राह चालै सतगुर तणां, मानै गुर की आण।7।

तिलवासनी गांव में बिश्नोई रहते हैं, जो सत्य का पालन करने वाले हैं। जो सतगुरु के बताये मार्ग पर चलते हैं और गुरु की मर्यादा रखते हैं।

जपै नांव विसन को, खरतर किरिया सूर।
राखै रुंख सुभाव सूं, नगरी इधको नूर।8।

जो विष्णु भगवान का नाम लेते हैं और सत्य क्रिया करने में शूरवीर हैं। वे स्वभाव से वृक्षों का पालन करते हैं। वे वृक्ष नगर का प्रकाश हैं।

खेजड़ले किरपो वसै, भाटी गोपालदास।
संक न मानै (किरपो) देव री, वन रौ करे विणांस।9।

खेजड़ले गांव में किरपो और गोपालदास भाटी रहते हैं। किरपो देव जी के वचनों को नहीं मानता है और वह हरे वृक्षों को काटता है।

वाढ़ै विरख सुहावणां, (किरपे) कियो कहर सींधार।
आई खबरि जमात्य नै, सर पर हुई सार।10।

किरपे ने अच्छे-अच्छे वृक्षों को काटा है, मानों वृक्षों पर विपत्ति टूट पड़ी। जब इस बात का पता बिश्नोइयों को चला तो उसकी तुरन्त पड़ताल की गई।

जमाते अळोचियो, मरणौ इण्य परि थाय।
इण्य ओसर मरिय नहीं, नेकी रहे न काय।11।

बिश्नोइयों में यह विचार हुआ कि इन वृक्षों की रक्षार्थ मरना चाहिये। यदि इस शुभ अवसर पर हम नहीं मरेंगे तो कोई भलाई नहीं बचेगी।

पांचौ पीथो परगटा, नगरी मां सिरदार।
चाल'र खेजड़लै गया, भाटी क दरबार।12।

पांचो, पीथो और परगट नगर के मुख्य व्यक्ति थे, वे चलकर खेजड़ला गांव किरपे भाटी के दरबार में गये।

पौह फाटी पगड़ौ हुवौ, साधे मांड्‌यौ न्हांण।
सूरा होय संसा बहै, जित झबकी तरवारि।13।

जब सवेरा हुआ तो उन साधु पुरुषों ने कुर्बानी देने का निश्चय

किया। जहां-जहां भी तलवार चली, वहां-वहां उन बहादुरों ने अपने बलिदान दिये।

पहल्य मुंही खींवण्य खड़ी, सत सूं घणी करारि।
विसन भगत मोटो खड़यौ, गुर सूं हेत पियारि।14।

सर्व प्रथम खींवणी ने अपना बलिदान दिया, जिसे सत्य से प्रेम था। फिर विष्णु भगत मोटे ने अपने प्राण दिये, जिसे सत्गुरु से अधिक प्रेम था।

जै उपरि नेतू खड़ी, चाली जलंम सुधारि।
सुरग विवांण्य वांनै उतर्या, जिंह चड़ि पहुंता पारि।15।

इसके बाद नेतू ने अपने प्राण दिये और उसने अपने जन्म को सार्थक किया। उनके लिए स्वर्ग से विमान आया, जिस पर चढ़कर वे स्वर्ग में चले गये।

हूर कसुर मन्य मोहुणी, सर पर साध सुजाण।
जामण मरण जुरा नहीं, नित नवला न्हाण।16।

वहां पर अप्सराएं देवताओं का मन मोहने वाली हैं और वहां पर साधु सज्जन भी हैं। वहां पर जन्म, मरण और वृद्धावस्था नहीं है। वहां हमेशा ही युवावस्था रहती है।

डील दमकै वीज ज्यूं, मानो ऊगतो भांण।
वील्ह कहै गति सांभळो, साधां तणां वखांण।17।

वहां शरीर बिजली के समान चमक रहा है, मानो उदय होता हुआ सूर्य हो। कवि वील्होजी कहते हैं अपने जीवन को मुक्त करो और यही वचन साधुजन कहते हैं।

10. साखी उमाहौ (राग धानांसी)

दुहा

बल्य जाऊं झांभ (रे नांव) नै, साधां (मोमिणां रो) प्राण अधार।
तुं जां रे हिरदै वस्यौ, तेरा जन पुंहता पार।1। टेक।।

कवि वील्होजी कहते हैं कि मैं जाम्भोजी के नाम पर बलिहारी हूं। वह नाम साधुजनों के प्राण का आधार है। जिनके हृदय में आपका नाम है, उन्हें मुक्ति मिलती है।

बाबो जांबू दीपे प्रगट्यो, चौहचकि कियो उजास।
अपदीठौ केवळ कथै, जिंह गुर की हमै आस।2।

श्री गुरु जाम्भोजी महाराज जम्बू द्वीप में प्रगट हुए हैं, जिससे चारों ओर प्रकाश हो गया है। वह गुरु हमने स्वयं देखा जो सत्य वचन कहता है और उस गुरु से हमें बड़ी आशा है।

संभराथळ रळि आंवणौ, जित देव तणों दीवाण।
परगटिये पगड़ो हुवौ, निस अंधियारी भाण।3।[17]

सभी लोग मिलजुल कर संभराथल आते हैं, जहां सत्गुरु जाम्भोजी महाराज का दरबार है। उनके यहां प्रगट होने से ज्ञान का प्रकाश हो गया, जैसे अन्धेरी रात्रि के बाद सूर्य उदय होने से प्रकाश होता है।

एकळवाई पग ठयौ, करि तलबी मुख जाप।
संभु रो सिंवरण करै, जोय जप सोई आप।4।[18]

गुरु महाराज जाम्भोजी इस मरुभूमि में विराजमान हैं, जिनका मुख से सभी जप करते हैं। जिसका वे जप करते हैं, वह विष्णु भगवान स्वयं हैं।

भगवीं टोपी पहरतो, गळि कंथा दस नाम।
झीणी बाणी बोलतो, वरज्यौ (छ) वाद विराम।5।

गुरु महाराज जाम्भोजी भगवीं टोपी पहनते थे और उनके गले में जप माला थी। वे सत्य वचन बोलते थे और वाद-विवाद करना मना करते थे।

भूख नहीं तिसनां नहीं, मेल्ही छ नींद निवारि।
काम लबध्य व्यापै नहीं, तिंह गुर की बलिहारि।6।

गुरु महाराज को भूख, प्यास और नींद नहीं लगती थी। न ही उन्हें काम क्रोध सताता था। ऐसे गुरु को मैं बलिहारी हूँ।

इसकंदर परमोधियौ, परच्यौ मंहमद खांन।
राव राणां नुंवि चालिया, संभल्य केवळ ग्यांन।7।[19]

उनके ज्ञान से बादशाह सिकन्दर लोदी और महमद खान नागौरी भी प्रभावित हुए। और भी कई राव-राजा उनसे प्रभावित हुए और नवण किया।

मधमां ता उतिम किया, खरी घड़ी टकसाळ।
कहर करोध चुकाय कै, गुर तोड्यौ मायाजाळ।8।

गुरु महाराज ने मध्यम पुरुषों को उत्तम बनाया। उनके पास सत्य की टकसाल थी। काम-क्रोध को मेट कर गुरु ने माया जाल तोड़ दिया।

सीप वसै मंझि सायरां, ओपति सायर साथि।
रीणायर राचै नहीं, चाहे बूंद सुवाति।9।

सीप समुद्र में होती है और उसकी उत्पति भी समुद्र में होती है। लेकिन वह समुद्र में रहकर भी उसमें नहीं रचती है, वह तो स्वाति बूंद की इच्छा करती है।

जळ विणि तिसनां न मिटै, अन विणि त्रपति न थाय।
केवळ झंभ बाहर्‌यौ, कुण कहै समझाय।10।

जल के बिना प्यास नहीं मिटती है और अन्न के बिना भूख नहीं मिटती है। जाम्भोजी महाराज के सिवाय ज्ञान का प्रकाश अन्य व्यक्ति नहीं कर सकता है।

जळ सारै वीण्य माछला, जळ विण माछ मराय।
तम तौ सारौ हम विनां, तम विण्य हम मरि जाय।11।

जल तो बिना मछलियों के भी रह सकता है, लेकिन जल के बिना मछलियां मर जाती है। हे सत्‌गुरु जाम्भोजी आपको तो हमारी कोई जरूरत नहीं है लेकिन हम आपके बिना मर जायेंगे।

पपहियो पिव पिव करै, बोहली सहै पियास।
भुंय पड़ियो भावे नहीं, बूंद अधर की आस।12।

पपिहा पी-पी का उच्चारण करता है और बहुत प्यास सहता है लेकिन वह पृथ्वी पर पड़ा हुआ जल नहीं पीता है। उसे तो वर्षा की अधर बूंद की आस है।

हंसा रो मान सरोवरा, कोयल अंबाराय।
मधकर कुवळे रय करै, साध विसन कै नाय।13।

हंसों का स्थान मान सरोवर है और कोयल का स्थान आम का पेड़ है। भंवरे का स्थान कमल है और संतों का स्थान विष्णु भगवान का नाम है।

नरधनियां धनवाळ हो, करपण वाल्हा दाम।
विषियां वाल्ही कामणी, साधां विसन कौ नाम।14।

जो निर्धन है उसका धन से प्रेम है और कंजूस का दामों (पैसों) से प्रेम है। विषय भोगियों को स्त्री से प्रेम है लेकिन संतों का विष्णु भगवान के नाम से प्रेम है।

विणि बेड़ी जळ डूबतां, बूझै नहीं गिंवारि।
केवळ झंभ बाहर्‌यौ, कंवण उतारे पारि।15।

बिना नाव के जल में डूबता हुआ मूर्ख सहारा नहीं लेता है। ऐसा व्यक्ति जो श्री जाम्भोजी महाराज का सहारा नहीं लेता है तो उसे कौन पार उतारेगा।

ठग पाहण पोहमी घणां, (जां) मेल्ही दुंनी भुलाय।
पाखंड करि परमन हरै, जां मेरो मन न पत्याय।16।

इस पृथ्वी पर ठग बहुत हैं जिन्होंने दुनिया को भ्रम में डाल रखा है। वे पाखण्ड से दूसरों के मन को वस में करते हैं लेकिन मेरा मन उनका विश्वास नहीं करता है।

धन्य परेवा वापड़ा, छाजै वसै मुकाम।
चुणि चुगै गुटका करै, सदा चितारे स्याम।17।[20]

वे कबूतर पक्षी धन्य हैं जो जाम्भोजी महाराज के मन्दिर मुकाम के छाजे पर बैठते हैं। वे अपना चूण (दाना) भी चुगते हैं और इसके साथ-साथ उन्हें याद भी करते हैं।

अंबाराय वधावणां, आणंद ठांवौ ठांय।
साम्य समाहो मांडियौ, (पोह) कियो छ पार गिराय।18।

हम इस बात के लिये धन्य हैं कि जैसा आनन्द आमों के बागों में होता है वैसा ही आनन्द इस मरुभूमि पर है। गुरु जाम्भोजी ने ऐसा रास्ता बताया है जिससे हमें मुक्ति मिलेगा।

काच कथीर न राच ही, विणज्या (छै) मोती हीर।
मेरो मन रातो साम्य सूं, गुदड़ियो गुणां गहीर।19।

हम काच-कथीर को नहीं लेते हैं। हम तो हीरे-मोती का व्यापार करते हैं। मेरा मन तो सत्‌गुरु जाम्भोजी में लगा है, जो साधारण वेस में भी गुणों की खान है।

अवसर मिलिया मोमिणां, वळि मेळो कदि होय।
दुखी विहावै तम विनां, हरि विण्य धीर न होय।20।

हे साधुजनों, हमें यह शुभ अवसर मिला है, न जाने फिर कब मिले। हम तुम्हारे बिना दु:खी हैं और उस भगवान के बिना हमें धैर्य नहीं होता है।

बोल्यौ वील्ह उमाहड़ो, करि मन्य मोटी आस।
आवागुंवण चुकाय कै, द्‌यौ अमरापुरि वास।21।

कवि वील्होजी कहते हैं कि मैने गुरु महाराज की याद में यह उमंग की साखी कही है, मुझे उनसे बड़ी आशा है। मुझे जन्म मरण से रहित करके हे स्वामी, स्वर्ग का निवास दो।

कांही क मन्य को धणी, कांही के गुर पीर।
वील्ह कहै विसनोइयां, नांय विसन के सीर।22।

वे किसी के मन के मालिक है और किसी के वे पीर हैं। वील्होजी कहते हैं–हे बिश्नोइयों! अपन तो विष्णु भगवान जाम्भोजी की शरण में हैं।

सन्दर्भ टिप्पणियां

1. संतो मरण है जुग मांहि,
अवर जीव कुं ज्यान न दीजै, लेखा लेगा सांई।1।
सुरजन जी का हरजस

2. सेतज सेतूं जेरज जेरूं इंडज इंडूं, अइयालो उरधज खाणी।105।
जाम्भोजी का सबद

3. आवो मिलो जमलो करां, रळि मिळि जमो कराय।
आलम जी की साखी

4. जीवत मरो रे जीवत मरो, जिण जीवण की विधि जाणी।105।
जाम्भोजी का सबद

5. फुळौ हळवी पाटौ कुवळी, काया प्रम हंसाव।
जोते जोति मिलवाड़ा, न तै खोज न छाव।46।
आलम जी की साखी, रंगीलो

6. जूवां लिखां काढ़, छाछ में डारिये।
इण मार्यां सुख होय, पुत्र क्यूं नीं मारियै।3।
वील्होजी की बत्तीस आखड़ी

7. उत्तम जंग सूं जंगूं, ताथै सहज सु लीलूं।27।
जाम्भोजी का सबद

8. (क) औ गुर आयौ वागड़ देश, जग मां कियौ बाब चांदिणौ।
ऊदोजी नैण की साखी
(ख) एकलवाई थळसिरि आयौ, वागड़ देस सुहाव।
अज्ञात कृत साखी
(ग) 'वागड़ी देस' का वर्णन पाउलेट ने बीकानेर स्टेट गजेटियर में पृष्ट दो पर किया है।

9. जीकारो जाणै नहीं, खर कुकर की बाण्य।
वतळायां हो हो करै, निरमल कहि न वखाण्य।54।
सीसो तो सोहटौ वीकै, नहीं कंचण रै मोल्य।
जाट स जाटे जाट छै, वारट वीनां न बोल्य।55।
वील्होजी की कथा जैसलमेर

10. बाबो आप लियो अवतार, साम्य संभराथळि आवियो।
मिलियो आप अलेख, भाग परापति पावियो।
केसोजी की साखी

11. उपगार सार विचार रे जीव, कहणो गुर को कीजिये।
जीवत मरीयै अजर जरीये, नांव निहचळ लीजीये।
सुरजन जी की साखी

12. आपो मेटो अलख कूं ध्यावै, सरणै साम्य वसीजै।
सुरजन जी का हरजस

13. जप तप किरिया जुगत्य, मिली परवाणियां।
छीमा दया सत सील सही, कुपह तजे योंहि आणियां।
सुरजन जी की साखी

14. कुमति संग काम किरोध मेरा जीहो, हठ अहंकार कलोभी।
लालच चोरी ठगाई मेरा जीवो, कुमली कुचील कसोभी।
परमानन्द जी की साखी

15. दान सील तप भावना, चौहजुग धरम विचारि।
दया धरम वाहर्यौ, अफळ गया संसारि।6।
वील्होजी की धड़ाबन्ध चौहजुगी

16. सिंवरो सतगुर साम्य, आदि विसन संभु सही।
ऊदोजी नैण की साखी

17. संभराथळि सतगुर परगास्यौ, चौहचकि आय लखाया।
ऊदोजी नैण की साखी।

18. अइयालो अपरंपर वाणी, म्हे जपां न जाया जीयो।4।
जाम्भोजी का सबद

19. (क) इसकंदर कीवी आ करणी, दुनिया फिरी दुहाई।7।
मंहमंद खान नागोरी परच्यौ, चाल्यौ गुरु फुरमाई।8।
केसोजी की साखी
(ख) केसोजी की कथा इसकंदर
(ग) वील्होजी की कथा जैसजमेर, कवित–18
(घ) इसकंदर चेतायो, मान्यौ सील हकीकथ झाग्यौ,
हक की रोटी धायौ।27।

जाम्भोजी का सबद

(ड़) एक समै इसकंदर पातसाह मसलौ लिखि मेल्यौ।
मुलाणौ मसलौ कहै-
कुण स मोमिण, कुण स मांण।
कुण पुरिष अछै रहमाण।
किण पुरिष आ जिमी उपाई।
मुसलमानी कहा सै आई।
श्री जाम्भोजी कह, मसलौ लिख्य ले-
पुवण स मोमिण, पाणी माण।
अलील पुरिष अछै रहमाण।
अलख पुरिष आ जिमी उपाई।
मंहमंद तै मुसळमानी आई।।

परमानन्द जी का पोथा, सबद 123

3. कथा धड़ाबन्ध चौहजुगी

दुहा

नुवण करूं गुर अपणां, नउं निरमळ भाय।
कर जोड़ै बंदु चरण, सीस नुवाय नुवाय।1।

कवि वील्होजी कहते हैं कि मैं अपने गुरु जाम्भोजी महाराज को बड़े स्वच्छ मन से नमन करता हूँ। मैं सीस झुकाकर और हाथ जोड़कर उनके चरण स्पर्श करता हूँ।

धड़ाबंध चौहजुग को, प्रणउं दस अवतार।
सतगुर सुधौ भाखियौ, सुणीयौ संत विचार।2।

चारों युगों में प्रगट दस अवतारों का मैं वर्णन करता हूँ। सतगुरु जाम्भोजी महाराज ने सत्य कहा है, जिसे सभी संतों सुनो।

सत्रह लाख सतजुग हुवौ, अरु अठाइस हजार।
तींह जुग नर प्रगट हुवौ, वेद गिणत अवतार।3।[1]

सतयुग का प्रमाण सत्रह लाख अठाईस हजार है। उस युग में भगवान प्रगट हुए, इसका वर्णन वेद भी करते हैं।

मछ कौरभ वाराह भंणो, नारेस्यंघ नर नार।
गुर पहलाद परठियो, दीढ़ मन्य करणीसार।4।

उस युग में मच्छ, कच्छ, वाराह और नृसिंह ये चार विष्णु के अवतार हुए हैं, जिनके विषय में सभी स्त्री-पुरुष सुनो। प्रह्लाद ने जाम्भोजी महाराज की कृपा से दृढ़ मन होकर उस युग में उनकी भक्ति की थी।

पांच करोड़ी पोह कियौ, कुपहा दोरे जांहि।
दया धरम वाह्रयौ, जीव तरेवो नांहि।5।

उस समय पांच करोड़ भक्त जनों की मुक्ति हुई थी और दुष्टजन नरक में गये। जिन जीवों के हृदय में दया-धर्म नहीं है, उनकी मुक्ति नहीं होती।

दान सील तप भावनां, चौह जुग धरम विचारि।
दया धरम वाहर्यौ, अफळ गया संसारि।6।

दान, शील, तप तथा शुद्ध भावना ये चारों युगों में ही थी। जिनके हृदय में दया-धर्म का संचार नहीं होता है, उनका इस दुनिया में आना व्यर्थ है।

सतजुग वरत्यौ भाइयो, दूजै जुगि विचारि।
बारै लाख तेता हुवौ, ओर छिनुं हजारि।7।

हे भाइयो! इस प्रकार सतयुग का समय पूरा हुआ और इसके बाद त्रेतायुग आया। इसकी अवधि बारह लाख छयानवे हजार थी।

तींह जुग नर परगट हुवौ, ईसर नीण गिणंत।
बावन प्रसराम लछमण, रीण रावण छिदंत।8।

उस युग में विष्णु भगवान-बावन, परसराम और लक्ष्मण के रूप में अवतरित हुए। लक्ष्मण ने रावण को युद्ध में मारा।

जुध हुवो नर वंदरां, सीता कारण लंक।
असुर खप्या सुर उधर्‌या, सांम्य सदा निकळंक।9।

उस समय सीता के लिये मनुष्य और वंदरों ने असुरों से युद्ध किया। जिसमें असुर मरे और देवताओं का उद्धार हुआ परन्तु भगवान तो हमेशा ही निष्कलंक रहे।

गुर हरचंद नै परठीयो, जिहिं तारादे नारि।
पूत सहत्य कासी विक्या, सत न बैठा हारि।10।[2]

गुरु जाम्भोजी महाराज ने हरिश्चन्द्र के सत्य की परीक्षा की, जिसकी तारादे रानी थी। वे अपने पुत्र सहित सत्य के लिये काशी में बिके थे परन्तु फिर भी सत्य नहीं छोड़ा।

सात करोड़ी पोह कियौ, कुपहा दोरे जांहि।
दया धरम बाहर्‌यौ, जीव तरेवो नांहि।11।

उनके साथ सात करोड़ दयावान लोगों की मुक्ति हुई और दुष्टजन नरक में गये। बिना दया-धर्म के मनुष्य का इस भवसागर से उद्धार नहीं होता है।

तेता वरत्यौ भाइयो, तीजो जुग विचार।
आठ लाख दवापुर हुवौ, और चौस्ट हजार।12।

कवि वील्होजी कहते हैं, हे भाइयों! इस प्रकार त्रेतायुग समाप्त हुआ और द्वापर युग आया, जिसकी अवधि आठ लाख चौसठ हजार वर्ष है।

तींह जुग नर परगट हुवौ, रचौ सगती सारंत।
गोवळ कांन्हड़ बुधवळे, असुरां सिंधारंत।13।

द्वापर युग में विष्णु के अवतार कृष्ण और बुद्ध रूप में हुए हैं,

जिन्होंने असुरों का संहार किया था।

जांह नरां गुर औळख्यौ, दया धरम को भेव।
केवळ सूं परचो हुवौ, ताह पिछाण्यौ देव।14।

जिन पुरुषों ने विष्णु भगवान को पहचान लिया है, उनके हृदय में दया-धर्म का संचार हुआ है। जिनको ब्रह्म की जानकारी हुई है, उन्होंने ही देव जाम्भोजी को पहचाना है।

परचौ लाधो पांडवे, परहरि पाप विकार।
गुर दहुठळ परठीयो, दिढ़ मन्य करणी सार।15।

इसकी जानकारी पांडुओं को हुई। उन्होंने पाप को त्याग दिया। युधिष्ठिर ने दृढ़मन से भगवान को जानकर उनकी भक्ति की।

नव करोड़ी पोह कियौ, कुपहा दोरे जांहि।
दया धरम बाहर्‌यौ, जीव तरेवो नांहि।16।[3]

उनके साथ नव करोड़ दयावंत मनुष्यों को मुक्ति मिली और दुष्टजन नरक में गये। बिना दया धर्म के मनुष्य इस भवसागर से पार नहीं होता है।

दवापुर वरत्यौ आइयौ, चौथे जुग विचार।
च्यार लाख कल्यजुग हुवौ, और बतीस हजार।17।

द्वापर युग समाप्त होने के बाद कलयुग आया। इसकी अवधि चार लाख बतीस हजार वर्ष है।

इबकै वारी तिरण की, जीव ज राता तंत।
नर निरमळ निकळंक नर, ले ले नांव भणंत।18।

इस बार भी मुक्ति प्राप्त करने का समय है। यह जाम्भोजी महाराज की भक्ति करने से संभव है। ये उसी आदि विष्णु के अवतार हैं, जिन्हें अनेक नामों से याद किया जाता है।

नवां पहली आदे जौ, एताई ज गिणंत।
गुर सतगुर वाचा चवण, असत नहीं भाखंत।19।

इन नव अवतारों से पहले स्वयं विष्णु भगवान हैं, जिन्हीं के अवतार श्री जाम्भोजी महाराज हैं। जो कभी झूठ नहीं बोलते हैं।

सहजे गरु ज ओळख्यौ, भव्यस्यै अनंत भंवेण।
तारेवो (छ) बारहां को, अवरे अनंत तरेण।20।

जिन्होंने सहज ही गुरु को पहचान लिया है, उनकी इस भवसागर से

मुक्ति होगी। बारह करोड़ लोगों की मुक्ति का तो अवसर है ही, इनके साथ अनेक और भी तर जायेंगे।

पूछै पोह लाधौ नहीं, कुपहा दोरे जांहि।
दया धरम बाहर्यौ, जीव तरेवो नांहि।21।

सतगुरु से पूछे बिना मुक्ति का मार्ग नहीं मिलता है। दुष्टजन नरक में जाते हैं। बिना दया-धर्म के मनुष्यों को इस भवसागर से मुक्ति नहीं होती है।

जुग चौथे भाइयो, भोळावौ दुनियांह।
अभौ गुर परमोध्यस्यै, ठगिस्यैं नारि नरांह।22।

हे भाइयो, इस कलयुग में ऐसे कपटी मनुष्य होंगे, जो कपटी गुरु बनकर दुनिया को ठगेंगे।

ले करद गळ काटिस्यै, हति करिस्यै हैरान।
कह्यस्यै फुरमाया करै, कथ्य भुला अग्यान।23।

वे छुरी लेकर गला काटेंगे और जीवों की हत्या करेंगे। वे कहेंगे कि हम ये गुरु आज्ञा से कर रहे हैं लेकिन वे ज्ञान को भूल गये हैं।

गिण्यस्यै गुर वंसावली, मोहे मने अवरांह।
दरगै लेखो मांगियै, पड़िस्यै घंणी दरांह।24।

ऐसे लोग अन्य लोगों को भ्रमित करने के लिये अपने गुरु की ऊंची वंश परंपरा बतायेंगे। लेकिन वहां पर धर्मराज सब लेखा-जोखा लेंगे, तब बहुत पछताना पड़ेगा।

सतगुर विण्य जांणै नहीं, चौह धरम को भेव।
सुगुरे चेले बुझिस्यै, दया बिहूंणै देव।25।

सतगुरु की कृपा के बिना धर्म की सही जानकारी नहीं मिलती है। सज्जन शिष्य कहेंगे कि ये देव तो दयाहीन है।

कळिजुग कळाहळि घंणी, कहि संभळाउं साद।
जांसू कहियै हेत सूं, सोइ चलावै वाद।26।

कलयुग में कलह बहुत है। हे संतों! मैं तुम्हें कैसे समझाऊं। जिनसे ही तुम प्रेम से कहते हो, वे ही वाद-विवाद करते हैं।

ग्यान कसई पण्य कथिस्यै, हतसी गऊ निसंक।
अभोपतीगो न डरै, रती न मांनै संक।27।

जो दिखावटी ज्ञान का कथन करते हैं लेकिन गऊवों की हत्या निडर होकर करते हैं। वे पापों से नहीं डरते है और न उन्हें पापों से लेश मात्र शंका होती है।

जांह गुरां जांण्यौ नहीं, अदया दया विचार।
तांह भरोसे बापड़ा, बोह बुडिस्यै गिंवार।28।

जिन गुरुओं को दया और निर्दयता का ज्ञान नहीं है, उनके भरोसे जो रहेंगे, वू मूर्ख निश्चय ही डूबेंगे।

आप वाह वहे गया, खोज्यौ नांही तंत।
अभेवान इहंकार मां, केता गया गडंत।29।

जो अभिमानी है, वह अपने अभिमान में डूबा रहता है और सत्य तत्व को नहीं पहचानता है। इस अहंकार में बहुत मनुष्य डूब गये हैं।

कळि धुतारा आयस्यै, दुनियां करिसी मोह।
झूठ न सेठु वलहौ, फिरि फिरि सोधे खोह।30।

कलयुग में धूर्तों से संसार के लोग मोह करेंगे। परन्तु झूठ में कोई शक्ति नहीं होती। वे धूर्त दुनिया को ठगते हैं।

परचौ करिस्यै पाप सूं, पर बुध्य होयस्यै पीर।
औलौ ल्यै अवतार कौ, सगते मांडै सीर।31।

धूर्त लोग पाप का प्रचार करते हैं और खुद देव बनने का ढ़ोंग करते हैं। वे अलख पुरुष की ओट लेकर बिना शक्ति के देव बनते हैं।

खूंणी जंमलौ मांडिस्यै, छांना करिस्यै छेद।
अजांणी जांणी नहीं, सतपंथ को भेद।32।

वे छुपकर जम्मा-जागरण करते हैं और गुप्त ही पाप करते हैं। वे अज्ञानी सत्य मार्ग को नहीं जानते हैं।

खीरि रूही एकौ गिणै, भोळाया कुंगरांह।
अैसा अकारण वरत्यस्यै, कळजुग लागतांह।33।

जो खीर और राबड़ी को एक जैसी गिनते हैं और लोगों को बुरे रास्ते पर डालते हैं, ऐसी अनहोनी बातें कलियुग के शुरु होते ही दिखाई देगी।

न्यांन विहूंणा गुर करै, परचै विण्य पूजांहि।
मति हीणा मन हठ करै, मनमुखि दान दिवांहि।34।

ऐसे लोग अज्ञानियों को गुरु धारण करते हैं और बिना किसी सिद्धि के उनकी पूजा करते हैं। वे बुद्धिहीन अपने मन में हठ रखते हैं और वे अपने मन के

अनुसार उन पाखण्डी गुरुओं को दान देते हैं।

गुर आखर न पिछाणई, सबद न सुणही कान्य।
राह छोड़ि वेराह पड्या, छळि लिया सैतान्य।35।

वे गुरु के ज्ञान को नहीं जानते हैं और न ही गुरु की वाणी सुनते हैं वे अच्छे रास्तों को छोड़कर बुरे रास्तों पर चलते हैं। वे तो दुष्टों के प्रभाव में आ गये हैं।

थळ माथै निवाण करि, नर काय लोड़ै नीर।
नाळे खाळे न मिलै, रीणायर विणि हीर।36।[4]

हे प्राणी, पृथ्वी पर गड्ढा खोदकर जल की प्राप्ति तो की जा सकती है, परन्तु बिना समुद्र के नाले-खाले (छोटे तालाब) में सच्चा रतन नहीं मिलता है।

कंचण करि करि संग्रह्य, निहचै हुइये भंगार।
अपरख बंध था गांठड़ी, ते फीटा संसार।37।

हे प्राणी! तुने सोना समझकर संग्रह किया और निश्चित हो गया परन्तु तुने बिना पहचान के ही यह संग्रह किया। इसलिये इस संसार में वह तेरा संग्रह व्यर्थ हुआ।

कालर बीज न नीपजै, सूकै ठूंठ न फूल।
केवळ न्यांनी बाहर्यौ, कूड़ा कुगर न भूल।38।[5]

बेकार भूमि पर बीज नहीं ऊगता है और न ही ठूंठ पर फूल लगता है। केवल ज्ञानी की मुक्ति होती है लेकिन झूठे गुरु यहीं करते हैं।

अन विण्य त्रिपत्य न आतमां, जां जां देही संग।
नीर पखौ नेपै नहीं, गुर विण्य मुकति न मंग।39।

अन्न के बिना शरीर की तृप्ति नहीं होती है और आत्मा की तृप्ति भगवान के नाम से होती है। बिना पानी के फसल पैदा नहीं होती है और सच्चे गुरु के बिना मनुष्य की मुक्ति नहीं होती है।

जो गुर आप सवारथी, परमारथ न करंत।
चेला किण्य परि तारसी, जो आपण बूडंत।40।

हे प्राणी! जो गुरु स्वयं स्वार्थी है और दूसरों की भलाई नहीं करते हैं, वे गुरु अपने शिष्यों का उद्धार कैसे करेंगे। वे तो स्वयं ही डूबेंगे।

सुगर कुगर को पारखौ, पायो गुर परसादि।
अबचळ वाचा अभुल गुर, लेखो अंति न आदि।41।

गुरु की कृपा से अच्छे और बुरे की पहचान होती है। जिनकी वाणी निश्चित है, वे गुरु भूलने योग्य नहीं है और उनके आदि-अन्त का कोई हिसाब नहीं है।

सतपंथ हुंतै पंतर्या, पैंतराया कुगरे।
भूला कूड़े कागळे, मन मोह्या मुकरे।42।

जो सच्चे रास्ते को छोड़कर, दुष्टों के बहकावे में आकर, उन झूठों के भुलावे में आ गये हैं, उन्होंने उनके मन को अपनी झूठ से मोह लिया है।

गुर सतगुर जांण्यौ नहीं, गुर थापिया अजांण।
तांह कुगरा तणी कु सीखड़ी, भांगी गुर की आंण।43।

जिन्होंने सच्चे गुरु को नहीं पहचाना है और अज्ञानी को गुरु को माना है। वे लोग ऐसे अज्ञानियों की बुरी सीख मानकर गुरु की आज्ञा को भंग करते हैं।

कांही पथर पूजीया, कांही गल्य बंध्या तूर।
कांही औसर घातीया, कांही अरघे सूर।44।

हे प्राणी! तूने किसलिये पत्थर पूजे हैं और किसलिये अपने गले में ढ़ोल डाला है? किसलिये तुमने पाखण्डात्मक क्रियाकर्म किये हैं और किसलिये तुमने सूर्य को जल चढ़ाया है?

कांही मुगट सीरि बंधिया, कांही मुदरा कान्य।
काऊ वाऊ होयस्यै, गुर भूलणां निदान्य।45।

हे प्राणी! किसलिये तूने अपने मस्तक पर मुकट बांधा है और किसलिये अपने कानों में कुण्डल डाले हैं? तूं क्यूं सच्चे गुरु को भूलकर संसार में इधर-उधर व्यर्थ के कामों में लगा हुआ है?

दणियर दीपे दोह दिस्सा, ओळू भांय अंधार।
सतगुर आयो सांपरति, बूझै नहीं गिंवार।46।[6]

सूर्य चारों ओर प्रकाश करता है परन्तु उल्लू के लिये तो अन्धेरा ही रहता है। हे प्राणी, सत्गुरु श्री जाम्भोजी महाराज प्रत्यक्ष आए हैं। हे मूर्ख! तूं उनकी शरण में क्यों नहीं जाता है?

हीरा परखै जुंहरी, सुरति निज ही होय।
सुध्य सराफी बाहर्यौ, पारिख लहै न कोय।47।

हीरों की परीक्षा जौहरी ही करता है। उसको इसकी पहचान है। श्री जाम्भोजी महाराज तो स्वयं बहुत ही बड़े जौहरी हैं, जिनको हे प्राणी तूं पहचान ले।

विणजै काच वीलंगरी, कण्य जाकूं कण लक्ख।
ते क्यौ जांणै बापड़ा, हीरा तंणी पर्ष।48।

जो काच का व्यापार करते हैं, वे हीरों की परख नहीं जानते हैं अर्थात् उन्हें तत्व की पहचान नहीं है।

अमी भोळावै विष पीवै, जीवड़ होय जियान।
केवल न्यानी बाहर्यौ, कूड़ो कथै गियान।49।

जो अमृत के भरोसे जहर पीते हैं, उन्हें दु:ख होता है। अज्ञानी पुरुष झूठ का कथन करते हैं, क्योंकि उन्हें तत्व की पहचान नहीं हैं।

पंदरा सै अठोतरै, गुर आयो करि भाव।
कुपरि पलटण परे करण, थापण निरति नियाव।50।[7]

बुरी शिक्षाओं को हटाने के लिये और सच्चा न्याय स्थापित करने के लिये संवत् पंद्रह सौ आठ में श्री गुरु जाम्भोजी महाराज का शुभ आगमन इस मरुभूमि पर हुआ।

जंबू दीप भरथ खंड, संभरथळ परगास।
आयो बारां कारणै, कोड्यां पूरण आस।51।

जाम्भोजी महाराज का अवतार जम्बूद्वीप-भरतखण्ड में सम्भरथल में हुआ। उनका यहां आने का कारण बारह करोड़ लोगों को मुक्ति दिलाने का था।

चौथै जुग मां जोग पुरि, जुगते जुगति मिलाहि।
सतजुग की पर्य वापरी, कूड़ै कळजुग मांहि।52।

कलियुग में यह योग बना है, जिसमें सब कार्य युक्तिपूर्वक पूरे हुए हैं। इस झूठे कलियुग में मानों सतयुग एक बार पुन: आ गया है।

जिंह परि आयो जगत गुर, सापरि कहूं विचार।
वील्ह कहै अवतार को, परचो आळिंगार।53।

इस कथा के अन्त में सन्त कवि वील्होजी कहते हैं कि इस जगत गुरु जाम्भोजी महाराज का अवतार प्रत्यक्ष है और उनके परचे भी सच है।

संदर्भ टिप्पणियां

1. सतरै लाख अठाईस हजार सतजुग प्रमाण।
सतजुग कै पहरै मा सोने को घाट।
(चारों युगों के समय के विषय में 'कळस पूजा मंत्र' में इसी प्रकार का प्रमाण है।)

2. (क) त्रेता जुग मां हरिचन्द राजा, किया सरम कुमाणी।
मान्यौ सील हकीकथ झाग्यौ, उन्हा ठाढ़ा पाणी।
आलमजी की साखी

(ख) सात करोड़ी ले राजा तरियौ,
तारादे रोहितास हरिचन्द वाट विकाई।99।
जाम्भोजी का सबद

(ग) राजा हरिचन्द तो मोमिणो कोड़ि सात ले तरियौ, जिण करण कुमाया पूरा।
ऊदोजी नैण की साखी

3. नव करोड़ी ले राव दहूठळ तरियो, धन्य कुंतादे माई।
जाम्भोजी का सबद

4. विण रैणायर हीर न नीरे, गज न सीपे, तके न खोळ्या नाळूं।29।
जाम्भोजी का सबद

5. (क) कालरि बीज न बीजि पिराणी, थळसिरि न करि निवाणी।71।
(ख) कालरि कैरसण कीयो ने पै कछु न कायौ।20।
(ग) जे ठूंठड़ियै पान न हुंता, ते क्यौं चाहत फूलूं।75।
जाम्भोजी का सबद

6. रिव ऊगै ज्यौं ओळू अंधा, दुनिया भया उजासूं।108।
जाम्भोजी का सबद

7. (क) पंदरा सौ अवतार लियौ, गुरु आठम सोम अठोतरै।
सुरजनजी कथा औतार चरित

(ख) आठम सोम अठोतरै, प्रद्रह सौ अवतार।
साहबराम जी राहड़-जाम्भोजी महाराज का जीवन चरित्र

(ग) पनरासौ अठोतर साला, गुरु आयो भाविक जन माला।
जम्भसार, अष्टदश प्रकरण, पृष्ठ-46

4. मंझ अखरा दुहा-अवतार का (राग खंभावची)

आतम तूं आधार, सरबे तैंई सिरजिया।
दीये चुगौ दातार, दाता तूं ही देवजी।1।

आत्मा के तुम ही आधार हो और सब जीवों को आपने ही पैदा किया है। उन्हें तुम ही खाने के लिये देते हो। हे देवजी ''जाम्भोजी महाराज'' आप बहुत बड़े दातार हैं।

थळ सिरि थिर मंडेह, तत तेल वाती व्रंभ।
त्रीकम त्रीलोकेह, दीपग तूं ही देवजी।2।[1]

इस पृथ्वी पर स्थिरता से आप विराजमान हैं। आप पारब्रह्म हैं। आप ही तीनों लोकों में प्रकाश करते हैं। देवजी आप बड़े प्रकाश पुञ्ज हैं।

काया कळंक विनांह, मोत विनां मंडळि रहण।
पायो पुरतीयांह, दान तुहारा देवजी।3।

आप कलंक रहित हैं। न ही आपको मौत छू सकती है। सब जीवों का भरण-पोषण आप करते हैं। हे देवजी आप बहुत बड़े दानी हैं।

तारग तूं ही तांह, जांह जाण्यौ जीवां धणी।
सुख सारो सुरगांह, दीयो दया करि देवजी।4।

आप ही जीवों का उद्धार करने वाले हो। जिन जीवों ने आपको पहचाना है, उन्हें आपने स्वर्ग लोक में सर्व सुख प्रदान किये हैं। हे देवजी, आप बड़े दयावान हैं।

परहरि जांह जीवांह, अन्यानी अवगुण करै।
तांह दोर दीन्ताह, दया नीं करै देवजी।5।

जिन जीवों ने आपको भूला दिया है और जो पाप करते हैं, उनको आप नर्क में भेजते हैं। हे देवजी, आप उन दुष्टों पर दया नहीं करते हैं।

साम्य तुहारी सांव, ओट लई तैं उबर्‌या।
पापां पालण नांव, दान तुहारो देवजी।6।

हे स्वामी, आपकी जिन्होंने शरण ली है और जो आपकी छत्रछाया में आये हैं, उनका उद्धार हुआ है। आपका नाम पापों को नष्ट करने वाला है। हे देवजी, आपके नाम का ये दान बड़ा महत्वपूर्ण है।

घणहर घड़ि बंधाह, अमी फुहारे ओसरयौ।
बूठो भाव भराह, दुनिया उपरि देवजी।7।

आप बादलों के समूह होकर अमृत रूपी वर्षा करते हैं। संसार पर दया करके आप वर्षा करते हैं। हे देवजी, आप संसार के पालक हैं।

आयो आप मतैह, जंगळि थळि जीवांधणी।
नफरा निरति करैह, दाळदि भंजण देवजी।8।

आपने अपनी इच्छा से इस मरुस्थल में अवतार लिया हैं। सेवक आपकी स्तुति करते हैं। हे देवजी, आप उनके दु:ख-दरिद्र को दूर करने वाले हैं।

जां दिन जुग दातार, पधार्‌यौ पोहमी मंडळ।
नैणे निज दीदार, धन्य जां दीठो देवजी।9।

वह दिन धन्य है जिस दिन आपने इस मरुभूमि में अवतार लिया है। हे देवजी, वे मनुष्य भी धन्य है जिन्होंने अपनी आंखों से आपके दर्शन किये हैं।

रहिया रोगीळाह, बोहळी विथा वियापियां।
वेदन्य विचरीयांह, तूं दारू मिलियो देवजी।10।

जो मन से अस्वस्थ थे और जिनके मनों में अनेक भ्रान्तियां थी। जो वैद्यों से ठीक नहीं होते थे। हे देवजी, उन लोगों को आपके नाम की औषधी मिल गई।

थघ विणि थरहरतांह, बेड़ी बोह जळ डूबतां।
जळ जोखे पड़ियांह, कर गहि काढ्या देवजी।11।

जो लोग बिना किसी सहारे के कंपायमान हो रहे थे और इस भवसागर में डूब रहे थे। जो जल में जोंक के समान पड़े थे, हे देवजी, उन्हें आपने हाथों से निकाला है।

पोहमी पार करेह, पंथ बीज पैठो नहीं।
थळ सीरि थळ मंडेह, दावै रहियौ देवजी।12।

आपने सारी पृथ्वी को छोड़कर अच्छा मार्ग चलाने के लिये इस मरुभूमि को चुना है। हे देवजी, आपने पक्के इरादे से यह काम किया है।

पढ़िया नहीं पुराण, सुर पूछि सीख्यो नहीं।
अमरापुर इहनांण, तै दाखविया देवजी।13।[2]

न आपने कभी पुराण पढ़े और न ही किसी अन्य देव का सहारा लिया, परन्तु हे देवजी, आपने स्वर्ग के सभी चिन्ह फिर भी बताये हैं।

कव कथणी कानांह, गुण गाथा सुणियां घणां।
सच तायो सबदांह, दिल मां भीतरि देवजी।14।

कवियों के कथन और कथाओं में गुणगान बहुत सुने हैं, परन्तु आपके सबद ही सच हैं। हे देवजी, इनसे दिल में प्रकाश हो जाता है।

वड जोग्यंदर जेह, ओळगीयो आसा करे।
राख्या रहम करेह, दोर जातां देवजी।15।

बड़े योगीराज और औलिया भी आपकी ओर आस लगाये बैठे हैं। हे देवजी, आपने उन पर भी दया करके उन्हें नरक से बचा लिया है।

मन मोकळो न मेल्ह, पसरंतो पापां दिसौ।
लेखो सार सबलेह, दरगे लेसी देवजी।16।

यह मन जो पापों की ओर अग्रसर हो रहा है, उसे काबू में करो। इन बुरे कर्मों का लेखा-जोखा देवजी दरगा में इस जीव से लेंगे।

कळप्यां कोड़ि कनकाह, लीला ही लाभै नहीं।
मो रोकड़ै रत्नाह, दियो दया करि देवजी।17।

कलपने से कभी सोना नहीं मिलता है, न ही कोई लाभ मिलता है। परन्तु मुझ गरीब को देवजी ने दया करके नाम रूपी रतन दिया है।

अलवी मंझषि आळ्ह, केह क दिन कुप हुंवली।
जीभड़ी मंझषि जंजाळ्ह, दाय न आवै देवजी।18।

इस संसार में आकर अवसर मत खोवो क्योंकि एक न एक दिन वो अन्धेरा होगा। जिभ्या से कूड़-कपट उच्चारण करना देवजी को पसन्द नहीं है।

आळथीयो अळगांह, राज्यंदर राखै रूड़ां।
तारग तूंही तांह, दूरिम राखै देवजी।19।

चाहे कोई कितनी भी दूर बैठकर आपका स्मरण करे फिर भी आप उसकी अच्छी तरह देखभाल करते हैं। हे देवजी, दूरी पर रहते हुए भी आप उसका उद्धार करते हैं।

चौरासी चवतांह, जुंणि भुवंतां जुग गयौ।
तौ विण तांह जीवांह, दुख न भागो देवजी।20।[3]

इन चौरासी लाख योनियों के चक्र में घूमते कई युग बीत गये हैं। हे देवजी! उन जीवों का आपके स्मरण के बिना दुःख दूर नहीं हुआ है।

बूझै नहीं अबूझ, ग्यान गुण गुरवट तणी।
ते आतमां अबूझ, दाय न आवै देवजी।21।[4]

जो अज्ञानी हैं और सत्गुरु के ज्ञान को नहीं पहचानते हैं, हे देवजी, वे अज्ञानी आपको पसन्द नहीं है।

जाह वहंती वार, धरम कदै धार्यो नहीं।
यो जायसी जमवार, दुख देखतां देवजी।22।

यह सुअवसर जा रहा है, इसमें जिसने धर्म के मार्ग को नहीं अपनाया है, हे देवजी, ऐसा मनुष्य दुःख उठाता हुआ ही यमलोक को चला जाता है।

प्रथमी पांवडेह, भुंय उपरि भुंवीया घणां।
सुकियारथ जकेह, तो दिस दीन्हा देवजी।23।

हालांकि इस पृथ्वी पर अपने पैरों से यह मनुष्य बहुत घूमा है लेकिन हे देवजी, जिस मनुष्य ने आपकी तरफ जितने कदम रखे हैं, वे ही धन्य हैं।

क्रिया क्रम करेह, भोगवंता भारी हुवा।
मन मांह राम झुरेह, दोस न दीजै देवजी।24।

जिन मनुष्यों ने बुरे कर्म किये हैं, वे सब भोगने के लिये भारी हैं। परन्तु यदि ऐसा मनुष्य उन कर्मों का पश्चाताप करता है और राम को याद करता है तो उसको देवजी भी दोष नहीं देते हैं।

जप विण्य जै जमवार, तप बाझो तोट पड़ै।
गहनै नहीं गिंवार, ते दुख सहिस्यै देवजी।25।

भगवान के नाम के स्मरण के बिना मनुष्य यम के द्वार पर जाता है और भगवान के नाम के तप के बिना भी त्रुटि है। नाम के मनन के बिना हे देवजी, वह मूर्ख अनेक कष्ट सहेगा।

तारग तीहुं लोकांह, लख चौरासी सारवै।
हूं बळिहारी तांह, सनमुखि दीठो देवजी।26।

जो तीनों ही लोकों और चौरासी लाख योनियों का उद्धार करने वाले हैं, मैं ऐसे देवजी का भक्त हूं और मैंने ऐसे देवजी को प्रत्यक्ष देखा है।

पींडत पढ़ पढ़िथाह, न्यांनी की नंद्या करै।
वील्ह कहै वह जाह, दादे नहीं दरि देवजी।27।[5]

जो पण्डित पढ़कर अभिमानयुक्त होकर ज्ञानी की निन्दा करते हैं, कवि वील्होजी कहते हैं–वे नरक में जाते हैं। ऐसे पण्डितों की देवजी भी कोई सहायता नहीं करते हैं।

संदर्भ टिप्पणियां

1. म्हे सरै न बैठा सीख न पूछी, निरति सुरति सा जाणी।5।
   जाम्भोजी का सबद
2. भगवीं टोपी थळ सिरि आयौ, मैलहाण करीलो।27।
   जाम्भोजी का सबद
3. लख चौवरासी चौहचकि भीतरि, भरम्यौ बोहळी वेरा।5।
   वील्होजी की साखी
4. रगत स विंदू परहस निंदू अपस सहेतूं, पणिं बूझै नहीं गिंवारूं।57।
   जाम्भोजी का सबद
5. थे पढ़ि गुणि रहिया खाली।
   जाम्भोजी का सबद

5. कथा अवतारपात (राग आसावरी)

दुहा

नुवण्य करुं गुर आपणै, नीऊं निरमळ भाय।
कर जोड़े बंदू चरण, सीस नुवाय नुवाय।1।

वील्होजी कहते हैं–हे गुरुदेव! मैं निर्मल भाव से हाथ जोड़कर और सीस झुका-झुका कर आपके चरणों में नमस्कार करता हूँ।

ऐक जीभ मुख नान्हड़ो, अळप आव एण्य ठाय।
हरि गुण सायर ते घणौं, मो मुखि क्यों र समाय।2।[1]

मेरी एक जीभ्या, छोटा मुख और कम आयु है परन्तु हरि का गुण समुद्र की तरह अथाह है। वह मेरे इस मुख में कैसे समा सकता है।

ज्यौ पंखी संमंद तै, नीरि चंच छळि लेह।
सायर ऊणौ न थीयौ, हरि गुण पारिख एह।3।[2]

जैसे समुद्र में से पक्षी पानी की चोंच भर लेता है तो भी समुद्र में पानी की कोई कमी नहीं होती। इसी तरह ही हरि गुण होता है।

चौपई

दुंनी वरणऊं दस अवतार, जांह हाथ खड़ग ले कियो संघार।
असुर मारि किया वळ भंग, वासदेव बळ जीता जंग।4।

संसार में दस अवतारों का वर्णन है, जिन्होंने हाथ में तलवार धारण कर असुरों का नाश किया है। वासुदेव (कृष्ण) ने असुरों को बलहीन किया और संग्राम जीते।

कोटि रूप करि धारी कया, जोग रूप आयौ जग मया।
ग्यान खड़ग पायौ प्रहार, जीता काम क्रोध अहंकार।5।[3]

उन्होंने अनेक रूप धारण कर अनेक शरीर धारे हैं और संसार में रहकर ज्ञान रूपी शस्त्र से काम, क्रोध, अहंकार इत्यादि जीते हैं।

गोरख कह्यो सो जोग निवास, दतात्री दाख्यौ सन्यास।
जैन धरम जीनवर की बाण, महंमद कहीये स मुसलमाण।6।[4]

गोरखनाथ जी ने योगाभ्यास बताया, दतात्रेय ने सन्यास बताया, जैन धर्म ने अहिंसा धर्म का पालन किया तथा मोहम्मद ने इस्लाम धर्म प्रचलित किया है।

भागोत कह्यो किसन दीवाण्य, सतगुर कह्यौ स साच करि जाण्य।
सतगुर पाखो मुगति न होय, कूड़ कथन जै न रीझै कोय।7।

भागवत् में श्री कृष्ण भगवान ने कहा है कि उन सत्गुरु के वचनों को सच्चा मानो, सत्गुरु के बिना मुक्ति नहीं होती, असत्य वचनों से कोई प्रसन्न नहीं होता है।

दुहा

गुरवट सभ विचारि कै, तत कण ल्यायो जोय।
सिध साधु एह कूड़ की, रवा नै राखै कोय।8।

गुरु ने सब कुछ विचार कर असली तत्व को बताया है। सिद्ध और संतजन इस झूठ को कोई महत्व नहीं देते हैं।

चौपई

जीव तणी थिति लहीयै न जावै, किण्य दिस आवै किण्य दिस जावै।
कंप सै कै नीकसद वार, वेद पुराण न जाणै सार।9।

जीव की स्थिति को कोई नहीं पहचान पाता। वह किस दिशा से आता है तथा किस दिशा को जाता है और जब यह निकलता है तो वेद और पुराण भी इस भेद को नहीं जानते हैं।

पंखो पथ लहै जे कोय , मंछा माघ विचारौ सोय।
सतगुर सो परमन की लहै, किसन चिरत आगम कुंण कहै।10।

पक्षी का रास्ता व मछली का मार्ग कोई नहीं जानता है। परन्तु सत्गुरु जो पराए मन को जानने वाला है वही इस भेद को जानता है। कृष्ण चरित्र जो अथाह है, उसे बिना सत्गुरु कौन कह सकता है।

अछहुं तणौं कुण जाणै छेव, कुण जाणै पलंतर भेव।
अनंत तणौ कुण जाणै अन्त, नितही थो नितही नितवन्त।11।

जिसका कोई अन्त नहीं उसको कौन जान सकता है। जिसके क्षण-क्षण में अन्तर भाव है, उसे कौन समझ सकता है। अनन्त के अन्त को कोई नहीं देख सकता, जो नित्य प्रत्यक्ष है।

अगम बात अपरंपर सार, विसन पखौ कुण कहै विचार।
सरब वात जांणै केवली, सांसो भांनै पुर रली।12।

अगम की बात अपरम्पार है और विष्णु का कौन वर्णन कर सकता है। इन सब बातों को केवल ब्रह्म को जानने वाला ही जानता है, जो सबके

संशय दूर करता है।

दुहा

पिंडत कोय न जांणही, अपरंपर की आदि।
पार जे कहै अपार कौ, जलम गुमांवै वादि।13।

अपरम्पार के पार को कोई भी पण्डित नहीं जान सकता है। यदि अपार को पार कहें तो वे व्यर्थ ही जन्म खोते हैं।

चौपई

पिंडत कहै कूड़ क्यौं साच, जिंहकी नहीं निरोतरि वाच।
अजगुति दाखै तके अविचार, कूड़ कथन न रीझै संसार।14।

पण्डित लोग झूठ को सच क्यों कहते हैं। जिसका कोई उत्तर नहीं है। बिना युक्ति पूर्ण कथन और असत्य वचन से यह संसार प्रसन्न नहीं होता है।

न्यान विहुणी कथणी करै, लोभ काज पापां नहीं डरै।
गुणी कहावै पण औगणगार, खर क्यौं सहै हसत कौ भार।15।

अन्याय पूर्वक कथनी करने वाले लोभ के लिये पाप से नहीं डरते हैं, वे अवगुणी भी गुणी कहलाते हैं, पर गधा हाथी के भार को कैसे सह सकता है।

वील्ह कहै हूं डरपूं घणौ, ग्यान सुण्यौ मैं सतगुर तणौ।
कूड़ कहै सो दोरै जाय, साच कहै सो भिसती थाय।16।

कवि वील्होजी कहते हैं-मैं बहुत डरता हूँ, मैंने सत्गुरु के ज्ञान को सुन लिया है। अगर सत्य कहता हूँ तो बहुत कठिनाई होती है। सत्य कहने वाला ही सुख से रहता है।

मन जाणै जे कथणी करुं, जाण्य अजाण्य कूड़ तै डरुं।
और कहुं जे और होय, दरगे जाब नै आवै मोय।17।

मन में ऐसा विचार होता है यदि कथनी करुं तो अनजानी झूठ से डरता हूँ। जैसी होती है वैसी न कहकर दूसरी तरह की कहता हूँ तो भगवान के सामने जवाब नहीं आयेगा।

दुहा

हूं डरपूं इह कूड़ तै, करण मनै वाखाण।
तेरा गुण तो वरणऊं, (म्हारै) मत मिलौ सरब जांण।18।

मैं इस असत्य से डरता हूँ और तुम्हारा वर्णन करना चाहता हूँ। मैं आपके गुणों को नमस्कार करता हूँ, आप सर्वज्ञानी हो इसलिए मैं सहायता चाहता हूँ।

चौपई

अनंत रूप की विड़दावळी, एक रूप करि आयो थळी।
तीह के गुण नहीं को गंन, केहक गुण मैं गुर सुणियां कंन।19।

जिसके अनेक रूपों का कीर्ति वर्णन है, वही एक रूप धारण कर इस मरुभूमि में आया है। उनके गुणों को कौन जानता है। मैंने सत्गुरु के वचन अपने कानों से सुने हैं।

तांह गुणां का कहुं वखाण, जो थे मत मिलौ सरब जाण।
आखर मात जे चुकूं काय, बकस करी तिहुं लोकां राय।20।

मैं उन गुणों का वर्णन करता हूँ, आप इसमें मेरी सहायता करो। अक्षर तथा मात्रा में कहीं भूल हो जावे तो मुझे आप क्षमा करना।

भाटी जादंम वंसावली, ताहूं निका ह खिलहरी कुली।
तींह वंसे ऊपनी हांसा माय, भाग बड़ो सुकलीणी थाय।21।

भाटी यादव वंश में उनका अच्छा खिलेरी कुल है, उसी वंश में हंसा माता ने जन्म लिया। वह सुलक्षणी बड़ी भाग्यवान थी।

लेख हुवो पाणी पुंवार, सांई लोहट घरि वर नार।
लखण सुलखणी धरम आचार, सुकलीणी सोभा संसार।22।

उसके पाणीग्रहण का लेख लोहट पंवार के घर हुआ। उस सुलक्षणी के आचार-व्यवहार की संसार में शोभा थी।

दुहा

लोहट हळ वाह खेती करै, कोहर सींचण जाय।
भाग वडो पुंवार कौ, घर वित छाली गाय।23।

लोहट कृषक था, वह हल चलाता तथा कुआ सींचता था। उसके घर में गाय और बकरी पशुधन था।

चौपई

वित निरतो घरि छाली गाय, गांठी गरथ निरतो थाय।
वरसा वरसी निपजै अंन, भली टबाई घर जोगो धंन।24।[5]

वह अपनी गाय तथा बकरियों को चराता था, उन पर कुछ घर से

धन खर्च होता था, बरसात होने पर अन्न उत्पादन होता है। उसके घर खर्च के मुताबिक अन्न पैदा होता है।

सुभ दिन एक सुक्यारथ भयौ, लोहट गऊ चरावण गयौ।
पुरष एक मिल्यौ वन मांहि, दरसण दीठो सनमुंखि जांहि।25।

एक दिन बहुत अच्छा हुआ। लोहट गाय चराने के लिये जंगल में गया। जंगल में एक पुरुष देखा, जिसके सामने जाकर लोहट ने दर्शन किये।

जोग रूप बोले सुरबाण्य, लोहट नै समझावै जाण्य।
पुरष तेरे लेसी अवतार, सक नै मांनी करी करार।26।[6]

योग रूप से वह देववाणी बोलता था और वह लोहट को समझाने लगा, तेरे घर में यही पुरुष अवतार लेगा, निसंक होकर यह वादा किया।

विसन चिरत एक होयसी सही, संक नै मानी दिढ़ मन्य रही।
इचरज देखि मत ओदरै, मन अंदेसो मत कोई करै।27।

कृष्ण चरित्र सही होंगे, किसी प्रकार की शंका नहीं करना, दृढ़ता मन में रखना। अचम्भा देखकर किसी प्रकार का दु:ख मत करना।

दुहा

समझायौ लोहट नै, आगम हुई अवाज।
देवजी आवै जगत मां, वारां मेलण काज।28।

आकाशवाणी हुई और लोहट को समझाया। देवजी संसार में बारह करोड़ लोगों का उद्धार करने आयेंगे।

चौपई

माता हांसा हुई जैवंत, कपड़ा धोया साझ्यौ तंत।
आस्य पास्य ते आई नारि, जौग्यंदर दीठौ एक बारि।29।

हंसा माता मासिक धर्म से मुक्त होकर स्वच्छ हुई। आसपास से औरतें आई और योगी के दर्शन सबने किये।

दीठौ जोगी नारी हैंसी, मुख तै वात कही एक अैसी।
हांसा तेरे होयसी पूत, वड जोगी होयसी अवधूत।30।

जोगी को देखकर युवतियां हंसी। हंसा को कहने लगी, तुम्हारे पुत्र होगा परन्तु जोगी होगा।

माता ओदरि ऊपनी आस, फुरनै फुरकनै फोरै पास।
माता भणौ न देई दुख, भार नही अंग्य आछौ सुख।31।

माता के उदर में आशा उत्पन्न हुई और जीव फुरने फुदकने लगा। मगर माता को किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। उन्हें अत्यन्त सुख रहता था।

सहियां आगी हांसा कहै, मन मां एक अंदेसो रहै।
ओदरि आदे ऊपैनु जीव, जीव नहीं जांणौ निरजीव।32।

सखियों के सामने हांसा कहती है, मेरे मन में एक संदेह है, मेरे उदर में जो जीव है, वह निर्जीव लगता है।

दुहा

महीना पूरा हूवा, माय न दीन्हूं दुक्ख।
परगट हूवौ परम गुर, जां जाण्यौ तां सुक्ख।33।

अवधि पूर्ण होने पर माता को कष्ट नहीं दिया, परम गुरु ने प्रकट होकर सबको सुख दिया।

चौपई

आस्य पास्य तै आई नारि, न्हावै धोवै करै विचारि।
हांसा कहती निरजीव रूप, जीव जागै सकळ सरूप।34।

आसपास से युवतियां आई और नहलाकर विचार करती है कि हांसा कहती थी उसका गर्भ निर्जीव है परन्तु यह बहुत सुन्दर स्वरूप है।

करै उछाह मनोहर मन्य, लोहट नै संभळायो कन्य।
हीयो वधाई आयो बाळ, रहस्य रहस्य वजायो थाळ।35।

वे बहुत ही प्रसन्नता प्रगट करती हुई लोहट को कृष्ण रूपी जाम्भोजी देकर बधाई देती है और कहती है, इस खुशी में थाल बजाओ।

गड़सूटी ले उखि उचरै, मुखि नै ल्यह अनेसो करै।
फुंभौ आंण मुंह दिस ताकि, गाल टीक का थोड़ी नाकि।36।

युवतियां जन्म घूंटी देती है तो लेता नहीं। जब उस घूंटी के फोहे को उनके मुख की तरफ करती है तो वह फोहा गाल, ठोडी तथवा नाक पर टिकता है।

हरखि निरखि करि दीठो जोय, फुंभौ मुखे न आवै तोय।
असौ अचंभो सुण्यौ न दीठो, कांने सुण्यौ नै आख्यां दीठो।37।

युवतियां हर्षित होकर उसे देखती है कि यह जन्म घूंटी उसके मुख में नहीं जा रही है। युवतियां कहती है-ऐसा बालक न कभी कानों से सुना है तथा न कभी आंखों से देखा है।

दुहा

रोग मांद दीसै नहीं, दीसै सकळ सपोस।
गड़सूटी पीवै नहीं, कहौ कुणां को दोस।38।

यह बच्चा कोई रोगी नहीं दिख पड़ता, संपोषित जान पड़ता है फिर भी जन्म घूंटी पीता नहीं है, इसमें किसका दोष है।

चौपई

पीढ़ै पोढ़ायो सुख वासाण्य, फीरि हुवौ इरकी ताण्य।
पासो भोम्य न देई देव, कुण जांणै सतगुर को भेव।39।

उन्हें पीढ़े पर सुला दिया, उन्होंने स्वयं करवट बदल ली, परन्तु वह पृथ्वी की ओर पीठ नहीं करता है। उस सतगुरु के भेद को कौन जानता है।

भूली नारि नै जांणै भेव, किसन चिळत करि आयो देव।
उदबुद वात न जाई कही, इचरज देखि अचंभै रही।40।

वे भूली युवतियां भेद नहीं जानती है कि वे कृष्ण चरित्र कर रहे हैं। उनकी बातें देख सुनकर अचम्भा करती है।

बाळक पोढ़ायो सुख वासण, नारि गई घरि आपो आपण।
पीढ़ै ऊपरि बाळक थाय, पास पोढ़ी हांसा माय।41।

बालक को सुखासन पर सुलाकर युवतियां अपने घर चली गई। बालक पीढ़े पर था तथा पास में हांसा माता सोई थी।

ढुणकौ एक नींद कौ लियौ, जागी वेगी संभाळौ कियौ।
पीढ़ै उपरि फेरे हाथ, बाळ नहीं मन धस्यक्यो मात।42।

हांसा ने कुछ नींद लेकर उस पीढ़े को सम्भाला तो वहां बालक को नहीं देखकर वह दु:खी हुई।

दुहा

माता मन्य कायर हुई, जाणै हुवौ विछोह।
हीयड़ो धीरी नै धरे, अैसौ पुत्र कौ मोह।43।[7]

माता पुत्र के मोह से दु:खी होकर, विछोह जानकर, हृदय में धीरज न रहा। पुत्र का प्रेम ऐसा होता है।

चौपई

जोवे पीढ़ै कै आस-पास, बाळक न लाधौ घाते सास।
मुखि बोलै वैरागी वैण, सूझै नहीं अंधारी रैण।44।

उसने पीढ़े के आसपास देखा, लेकिन बालक नहीं मिला। वह अपने मुख से विरह के वचन बोलती है। अंधेरी रात में कुछ दिखता भी नहीं है।

साद करि लोहट ने कह्यौ, बाळक कोई स्वावज ले गयौ।
झळ पळ करि उठियौ पुंवार, वेगि कर आयौ तिण वार।45।

लोहट को आवाज देकर कहा–बालक को कोई शेर का बच्चा ले गया है। लोहट बहुत जल्दी उठा और वहां तुरन्त आया।

लाधौ बाळक पूगी रळी, सूझै नांही तूं आंधळी।
हांसा मुखता बोलै भाखि, साखी नहीं दीराऊं साखि।46।

उसी समय वह बालक वहीं पर पाया। लोहट कहने लगा अंधी तुझे दिखता नहीं है। हांसा ने कहा यहां पर कोई साक्षी नहीं है। अगर साक्षी हो तो आपको प्रमाण दिलाऊं कि वह यहां नहीं था।

पीढ़ै ऊपरि दीठो जोय, न ओ बाळ न लाधौ तोय।
पीढ़ै ऊपरि पोढ़ावीयौ, सीस कुवळ पूरब दिस कियौ।47।

लोहट कहता है पीढ़े के ऊपर ही था, तुझे यह मिला नहीं। तब उस बालक को पीढ़े पर सुला दिया तथा उसका मस्तक पूर्व दिशा की ओर कर दिया।

इह बाळक ओडौ बळ काव, पछिम सीस पूरब दिस पाव।48।

यह इतना छोटा बालक ही बलकारी है, जिसका पश्चिम दिशा में मस्तक करते हैं, तब भी पूर्व दिशा में पाते हैं।

दुहा

हांसा कहै ज बातड़ी, भावै नहीं पुंवार।
उदबुद दाय नै आवही, मानै लोकाचार।49।

हांसा जो कहती है, वह पंवार को नहीं सुहाता है। वह लोकाचार को ही मानता है, वह अद्‌भुत उसे पसंद नहीं है।

चौपई

हांसा बात कहै समझाय, लोहट मने न मानै साय।
आगै अैसी न सुणीय काय, यौह इचरज मानणौ न जाय।50।

हांसा लोहट को समझाकर कहती है परन्तु लोहट नहीं मानता है। पहले कभी ऐसी बात नहीं सुनी, इसलिये मानने योग्य नहीं है।

सुभ दिन हुवौ विहाणी रात्य, आव मुख देखै परभात्य।
रूप घणौ दीसै संकळाप, घणी कळा सूं आयौ आप।51।

रात्रि व्यतीत होने पर शुभ दिन हो गया। लोहट आकर उस बच्चे के मुख को देखता है। अच्छा रूप दिखता है और कलावान है, जिसकी अनन्त कला है।

दीप तो दीसै दीदार, पलंतर कुण जाणै पार।
माता मुखि ले हांचळ देह, चूंघै नहीं अचंभौ एह।52।

उनका चेहरा प्रकाशमान है, जो क्षण–क्षण में बदलता है, इसके भेद को कौन जान सकता है। माता जब मुंह में स्तन देती है तो वह दूध नहीं पीता है। यह बड़ा भारी अचम्भा है।

उरि उपरि पुहंचौ फेराय, पहुंनुं आवै औ हरि जाय।
माता पूत पियारो होय, डाहौ स्यांणौं पूछो कोय।53।

हृदय पर बच्चा खेलने–फिरने से माता के दूध ज्यादा प्राप्त होने लगता है तथा माता की चिन्ता बढ़ती है, वह कहती है कि किसी समझदार को पूछा जावे।

भुंछ लोग भरमां वस्य पया, आखा ले भोपां कै गया।54।

मूर्ख लोग भ्रम में के बस में होकर भोपों के आखा दिखाने अंध विश्वास में जाते हैं।

दुहा

माथो धूणै भोपटा, कूड़ा करै उपाय।
अन्यांनी अद्‌यावणां, मुख बोलै अनियाय।55।[8]

वहां भोपे लोग माथा हिलाकर झूठा उपाय करते हैं, मुख से अन्याय का उच्चारण करते हैं।

धरती उपरि धांम सड़ि, सांकळियारी सोक।
जुगति पखौ जागर करै, मुख ता बोलै फोक।56।

वे भोपे लोग पृथ्वी में घमासान नृत्य करते हैं। वे सांकलों की सड़ा सड़ खाने वाले जागरण करते हैं। वे मुख से असत्य का उच्चारण करते हैं।

हीर पखौ हीजर करै, डाका तणां डभीड़।
गुर हीणां गळ कटणां, न जाणै पर पीड़।57।

वे संसार में अपने पाखण्ड से डाका डालने वाले हैं, गुण रहित हैं, दूसरों का गला काटने वाले हैं, दूसरों की पीड़ा को नहीं जानते हैं।

चौपई

कूड़ा कूड़ घड़ै मन मांहि, कितौ हेक जुग मेल्हयौ भरमांहि।
गहणां घातै करै अंवार, धूते धूत्यौ सौह संसार।58।

वे कपटी मन में कपट पैदा करते हैं और चाहते हैं कि संसार में ज्यादा भ्रम पैदा करने से लाभ होगा। इसलिये वे ज्यादा देर तक पाखण्ड करते हैं।

खोटा दीयै सराफा हाथ, करै ठगाई साहां साथ।
पढ़ीय ठगंण मत गिंवार, फीटा फीटा होय खुवार।59।

वे सर्राफों के साथ खोटा काम करते हैं और ठगाई करते हैं।वे मूर्ख ठगाई का मंत्र पढ़ते हैं और बेशर्म रहते हैं।

सेवग हूंता भोपां तणां, टूणां टटवस किया घणां।
वीरां भूतां रह्या मनाय, भोपां तणी न सरही काय।60।

उस भोपे के सेवक ने बहुत ही तांत्रिक यंत्र किये तथा वीरों-भूतों को मनाया मगर कोई कार्य सिद्ध नहीं हुआ।

केवळ कथणी करै सुजाण, तिंह परमोधै मतै अजांण।
पिंडत नै मुरेख समझाय, तिंहकी कही नै लगइ जाय।61।

केवल जानकार लोग ही सत्य कथन करते हैं, जो अज्ञानियों का मन मोह लेते हैं। जो पण्डितों को मूर्ख समझता है, उसका कथन उसे नहीं सुहाता है।

दुहा

पापां पालण अवतर्‌यौ, धरमां देवण मांन।
मुरिख लोग नै जांणही, उपाड्‌यसी कुथान।62।

जाम्भोजी ने पाप को समाप्त करने के लिये और धर्म को सम्मान देने के लिये अवतार लिया है। मूर्ख लोग यह नहीं जानते हैं कि वे पाप को नष्ट करेंगे।

चौपई

बाळक हींडैं हींडोलणौ, थूंणै दूध कढ़ै काढ़णौ।
हांसा गई ज कारज कहीं, देव पखौ घरि कोई नहीं।63।

हांसा बालक को पालने में सुलाकर और चूल्हे पर दूध गर्म रखकर किसी कार्यवश कहीं गई थी, उस समय उन देव के सिवाय घर में कोई भी नहीं था।

वसैंदर तेज कियौ अंति घणौं, आवटि दूध उफण्यो घणौं।
मिनख नहीं कोई पास थूंणै, दूध रीड़ंतौ राखै कूणै।64।

वहां पर अग्नि के तप से वह दूध उबलकर उफनने लगा। वहां चूल्हे के पास कोई नहीं था, जो उस उफनते हुए दूध को रोक दे।

झटि बालक उठ्यौ झंणकाय, कर गहि ढ़कणौ लियो ऊंचाय।
दूध रीड़ंतौ राख्यौ ठारि, भुंय मेल्यौ ढ़ाकणों उतारि।65।

वह बालक तुरन्त उठा और ढ़कन को उतार कर उफनते हुए दूध को रोका। उस पात्र को तप से उतारकर भूमि पर रख दिया।

केता दूध रीड़ जग मांहि, रीड़ंतौ पड़ंतौ राखै नांही।
कीणी ज कारण्य आयौ भाय, तिण्य कारण गुर कर लखाय।66।

संसार में कितने ही मनुष्य इस दूध की तरह उफन रहे हैं लेकिन उन्हें शांति देने वाला कोई ऐसा सतगुरु नहीं है। यह देव किसी कारणवश यहां आए हैं, इनको पहचानकर इन्हें अपना गुरु बनाओ।

दुहा

भूला लोग नै जांणही, वुधर कैरो भेव।
कुण जाणै कळी काळ मां, रामति रमजै देव।67।

भूल से लोग विष्णु के भेद को नहीं समझते हैं। इस कलयुग में श्री जाम्भोजी स्वयं विष्णु ही कोई खेल खेलते हैं।

चौपई

आई हांसा दीठो जोय, उपरी खोज नै दीसे कोय।
पाड़ोसंण पूछै सद कार, कीण्य मेल्ह्यो काढ़णौ उतार।68।

हंसा जब आई तब क्या देखती है कि दूध का पात्र भूमि पर धरा हुआ है। वह पड़ोसिन से पूछती है-यह दूध का पात्र आंच से किसने उतारा।

कहै पाड़ोसंण सांभळ सही, काढ़णौ मिनख उतार्‌यौ नहीं।
तेरे घरि ओह बाळक होय, बाळ नहीं ओह इचरज कोय।69।

पड़ोसिन कहती है, सही बात सुनो, इस पात्र को किसी मनुष्य ने नहीं उतारा है। तुम्हारे घर में इस बच्चे के अलावा कोई नहीं था। यह बालक नहीं, कोई अचंभा है।

हिंडोलै थूंणै बीच चोज, निरख्यो हांसा दीठो खोज।
निरखे तसटौ लियौ ताकि, खोज जतन करि राख्यो ढ़ाकि।70।

हंसा ने चूल्हे और पालने के बीच पद चिन्ह देखे तो वे बालक के ही थे। इसलिये उन्होंने वे पद चिन्ह तसला से (बट्टल) ढ़ककर सुरक्षित रखे।

कहीं कारज गयो पुंवार, कारज करि आयो तीण्य वार।
हांसा रूनी साद रोज, तसटो उघाड़ि दिखाळ्यो खोज।71।

पंवार कहीं बाहर काम करने गया था। जब वह घर आया तो हंसा ने आवाज देकर, वह तसला उघाड़कर वे पद चिन्ह दिखाये।

दुहा

पीढ़ै परि पायौ नहीं, कादा कियौ वंमेख।
मोह कहै थो आंधळी, तीण पारखि देखि।72।

जिस समय यह बालक पीढ़े पर मुझे नहीं मिला था, तब यह मुसीबत उस अलख पुरुष की हुई ही थी तब आपने मुझे अंधी कहा था, उसकी परीक्षा अब करो और दिखाओ।

चौपई

घाटि वाध्य दिन दस को होय, कयौ काढ़ैण उतारे सोय।
माय कहै कारेसी हाण्य, मिनख नहीं कोई इचरज जाण्य।73।

यह दस दिन का बालक इस पात्र को उतारने योग्य नहीं है। माता कहती है–यह कोई हानि पहुंचायेगा, यह मनुष्य नहीं कोई अचंभा है।

लोहट कहै न करि असमादि, एक वात मोहि आई आदि।
हूं गऊ चरावण गयौ वन मांय, पुरिख एक भेंट्यौ उण्य ठांय।74।

तब लोहट कहता है, चिन्ता मत करो, मुझे एक बात याद आ गई है। मैं जंगल में जब गाय चराने गया था, वहां मेरी एक पुरुष से भेंट हुई थी। मैं उस पुरुष के पास कुछ समय रहा था।

पुरिख पास्य हुं कादा रह्यो, इह बाळक को आवण कह्यो।
पुरेख तेरे लेसी अवतार, संक नै मांनी करी करार।75।

जब मैं मुसीबतों में एक पुरुष के पास रहा था तब उस पुरुष ने मुझे कहा था कि मैं तेरे घर अवतार लूंगा। तुम किसी प्रकार की शंका पैदा मत करना।

दुख सुख लिखिया से संसारि, से कुंण मेट इ संसारि।
लोहट कह विचारो जोय, इह बाळक तां बुरा न होय।76।

दु:ख-सुख संसार में कर्मो का भोग होता है, उसे कोई नहीं मेट सकता। लोहटजी कहते हैं कि इस बात पर विचार करो, यह बालक किसी

का बुरा नहीं करेगा।

दुहा

लोहट अर हांसा दोऊं, मंने सधीरा थाय।
धीरज वैण विचारिया, सुणियां था वन मांय।77।

लोहट और हंसा ने मन में धैर्य धारण किया। जंगल में उस पुरुष द्वारा कहे गए वचनों पर धैर्य से विचार किया।

जंगळि थळि जीवां धंणी, बैठो आंसण धार।
सुरता हुव स संभळौ, समइयै एकौ विचार।78।

जंगल में जीवों के रक्षक जाम्भोजी महाराज आसन धारण कर बैठे हुए हैं। जिनको सुरति है, वह इस बात को समझो और इस बात पर विचार करो।

लोहट हांसा क तकियै, देव वासौ लियो आय।
गहलौ गहलौ तां कह्यो, अलख न लखियौ जाय।79।

लोहट और हंसा के घर में श्री जाम्भोजी ने अवतार लिया है। उनको लोग पागल बताते हैं, जो उस देव को नहीं समझ पाते हैं।

पूछै भोपा बांभणां, भरड़ा मुंदराळांह।
सारौ करे कोई बाळकौ, दीयो बधाई तांह।80।

वे भोपों, ब्राह्मणों और मुद्राधारी योगियों को पूछते हैं कि इस बालक को ठीक करो। उनको बधाई दी जाएगी।

एक दीहाड़े भोपटे, सबळ पतीगौ कीव।
लोहट नांही ओर कै, मार्‌या तेरा जीव।81।

एक दिन एक भोपे ने किसी अन्य स्थान पर बहुत पाखण्ड किया। वहां पर उसने लोहट जी से कहा बलिदान करो। तब उसी अन्य स्थान पर उस भोपे ने स्वयं ही तेरह जीवों की हत्या की।

कग्रा उपरि कांहळा, उ भोपटा मीलांहि।
लोहट हांसा संभळ्यौ, हरख हुई मन मांहि।82।

जैसे बहुत से कौवों में कोई एक गिद्ध जाति का सफेद बड़ा कौवा मिल जाये उसी प्रकार का उन्हें यह भोपा मिला था जो झूठ बोलकर पाखंड करता था। जब एसने बच्चे के ठीक होने का आश्वासन लोहटजी और

हांसाजी को दिया तो वे प्रसन्न हुए।

उत ले चाल्या बाळकौ, वीथा लह मत कोय।
लोहट हांसा चितवै, मत बाळक सारौ होय।83।

वे बालक को उधर लेकर गये ताकि उसकी व्यथा ठीक हो। इसे दु:खी जानकर लोहट और हांसा चिंता करते हैं कि किसी भांति बालक ठीक होना चाहिये।

चौपई

मात पिता चिंता उपजी, कायर धीर न मांनै मनी।
मिनखा गति नै जाणी जाय, कोई अचंभौ ओतर्‌यौ आय।84।

माता-पिता को चिन्ता होती है। कायर मन धैर्य नहीं धरता है। यह मनुष्य नहीं कोई अचंभा अवतरित हुआ है।

उतिम मारग दीखाळै देव, मुरिख लोग न जाणै भेव।
भुंछ लोग भरमावै घणां, पूछ भोपां अर बांभणां।85।

वह देव उत्तम मार्ग बताता है परन्तु मूर्ख लोग इस भेद को नहीं जानते। मूर्ख लोग जल्दी ही भ्रम में आ जाते हैं, जो भोपों और ब्राह्मणों को पूछते हैं।

लोहट चाल्यौ भोपां जाय, बालक लियो आंगळी बिलमाय।
चाल्य गयौ भोपां क पास्य, कह विनती करि अरदास्य।86।

लोहट बालक को अंगुली पकड़ा के भोपे के पास ले जाता है और विनती करने लगा।

ओह बाळक देखौ निरखाय, बाळक गति न जाणी जाय।
पीवै उदक न लेह अहार, बालक तणो न लाभै पार।87।

इस बालक को देखो, इसकी गति जानी नहीं जाती है। यह न आहार करता है तथा न ही पानी पीता है। इसका कोई पार नहीं पाया जाता।

दुहा

भोपा कहै असूझतो, मुखि बोलै अविचार।
सारो करिस्यां बाळकौ, पोखां उदक अहार।88।

भोपा अनहोनी और बिना विचारे कहता है। बालक को फायदा करेंगे तथा इसको आहार और पानी पिलायेंगे।

चौपई

बड़कै कड़कै हो करै हाक, मुख तां बोलै कूड़ नीफाक।
नाटक चेटक भरमावणी, कहै कुवात सुणांवै घंणी।89।

वह भोपा तड़क-कड़क कर मुख से असत्य कहता हुआ उनको भ्रम में डालता है और बुरी बातें कहता है।

बाळ रूप बोलै सुरबाण्य, भोपां नै पूछै जाण्य।
किता जीव थे मार्‌या आज, मार्‌य जीव कुण सार्‌यौ काज।90।

बालक देव वाणी में बोलता हुआ भोपा से पूछता है, आज तुमने कितने जीव मारे तथा क्या कार्य सिद्ध हुआ।

भोपा कहै इग्यार किया, भूत दोस करता राखिया।
पूजी सगति र पूज्या सीव, दे दे जीव उबारां जीव।91।

भोपा कहता है ग्यारह जीवों की बलि दी गई है। भूतों को दोष करने से बंद किया। शक्ति और शिव की पूजा की है, जिससे जीवों की बलि देकर जीवों को ही बचाया है।

भोपां परति कह छ देव, थां साच तणौ नै लाधौ भेव।
थे अकळ विहुंणां उवसहीया, मारौ जीव कहो म्हे किया।92।

भोपे को जाम्भोजी कहते हैं-तुम सत्य को नहीं जानते हो। तुम कुबुद्धि से जीवों की हत्या करते हो तथा कहते भी हो कि हमने ही किया है।

दुहा

भोपां की भरमांवणी, ओ भव बूड़ंतौ जोय।
जीव दियां जीव उबरै, तो नरपति मरै न कोय।93।

यह भोपों की भ्रम माया है, इससे वे भव सागर में डूबते हैं। यदि जीव देने से जीव बचे तो राजा कोई भी नहीं मरेगा।

चौपई

तेरह मार्‌य इग्यार कहै, कूड़ा आखर अनंत भव दहै।
हत्या कमावौ बोलो कूड़, अगति तणां क्रम बांधौ मूड़।94।

तेरह मारकर ग्यारह बताते हो, यह झूठ तुम्हें दु:ख देगा। हत्या करना और झूठ बोलना-हे मूर्ख! ये आगे के लिये कर्म का भार सिर पर लेते हो।

भोपा कहै को पितर होय, कीसा जीव म्हे मार्‌या दोय।
अपरच जीव न मानै कही, जीव जाणै सी मांही वही।95।

भोपा कहता है, इसमें कोई पितर है। मैंने दो जीव और कौनसे मारे है। इसके अन्दर जो न परचने वाला जीव है, वही इस बात को जानता है।

सुभर छाली मारी तोय, जीवत बकरी नीकसी दोय।
वउ जीव जगत गुर सार, अैसा पाप क्यों करौ विसार।96।

देवजी कहते हैं, तुमने गर्भवती बकरी मारी। इसके पेट में दो बच्ची जीवित निकली। तुम ऐसा पाप क्यों करते हो, उन्हें छोड़ो। सब जीव गुरु कृपा से हैं।

सांभल्य भोपा गया अवझाय, इह बालक सूं बोलणौ न जाय।
छानां पाप कस्य रगटा, किसी लाज बोलै गळ कटा।97।

भोपा सुनकर चुप हो गया। इस बालक से बोलना नहीं होगा। वह गुप्त पाप करने वाला और जीवों का गला घोंटने वाला, शर्म के कारण अब कैसे बोल सकता है।

दुहा

देवजी लोहट न कहै, कूड़ा कुसंग निवारि।
कुपह कुमारग चालतां, बौह भव जायस्यै हारि।98।

देवजी लोहट को कहते हैं, इस झूठे और कुसंगी का त्याग करो। इस कुसंगति के साथ से कुमारग पर चलकर जन्म वृथा खो बैठोगे।

चौपई

तेरह मार इग्यारा कहै, दोय जीवां की सुध्य न लहै।
सुध्य विहुंणां वेसुध्य फिरै, गहला सारा कीण्य परि करै।99।

जो तेरह जीवों को मारकर ग्यारह बताते हैं और दो जीवों का भी ध्यान नहीं रखते हैं, वे बेसुध पागल हैं। वे फायदा किस प्रकार करेंगे।

भरड़े भोपे सीध न होय, काळर मांहे कंवळ न जोय।
आंब न लाभै सोध्या आक, उठि लोहट चालो अवताक।100।

ये भोपे सिद्ध पुरुष नहीं होते। कालर मिट्टी में कमल नहीं होता। आम को छोड़कर आक ढूंढ़ते हो। लोहट यहां से उठ चलो। ऐसा गुरु जी ने कहा।

बांभण एक कहीजै जांण, जांणै मंत्र मोहणी विवांण।
बैसै जाय मुसाणां तीर, वीरोटियौ चलावै वीर।101।[9]

एक ब्राह्मण बहुत प्रशंसित था। वह श्मसान सेवने वाला तांत्रिक था

और गंदे मंत्र का प्रयोग करने वाला था। वह मोहनी मंत्र पढ़ता था।

वीण्य बळदां पोहण चळावै, विदिया बळि दुनिया भोळावै।
लोग करै बांभण की मान्य, लोहट हांसा सुणीयो कान्य।102।

यह ब्राह्मण बिना बैलों के गाडा चलाता है और विद्या के बल से लोगों को भ्रमाता है। लोग इस ब्राह्मण का सम्मान करते हैं। यह बात लोहट और हांसा ने भी सुनी।

सोई बांभण ज्याण्यौ जाय, करै उमेद पिता और माय।
जे औ बालक सारौ होय, दीयां बधाई पांडे तोय।103।

उस ब्राह्मण से हांसा तथा लोहट उम्मीद रखते हैं। वे कहते हैं कि अगर इस बालक को फायदा होगा तो हम आपको प्रसन्न करेंगे।

पांच टांक जे जीमे अंन, तोर पतीजै म्हारो मंन।
ज्यौं म्हे बोलां ऊं बोलाय, दीया वधाई पांडे गाय।104।

यदि यह बालक पांच छटांक अन्न खा लेगा तो हमें विश्वास हो जायेगा। जैसे हम बोलते हैं, इसी तरह इसको बुलाओ, तब हम तुम्हें बधाई में गाय भेंट करेंगे।

दुहा

बांभण आण्यौ पाटड़ौ, जींह बाळक वसाय।
पढ़ पढ़ पांणी पांडियौ, सो बालकौ न्हवाय।105।[10]

ब्राह्मण ने एक पाटड़ा (चौकी) मंगाया और उस पर बालक को बैठाया। मंत्र युक्त जल से बालक को स्नान कराया।

चौपई

बालक मुख मुळकै हरसाय, देख्यौ पांडे पड़यौ विपाय।
सार साजै वदी करै, परिख न जाणै खोटै खरै।106।

बालक मुस्कुराता है और प्रसन्न होता है। तब वह पंडित उदास होता है। वह लोगों को कहता है। मैं बालक को अच्छा करता हूँ। लेकिन वह अच्छे-बुरे की पहचान नहीं जानता है।

विप्र बैठो वासदे जगाय, नर नारी मिल्य बैठा आय।
मांड्यौ होम करै रहरास्य, बाळक आण्य बैठायो पास्य।107।

ब्राह्मण ने अग्नि प्रज्जवलित कर उस दम्पति को बैठाया। वह होम स्थापित कर नाटक कर रहा है तथा बालक को पास बैठा लिया है।

चौसट नाळा एक वाहड़ौ, कीयो कुंभार घड़ायौ घड़ौ।
अठोतर्‌य सै चुखडंडी, कीवी कुंभार घड़ाई घड़ी।108।

कुम्हार को कहकर ऐसा घड़ा बनाया जिसमें चौसठ नाले, एक मुख, तथा एक सौ आठ नलियां थी।

वसंदर आंण्यौ तेण्य मांय, विप्र आंण बैठो तिण्य ठांय।
थावर वरत्य आई सिव राति, पांडे तेल मंगावै वाति।109।

उसमें अग्नि मंगाई तथा उसके पास ब्राह्मण बैठ गया। रविवार के समाप्त होने पर शिव रात्रि आई। तब पण्डित ने तेल और बाती मंगाई।

तेल ठव्यो चौखड़ीये घाति, चौखंडी नाळा मंडि वाति।
वाति वाति वसंदर देव, दीवा जगै न करही खेव।110।

उस घड़े में तेल डाल दिया और बाती बनाकर जलाता है। लेकिन अत्यन्त उपाय करने से भी वे दीपक जलते नहीं है।

दुहा

देखै निरखै पांडियौ, सकळ स महुरति जोय।
देहु नुहायौ बाळकौ, मंत्र न लागै कोय।111।

वह पंडित सोच समझकर कहता है कि शुभ मुहूर्त देखकर इस बालक को नहलाओ। इसे कोई मन्त्र लगता नहीं है।

चौपाई

देव कहै बांभण सुंण मूढ़, अतरौ क्यौं बोलीजै कूड़।
थोड़ी दा नुहायौ थयौ, तीह न देहुं नुहायौ कह्यौ।112।

देवजी कहते हैं मूर्ख ब्राह्मण सुनो, इतनी झूठ क्यों बोलते हो। आपने थोड़ी देर पहले मुझे स्नान कराया था। उसके लिये पुनः कहते हो, नहलाओ मंत्र नहीं लगता, यह झूठ है।

जळम सुफल जे वाचा सार, कूड़ो बोलै जीव नै भार।
कूड़ौ बोलै मुखि वावरै, गहलो सारो कीण्य विध्य करै।113।

जन्म सफल करने के लिये सत्य बोलना है और झूठ बोलने से जीव पर अकर्म भार होता है। झूठ बोलने से पाप लगता है। ऐसा मूर्ख किस प्रकार ठीक करेगा।

साच झूठ की सुध्य न लहो, लो हर छांनै दीवा कहौ।
साची बांण न जांणौ बोल्य, पांहण सेती हीर न तोल्य।114।

तुझे सच और झूठ की सुधि नहीं। लोगों से दान लेते हो और कहते हो दिया, तुम सत्य को नहीं पहचानते हो। हीरे को पत्थर से मत तोलो।

पांडे जके न जांणै चेटक तंत, भणै गुंणै न जांणै मंत।
चाल न जाणैं विरोटीया, सेई तेल रूई जगावै दीया।115।

पंडित तुम असली तत्व को नहीं जानते हो। पढ़ लिखकर भी मंत्र नहीं जानते हो। न तुम सत्य को जानते हो, तुम्हारे पास तो केवल वीरोटियों की विद्या (52 वीरों के भ्रम) हैं। तुम तो तेल सींचकर रूई से दीपक जलाना जानते हो।

दुहा

तेल रूई दीवा जगै, मंत्र दीवा न जांण्य।
जळ रूई दीवा जगै, सोई मंत्र प्रवाण्य।116।

तेल रूई से दीपक जलता है। वह दीपक मंत्र नहीं है। जब जल और रूई से दीपक जलता है तो वह मंत्र है।

जांणी कहावै पांडे, इचरज देखि विचार।
सतगुर सार न जांण ही, जांणै लोकाचार।117।

तुम अनजान होते हुए भी जानकार कहलाते हो। तुम सतगुरु के सारांश को नहीं जानते हो, केवल लोकाचार को जानते हो।

चौपई

पांडे लोहट नै पुछाय, ओह बालक ऊं क्यों बोलाय।
आखर कहूं अपूठौ लीय, तिह आखर कौ उतर दीय।118।

पंडित लोहट से पूछता है कि यह बालक ऐसा क्यों बोलता है। अब मैं उल्टा अक्षर कहता हूँ–उसका यह क्या उत्तर देता है।

लोहट कहै म्हां उणति घणी, विथा न लाभै बालक तणी।
तीह कारण तुह आण्यौ जाय, तैह थै पांडे सरी न काय।119।

लोहट कहता है, हमने बहुत कुछ आपके कहने अनुसार किया है। मगर इस बालक का रोग तुमने नहीं पाया है। जिस कारण तुम यहां आये हो, तुम्हारे से हमारा कोई कार्य सिद्ध नहीं हुआ।

पांडै कहै जे दीवा जगै, तंत्र-मंत्र म्हारा सह लगै।
दीवा जगै न दीसै लोय, म्हारौ मंत्र न लागै कोय।120।

पंडित कहता है, यदि दीपक जले तो तन्त्र-मन्त्र इसको लगेंगे।

परन्तु दीपक नहीं जलता है और न ही इसकी लौ दिखती है, इसलिये कोई मन्त्र नहीं लगता है।

दुहा

देव कहै दीवा जगै, सारौ करिस्यै मोय।
दीवा सजळ जगायस्यौ, पांडे विमुख न होय।121।

देवजी कहते हैं कि दीपक जगेंगे, तब क्या तुम मुझे ठीक कर दोगे। मैं दीपकों को जल से जला सकता हूँ। हे पाण्डे, तू नाराज न हो।

चौपई

चौखंडी नाळा मेल्हया दूरी, मळ्य माटी आणी हजूरि।
आणी माटी मांड्यौ घाट, चौखंडी नाळा पाणी घात्य।122।[11]

देवजी ने उस चौमुखी दीपक को दूर रख दिया और मिट्टी को मलकर उससे घड़ा बनाया और उसमें पानी डाल दिया।

वसंदर नै दीन्हुं हुवौ, जगै वसंदर सचणण हुवौ।
दीठौ किसन चिळत परवांण, गरब गळ्या पांडे का मांण।123।

देवजी की आज्ञा से अग्नि जली और प्रकाश हुआ। यह विष्णु भगवान का चरित्र देखकर उस पंडित का अभिमान भंग हो गया।

पांडे आकळ वाकळ थाय, अगम पुरिख अवतरीयो आय।
जींह की सदा निरोतरि वाच, विप्र पतिनुं दीठो साच।124।

वह पंडित देखता रह गया और सोचा कि यह कोई अवतारी पुरुष है, जिसके वचन का कोई उत्तर नहीं दे सकता। यह चरित्र प्रत्यक्ष देखकर उसे विश्वास हो गया।

लोहट धोखौ मने निवार, मिनख न पूछी इण्य संसार।
हांसा मन्य उणी मत जाय, अगम पुरिख अवतरियौ आय।125।

लोहट को पंडित कहता है कि तुम मन में धोखा मत करो, यह संसारी मनुष्य नहीं है। हांसा तुम भी उदास मत रहो, यह किसी परम-पुरुष ने अवतार लिया है।

दुहा

देवजी लोहट ने कहै, कियौ कवळ संभाल्य।
संकळप उदकि न राखियै, गाय दियो क टाल्य।126।

देवजी लोहट को कहते हैं-आपने जो संकल्प किया है, उसे याद

करो और इसी विप्र को गाय दो।

चौपई

लोहट कह इहकौ कवल चीतारौ, जे पांडे तोहि करसी सारौ।
पांच टांक जै अन्न जीमाय, तो पांडे न दीजै गाय।127।

लोहट कहता है-अगर इसने तुझे ठीक किया हो और अन्न खिलाया हो तो इसे गाय दूं।

कारी तौ क्रम सारी होय, पांडे दोस न दीजै कोय।
इह पांडे को भाव विचारौ, जाण्यो होयसी बालक सारौ।128।

फायदा तो समय के अनुसार हो जायेगा। इस पण्डित को कोई दोष न दो। इस ब्राह्मण के भाव का विचार करो और मुझे तो फायदा ही हुआ मानो।

अैसौ भाव करि आव आस, सो क्यौं करि मेल्हीयै निरास।
लोहट ना नु जीव न कीजै, एह पांडे नै गाय एक दीजै।129।

जो शुद्ध भाव से ऐसी आशा करके आता है, उसे निराश नहीं करना चाहिये। हे लोहट तुम कंजूसी मत करो। इसे गाय दे दो।

देव पांडे नै गाय दीराई, आप रह्यो जंगळि थळि जाई।
मोहण मने रहै उदासा, निरहारी जंगळि थळि वासा।130।

देव जाम्भोजी ने उस पण्डित को गाय दिलाई और स्वयं जंगल में गए। सतगुरु जाम्भोजी वन में उदास रहते हैं और निराहारी (आहार न करने वाला) रहकर जंगल में निवास करते हैं।

दुहा

धन्य जंगळि धन्य संभर, धन्य ए बाळ गुवाळ।
जांही संग्य रामत्य रम्यौ, लाळण लीळ भुंवाळ।131।

वह जंगल धन्य है, वह संभराथल धन्य है और वह ग्वाल भी धन्य है, जो इस देव के साथ खेलते हैं। ये देव तीनों भुवनों के राजा हैं।

हरी कंकहड़ी हर्या वन, जित प्रभु कियो प्रवेस।
रूंखां वळि रळि आवणी, जो रमंतो बाळै वेस।132।[12]

जहां हरी कंकेहड़ी और हरे-भरे जंगल हैं। वहां उन्होंने निवास किया। वे उन वृक्षों की रक्षा करते हैं और बालक के वेस में खेलते हैं।

परच्या पसु पंखेरवां, जां जीवां उतिम जाति।
पवित्र किया जोतकी, परची गुपत जमाति।133।

उनकी करामात से पशु-पक्षियों को परचा मिला और उनकी उत्तम जाति हो गई। ये उनके उपदेश का प्रभाव था। जोत के प्रभाव से वह ज्योतिषी और अन्य छिपे हुए सत्संगी भी सन्तुष्ट हो गए।

चौपई

परगट पंथ कियो जदि धणी, गुर दिवाण मिली गति घणी।
भ्रम छोडि आया जदि सेव, जदि आ वात कही गुर देव।134।

जब उन्होंने अपना रास्ता (मार्ग दर्शन) प्रगट किया, तब बहुत से संसारी जीवों का भ्रम छूट गया। जब वे उनकी शरण में गए तो देवजी ने उनका मार्ग दर्शन किया।

विसनोई एक बोल्यौ जाण्य, जदि मैं गुर सुं न थी पिछाण्य।
सबळि पतीगौ मैही कीव, एक दिन मार्‌या तेरह जीव।135।

एक बिश्नोई ने कहा कि जब मुझे आपकी जानकारी नहीं थी तब मैंने एक दिन में तेरह जीव मारे थे और बड़ा भारी अपराध किया था।

दुहा

विसनोई मन्य डरप्यौ घणौ, साल्या पाप अधार।
सांई लेखौ मांग्यसी, कुंण छुड़ावण हार।136।

वह बिश्नोई मन में बहुत भयभीत हुआ, उसको पाप का दु:ख चुभने लगा। वह सोचने लगा-मालिक जब हिसाब मांगेगा तो वहां इस पाप से छुड़ाने वाला कौन है?

चौपई

सुभर छाली मारी जोय, जीवत जीव निसरया दोय।
वउ जीव मुवा निरधार, तां पापां को कुंण विचार।137।

गर्भवती बकरी को मारी तो उसके गर्भ से दो बच्चे जीवित निकले। वे जीव निराधार होने से मर गये। इन पापों से मुझे छुटकारा कैसे मिले।

सुध्य विहूंण कियो आप, सुरति सांचरी साल्हा पाप।
ज्यौं ज्यौं जीव विचारै वार, हीय वहै ज्यौ करवत धार।138।

मैंने नासमझ में यह पाप किया था। अब सुधी आने पर पश्चाताप होता है। जैसे-जैसे इसका विचार करता हूँ वैसे-वैसे हृदय में आरा चलता है।

विसनोई विनवै कर जोड़ि, गुर सुं कह आपणी खोड़ि।
जे होयसी लेख की वार, जीव नै कुण छुड़ावणहार।139।

वह बिश्नोई हाथ जोड़कर विनती करता है और गुरु के सामने अपने दोष स्वयं प्रकट करता है। जब इसका हिसाब होगा तो हे स्वामी, मुझे कौन छुड़वायेगा।

सतगुर कह सांभळीयो सोय, सुध्य परचौ केवळ सूं होय।
ठण्डै पांणी जाय पियास, पाप पहल्य का करूं नीरास।140।

सतगुरु कहते हैं-सुनो! शुद्ध कर्मो के साथ केवल ब्रह्म की भक्ति करो। जैसे ठंडे पानी से प्यास मिटती है वैसे ही ब्रह्म भक्ति से पापों का नाश होत है।

दुहा

जे मन मां जोलौ रहै, परचे विण्य जप कीव।
वील्ह कहै परतीत्य वीण्य, बोह दुख सहिसी जीव।141।

जब तक मन में संशय रहता है तब तब जप करने का कोई महत्व नहीं है। कवि वील्होजी कहते हैं ज्ञान के बिना इस जीव को बहुत दु:ख सहने होंगे।

धन्य दीहाड़ो रीण धन्य, गुर परगट संसारि।
वील्ह कहै जां ओळख्यौ, ते उतरस्य पारि।142।[13]

वह दिन धन्य है, वह रात्रि धन्य है जिसमें गुरु इस संसार में प्रकट हुए। कवि वील्होजी कहते हैं, जिन्होंने उन्हें पहचाना है, वे भव सागर से पार उतर जायेंगे।

संदर्भ टिप्पणियां

1. इस कथा के छंद 2-3, सुरजन जी कृत ग्रंथ हरिगुण में छंद 9-10 सीधे ही लिये गये हैं।
2. चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर।
   दान दिये धन न घटे, कह गये भगत कबीर।।
   कबीर के दोहे
3. ग्यान खड़गूं जथा हाथे, कुण होयसी हमारा रिपू।
   जाम्भोजी का सबद (41)
4. (क) गोरख जो ग्यान गम की कहै, महादेव जो परमन की लहै।
   वील्होजी का हरजस
   (ख) कहीयौ साच सुगर को सुणी, च्यार धरम फुरमाया धणी।

दान सील तप भाव विचारि, सहज संतोष खिमा दया धारि।।155।।
(ग) जोग ध्यान मन माही रहै, मुख महमद कौ कलमूं कहै।
सुच्य ब्राह्माणी लीय संभाल्य, जैन धर्म जीव दया पाल्य।।156।।

केसोजी की कथा विगतावली

5. हिरदै नांव विसन को जंपौ, हाथे करो टवाई।।99।।

जाम्भोजी का सबद

6. थारै आय नै अवतार लेस्यां, अवतार ले न धरम चलास्यां।
लोहट हरषि नै घरे जो आवै। स्त्री ने तो वन री वात सुणावै।11।

भगवानदास विरचित विसन जाम्भैजी रो सिलोको

7. माता मने उदास हुय, दौड़ गई दरबार।
अब बालक दीसै नहीं, ताका कहौ विचार।।

जम्भसार, चतुर्थ प्र., पृ. 73

8. नाचै कूदै भोपड़ा, कारी लगे न काय।
पाखण्ड पाप पसार कै, मने रह्या अर गाय।

सुरजन जी कृत अवतार चरित

9. (क) जम्भसार की एक कथा के अनुसार उस ब्राह्मण का नाम खेमनराय था और वह कालपी (उ.प्र.) का निवासी था।

जम्भसार प्रकरण-1

(ख) महात्मा सुरजनदास जी उसे नागौर का निवासी मानते हैं और यही ठीक प्रतीत होता है।

सुरजनजी कृत अवतार चरित

10. लोहट पाण्डे ने ल्यायो बुलाय, विप्र पहुंचो पीपासर आय।
वील्ह कथा में कह्यो विचार, घर आये को सुनो विचार।।39।।

सुरजनजी-कथा औतारपात की

11. काचे करवे जल राख्यो, सबद जगायो दीप।
ब्राह्मण को परचो दियो, अैसो अचरज कीन।।

स्वामी रामानन्द गिरी जम्भसागर पृ. 238

12. हरी कंकहड़ी मंडप मैड़ी, तांहा हमारा वासा।
च्यारि चक नव दीप थरहरै, जे आपौ परगासा।।73।।

जाम्भोजी का सबद

13. आज भी छंद 131, 132, 133 एवं 142 को जाम्भोजी की स्तुति के रूप में प्रयोग किया जाता है। इससे जाम्भोजी की बाल लीलाओं का पता चलता है। उनका सम्भराथल में विराजमान होना और विभिन्न लोगों को परचा देना भी सिद्ध होता है। उनके अवतार से वे लोग, बाल-ग्वाल, पशु-पक्षी, हरे वृक्ष और सम्भराथल की भूमि धन्य हो गई।

श्री जम्भेश धर्म दीपावली-रामदास, वि.सं. 1993

6. कथा गूगळियै की (राग आसा)

दुहा

जगत गरु जंगल वसै, वासो मंझि वणांह।
भेद प्रगासै भाव करि, गुर तार्यसी घणांह।1।

कवि वील्होजी कहते हैं कि हे जगत गुरु श्री जाम्भोजी महाराज मेरे कण्ठों में बसो और मुझे विद्या प्रदान करो। दया करके ज्ञान का प्रकाश करो, क्योंकि आप अनेक लोगों को तारने वाले हैं।

चौपई

संमत कहावै पनरासयौ, कुसमूं सबळ बयाळोपयो।
जीवा जुण्य संताई भूख, गउवां मिनखां इधकौ दूख।2।[1]

संवत् पंद्रह सौ ब्यालीस में भयंकर अकाल था। सभी जीवों को भूख ने तंग किया। गऊवों और मनुष्यों को अधिक दु:ख था।

के के जीव बड़ा दुखियार, अपणी कीवी कुमाई लार।
भूख तणी दोरही पहारि, नीबळौ लोग चल्यौ जीवारि।3।

कई जीव अपने पूर्व जन्म के कर्मो से बहुत दु:खी हैं। भूख की चोट बहुत कठिन हैं। इस कारण गरीब लोग अपनी जीवारी (मजदूरी) के लिये अन्यत्र चल पड़े।

देस थळी बापेऊ गांव, थूळ लोक वसै उण्य ठांव।
भाटी वसै खिलेहरी जाति, लोक क्रसांण र रायक न राति।4।[2]

थली के अन्दर बापेऊ नामक गांव है। वहां मूर्ख लोग रहते हैं। वहां भाटियों के खिलेहरी गोत्र के लोग रहते हैं। वे कृषक हैं और वहां रायका जाति के लोग भी रहते हैं।

हतै जीव छाली बाकरा, मींढ़ा गाडर मारै बुरा।
जीवां तणी न पाळै दया, बाज सीनांन कुचीली कया।5।

वे बकरी-बकरों, भेड़-मींढ़ों को मारते हैं। वे जीवों र दया नहीं करते हैं और वे स्नान भी नहीं करते, उनका शरीर अशुद्ध है।

दुहा

केवल न्यांनी आय मिल्यौ, भूला भैव भवीक।
बांध्या संकळ भ्रंम क, वहै ज कुल की लीक।6।

उनको ज्ञान देने वाले ऐसे मिले हैं जो ज्ञान का भेद नहीं जानते हैं। वे भ्रमित हो चुके हैं और इस भ्रम को ही उन्होंने अपने कुल की मर्यादा मान लिया है।

चौपई

धरमां तणो न लाभै भेव, कह परिदया किसी परिदेव।
माता हांसा को परवार, जीह क देव लीयो अवतार।7।

उन्हें धर्म का भेद नहीं है। वे किसी जीव पर दया नहीं करते हैं। उसी देश में माता हांसा के परिवार में जाम्भोजी महाराज ने अवतार लिया है।

जंगल थल्य देवजी रहै, जो को पूछै त्यौ गुर कहै।
पूछै नाहीं लोग गिंवार, सतगुर तणी न जांणै सार।8।

देवजी जंगल में रहते हैं। जो कोई उनसे पूछता है, उसे ज्ञान देते हैं। लेकिन मूर्ख लोग उन्हें पूछते ही नहीं, क्योंकि वे सतगुरु जाम्भोजी की सच्चाई को नहीं जानते हैं।

आवै जांहि नही परतीत्य, गुर कौ सबद न करही चीत्य।
साच झूठ की न लहे संध्य, मन्यसा रही पाप सूं बंध्य।9।

उन्हें सत्गुरु पर विश्वास नहीं है और न ही वे सत्गुरु के शब्द को याद करते हैं। उन्हें सच और झूठ का ज्ञान नहीं है। उनका मन पापों में लगा है।

धोकै भूत कहै ओह देव, देवजी तणौं न जांणै भेव।
पूछै भोपां अर बांभणां, पोह न जांणै धरमां तणां।10।

वे भूतों को पूजते हैं और उन्हें देव मानते हैं। उन्हें जाम्भोजी महाराज का भेद नहीं है। वह भोपों और ब्राह्मणों को पूछते हैं और उन्हीं को धर्म का देवता मानते हैं।

दुहा

जड्या भरम के संकळै, वहै ज कुळ की लाज।
दरब गुमांवै इबरथौ, सरै न एको काज।11।

वे लोग भ्रम की जंजीरों में बन्धे हुए हैं और उसे ही अपने कुल की मर्यादा मानते हैं। इसमें वे जो खर्च करते हैं, वह सब व्यर्थ है। उससे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है।

चौपई

सतगुर सुगर कीयो भाव, नगरी मां आयो सुरराव।
नर नारी मिल्य संनमुखि गया, नुण्य प्रणाम न जाणत भया।12।

श्री जाम्भोजी महाराज ने उन पर दया की और वे उस नगरी में आये। स्त्री पुरुष उनके सामने तो आये परन्तु वे नमस्कार करना नहीं जानते थे।

हेत वेहुंणां बैठा आय, सुपही बात न पूछै काय।
आप डाहा गुर गहळौ गीण, फहैमैं न धापै आयो पिण।13।

वे प्रेम रहित वहां आकर बैठ गये और सतगुरु जाम्भोजी से कोई बात नहीं पूछी। वे खुद को बहुत होशियार मानते हैं, और जाम्भोजी को गहला ही समझते हैं। वे विचारते हैं, यह जंगल छोड़कर नगर में कैसे आया है।

आपणी उचति देवजी कहै, हांसा तैण परेव न वहै।
देवजी बात कहै तिण्य वार, रहस्यौ का जायस्यौ जीवार।14।

श्री जाम्भोजी महाराज कहते हैं कि मैं हांसा माता से उत्पन्न हुआ हूँ। पुन: देवजी उनसे पूछते हैं कि तुम यहीं रहोगे या अन्यत्र जीवारी के लिये जाओगे।

लोक कह म्हां आई भूख, रहां त मारां इधको दूख।
अन्न विहुंणां रह्यौ न जाय, वेला लैस्यां विदेसे जाय।15।[3]

वे लोग कहते हैं यहां अकाल है। अगर रहे तो मरेंगे या दु:खी होंगे। अन्न के बिना रहा नहीं जा सकता। इसलिये कहीं विदेश में जायेंगे।

दुहा

साखि मिटी कुसमु पयौ, भूख वियापी आय।
लोक कहै इण्य अंन विण्य, धीरी धरी न जाय।16।

फसल खत्म हो गई है और अकाल पड़ गया है। चारों ओर भूख आ गई है। वे लोग कहते हैं कि अब अन्न के बिना धैर्य नहीं रह सकता है।

चौपई

देवजी कह कूड़ मत कहौ, कित एक अंन जीवारी रहो।
सवा मण अंन जे दिन पत्य होय, म्हारै जीवार न जाई कोय।17।

जाम्भोजी कहते हैं-झूठ मत बोलो। तुम्हें जीने के लिये कितना अन्न चाहिये। वे बताते हैं कि हमारे जीने के लिये प्रतिदिन सवा मण अन्न चाहिये तब हम मजदूरी के लिये बाहर कहीं नहीं जायेंगे।

देवजी कहै जीवारी न जाह, अंन दीहाड़ै देसी साह।
सवा मण अंन बाइस क तोल, देकरि वळै नै मांगै मोल।18।

जाम्भोजी कहते हैं-जीवारी के लिये यहां से मत जाओ, तुम्हें अन्न

हमेशा यहीं भगवान देगा। वह तुम्हें सवा मण अन्न बाईस के तोल देकर उसकी कीमत नहीं मांगेगा।

करौ करार दीढ़ावौ मतौ, पसु पंखेरू जीव मत हतौ।
राखो मन दया को भाव, कादा खरौ न मेटे साह।19।

आप लोग ये पक्का वचन दो कि आप पशु-पक्षियों की हत्या नहीं करोगे। और अपने मन में जीवों के प्रति दया भाव रखोगे। यदि तुम्हारे मन में दुर्भाव होगा, तब भगवान तुम्हारी सब कठिनाइयों को दूर नहीं करेगा।

साह तणा थ बरकति घंणी, परगास रीध्य-सीध्य आपणी।
पर उपगारी उपगार करै, मत कोई जीव करणी कर तीरे।20।

भगवान के हाथ में बरकत है क्योंकि वहां रिद्ध-सिद्धि का प्रकाश है। वह परोपकारी है, जो हमेशा परमार्थ करता है। जीव अच्छी करनी से ही इस भवसागर से पार होते हैं।

दुहा

लोकां मंनै अनेसड़ो, गहला एह सभाव।
खास भंडारै बाहर्‌यौ, अंन पुजावै काह।21।

लोगों के मन में संदेह है कि ये (जाम्भोजी) पागलपन की बातें कहते हैं। जिसके पास अन्न का कोई खास (जमीन को खोदकर बहुत अन्न संचय करने का स्थान) भण्डार नहीं है वह अन्न कैसे देगा।

चौपई

जां जां धरती वरसै नीर, धापै गऊ मुकता खीर।
धीणौ धापै लीला चरै, मुहराउ भुरट वापरै।22।

जब धरती पर पानी बरसता है तो तब घास से गायें धापती है और खूब दूध देती है। दूध देने वाले पशु हरे घास को चरते हैं। मुहराउ (धामण) और भुरट खूब होता है।

जब वापरै पूंख अर फळी, धापौ धांन करौ मन्य रळी।
वळि कळि उपजै अंन अमोल, तां तां थ सतगुर को कौल।23।

जब फूल औ फली होती है, तब धान अधिक होता है। सतगुरु जाम्भोजी ने जहां-जहां वचन दिया है, वहां-वहां अन्न अधिक पैदा होता है।

एक पूरबौ पोहणौ साथ्य, सखरी छाटी उपरि घात्य।
एकांतर आय अंन लीयौ, अैसौ करार लोकां सूं कीयौ।24।

एक पूरबिये के साथ ऊंठ है। उस पर अच्छी छाटी (बोरा) लदी हुई है। उसने एकांतर (एक दिन छोड़कर) आकर वहां से अन्न लिया और लोगों ने भी ऐसा वादा किया।

सतगुर उठि चल्यौ वन वास्य, पूरबौ मेल्हौ मेरे साथ्य।
कज्य करि साथ्य दीयो पोहणौ, आण्यौ अंन अढ़ाई मणौ।25।

सतगुरु उठकर वन की ओर चले और कहा-पूरबे को मेरे साथ भेजो। पूरबे ने पलाण मांडकर उस ऊंठ को साथ लिया, जिस पर अढ़ाई मण अन्न आता था।

दुहा

एक पूरब और पोहणौ, गया देव जी पास्य।
पूरब रळियाळो हुवो, दीठी अंन की रास्य।26।[4]

वह पूरबिया ऊंठ लेकर देवजी के पास गया। वह पूरबिया अन्न की रास (ढ़ेर) को देखकर बहुत खुश हुआ।

चौपई

नै को तोलौ नै ताकड़ि, न मेपीणी सुथार घड़ी।
कैही ज तोलता ल्यौ खरै, अव ताके पूरौ उतरै।27।

वहां न कोई तोलने वाला है। न वहां कोई ताकड़ी है। और न ही किसी सुथार ने मेपीणी (अन्न का माप करने वाला बर्तन) बनाई है। इसको अंदाज से ले लो, परन्तु तोल में फिर भी पूरा उतरेगा।

आंण जीमै अंन अतूट, एकान्तर न घातै चूक।
सतगुरु बोल कह्यौ जीण्य हांय, तां तां ढ़िगली खूटि नै जाय।28।

कोई भी खाये लेकिन वह अन्न अखूट है और एकान्तर देने में कोई कमी नहीं आती। जिस जगह सतगुरु ने वह वाणी कही, वहां-वहां के ढ़ेर अखूट हैं।

एक दिहाड़ै घरे बसाय, एक दिहाड़ै अंन नु जाय।
देव दया करि विध्य दाखवी, गुर का सबद मान्या करि सही।29।

वे लोग एक दिन अपने घर रहते हैं और एक दिन अन्न लेने जाम्भोजी के पास जाते हैं। देवजी ने जो कहा था वह बात बिल्कुल सच हुई।

करारे महीनां सीयाळौ गयौ, ताती रूति उन्हाळौ आयौ।
देस मतौ कीयौ लोकांह, लादौ ऊंठ वीसाही जांह।30।

कड़ाके की सर्दी के महीने गये और गर्मी की ऋतु आ गई। देश के लोगों ने व्यापार पर जाने का इरादा किया और वे ऊंठों को लादने लगे।

दुहा

मतो उपायौ सिंध को, किणक लियावां मोल।
आवै सांवण ढूकड़ो, करां हळां को सोल।31।

उन्होंने सिंध देश जाकर वहां से गेंहूं मोल ले आने का मानस बनाया। आगे सावन का मौसम आ रहा है, फिर हल जोतने हैं।

चौपई

सगे सोइये दीन्ही सार, खिलहरी मिल्य हूवा तियार।
संवैराया आथर पलाण, विसाही कौ हुवौ परवाण।32।[5]

सारे सगे-सम्बन्धियों ने सहायता दी और सब खिलैहरी मिलकर जाने को तैयार हुए। ऊंठों पर पलाण मांडकर व्यापार पर जाने का इरादा किया।

खिल्हरीये मिल्य कीयो मतौ, एक ऊंठ आपण थथितौ।
दूजौ ऊंठ लहां जे कोय, सीझ खरच नफौ पण्य होय।33।

खिलेरियों ने मिलकर यह सोचा कि एक ऊंठ तो अपने पास है और यदि दूसरा कोई ऊंठ ले लें तो अपना खर्चा निकल जाये और लाभ भी हो।

मनै उपाव विचारै वात, दावो करा देव जी साथ।
जीण्य जांता राख्या जीवार, ऊंठ भी देसी तासो दातार।34।

वे ये बात अपने मन में सोचते हैं कि अपने जाम्भोजी महाराज से इस सम्बन्ध में बात करें, जिन्होंने हमें जीवारी पर जाने से रोका था। वह देवजी हमें ऊंठ भी दे सकते हैं, क्योंकि वे बड़े दातार हैं।

कीयो मतौ खील्हरीए साथ, संनेसो दीन्हौ पूरब साथ।
पूरब तुंह सनेसो कही, एक ऊंठ म्हे मांगां सही।35।

खिलेरियों ने उस पूरबिये के साथ जाम्भोजी महाराज के पास संदेश पहुंचाया कि हमें एक ऊंठ की और जरुरत है।

दुहा

दोय ऊंठ आवै किनक, अतौ किनक कौ मोल।
अतरा मांगा दमड़ा, अबचळ गुरु की बोल।36।

उन्होंने गुरुजी को कहलाया कि दो ऊंठों से जितना गेंहूं आयेगा वे

उतनी गेंहूं की कीमत के पैसे आपसे मांगते हैं, ये बात गुरु जी की सत्य है।

चौपई

पूरब गयौ देवजी क पास्य, कह्यो सनेसो करि अरदास्य।
हेक ऊंठ किता हेक दांम, देव देस्यौ तो रहिसी नांम।37।

पूरबिया देवजी के पास गया और निवेदन करके वह संदेश उन्हें कहा कि वे खिलेरी एक ऊंठ और कुछ पैसे मांगते हैं। हे देवजी! आप दोगे तो आपका नाम रहेगा।

जे तूं देव न देही ऊंठ, तो ए लोक दीखाळे पूठ।
दीन्है अंन तणो उपगार, करिस्यै ज्यौ वैदरि गळिहार।38।

हे देवजी! अगर आप उनको ऊंठ नहीं दोगे तो वे लोग यहां से चले जायेंगे। जैसे आपने अन्न का परमार्थ किया है, उसी प्रकार उनको अब आप सहायता दो।

देवजी कहै वात कहो समझाय, पूरबा तुं अवताके जाय।
एक दीहाड़ै रहि अवताक, घी गूगळ आणी परभात।39।

श्री जाम्भोजी महाराज कहते हैं, हे पूरबा, तुम अभी वहां जाकर उन्हें बात समझाओ। एक दिन तुम वहीं रहो और सुबह तुम घी और गूगल लेकर आओ।

हेक पूरबो पोहणौ साथ्य, अंन की बोरी उपरे घात्य।
ओ ताके आयो तिण्य वार, आवै लोक पूछै समचार।40।

वह पूरबिया ऊंठ के उपर अन्न की बोरी लादकर वहां पहुंचा तो वे लोग उसे समाचार पूछने लगे।

दुहा

के तै पूछ्यौ के कह्यो, कै मुखि बोल्यौ साह।
देसी ऊंठ क दमड़ा, कनां राख्य सिवराह।41।

तुमने देवजी से पूछा तो उन्होंने क्या कहा? क्या वे ऊंठ देंगे या पैसे देंगे? कब तक हम उनकी राह देखें?

चौपई

पूरब कह संनेसो कह्यो, सतगुर मन रळीयाळो थयौ।
मांग्यौ गूगळ न लाधौ भेव, भली हियाली दीठौ देव।42।

पूरबिया कहता है मैनें तुम्हारा संदेश सतगुरु को कह दिया है, जिससे

उनका मन प्रसन्न है। उन्होंने गूगल मांगा है परन्तु मैं इस भेद को नहीं जानता हूँ।

एक दिन आयौ दूजे दिन रह्यो, तीजै दिन गूगल ले गयौ।
एक पूरबौ पोहणौ साथ्य, गूगल ले दीन्हु गुर हाथ्य।43।

वह पूरबिया एक दिन आया, और दूसरे दिन वहां रहा और तीसरे दिन गूगल लेकर गया। वह पूरबिया ऊंठ को साथ लेकर गया और गूगल गुरुजी को दिया।

देवजी आप फिरै वन मांहि, नीली सूकी तोड़ै नांहि।
कीणी ज कारज आयो भाय, टूटी काठी लइ उठाय।44।

देवजी जंगल में घूम रहे हैं, मगर हरी लकड़ी को नहीं तोड़ते हैं। वे किसी कार्य के लिये घूमते हैं। वहां से वे एक टूटी हुई काठी को उठाते हैं।

आणी काठी मेल्ही जांम, वसंदर प्रगास्यौ तांम।
होम जाप कीयो संम तूठ, मन्यसा सै वौ उपायौ ऊंठ।45।

उस काठी को रखकर उन्होंने अग्नि प्रकाशित की। गुरुजी ने वहां होम और जप किया, जिससे मनसा रूपी ऊंठ पैदा हुआ।

दुहा

वील्ह कहै ग्रभवास विण्य, कोय वडो न वेस।
किसन चिरत करहो कियौ, तिंह गुर नै आदेस।46।

कवि वील्होजी कहते हैं कि गुरुजी ने बिना ही ग्रभवास के एक ऊंठ बनाया। यह बड़ा काम गुरुजी ने ही किया है। ऐसे गुरु को बार-बार नवण है।

चौपई

पूरबै नै देव दीखाळै थळी, वै चड़ीया एक दीस वळी।
ऊंठ चरवह कीयौ छाल्य, जावौ पूरब ल्यावौ झाल्य।47।

उस पूरबिया को सतगुरु वह स्थान दिखाते हैं, जहां ऊंठ चर रहा है और आज्ञा देते हैं कि उस ऊंठ को पकड़कर ले आओ।

सुघट ऊंठ भलौ नलियार, आवै गूगल की महकार।
वरन रुड़ौ आंखे काजळो, चालै तो वीखां आगळो।48।

वह ऊंठ बहुत हष्ट-पुष्ट है और उसके शरीर से गूगल की सुगन्ध आती है। उसका रंग अच्छा है और आंखें काली है। वह चलने में भी बड़ा तेज है।

सांढ़ि नै जायो उपनुं भाय, जीण्य कीयो सो कल्यौ नै जाय।
किसन चिळत कीयो करहाळ, चरण पीवण की दीन्ही भाळ।49।

उस ऊंठ को किसी सांढ़ ने नहीं जना है। वह गुरु की मनसा से उत्पन्न हुआ है। ऐसा अन्य कोई नहीं कर सकता है। यह तो विष्णु भगवान की कृपा है और उसकी देखभाल वे स्वयं ही करते हैं।

दुहा

दोह ऊंठां आवै किणक, अंति किणक को मोल।
अतना दीन्हां दमड़ा, अबचल गुर को बोल।50।

गुरुजी ने दो ऊंठो पर जितना गेंहू आये इतने पैसे भी उन्हें साथ दिये। श्री जाम्भोजी महाराज के वचन सत्य हैं।

चौपई

एक पूरबौ पोहणौ साथ्य, अंन की बोरी उपरि घात्य।
हाथे ऊंठ झांभेसर दीयौ, देता एक अंनेसौ कीयौ।51।

वह पूरबिया अन्न की बोरी ऊंठ पर लादकर तैयार हुआ। उसे जाम्भोजी ने वह ऊंठ दिया और देते समय कुछ विचार किया।

विसनोई मांग्य र लीयौ, इधकौ लोभ न जाइ कीयौ।
इधकौ लोभ न करणौ जाय, आवौ जदि दीजौ पहुंचाय।52।

उन बिश्नोइयों से कह देना कि विशेष लोभ मत करना। जब यह ऊंठ वापिस आ जाये तो मेरे पास पहुंचा देना।

आयौ पूरब दीठो लोय, लोग रह्या अचंभै होय।
ए वड दांन करै दातार, गहलो कहै से लोग गिंवार।53।

उस पूरबिये को जब आते हुए लोगों ने देखा तो उनको अचम्भा हुआ कि गुरुजी बड़े दातार हैं। जो उन्हें गहला कहते हैं, वे लोग मूर्ख हैं।

ऊंठ पलाण्य खंचाउ कीया, सहजे सहज्य पयाणां दीया।
सांढ़ि ऊंठ मील्य कीवी कतार, मांही गूगलियो सिरदार।54।

ऊंठों पर पलाण मांडकर उन्हें चलते किये। सांढ़ और ऊंठों की इस प्रकार कतार (पंक्ति) बन गई और उसी कतार में वह गूगलिया ऊंठ सरदार (नेता) है।

दुहा

गूगलियो देवजी कियौ, पूरी मन की आस।
वाटि वहैत साथ मां, वैण्य तणां फुटबास।55।

देवजी ने गूगलिये ऊंठ को बनाया और उन लोगों के मन की इच्छा पूर्ण की। वह ऊंठ उनके साथ चलता है। श्री जाम्भोजी महाराज के वचन सत्य हैं।

चौपई

लीयो वासौ वसती झोकि, ते तकि हुवा अचंभो लोकि।
को करतौ होम न दीसै धार, आवै गूगल की महकार।56।

जब वे एक नगरी जाकर ठहरे तब वहां के लोगों को बड़ा अचम्भा हुआ। उन्हें कोई होम करता तो नहीं दीखता है परन्तु ये गूगल की महक कहां से आ रही है?

गूगळीयो गुणवंतो जाण्य, विणज वोपार् न होइ हांण्य।
साथ मांही न होई सोर, पड़े धाड़ो न लागै चोर।57।

वह गूगलिया ऊंठ बहुत भाग्यवान है। उसके साथ होने से व्यापार में कोई हानि नहीं होती है और साथियों में झगड़ा नहीं होता है। न रास्ते में लुटेरों तथा चोरों की लूट का डर है।

साथी स्यंध्य होता जाय, लीवी किणक सुहंघै भाय।
छाटी छाली हुवा तियार, लादौ ऊंठ न लावौ वार।58।

सब साथियों ने सस्ते भाव गेंहूं खरीदी। वे छाटियों को भरकर तैयार हुए और कहा कि जल्दी करो, देर मत लगाओ।

वळियो साथ कियो परवाण, वांसै मेल्हया नदी निवाण।
वांसै मेल्हया रोही रन, कियो पयाणौ मेल्हया वन।59।

सब साथियों ने मिलकर प्रस्थान किया और लगातार चलते रहे, कहीं डेरा नहीं किया। उन्होंने जंगल पार किया।

दुहा

साथी सोह घरि आइया, आंणी किणक विसाहि।
गूगळियो मनां न उतरै, पण्य राखिणौं न जाहि।60।

सब साथी गेंहूं का व्यापार करके अपने घर आ गये। मगर वह गूगलिया ऊंठ उनके मन में बस गया था लेकिन उसे वे कैसे रख सकते थे।

चौपई

चारि पाय दीन्हौ पुंहचाय, सेवा कीवी इधक भाय।
मुहरि छाड़ि र दीयो उछेरि, गूगळियो बोहडि नै दीठो फेरि।61।

उस गूगलिये को चरा-पिलाकर गुरुजी के पास पहुंचाया। और वहां जाकर उनकी सेवा की। उस ऊंठ की मोहरी निकाल कर उसे वन में छोड़ दिया जिसे फिर कभी किसी ने नहीं देखा।

आणी कीणक जदि घाती ठांहि, सरम न करही अंन न जांहि।
गुरु नांही बाचा चूकणौ, मेल्है नहीं अढ़ाई मणौ।62।

वे जो गेंहूं लाये थे, उसे तो सुरक्षित रख दिया। परन्तु वे फिर भी शर्म नहीं करते हैं और गुरुजी के पास अन्न के लिये जाते हैं। गुरुजी अभी उन्हें अढ़ाई मण अन्न देते हैं।

आयो असाढ़ अति वूठौ मेह, खळक्या पांणी वहि गई खेह।
नीलो निदांण अंति हुवौ घणौं, तोऊ न मेल्है अढ़ाई मणौ।63।

आसाढ़ के महीने में वर्षा हुई और पानी से धूल बह गई। नदी-नालों में पानी भर गया, परन्तु अभी भी वे अढ़ाई मण अन्न लेते हैं।

बगरो अर चंदळेवो जोय, आणै जीमै करे रसोय।
हरी सीनावड़ी पड़ीया हाथ, तोऊ न रहै पूरब को साथ।64।

बगरौ और चंदलेवो (घास) वर्षा से हुए हैं। चंदलेवो को रसोई के काम में भी लेते हैं। अब चारों ओर हरियाली हो गई है। इसलिये यह पूरबिया अब कैसे रहेगा।

दुहा

गुर दाता गुर देवणौ, गुर सत संजम पूर।
कियो कौल न चुकई, सतगुर वाचा सूर।65।

गुरु बड़ा दातार और संयमशील है। वह अपने वचनों को पालता है। इसी कारण वह शूरवीर भी है।

चौपई

धीणौ धापै नीला चरै, मुंहराउ भुरट वापरै।
खोटा वड़बो चाल्यो घंणौ, तोऊ न छोड़े अढ़ाई मणौ।66।

पशुओं को चरने के लिये हरा घास पर्याप्त है। फिर भी उन लोगों के मन में खोट है और अभी भी वे गुरुजी से ढ़ाई मण अन्न लेते हैं।

देवजी उमंग्य उमंग्य वातां कहै, क्यौं क्यौं गुर वायक सा सहै।
हुवौ सुकाल कुसमुं उतर्यौ, सीवज धांन नीटानुं सांवर्यौ।67।

देवजी बड़ी प्रान्नता से बातें कह रहे हैं। उन वचनों को वे अन्न लेने

वाले सहन करते हैं। वे कहते हैं, अब सुकाल हो गया है और तुम्हारी जमीन में बहुत अन्न हो गया है।

बोल संभाळो आयो आपणौ, अब राखौ पूरबा पोहणौ।
राख्यो राख्यो करि बोलीयौ, मन रस्यौ रळियाळौ थयौ।68।

अपने किये हुए वचन को याद करो और अब उस पूरबिये और ऊंठ को रखो। उन्होंने कहा रख लिया और इससे उनका मन बहुत प्रसन्न हुआ।

खुसी हुवौ खिलहरियां साथ, सेलि साल्य गुर काढ्या हाथ।69।

सब खिलेहरी प्रसन्न हुए, जब गुरु जाम्भोजी ने उनके मस्तक पर आशीर्वाद का हाथ रख दिया।

दुहा

गुर वाचा पूरी हुई, रह्यौ मेल्हाण संतोख।
वील्ह कहै जंपौ विसन, तूठो देसी मोख।70।

गुरुजी के वचन पूरे हुए, जिससे उन लोगों को संतोष हुआ। कवि वील्होजी कहते हैं-उस विष्णु भगवान का स्मरण करो, जो प्रसन्न होकर मुक्ति देंगे।

चौपई

अंन दांन देव जी कीयौ, भूखां न कुसमै अंन दीयो।
परो उपगारी सार्‌या काज, कौल कीये की वूहो लाज।71।

जाम्भोजी महाराज ने अकाल में भूखे मनुष्यों को अन्न दान दिया। वे परमार्थी हैं और उन्होंने अपने वचनों की लाज रखी।

पाप कियो पछताणां लोग, सांस घणां संताया रोग।
अकल्य वेहुंणां निंद्‌यौ देव, अब लाधौ सतगुर को भेव।72।

पाप करने वाले लोग अब पछता रहे हैं। जिन्होंने जीवों को सताया और देवजी की निंदा की उन अज्ञानियों को अब जाकर देव जी का भेद मिला है।

गहलो गहलो कह्‌यौ अजाण, पाछै गुर सूं हुई पेछाण।
भूखां नै पहुंचायौ वरौ, सरम्यां लोग लगाई खरौ।73।

उन अज्ञानियों ने जाम्भोजी को गहला बताया था, जिनकी अब उनसे पहचान हुई। क्योंकि गुरुजी ने उन भूखों को अन्न दिया था। इस कारण अब वे लोग शर्मिंदे हुए और उनकी सच्चाई जानी।

जाण्यौ सहजे सतगुर सेव, अब लाधौ सतगुर कौ भेव।
कर जोड़े नै करै विलाप, परले कर पहलोका पाप।74।

उन्होंने सहज ही सतगुरु को अब जान-पहचान लिया। वे हाथ जोड़ कर निवेदन करते हैं कि, हे स्वामी, हमारे पापों को दूर करो।

दुहा

मागर मंणिया एहरत, कथूं न कूड़ कथन्ह।
भाग परापति संपनू, चित्रामणी रतन्ह।75।

भद्रक जाति के हाथी के मस्तक में मोती होते हैं, यह कथन झूठा नहीं है। वे मोती किसी भाग्यवश को ही मिलते हैं अन्यथा लोगों को सीपों वाले मोती ही मिलते हैं।

चौपई

धीणौ मांगै जे मघधीण, वसतर मांगै वसतर हीण।
उणति दाखै आपो आपणी, माया किसनी अति घणी।76।

गुरु महाराज से जिनके दूध-दही नहीं है, वे दूध-दही मांगते है और वस्त्रहीन वस्त्र मांगते हैं। सभी लोग अपनी कमी की पूर्ति करना चाहते हैं। ये सब विष्णु भगवान की माया है।

जो जो मांगै सो सो दियै, अपणां जीव संभाळ लियै।
उणति भांजै जग दातार, आयो सांसो मेटणहार।77।

जो-जो उनकी मांग है, उनकी वे पूर्ति करते हैं। कंजूस लोग अपनी मांग को संभाल कर लेते हैं। जगत स्वामी सभी कमियों की पूर्ति करते हैं। वे सबका दु:ख मिटाने वाले हैं।

चहुंदीसां सांभळियो लोय, खेल प्रगास प्रगट होय।
पहळोकी परगासै वात, गुर कौ सबद पिछाणै पात।78।

चारों दिशाओं के लोगों सुनो! इनके कार्यों का प्रत्यक्ष में प्रकाश हो रहा है। वे उस लोक (स्वर्ग) की भी बात बताते हैं। ऐसे गुरु के शब्दों को पहचानो।

गुर गुरुवौ प्रगासा जाण, संभळि पापां पड़ै भगांण।
रीण घटी ज्यौं उगो सूर, पाप गयो परगटियो नूर।79।

गुरु के ज्ञान का ऐसा प्रकाश है, जिसको सुनकर पाप भागते हैं। जिस प्रकार सूर्य उदय होने पर रात्रि खत्म होती है, उसी प्रकार इनके प्रकाश

के सामने पाप नष्ट हो जाते हैं।

दुहा

अंधेरे चांदिण हुवौ, सूझ्या धरम र पाप।
जांणायौ सह जुगति सूं, सतगुर आपो आप।80।[6]

गुरु महाराज के अवतरण से अन्धेरे में प्रकाश हुआ है। इससे पाप और धर्म दिखने लगे हैं। इस बात को सब युक्तिपूर्वक जान लो कि जाम्भोजी महाराज स्वयं विष्णु भगवान है।

वील्ह कहै गति सांभळौ, साधौ सुणौ बखाण।
गूगळियो देवजी कियौ, कथा चड़ी परवाण।81।[7]

कवि वील्होजी कहते हैं–हे साधो, इस वर्णन को सुनो। गूगलिया ऊंठ जाम्भोजी महाराज ने अपनी मनसा से बनाया था, उसका प्रमाण यह कथा है।

चौपई

गुर उपदेस दीयो सुणा, गुर परगट आप गुण घणा।
पहली परि फुरमावै दया, विसन नाव जंपौ सुची कया।82।[8]

मैंने आपको गुरु के उपदेश सुना दिये हैं। गुरु में प्रत्यक्ष रूप से बहुत गुण हैं। पहला गुण यह है कि दया रखो। द्वितीय विष्णु भगवान का स्मरण करो, जिससे यह काया शुद्ध हो।

क्रोध माण माया कलोभ, गुर बरज्या पाप का थोभ
सतगुर फुरमाया धरम च्यारि, दान सील तप भाव विचारि।83।

क्रोध, अभिमान, माया और लालच आदि इन पाप कर्मो को गुरुजी ने मना किया है। सतगुरु जाम्भोजी ने दान, शील, तप और भाव ये चार धर्म बड़े विचार पूर्वक बताए हैं।

अनहत व्रत मानियो खरो, भाखियो साच झूठ परहरो।
बरज्या गुर कुसंग कुपात, जां तै जीवड़ो दोजकि जात।84।

अहिंसा व्रत को सच्चा मानो। सत्य बोलो और झूठ का त्याग करो। गुरुजी ने कुसंगति में रहना मना किया है। कुसंगति नर्क में ले जाने वाली है।

काया निरमळ जळ मांजणै, वाचा निरमळ सति बोलणै।
मन निरमळो ग्यान सूं होय, पांचूं इन्द्री रहै समोय।85।

यह शरीर स्नान से शुद्ध होता है। वाणी सत्य बोलने से शुद्ध होती है। मन ज्ञान से शुद्ध होता है जिससे पाचों इन्द्रियों के विषय को वस में करना चाहिये।

दुहा

गुर निरमळ निकलंक गुर, पर उपगार करंत।
वील्ह कहै गुर दारखव्यौ, मुकती खेत को पंथ।86।

गुरु महाराज जाम्भोजी निर्मल और निष्कलंक हैं। वे हमेशा ही परमार्थ करते हैं। कवि वील्होजी कहते हैं कि गुरु महाराज मनुष्य को हमेशा मुक्ति का रास्ता बताते हैं।

संदर्भ टिप्पणियां

1. पनरासइयो समत कहावै, कुसमो संवत बयालो आवै।
मेघ न बरसे बूंद न परि है, जेठ असाढ़ सावन अवतरी है।।
साहबराम जी–जम्भसार
वि.सं. 1542 में इस क्षेत्र में भयंकर अकाल पड़ा था।
बिश्नोई धर्म वेदोक्त, पृ. 9
काल बयाळो कहत सही, अंन दै जीव उबारिया।
कातिक बदि हरि कळस थाप्यौ, सतगुरु जुगि–जुगि तारिया।।
सुरजन जी की साखी
समत बयाळै मांह, काती वद कळस थप्यौ।
मुकती को वुहार कीनौ, साचो गुर जानीयै।।
सेवादास कृत इंदव छंद
2. भाटी कुल वंस निवासा, हांसा नाम धरे सुखवासा।
सोई लोहट घर हुई नार, सुकलीनी सोभा संसार।।2।।
सुरजनजी कृत कथा औतार की
3. अकाल पीड़ित जन समुदाय संभराथळ धोरे के पास से मऊ–मालवे जा रहे थे।
स्वामी ब्रह्मानन्द कृत जम्भेश्वर चरित्र भानु, पृ. 51
4. पूरबा का जिक्र हीरानन्द कृत हिन्डोलणा में भी हैं–
खीयां नाथा पूरब डूमा, राणा प्रीत विचार।
कोजा बूढ़ा लूणा सायर, आए पूल्ह पंवार।।
5. वील्होजी कृत रावण और गोयंद का जीवन चरित्र से भी स्पष्ट है कि इस प्रदेश के

लोगों का सिन्ध में आना जाना था। मूल छंद देखिये-
एक वेर यों सिंध सिधाये, टांग दीवड़ी आगे ध्याये।

6. इस छंद में बिश्नोई धर्म स्थापना की ओर संकेत है।
बिश्नोई धर्म की स्थापना वि.सं. 1542 में हुई थी।
जम्भदेव लघु चरित्र, पृ. 16

7. जम्भसार, आठवां प्रकरण, पृ. 233-242 में इस कथा का सार है।
चूरु मण्डल के शोध पूर्ण इतिहास में भी इस कथा का जिक्र है।

8. छंद 82-86 में बिश्नोई धर्म के नियमों का वर्णन है। ये नियम 29 हैं। देखिये-
स्वामी ईश्वरानन्द गिरि कृत श्री जम्भसागर पृ. 439-40

7. कथा पूल्हैजी की (राग आसा)

दुहा

भीयाणी भाई क जिण, परीया वट पुंवार।
पूल्हौ सतगुर न विनवै, पूछै भेद विचार।1।[1]

जाम्भोजी के पिता लोहट के भाई पूल्होजी पंवार विनयपूर्वक सत्गुरु जाम्भोजी से भेद की बातें पूछते हैं।

कुण पुरिख तूं काम कहि, परगट इण्य संसारि।
एकळवाई थळि खड़ौ, भगवीं धोती धारि।2।

आप कौन हैं और आप इस संसार में किस काम के लिये प्रगट हुए हैं। इस मरुभूमि में आपने भगवें वस्त्र क्यों धारण किये हैं।

परगट होय पिछाणय गुर, परय पहली परगास्य।
सोय सु साख्या सांभळी, आयो चरणां पास्य।3।[2]

पूल्होजी ने प्रगट रूप में सत्गुरु जाम्भोजी को पहचान कर, उनकी परा वाणी का प्रकाश देखकर और उनकी अनेक कथाएं सुनकर, उनके चरणों में नमस्कार किया।

संभल्य पूल्ह सुरत्य करि, सतगुर वायक साच।
तिंह कारण्य गुर आवियौ, पहराजा सूं वाच।4।[3]

जाम्भोजी महाराज कहते हैं-हे पूल्होजी! ध्यान करके सत्गुरु के सच्चे वचन सुनो। मैं सतयुग में प्रहलाद भक्त को दिये गए वचन को पालने के लिए आया हूँ।

बारै इकवीसां मिल्यै, ज्यौं र समाहो होय।
तिह कारण्य गुर आवियो, धरम विवाण संजोय।5।[4]

इक्कीस करोड़ से बारह करोड़ जब और मिल जायेंगे तब शांति होगी। इनको स्वर्ग पहुंचाने के लिये मैं धर्म का विमान लेकर आया हूँ।

चौपई

देव कहै पूल्है अव ग्यांन, परचै विण्य परतीत्य न मांन।
करूं विनती सतगुर सांई, तूं आयो बारां कै तांई।6।

पूल्होजी देवजी को कहते हैं कि परचे बिना लोग विश्वास नहीं करते हैं। मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप बारह करोड़ लोगों का उद्धार करने के लिये आए हैं।

कोड़ि तेतीसां सूं प्रतिपाळौ, पूल्ह कहै मोहि सुरग दिखाळो।
सुरग लोक छै अति सुहावा, मरत लोक लागसी अभावा।7।[5]

पूल्होजी कहते हैं कि हे देवजी, आपने तेतीस करोड़ की प्रतिपालना की है तो मुझे भी आप स्वर्ग दिखाओ। स्वर्गलोक बहुत सुहावना है और यह मृत्युलोक दुखद हैं।

सुरग न देखूं अपणां नैणां, तो न प्रतीजू गुर का वैणां।
सुरग दिखाऊं तेरे तांई, सुरग गयौ मन फेरे नांही।8।

देवजी कहते हैं कि मैं अपने लिये स्वर्ग नहीं देखता हूँ बल्कि मैं तुम्हारे लिये इसे दिखाऊंगा। परन्तु जब मैं तुम्हें स्वर्ग दिखा दूं तो तुम मुकर मत जाना।

सतगुर साथ्य सुरग जौ भेटूं, तौ जल मंत्र कौल न मैटूं।
सतगुर कंवळ बांह दे साचा, गुर चेलै परतीते वाचा।9।

यदि आपके साथ स्वर्ग के दर्शन करुं तो मैं जल की साक्षी से कहता हूँ कि मैं अपना वचन नहीं भूलूंगा। सत्गुरु ने सच्चा मार्ग बताया है जिसका विश्वास उसके शिष्यों को भी है।

दुहा

मन्यसा सास विवांण करि, सतगुर पूल्ह बईठ।
किसन चिळत पुंहता सुरग, अजब अचंभौ दीठ।10।[6]

अपनी मन इच्छा से विमान बनाकर और उस पर जाम्भोजी और पूल्होजी बैठते हैं। वे जल्दी ही स्वर्ग में पहुंच जाते हैं और अजीब अचम्भा देखते हैं।

चौपई

दीठा सुरग सुरां का वासा, घर म्यंदर दीठा सुख वासा।
अजर अमर रतन आ काया, गुर परसादि देखि सुख पाया।11।

स्वर्ग में देवताओं का निवास था और वहां घर-मन्दिर में भी सुख का वास है। यह शरीर वहां अजर-अमर है। पूल्होजी सत्गुरु के इस प्रताप को देखकर बहुत सुखी हुआ।

दीठी कांमण्य अख खीणां, रूप देखि मन लवळीणां।
भली भांत्य सूं अपट पटोळा, पूण पांणी अर सहज्य हींडोला।12।

वहां तिरछी नजरों वाली स्त्रियां देखी, जिनके रूप ने मन को मोह लिया। वे अच्छे-अच्छे वस्त्र पहने हुए हैं और झूलों में झूल रही है।

कोड छमासी पातरि नाचै, चाव देखि देवता राचै।
मन्यसा सवा अमी रस पीजै, जुगां जुगंतरि केल करीजै।13।

वहां सुन्दर अप्सराएं नाच रही हैं, जिन्हें देखकर देवतागण प्रसन्न हो रहे हैं। वहां अपनी मन इच्छा से अमृत पीने को मिलता है और अनेक युगों तक वे क्रीड़ा कर सकते हैं।

दुहा

पूल्हो सतगुर न विनवै, कोल दीयो सुरराय।
कोल बकस राख्यो सुरग, मो मरतग गयो न जाय।14।

पूल्होजी, जाम्भोजी महाराज को निवेदन करते हैं कि हे देवों के देव, मैंने आपको जो वचन दिया है, वह मुझे बक्श दो। मुझे इस स्वर्ग में ही रखो। अब मेरे से उस मृत्युलोक में नहीं जाया जाता।

चौपई

सुरग देखि मन हुवौ फिराऊं, जांणौ जो म्रत लोकि न जाऊं।
संभल्य पूल्ह कहै सुरराया, तेरी मल-मूत्र की काची काय।15।

स्वर्ग को देखकर पूल्होजी का मन डोल गया और उसने ऐसा सोचा कि अब उस मृत्युलोक में मैं न जाऊं। जाम्भोजी महाराज कहते हैं-हे पूल्होजी तेरा यह शरीर कच्चा है और मल-मूत्र का भरा है।

छाजै नहीं सुरग मां राखी, आवी नवती बोहड़ न भाखी।
सुरग देखि जदि पूठा आया, म्रत लोक न बंध माया।16।

यह शरीर स्वर्ग के काबिल नहीं है और ऐसा निवेदन फिर न करना। जब वे स्वर्ग देखकर वापिस आए तो पूल्होजी का मन मृत्युलोक की माया में नहीं बंधता है।

औ संसार काळ का पासा, चलण दे चित रहै उदासा।
सुरगां सुख अगम अपारा, भगत स जाणै सुख सारा।17।

यह संसार काल का बंधन है, जिसे देखकर पूल्होजी का मन उदास रहता है। स्वर्ग में अनन्त सुख हैं, जिन्हें भक्त ही जानते हैं।

पूल्हो जीव सुं सुजीवा सोध, गुण परगास गति परमोध।
करि परमोध गुर अजर जराया, अपरच जीव घणां परचाया।18।

जाम्भोजी ने पूल्होजी के समान अनेक जीवों को अपने गुण प्रकाश से शिक्षा दी। जिन्होंने अजर को वश में कर लिया था और जो अज्ञानी थे, उन्हें ज्ञान देकर परचाया।

दुहा

करि परिमोध परगास गुण, दाखवि करणी सार।
सतगुर सेती सीख सुण्य, पूल्हौ चालण हार।19।[7]

जाम्भोजी ने शिक्षा देकर उनके गुणों का उजागर किया और अच्छी करनी का रास्ता बताया। सत्गुरु की इस शिक्षा को सुनकर पूल्होजी अच्छे रास्ते पर चलने लगे।

चौपई

पूल्ह मतौ करिसी साह कार्या, निंवतो मांग्य वचन कहि सार्या।
की एक गाय कितौ एक नांणौं, कापड़ चोपड़ धन झांभाणौ।20।

पूल्होजी ने धर्म कार्य करने का इरादा किया। जाम्भोजी से जो वचन किये थे, उन्हें पूरा किया। उसने गायं, धन, वस्त्र, घी और पशु आदि दान दिये।

संता हेत कबूली तांहि, कन्या दोय कबूली जांहि।
दोय सुभ्यागत ल्यावौ जोइ, जांनै कन्या कबूल न करही कोइ।21।

पूल्होजी ने धर्मार्थ दो कन्याओं का विवाह करना मंजूर किया। उन्होंने कहा दो ऐसे सज्जन लेकर आवो और इन कन्याओं का विवाह उनसे करो।

अेह कन्या वांहनै परणावौ, वसत वास्य न करीयो दावौ।
नीवतौ वित ले कन्या दीयौ, आप मतौ सुरगां न कीयौ।22।

इन कन्याओं का उनसे विवाह किया और किसी वस्तु का उनसे मोल नहीं लिया। निमन्त्रित लोगों से आया धन उन कन्याओं को दे दिया और पूल्होजी ने स्वयं स्वर्ग जाने की इच्छा की।

सात जणा मिल्य बांध्यौ बेलौ, एक मन्य होय माया मोह मेल्हयौ।
गांव रिणीसर घोर संवारी, संते झागी हीव करारी।23।

सात मनुष्यों ने मिलकर ये धर्म की पुल बांधी और एकाग्रह मन से मोह-माया का त्याग किया। गांव रिणीसर में पूल्होजी ने अपना शरीर छोड़ा। इससे सज्जनों के दिलों में कटु सत्य (मृत्यु) का प्रकाश हुआ।

संत सहज सूं साध समाणां, हाक हुकम सूं हंस उडाणां।24।

गुरु आदेश से उन संतों ने सहज भाव से अपना शरीर छोड़ दिया।

दुहा

वील्ह कहै करणी करौ, जो गुर आवै दाय।
छहां जणां सूं पूल्ह जी, दीठी गयो पुळाय।25।

कवि वील्होजी कथा के अन्त में कहते हैं-हे मनुष्य, तुम अच्छे कार्य करो जो गुरु महाराज को पसन्द आये। अच्छी करणी से पूल्होजी उन छह

व्यक्तियों को अपने साथ स्वर्ग में ले गये।

संदर्भ टिप्पणियां

1. दही दियो लोकन वरताई, सांझ लाडणूं पहुंचे जाई।
जहां पूल्होजी रहे पुंवारा, मिलणै आए सब सरदारा।।
जम्भसार, च.प्र.पृ.-66

2. पूल्होजी ने बिश्नोई पंथ में शामिल होने से पूर्व जाम्भोजी से ये प्रश्न पूछे थे। प्रश्नों के उत्तर सुनकर उसे विश्वास हुआ था, देखिये-
झांभेसर वाचा झूठ न होय, गुर को कह्यौ करो सोह कोय।
पूल्हे दीन्ही साखि वताय, सोह को लागो गुर कै पाय।।
पहराजा की परतीत ता, जाग्यौ पूरव अंक।
पूल्है की परतीत ता, अब पंथ चाल्यौ निसंक।।
गिणती कोय न जांणही, चल्यो पंथ अपार।
पूल्है की परतीत तै, सतगुर वाचा सार।।
सुरजनजी कृत कथा औतार की

3. खेत मुकति ने पांच करोड़ी सूं, पहराजा गुर की वाचा वहियौ।
जाम्भोजी का सबद

4. बारा त कोड़ि समाहि देव, तेरा सेवग होय रळि आवणां।
तेतीस कोड़ी पारि पहुंचै, सुरग हुवै वधावणां।।
परमानन्द जी का पोथा, साखी पृ. 28

5. (क) तीसरी आरती संभरथळ आए, पूल्हैजी नै प्रभु सुरग दिखाए।
ऊदोजी नैण आरती
(ख) पूल्है है परचो पावियो, दीन्ही दीन दयाल।
सुरग है दिखायो स्यामजी, संतां की प्रतपाळ।।
बद्रीदास का भजन

6. मैं सुरलोके संभली, हुवै सिरजणहार।
पहली पूल्ह परचियो, हरि पंथ चालणहार।।
सुरजन जी कृत कथा परिसिध

7. (क) हीरानन्द कृत हिंडोलणा के अनुसार पूल्होजी के स्वर्ग में स्थान मिला, देखिये-लोचां गोरां और मागो, पूल्है वचन विचार।
(ख) 'जाम्भैजी रै भक्तां री भक्तमाळ' में भी पूल्है का नाम शामिल है-
'मधू धर्यौ विसन को ध्यान, पूल्होजी हुवो सुज्ञान'

8. कथा सच अखरी विगतावळी

दुहा

साचौ नांव विसन कौ, सतगुर कह्यौ स साच।
गुर सोई सति बंदिये, जिंहकी अबचळ वाच।1।[1]

कवि वील्होजी कहते हैं कि विष्णु भगवान का नाम ही सत्य है। सत्गुरु ने यह सत्य कहा है। मैं उसी सत्गुरु की वंदना करता हूँ, जिनकी वाणी अखण्ड है।

साच पियारौ साम्य दरि, सति साच दीवाण्य।
सुगर सभा सो सांचरै, जिंह सांच सूं पिछाण्य।2।[2]

भगवान के घर सत्य ही प्रिय है और उसका दरबार भी सत्य है। सत्गुरु की पहचान भी सत्य से ही की जाती है।

सहजे सतगुर मील्यौ, जागी जोति जिवांह।
सूधौ साच स निरमळौ, हिरदै लोयण जांह।3।[3]

सत्गुरु मुझे सहज ही मिल गया है, जिससे इस जीव के अन्दर प्रकाश हुआ है। जिनके हृदय में सत्य का प्रकाश है, वे सुखी हैं।

चौपई

जे जण करै सुगर की आस, गुरवाणी संभल्य प्रगास।
फुरमायौ साचौ बोलणो, कूड़ बोल्यै अवगुण घणो।4।[4]

जो मनुष्य सच्चे सत्गुरु की आशा करते हैं, उन्हें गुरुवाणी के स्मरण से प्रकाश मिलता है। गुरुजी ने सच बोलना बताया है। झूठ बोलने से पाप लगता है।

आंधी झांख कहै जे बाल्य, ओगण होय इह बोल्य आल्य।
बाव पुंवण जे कहौ विचारि, साचौ आखर औ संसारि।5।

आंधी को देखकर उसे जो बाल्य कहते हैं, ऐसा बोलने में बहुत अवगुण है। यदि उसे वाव-पवन कहे तो ये सच्चे शब्द है।

एक एक नै कहै अभेव, तीं कितक वरसायो मेह।
कह वरसायो उंमक ठांय, कूड़ संग्य वुहाहा जाय।6।

एक व्यक्ति दूसरे को कहता है, तुमने कहां वर्षा की है। वह जवाब

देता है, मैंने अमुक स्थान पर वर्षा की है। वह भी झूठ बोलता है।

हेक हेक नै पूछे भेव, तूं कित थौ जदि बूठौ मेह।
मेह मही थो उंमक ठांय, साधु साचा उं बोलाय।7।

एक व्यक्ति दूसरे को पूछता है, जब वर्षा हुई तब तुम कहां थे। वह जवाब देता है, जब वर्षा हुई तब मैं अमुक स्थान पर था। वह व्यक्ति सच बोलता है।

दुहा

वुहौ कहै जे वाहलौ, कुहो कहै जे खाळ।
पाणी वुहौ जो न कहै, बोलै कूड़ौ आळ।8।

कहता है-खाला (नाला) बहता है। ऐसे ही कहता है-कुंवा बहता है। इनमें पानी चल रहा है, ऐसा नहीं कहता है। इसलिये वह झूठ बोलता है।

चौपई

आइ वुही नदी कहंति, कूड़ तणा संग्य वुहा जंति।
आयौ वुहौ कहै जे पाणी, ते लाधी सतगुर की वाणी।9।

कहता है-नदी आई। ये बात झूठी है। यदि वह नदी में पानी आया कहे, तो ये सत्गुरु की सच्ची वाणी है।

बळद पीया आ कुजबां कही, बळदे पाणी पीयो सही।
गाय पीवी आ कूड़ी वाच, गाय पाणी पीयो साच।10।

कहते हैं-बैल पीये, ये बात झूठी है। बैलों ने पानी पीया, यह सत्य है। इसी प्रकार गाय पीवी कहते हैं। यह भी झूठी बात है। गाय ने पानी पीया कहना सत्य है।

दोपा चौपा पीया कहै, कूड़ साथि कुड़ीयारा वहै।
पाणी पीयो कहै विचारि, साचौ आखर औ संसारि।11।

कहते हैं-दो पांव वाले (मनुष्य) और चार पांव वाले (पशु) पीये, यह बात भी झूठ है। इसे विचारपूर्वक कहना चाहिये। अमुक व्यक्ति और पशु ने पानी पीया है। यही वचन सत्य है।

जागतौ वसंदर देव, साच कहै जां लाधो भेव।
अगन आग कहीयै क्यौ तास, कूड़ कहंता होय विणास।12।

वसंदर देव को जगाया कहना, सत्य वचन है। इसे अग्नी-आग नहीं कहना चाहिये। ऐसा झूठ कहने से अकल्याण होता है।

दुहा

वसंदर बाळ्यौ कहै, जगायो नहीं कहेत।
परहरे पंथ सुरग कौ, ते जम डंड जैत।13।

वसंदर (अग्नी) को बाल्य लिया कहना झूठ है। जो ऐसा कहता है, वे स्वर्ग के रास्ते को छोड़कर नरक के रास्ते पर चलते हैं। उन्हें वहां यमदूत दण्ड देंगे। बल्कि कहना चाहिये-वसंदर जगाया।

चौपई

कहै जे काढ़े खळा काढ़, गुर उपदेस न मांनै राढ़।
काढ़ो अन कहै जो जोय, इह आखर मां कूड़ न होय।14।[5]

यदि कोई कहता है-खला काढ़ता हूँ तो वह गुरु के उपदेश को मानने वाला नहीं है। यदि वह जो अन्न निकाला है, उसका नाम कहे, तो उसका वचन सत्य है।

साच तणो सुधौ पोह लहै, खळा काढ़ उघाड़या कहै।
काढ़ उघाड़ि'र काढ़यौ अंन, साच नु वड दरगे मन।15।

सच बोलने वाला सीधे रास्ते पर चलता है। वह कहता है-खला (लाटा) की जगह साफ की है। खला साफ करके अन्न निकाला है, ये बातें सच हैं।

पंथ कीत जहिसी उं पुछाय, ओह पंथ जायसी उंम गांव।
पंथ कीत आवै नहीं जाय, कूड़ कह्या बोलै बोलाय।16।

यूं पूछता है कि यह रास्ता कहां जायेगा। जवाब मिलता है कि यह रास्ता अमुक गांव जायेगा। लेकिन रास्ता न कहीं जाता है, न कहीं आता है। ऐसा बोलना झूठ है।

पंथी चालंता उं पुछाव, ओ पंथ जायसी उंम गांव।
पूछै कंवण गांव कौ पंथ, कूड़ नै पड़ीये उं बौलंत।17।

रास्ते चलने वाला यूं पूछता है कि ये रास्ता कौनसे गांव जायेगा। उसे पूछना चाहिये-यह रास्ता कौनसे गांव का है, इसमें झूठ नहीं है।

दुहा

दोपा चौपा पंथ वहै, कबही कबही वार।
मारग वूहौ जे कहै, ते पींडत नहीं गिंवार।18।

कहता है-दो पांव वाले (मनुष्य), चार पांव (पशु) वाले कभी-कभी

इस रास्ते चलते हैं। यदि कहता है रास्ता चलता है, तो वे लोग ज्ञानी नहीं मूर्ख हैं।

चौपई

पंथी कहै ज पड़ीयौ पंथ, साच झूठ की न लहै भंत।
मारग चाल्या आयो कहै, गुर कौ साचौ आखर कहै।19।

कहते हैं-वह राहगीर रास्ते पड़ गया है। ऐसा कहने वाले सच और झूठ में भेद नहीं जानते हैं। यह राहगीर अमुक रास्ते चलकर आया है, ये गुरु का वचन सत्य है।

रूंख नीवौ गुर कहै पुछीयो, मांही गयौ नांही आवीयो।
पंथी कहै ज आयौ गांव, इह आखर को कूड़ो नांव।20।

कहता है-जंगल में गया, वह आया नहीं है। लेकिन वह कहता है गांव आ गया है, ये बातें झूठ हैं।

साचौ आखर गुर समझायौ, ढ़ोर गयौ ढ़ीग होय आयौ।
आपण आयौ कहै गांव, ओ आखर साचौ बोलाय।21।

गुरु महाराज ने सच बताया है कि जो पशु गया था, वह वापिस आ गया है। पुनः कहता है-अपना गांव आ गया है, यह बात सच है।

गाय बळद जे चीनां कहै, कूड़ा आखर लेउ वहै।
सांढ़ि ऊंठ अर घोड़ा घोड़ी, चीनां कहै तां मां मति थोड़ी।22।

गाय और बैल को जो छोटा कहते हैं, वे झूठ बोलते हैं। जो सांढ़, ऊंठ और घोड़ा-घोड़ी को छोटा कहते हैं, वे भी झूठ बोलते हैं।

चीनूं दांणौ चीनूं घास, गुरवांणी साची प्रगास।23।

दाना भी छोटा है और घास भी छोटा है, ये बातें सच हैं।

दुहा

चौपा नै चीनुं कहै, कूड़ा आखर एह।
खड़ चारौ चीनूं कहै, गुर थै लाधो भेव।24।

जो चौपायों को छोटा कहता हैं, वे झूठ कहते हैं। जो अन्न और घास को छोटा कहते हैं, उन्होंने गुरु की बात का भेद जान लिया है।

चौपई

हुं जीम्यौ तुं जीम्यौ कहै, झूठौ आखर इण्य परि कहै।
म्है जीम्यौ तैंह जीम्यां कहै, साचा आखर खोज्या लहै।25।

जो कहता है-हूं जीम्यो और तूं जीम्यो, वह झूठ बोलता है। बल्कि कहना चाहिये-मैंने जीमा आपने जीमा। ये अक्षर सच हैं।

राति थकी कहै ऊगो सूर, कूड़ा बोल्या धरम होय चूर।
ऊगो सूर कहै जे रात, वुहा जाय कूड़ कै साथ।26।

जो रात्री के रहते कहता है-सूर्य उदय हुआ है, वह झूठ कहता है। जो सूर्य उदय होने पर भी कहता है-रात्री है, वह झूठ कहता है।

दीसै सूर कहै सझ पइ, पाप पोटली सीरि करि लइ।
सूरज ओल्ह आयो मेर, उं क्यौं कहीये हुइ सवेर।27।

जो सूर्य दिखाई देने पर भी कहता है-सांझ हो गई, वह भी झूठ बोलता है। यदि सूर्य किसी टिल्ले की ओट में आ जाये तो यह नहीं कहना चाहिये कि सवेरा हो गया।

दुहा

दीह हुवै नै दीह कहै, सांझ पइ कहै संझि।
ते सदव्रत साधवै, रहै साचक मंझि।28।

जो दिन को दिन कहते हैं और सांय को सांय कहते हैं, वे ही सत्य बोलने का वचन पालते हैं और वे हमेशा सच बोलते हैं।

चौपई

गाडो गाडी हांक्या कहै, कूड़ा आखर लीये वहै।
हांक्या बळद कहै जे बांण्य, आ सुधी सतगुर की बांण्य।29।

जो कहता है-गाडा और गाडी को चलाओ, वह झूठ कहता है। बैलों को चलाओ कहना, सतगुरु की सच्ची वाणी है।

बांणी जांण्य आ कूड़ी बाण्य, बलद चरै आ कूड़ बुबाण्य।
बळद भरया कहै मतहीण, ना गुर मील्यौ न पायौ दीन।30।

वाणी को समझो कि यह सच है अथवा झूठ। यदि कहता है-बैल चरते हैं तो यह झूठ है। जो कहता है-बैल भरे, उन्होंने भी सत्य को नहीं जाना है।

सतगुर मील्य बतायो साच, सा छाटी छाली कहै सुवाच।
छाटी गूण कहै न जोय, साच बोल बहुत गुण होय।31।

सतगुरु मिल गया है और उसने सच बताया है। सारी छाटियों (बोरों) को भरा यह सत्य वचन है। भरे जाने वाले बोरे-बोरी होते हैं। इन्हें ऐसा बोलना ही सत्य है।

रात्यौ चल्यौ पंथ वाद सुण, साच'र झूठ विचारै कुण।
नर नै मादी कहै अजाण, साच'र झूठ नै बोलै छाण।32।

रात्रि भर रास्ता चला, इसमें भी वाद है। इस बात में झूठ और सत्य क्या है? इसको नहीं विचारते हैं। जो व्यक्ति पुरुष को स्त्री कहते हैं, वे लोग सच और झूठ का निर्णय करके नहीं बोलते हैं।

दुहा

मादो बोल ज नर कहै, नर नै मादी कहंत।
भेद विनां सतगुर तणां, निगुरा कूड़ पड़ंत।33।

जो पुरुष के लिये स्त्रीवाचक और स्त्री के लिये पुरुषवाचक शब्दों का प्रयोग करते हैं, वे मूर्ख हैं। वे सच के भेद को नहीं जानते हैं। इस कारण वे झूठ बोलते हैं।

चौपई

तीतर तीतरी स्याळ'र स्याळी, हीरणां हीरणी कहै संभाळी।
चीड़ो चीड़ी जे दोन्यौ कहै, परहरि कूड़ साच संग्रहै।34।

अगर कोई तीतर-तीतरी, स्याल-स्याली, हिरण-हिरणी और चीड़ा-चीड़ी आदि शब्दों का प्रयोग करे तो यह सच हैं, झूठ नहीं है।

घाणी चूरी कूड़ कहीजै, तिल चूर भांजे साच बोलीजै।
जो चूरी जो कहीये जाण्य, साचो आखर लहै पिछाण्य।35।

घाणी-चूरी कहना झूठ है। परन्तु तिल-चूर कहना सत्य है। यदि समझकर चूरी ही कहै तो यह सत्य है।

आटौ पीस्यौ कहै अजांण, जो अंन पीस्यौ उं कहै सुजाण।
दाळ्य दळी आ कूड़ कहणां, सो अंन दळीयौ सोई कहणां।36।[6]

कहते हैं-आटा पीसा, यह मूर्खो का कथन है। ज्ञानी पीसे हुए अन्न का नाम लेते हैं। दाल-दली कहना भी झूठ है बल्कि जो अन्न दला जाता है, उसका नाम लिया जाता है।

दुही कहै ज भैंस्य अर गाय, ओ आखर कूड़ो बोलाय।
धीणौ मेली दुह्यौ दूध, गुर बतायो आखर सूध।37।

भैंस और गाय को दूहा कहना भी झूठ है। गाय और भैंस का दूध दूहा कहना चाहिये, ये अक्षर शुद्ध हैं।

उफणै रीड़ जौ अंनपांणी, रीड़ सेवणी कहै अजांणी।
चुंणै कुपास कहै वैण्य चुंणी, कूड़ बोल लछंण्य घणी।38।

उफान से रीड़ (हांडी) में अन्न-पानी उफनता है, जिसे अज्ञानी लोग कहते हैं-रीड़ सेवनी, जो कि झूठ है। कपास के चुनने के लिये कहते हैं-उसने चुनी, ये कहना भी झूठ है।

कही समझ्ये खड़ थोड़ो थाय, दुबळी हुवै भैंस्य अर गाय।
नीबळी होय अंधारी उठाय, ओ आखर कूड़ो बोलाय।39।

किसी समय खाने के लिये अनाज कम मिलने से गाय भैंस दुबली हो जाती है। उनको लोग निबली कहते हैं, यह अक्षर भी झूठ है।

जदिकी सीरजी तदिकी पूंछ, अब पूंछ लइ कह सब भूंछ।
साच झूठ का नांही छेव, ना गुर मील्यो न पायो भेव।40।

जब से इस सृष्टि का सृजन हुआ है, तभी से ही पूंछ है। लेकिन मूर्ख लोग कहते हैं कि अब पूंछ लई हैं। ऐसे लोगों को सच और झूठ का भेद मालूम नहीं है। उनको न ही कोई गुरु मिला है और न ही उन्होंने इस भेद को जाना है।

कहै जला दौउ चीथड़ा, अवळा बोल इण्य भंति कूड़ा।
लादीज लादण लादणी, साची बोली सतगुर तणी।41।

कहता है-दो चीथड़े जल गये हैं, ये बोल झूठे हैं। बड़ा बोरा, छोटा बोरा, बोरी आदि के भेद को जानकर उन्हें अलग-अलग कहना चाहिये।

कहै पीलाणो घोड़ा ऊंठ, सुरति वीहूणां बोलै झूठ।
पीठ परि मांडीये पलांण, साचा आखर कहै सुजांण।42।

कहते हैं-घोड़ा और ऊंठों को पिलाणो, ये वचन झूठे हैं। ऊंठ की पीठ पर पलाण मांडां-ये अक्षर सच्चे हैं।

के के कहै जै वूठो गांव, इह आखर कौ कूड़ौ नांव।
गुरमुखि कहै ज वूठो मेह, सुधो साचौ आखर एह।43।

कोई-कोई कहते हैं-गांव बरस गया है, ये वचन झूठे हैं। जो ज्ञानी हैं,वे कहते हैं-वर्षा हो गई है, ये ही सच है।

चुणो पड़ीयो खेत मांहि, परहरि साच झूठ बोलांहि।
कट्यौ वड्यौ कहै ज जोय, इ आखर मां कूड़ न होय।44।

चुणां खेत में पड़ा है, ये वचन झूठे हैं। कटी हुई फसल खेत में पड़ी है, इन अक्षरों में कुछ भी झूठ नहीं है।

के के कहै ज खाजै खेत, तीह मां दीसै सात्य मरेत।
गुर कही औचरीये अंन, साचा बोलै ते नर धन्य।45।

कई कहते हैं-खाज (अन्न) खेत में है, इस बात में सत समाप्त होता है। गुरुजी कहते हैं कि जो अन्न हो उसका नाम लेना चाहिये। यह वचन धन्य है।

खाधौ खळौ कहै विचारि, जो चरीयो तो अंन उचारि।
वाड़ो बांधौ कहै वैसुध्य, चारौ चीनूं आखर सुध्य।46।

पशु खलै (लाटा) को खा गये हैं, यह वचन झूठा है। जो अन्न पशु खाये हैं, उसका नाम लेना चाहिये। बाड़ा बांधा कहना भी झूठ है। बल्कि चारा (घास) इकट्ठा कर दिया है, कहना सत्य है।

वासण भीतरि वसत ज थाय, तींह वसत को ठांव कहाय।
भूला कहै वसत को ठांव, इह आखर कौ कूड़ौ नांव।47।

किसी बर्तन के भीतर कोई वस्तु है, उसे उस वस्तु का बर्तन कहते हैं, यह झूठ है। वह भूल से उस वस्तु का ठांव (बर्तन) कहते हैं, यह बात झूठ है।

खोझी खोज्य विगति सूं लहै, साच झूठ का वीहरा लहै।
जो जो कहै वसत को ठांव, मांहि वसत को कहीये नांव।48।

जो खोजी हैं, वे खोज प्रमाण पूर्वक करते हैं। वे सच और झूठ का निर्णय करते हैं। जो मनुष्य वस्तु का बर्तन बताते हैं, उन्हें कहना चाहिये, बर्तन में अमुक वस्तु है।

दुहा

जैह वोपारि तोळणी, वाखर पूरो तोल।
ओछो द्यै पूरो कहै, अतरो कूड़ न बोल।49।

जिसके पास तराजू है, उसे पूरी वस्तु तोलनी चाहिये। कम तोलना और उसे पूरा बताना, ऐसा झूठ नहीं बोलना चाहिये।

चौपई

जीमो जूठो न्हावो धोवो, साचो राखो झूठ विगोवो।
सूतो पड्यौ जु पांणी लूणी, एक सत्य इक अलख विहूणी।50।

जीमना-जूठना, न्हाना-धोना, सोना-पड़ना और पानी-नमक आदि में एक शब्द सत्य है, दूसरा गलत है। इनमें सत्य को रखो और झूठ को छोड़ो।

रोटी राटी खोटा खाटो, मेह माह अरु बूठा बाठो।
काम काज अरु करो करावौ, मेल्हौ चालो धरो धरावौ।51।

कवि पुन: ऐसे शब्द कहता है-रोटी-राटी, खोटा-खाटो, मेह-माह, वूठा-वाठो, काम-काज, करो-करावो, मेल्हो-चालो, धरो-धरावो आदि में एक सत्य और एक झूठ है।

राजा रूजा प्रजा पुरजा, औरा आरा भारज भुरजा।
थाळी थूळी थूणां थाणां, आटा उटा दूणा दाणा।52।

पुन: राजा-रूजा, प्रजा-पुर्जा, औरा-आरा, भारज-भुरजा, थाली-थूली, चूल्हा-चाल्हा, आटा-ऊटा, दूना-दाना आदि शब्दों में भी एक सत्य है और एक झूठ है।

आधा झूठा अरु आधा साचा, गुरमुखि काढ़ै पूरा वाचा।
झूठ सांच को नहीं प्रवाणां, साच बोल नर चढ़ै विवाणा।53।

कवि कहता है- आधा झूठा और आधा सच्चा वचन ज्ञानी पुरुष नहीं कहते हैं। झूठ सच में जो भेद नहीं कर सकता है, वह मूर्ख है। सच बोलकर मनुष्य विमान में बैठकर स्वर्ग में जाता है।

दुहा

बोल्या कूड़ै आखरे, दान कुपातां दीव।
वील्ह कहै गुर दाखवै, बोह दुख सहिसी जीव।54।[7]

कवि वील्होजी कहते हैं-गुरु जाम्भोजी महाराज ने ऐसा बताया है कि जो झूठ बोलते हैं और कुपात्र को दान देते हैं, वे जीव बहुत दु:ख सहते हैं।

जां श्री गुर औळख्यौ, लाधौ साच विचारि।
वील्ह कहै परमारथी, ते उतरयस्ये पारि।55।[8]

जिन्होंने सत्गुरु श्री जाम्भोजी महाराज को पहचान लिया है, उन्हें सत्य का ज्ञान हुआ है। कवि वील्होजी कहते हैं कि ऐसे परमार्थी इस भवसागर से पार उतर जाते हैं।

संदर्भ टिप्पणियां

1. सकळ पाप मन ता परहरै, किरिया करि अभखळ उचरै।
साखि सबद मां सतगुर कही, रतन कया मुख सूवर कही।249।

केसोजी, कथा विगतावली

2. अधरम हूंता औसरी, परति न छिपै पाप।
सुगर सुवाणी दाखवी, अभखळ वरज्जौ आप।133।

केसोजी, कथा विगतावळी

3. मैं दांवण पकड़यो देव कौ, सतगुर करै सहाय।
पांच सात नव बाहरां, अबकै मोही मिलाय।604।

केसोजी, पहलाद चिरत

4. झूठो ई सैंसार है, सत मति मानो कोय।
सतलोक पहूंच्या चहौ, तो सत बोल्या गति होय।104।

साहबराम जी, जम्भसार

कायक वायक मानसी, पाप लगत है तीन।
तातैं झूठ न बोलिये, जंभ गुरु कहि दीन।111।

साहबराम जी, जम्भसार पृ. 260

5. दुहा-खोडा खाड काढ़ी कहै, मोख न पावै कूड़ा।
माणस नै जीम्यौ कहै, कंटक बोलै रूड़ा।123।

केसोजी, कथा विगतावळी

6. दुहा-आटे नैं पीस्यो कहै, दळी कहै स दाळ्य।
सीजवणी कहै उफणी, बोलै नहीं संभाळ्य।128।

केसोजी, कथा विगतावळी

7. गुर को कह्यो न खोजै ग्यांन, कुपहा दियौ कुपातां दान।

जाम्भोजी का सबद

8. कळि जुगि वरज्या केवळी, कावळ कूड़ कुबांण्य।
जिभ्या बोली जाण्य क, सावळ साच सुबांण्य।

केसोजी, कथा विगतावळी

9. विसन छतीसी

कुंडलियां

ओउंकारे आदि गुर, निरंजण निराकार।
आकारे जुग जौ गयौ, आप रह्यौ निराकार।
आप रह्यो निराकार, सांम्य सुनकार संमायौ।
अलख नै लखीयौ जाय, भेद कही विरले पायौ।
आदि विसंन बोहरूप किया, जुगे जुग जुवा।
वील्ह कह जपौ विसन, जो आपे तैं आपे हुवा।1।[1]

वील्होजी कहते हैं कि औंकार रूप आदि परमात्मा का स्वरूप है जो आकार रहित है परन्तु उसने इस संसार को स्वरूप प्रदान किया है। स्वयं आकारहीन होते हुए भी वह संसार को अपने में समाहित रखता है। ऐसे स्वरूप वाले ब्रह्म को देखा नहीं जा सकता। इस संसार में विरले ही उसे जान पाते हैं। आदि विष्णु ने अलग-अलग युगों में अपने अलग-अलग रूप प्रकट किये हैं। ऐसे ब्रह्म स्वरूप आदि गुरु विष्णु का संसार के लोगों को जप करना चाहिये।

आयो जीवड़ो जगत मां, जलमी औदरि वैस्य।
कोळ कीयो करतार सूं, रह्यौ मुकर होय बैस्य।
रह्यौ मुकर होय बैस्य, मन माया सूं लायौ।
जां जां कीयो मोह, तहां तहां आप ठगायौ।
मन मां चितवन न करै, साम्य हूं किण्य उपायौ।
विसन जपौ संसारि, जीवड़ा जग में आयो।2।

जब जीव पेट में रहकर इस जगत में प्रवेश करता है तभी से ब्रह्म से रूठकर बैठ जाता है अर्थात् उसका ध्यान नहीं करता है। ऐसी स्थिति में वह माया से प्रेम करता हैं। जहां-जहां माया से प्रेम किया, वह अवश्य ही ठगा गया है। वह परमात्मा का ध्यान नहीं करता लेकिन संकट आते ही उसे याद करता है। वील्होजी का कहना है कि हमें समय रहते हुए ही विष्णु का जप करना चाहिये।

इंछ्या सतगुर पूरवै, जे एक मन्य ध्यायौ होय।
विसन पखौ रे प्राणीयां, अंति न बेली कोय।

अंति न बेली कोय, जोय सच जेती माया।
नहछै नहीं नीरवाह, अंति पड़िसी आ काया।
वले विसन सूं काम छै, सुध्य रहेसी सोय।
इंछ्या सतगुर पूरवै, जो एक मन ध्यायौ होय।3।

सतगुरु सभी की इच्छा पूर्ण करने वाले हैं, यदि एक मन से उनका ध्यान करें। इसलिये हे प्राणियों, तुम्हें विष्णु का ध्यान बिना विलम्ब के करना चाहिये, क्योंकि अंत में आपका कोई भी दोस्त नहीं होगा। सच ही इस माया को नष्ट करने का मंत्र है। जिसके मन में शांति नहीं वह अंतिम समय में इस शरीर को संकट में डाल देगा। अत: समय रहते हुए विष्णु से मन लगाना चाहिये। उसी से सिद्धी प्राप्ति संभव होगी। इस प्रकार से इस संसार में एक ही गुरु का जो ध्यान करता है, वह उसकी इच्छा की पूर्ति अवश्य ही करता है।

उदिम करि रे आदमी, उदिम दाळिद जाय।
जीभ विसन को नांव ले, अहनिस साम्य धियाय।
अहनिस साम्य धियाय, ध्यांन धरि हरि सूं राची।
करौ विसन की सेव, मेल्य दे सेवा काची।
ग्यान कथा मां संभल्यौ, तीन्य लोक को राय।
विसन जंपो उदिम करौ, पाप पराछित जाय। 4।

हे मनुष्य कर्म कर, उसी से तुम्हारी दरिद्रता दूर होगी। जीभ से विष्णु का स्मरण कर और रात दिन उसी स्वामी का ध्यान कर, इसी ध्यान से हरि प्रसन्न होंगे। अन्य की सेवाओं को छोड़कर विष्णु की सेवा करनी चाहिये। ज्ञान कथाओं में हमने सुना है कि विष्णु भगवान तीनों लोकों के स्वामी है। विष्णु के जपने का श्रम करो, जिससे पाप नष्ट होते हैं।

एती ओपति सारवै, सरब जीया जूण।
दैत न भूलै साम्य जी, सबांही कूं चूण।
सबांही कूं चुण्य, करतब अपणौ सारै।
अपणी करणी सार, संता पारि उतारै।
किसन वडौ किरसाण, ओ जुग मंडळ खेती।
विसन जंपौ संसारि, सरब ओपति एती।5।

विष्णु भगवान ने जितने जीवों को पैदा किये हैं, वे उन सभी जीवों के जीवन का आधार हैं। वे सभी जीवों का पालन-पोषण करते हैं और संतों

का उद्धार उनकी करनी के अनुसार करते हैं। कवि का कहना है कि कृष्ण स्वरूप विष्णु ही इस संसार का सबसे बड़ा किसान है और यह सारा संसार उसकी खेती है। इसलिये हमें विष्णु का ही जप करके अपने आपको उद्धार करने के लिये तैयार करना चाहिये।

कका क्रिया न छाड़ियै, कुकरम कळह नीवारि।
विसन भगति विण्य आदमी, कुण पहुंतो पारि।
कुण पहुंतौ पारि, कुपह मेल्ह सुपह जे आवौ।
परमानन्द सूं प्रीति करि, नांव निज देखि धीयावै।
सुपह दीखाळै साम्य जी, कुपह राह सब मेटि।
विसन जपौ संसारि, कका क्रिया न मेटि।6।[2]

कर्त्ता को कार्य की क्रियाशीलता को नहीं छोड़ना चाहिये। इसी से गलत कार्य एवं द्वेष आदि मिटते हैं और फिर विष्णु की भक्ति के अभाव में कौन आदमी पार उतार सकता है। गलत रास्ते को छोड़कर सच्चा रास्ता अपनाये बिना कौन सद्गति प्राप्त करते हैं और कुमति मेटते हैं। अत: विष्णु के नाम का स्मरण करे बिना संसार का क्रियात्मक द्वन्द्व नहीं मिटता।

खखा खरतर चालीये, करि खारौ संसार।
मो मन्य मीठो माहवौ, जपीये वारौ वार।
जपीये वारौ वार, हारि बैसो मत भाई।
विसन जपौ रे जीव, ओर धर नांही काई।
ओ मन राखो ठांय, पाप पसरंता पालौ।
विसन जपौ संसारि, खखा खरतर होय चालौ।7।

हे मनुष्य तुम सावधान होकर चलो और संसार के विषय भोगों को खारा समझो। मीठा तो केवल विष्णु भगवान का नाम है, जिसे बार-बार जपो। अत: विष्णु का जप निरन्तर करना चाहिये। मानव या भक्तगण को हार नहीं माननी चाहिये। हे जीव, विष्णु का जप करो, इसके बिना और कोई धरोहर नहीं है। मन में पाप के विस्तार को निश्चय करके रोकना चाहिये। विष्णु भगवान के नाम का स्मरण करो और सावधान होकर चलो।

गगा गरब न कीजिये, धन वित देख्य गिंवार।
विसन नांव गाढ़ौ गही, पावौ मोख द्वार।
पावौ मौख दवार, सार करि क्रीया जांणी।

क्यौ घटि राखौ थूळ, मुरिखा हूंते पांणी।
गुरमुखि परसै हीर, बाझ पारिख कुण बूझै।
विसन जपौ संसारि, गगा गरब न कीजै।8।

विष्णु का जप एवं संसार को अहं न करने का संदेश इस पद में है। भक्तजनों को धन को नगण्य समझना चाहिये। विष्णु के नाम को मजबूती से पकड़ने से ही मुक्ति संभव है। इसी में संसार का निष्कर्ष मिलता है। स्थूल शरीर को हृदय में क्यों स्थायी मानकर रखते हो, यह तो पानी के समान परिवर्तनशील (नाशवान) है। गुरु के नाम से मोती आदि की वर्षा होती है और अज्ञान के स्पर्श से अन्धकार की। इसलिये ज्ञान रूपी विष्णु के नाम को जपना एवं अहं के नाम को छोड़ना चाहिये।

घघा घर आगै घंघळ घणां, अंत कै गोवळवास।
मडी मंडप कोट गढ़, कूड़ी मंडौ आस।
कूड़ी मंडौ आस, वास थिर मिनख न कोई।
कूड़ी माया जाळ, भरम मत भूलौ कोई।
ऊपरि गजै काळ, ताळ सिर्य सदा उबांगी।
विसन पखौ संसारि, विच घंघळ घर आगी।9।[3]

इस पद में कहा गया है कि यह संसार अस्थिर है। इसमें अन्धकार है और अन्त में मृत्युलोक इस संसार का क्रम है। भक्तजनों को चौबारे में, मंडप में, कीले-गढ़ आदि तत्वों में आशा नहीं करनी चाहिये। इनमें आशाएं लगाने से मानव जीवन स्थिर नहीं रहता। यह माया का जाल झूठा है। अत: इसमें आकर्षण नहीं देखना चाहिये। हर प्राणी के सिर पर मृत्यु मंडरा रही है, लेकिन संसार में सृजनकर्त्ता ही उपस्थित रहता है। इसलिये विष्णु का ध्यान करना चाहिये, क्योंकि यह घर नश्वर है।

ङ (नं) ङा (नां) नंद्या परहरी, पर नंद्या न करेह।
सोभा नहीं संसार मां, पलत्य पात्रग लेह।
पलत्य पात्रग लेह, व्रस्य देखौ नर जोई।
ओर पाप कूं नफो, नंद्य कूं नफो न कोई।
एती चालो जाण्य, छोड़ि मन ही मन्य नंद्या।
विसन जपौ संसारि, ननां परहरि परनंद्या।10।

हे प्राणी, पराई निन्दा मत करो। इसकी संसार में कोई शोभा नहीं है,

इसलिये इसे अपने पल्ले मत बांधो। इसको पहचान कर देखो। पापों में तो एक बार लाभ भी दिखाई देता है, लेकिन इसमें कोई लाभ नहीं है। इस बात को समझो। निन्दा को त्यागो। इसलिये हे प्राणी, विष्णु भगवान का स्मरण करो और पराई निन्दा मत करो।

चचा चौखा चालीयै, चित चत्रभुज लाय।
चोरी जारी परहरौ, अै गुर की नांवै दाय।
अै गुर की नांवै दाय, बोहत गुण होयसी तेरा।
इस लिखीया संसारि, मेटीसी आवा फेरा।
लहिसी सुरां की गोठड़ी, मीटिसी जीव का जोखा।
विसन जपौ संसारि, चचा चालौ चौखा।11।

विष्णु के नाम स्मरण पर जोर देते हुए कवि कहता है कि इस संसार में चतुर्भुज अर्थात् विष्णु का ध्यान करना चाहिये, जिससे अच्छे कर्म हो सके। लोगों को चोरी जुआ आदि छोड़कर गुरु का नाम लेना चाहिये। इन्हीं दो नामों से अधिक गुणों की प्राप्ति सम्भव है। लिखी हुई संसार की भाग्य की रेखाएं मिटेगी तथा देवों का स्थान मिलेगा। जीवों का दु:ख प्राय: समाप्त हो जायेगा। इसलिये संसार के सभी लोगों को विष्णु के नाम का स्मरण करना चाहिये।

छछा छळि बळि देव का, कुण जांणै हरि माघ।
जागत नींद न सोइये, हीय हरखि करि जाग।
हीय हरखि करि जाग, भांति हेक हरि धीयावौ।
कीयौ धरम सूं सीर, पाप परहरौ सबावौ।
हुवा न केवळ ध्यान, कीया चित चौखा त्रमळ।
विसन जपौ संसारि, छछा क्यौं जांणौ छळि बळि।12।

कपट की शक्ति देव द्वारा ही नष्ट होती है। इस प्रकार हरि को कौन जान सकता है। इसलिये संसार को अज्ञानता की नींद नहीं सोनी चाहिये। हृदय में विष्णु का प्रेम होना, उससे स्नेह तथा उसका ही ध्यान रखना चाहिये। पाप को छोड़ने के लिये धर्म से मिलना पड़ता है। अर्थात् स्वच्छ मन के बिना प्रभु का ध्यान असम्भव है। इसलिये विष्णु का जप जरूरी है एवं छल-बल को छोड़ देना चाहिये।

जजा जे हरि जपीये, आवागुंवण न होय।
सो गुर कांय न जपीये, ए अप्रापति जोय।

ए अप्रापति जोय, खोय बैठो जंमवारौ।
सुक्रत पखो न साथि, न चले संग संसारौ।
परहरि पाप पियार, ध्यान धरि चालौ लोई।
विसन जपौ संसारि, आवागुंवण न होई।13।

जो विष्णु का स्मरण करते हैं, उनको इस संसार से मुक्ति मिल जाती है, तो फिर हमें उनको क्यों नहीं स्मरण करना चाहिये। इससे छुटकारा पाने हेतु उसका स्मरण अति आवश्यक है। हे मानव तुम्हें अच्छे कर्म करने चाहिये। वे हमारे साथ चलेंगे, यह संसार हमारे साथ नहीं चलेगा। अत: पाप-स्नेह आदि को त्याग कर हरि का ध्यान करना चाहिये, जिससे संसार से मुक्ति सम्भव होगी और आवागमन नहीं होगा।

झाझा पूरौ झंभगुर, कूड़ा संग निवारि।
काया भीतरि न्हाण करि, मन का मैल उतारि।
मन का मैल उतारि, निवारि मन मद मासा।
हरखे हरि जळ न्हाय, न्हाण करि हरि दिन आसा।
प्राणी पूरण धरम, काया गढ़ किया अचंभा।
विसन जपौ संसारि, झझा पूरण गुर झंभा।14।[4]

ये श्री जाम्भोजी महाराज सच्चे सत्गुरु हैं। इनकी संगति करो तथा झूठों की संगति का त्याग करना चाहिये। मन में शुद्ध चिंतन का ही स्नान करने से स्वच्छता मिलती है। ऐसे शुद्ध चिंतन से मन का गन्दा नशा भी नाश हो जाता है। मन से मद-मांस का त्याग करो और स्नान करके हर्षित होवो। विष्णु भगवान की आशा करो। हे प्राणी! ये धर्म पूर्ण है जो काया रूपी किले में एक आश्चर्य भी पैदा करता है। अर्थात् विष्णु के जपने से पूर्ण ब्रह्म (जांभोजी) की प्राप्ति संभव है।

टटा टाकर ता सीरि, भूला टीकम नांय।
दुन्यौ आंख्यां देखतां, धाया कूप पड़ाय।
धाया कूप पड़ाय, मुरिखा रहै नै पाल्या।
वसती न वतळाय, जांहि रोही देस चाल्या।
खळ्य सूं करै सनेह, परहरि दूध अर सकर।
विसन जपौ संसारि, नां जपै तां सीरि टकर।15।

जो विवाद करता है एवं परमात्मा का नाम भूल जाता है, ऐसा व्यक्ति

दोनों आंखां से देखते हुए कुए में गिरता है। ऐसा व्यक्ति मना करने से भी नहीं रुक सकता है। मूर्ख व्यक्ति परमात्मा के निवास को छोड़कर जंगल की ओर भागता है तथा उनकी दूध एवं शक्कर रूपी भक्ति छोड़कर दुष्टों से स्नेह भी करता है। वील्होजी कहते हैं कि विष्णु के नाम जपने से मन की दुश्चिंताएं समाप्त होगी।

ठठा ठाकुर झंभ गुर, बीजा कूड़ा राज।
लखमण रूप रावण हयौ, सायर बंधी पाज।
सायर बंधी पाज, लंक ले सीता आणी।
महंण मथ्यर बजोड़ि, मेर गिर कीयो मिथाणी।
वासेग नेतौ जीण्य ठयौ, मेरगिर पूठा थंभा।
विसन जपौ संसारि, ठठा ठाकुर गुर झंभा।16।[5]

जाम्भोजी महाराज ही स्वामी है। अन्य राजा झूठे हैं। जिन्होंने लक्ष्मण का रूप धारण करके रावण को मारा था। जो समुद्र पर पुल बांध कर सीता को लंका से लाये थे, जिन्होंने समुद्र को मथा, सुमेर पर्वत को मथानी बनाई, वासग नाग को रस्सी बनाया और सुमेर पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया था, ये जाम्भोजी महाराज स्वयं विष्णु हैं, इसलिये उनका स्मरण करो।

डडा डर करि चालिये, डाहा होय सुजांण।
विसन नांय विलंब्यौ रही, जुंवर न मळिसी मांण।
जुंवर न मळिसी माण, ताण सैतान चालै।
ज्यौं मन राखो ठांय, गोठि सुरां की माल्है।
कुकरम प्रहर संसार, गुर फुरमाई चाली।
विसन जपौ संसारि, डडा डरि करि चाली।17।

जो अनैतिक एवं अधर्म से डरकर चलता है, वही व्यक्ति सुज्ञानी है। जो विष्णु के नाम को मन में रखता है, उसे परमात्मा का महत्व मिलता है। उस महत्व पर शैतान का वस नहीं चलता। मन को एकाग्र रखो, जिससे देवताओं में स्थान मिले। विष्णु भगवान को जपने का तथा गलत कर्मों से दूर रहने का, ऐसा सच्चा ज्ञान गुरु महाराज ने बताया है। इसलिये विष्णु भगवान का स्मरण करो और कुकर्मो से डरकर चलो।

ढ़ढ़ा ढ़ील न कीजीये, जरणां ढ़ाकण देह।
पैंके लाख जै उपजै, सोदौ जांण न देह।

सौदौ जांण न देह, लेह लाहो वौपारीया।
खरचि विसन कै नांय, करि ले कारण किरीया।
साच चवौ संसारि, सति अमरापुर लीजै।
विसन जपौ संसारि, ढ़ढा ढ़ील न कीजै।18।[6]

मनुष्य को संसार में देर नहीं करनी चाहिये। हृदय में धैर्य रखनी चाहिये। यह मनुष्य जन्म का तुझे लाभ मिला है। इसको व्यर्थ न जाने दें और व्यापारी बनकर व्यापार करना चाहिये। इस व्यापार में विष्णु भगवान का नाम खर्च करके कोई कर्म करना चाहिये। जो इस संसार में सच का सहारा लेता है, वही अमरापुर (स्वर्ग) में जाता है। इसलिये संसार में बिना देरी किये विष्णु का ही नाम जपना चाहिये।

णणां हिरदै क्यों न झूझीये, पांचा सूं संग्राम।
विसन न जंप्यौ हरिख करि, दीन्हु दोरै ठांम।
दीन्हुं दोरै ठाम, दुख भोगवै दीनाई।
नही विसन नै दोस, दोस आपणी कमाई।
पछै लागो पछतांण, पहल्य ही कांय न बूझ्या।
विसन जपौ संसारि, णणां हिरदै नहीं झूझ्या।19।

हे मानव! तूने पहले ही अपने हृदय में इन पांचों विकारों से संघर्ष क्यों नहीं किया? विष्णु का ध्यान नहीं करने वाला व्यक्ति दोनों ही जगहों पर दु:ख पाता है, अर्थात् इस लोक में एवं परलोक में। और यह दु:ख भोगने पर ही कटता है। जिसका दोष व्यक्ति के स्वयं के कर्मो से होता है, न कि विष्णु का। लेकिन सांसारिक लोग पूर्व में अज्ञान के कारण पछतावा ही शेष रखते हैं। इसलिये विष्णु का ही जप करना चाहिये तथा हृदय के विकारों से संघर्ष करना चाहिये।

तता ताता नां हुवै, एक चित हरि कै नांव।
भैनंद आडो भाइयौ, अळगो पार गीराव।
अळगो पार गीरांव, नांव लै हिरदै वसावै।
दे दसवंद दीवाण्य, जीव दोरहि छुड़ावै।
रतन कया दातार, विसन मनमानी मेवा।
विसन जपौ संसारि, तता होय तारेवा।20।

मानव के प्रति तुझे किसी भी समय गुस्सा नहीं करना चाहिये। मन

में भय की वाणी को आगे नहीं आने देना चाहिये। उसे दूर रखना चाहिये एवं हृदय में प्रभु का नाम रखना चाहिये। अपने नौ द्वारों से दसवें द्वार को जागृत कर जीव को मुक्ति में लाना चाहिये। इस रत्नों जैसी काया में विष्णु के नाम की जरुरत है। अत: हे संसार के प्राणियों! तुम्हें गुस्से आदि की जगह विष्णु का स्मरण करना चाहिये, जिससे मुक्ति मिले।

थथा थिर करि राखो जीवड़ौ, दह दिस डीगै न मंन।
हंस काया मां पाहणौ, ताथै तन रतंन।
ताथै तन रतन, औ पिंड पड़िसी काई।
सुक्रत पहली संच्य, पछै पछतायसी भाई।
साच सही संसार मां, मुखि अभखळ नहीं भाख्य।
विसन जपौ संसारि, थथा जीव थिर करि राख्य।21।

हे भक्तजन! अपने मन को स्थिर रखना चाहिये, क्योंकि यह दस दिशाओं में भटकता रहता है। शरीर में हंस रूपी आत्मा निवास करती है, जिसमें शरीर रत्न के समान है। जिस रत्न रूपी शरीर में आत्मा स्थित है, उसे सच्चाई एवं अच्छे कर्मो में विश्वास करना चाहिये अन्यथा उसे पश्चाताप ही करना पड़ता है। इस संसार में सच की पूछ है, झूठ की नहीं। अत: इन सबको देखकर ही विष्णु का जप एवं जीव को स्थिर रखना चाहिये।

ददा दांवण्य विळगीये, दाळिद भंजण देव।
अपरंपर का आदमी, विरळा जांणै भेव।
विरळा जांणै भेव, भवण चवरा थीर राख्या।
मनसा संवा विवाण, वह मन सै दाख्या।
म्रतलोक पाताळ मां, थापना जींह की कीजै।
विसन जपौ संसारि, ददा दांवण्य विळगीजै।22।

हे मनुष्य! दरिद्रता का नाश करने वाले विष्णु भगवान के चरणों में पड़। उस अपरम्पार स्वामी का भेद विरला ही मनुष्य जानता है, जो चौदह भवनों में स्थित है। जिसका मनसा रूपी विमान है, जो मन से ही उत्पन्न होता है। जिसने मृत्युलोक और पाताल लोक की स्थापना की है। उस विष्णु भगवान का स्मरण करो और उस स्वामी के चरणों में रहो।

धधा ध्यावौ धरम करि, धरम करौ धन देह।
अमी फुंहारे ओसर्यौ, जंबू बूठा मेह।

जंबू बूठा मेह, नीर निज रह्यौ नीवाणे।
क्रमहीण कोरा रह्या, पीयो साधवे सुजांणे।
सीतळ सुजळ सुमीठ, पीयौ मोमिण सवायौ।
विसन जपौ संसारि, धधा धीरज करि ध्यावौ।23।[7]

धर्म कर्म करने से ही धन की प्राप्ति होती है। ऐसी शक्ति से ही जम्बू द्वीप में छोटे-छोटे फुहारों से ज्ञान रूपी अमृत की वर्षा होती है। ऐसी ज्ञान की वर्षा से भाग्यहीन दूर ही रहते हैं और सज्जन इसे पीते हैं। साधुजन शीतल,स्वच्छ और मीठे जल का पान करते हैं और अपने मन को स्वच्छ भी करते हैं। इसलिये विष्णु भगवान का संसार के लोगों को धैर्यपूर्वक ध्यान करना चाहिये।

नंना नोधा धर अंबर, चंद सूर दीपक।
चहुं खैण्य मां संभळी, जाति चौरासी लख।
जाति चौरासी लख, सांम्य का अन्त न लेखा।
पूरण लेख न जाय, मन मां करौ अभेखा।
पलक फिर हुवै न्रमल, पल मां मेघ अडंबरूं।
विसन जपौ संसारि, नना नोधा धर अंबरूं।24।

इस विश्वलोक अर्थात् धरती, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, दीपक आदि चौरासी लाख यौनियों में ईश्वर का कोई लेखा नहीं है। वह पूर्ण ब्रह्म परमात्मा जानने में नहीं आता है। इस बात का मन में अनिश्चय है। वह क्षण में स्वच्छ होता है और क्षण में ही संसार रूपी आडम्बर होता है। अत: हमें संसार में विष्णु का स्मरण करना चाहिये।

पपा जंभ परमगुरु, धरहि हियै ताको ध्यान।
त्रिहूं ताप नासे तुरत, उपजै उर विग्यान।
उपजै उर विग्यान, सकल संसय मिट जावै।
जनम मरण भय जाय, पूरण परमार्थ पावै।
वाढ़े विमल ववेक, होय सब पातक हाना।
पपा परमगुरु जंभ, धार विष्णु हियै ध्याना।25।

हे प्राणी, परम गुरु जाम्भोजी महाराज हैं, उनका ध्यान हृदय में धरो। वह तीनों तापों अर्थात् आध्यात्मिक, अधि-भौतिक और अधि-दैविक को निवारण करने वाले हैं, जिससे हृदय में ज्ञान पैदा होता है। उनके ध्यान से सब भ्रम मिट जाते हैं, जन्म-मरण का भय समाप्त होता है, पूर्ण परमार्थ मिलता है,

ज्ञान का प्रकाश होता है और पापों का नाश होता है। हे प्राणी, ऐसे परम गुरु जाम्भोजी महाराज का हृदय में ध्यान करो।

फफा फळीजै रूंखड़ा, नित सींचीये सुनीर।
डाळी पान सुत छै, तरवर गहर गंभीर।
तरवर गहर गंभीर, बसता सीतळ छाया।
फळ पण्य खरा सुमीठ, सेवग वै फळ पाया।
वळे सेवग पावतां, फळ सुचीयारा दीजै।
विसन जपौ संसारि, फफा फळ फूल फळीजै।26।

जिस पेड़ को अच्छे पानी से सींचा जाए उसके फल अच्छे मिलते हैं। ऐसे वृक्ष के ही डालियां, पत्ते एवं फल बहुत गहरे अर्थात् अच्छे होते हैं तथा शीतल छाया भी मिलती है। जो उसकी सेवा करता है, उसे फल खाने को अवश्य ही मिलते हैं। इसलिये हमें परमात्मा (वृक्ष) की भक्ति अवश्य ही करनी चाहिये, जिससे हमको अच्छे फल मिले।

बबा बहण'र भाइया, सगपण माय न बाप।
अंति काळ बेली नहीं, हंस अकेलो आप।
हंस अकेलो आप, पाप एम करिस्यै मुकरणौ।
संग्य न साथी कोय, हंस एकलो पयांणौ।
सुक्रत होयसी साथ्य, सदा हरि सूं लिवळाई।
विसन जपौ संसारि, बबा किसका बहण'र भाई।27।[8]

इस जग में न तो कोई भाई-बहन हैं, न ही मां-बाप हैं क्योंकि मृत्यु के पश्चात् वह इस संसार से अकेला विदा होता है। उसके इस संसार में आने का फल उसी के पाप-पुण्य हैं। लेकिन हरि को याद करते हुए किये गये अच्छे कार्य ही साथ देते हैं। अत: संसार के लोगों को विष्णु का जप करना चाहिये।

भभा भणतां गुणतां, एक चित हरि नै जांणौ।
ध्रम विगस कवळ ज्यौं, पाप पड़ै भंगाणौ।
पाप पड़ै भंगाणौ, पाप जड़ पान खळीजै।
ध्रम वाव सुवाव, धरम बोह फुल्य फळीजै।
पाप जाय निसंतान, ध्रम स्रवणे सुणीजै
विसन जपौ संसारि, भभा उं नांव भणीजै।28।

भक्तजनों को हरि के नाम का चिन्तन एवं मनन करना चाहिये। उसी से धर्म रूपी कमल विकसित होकर पाप का नाश होता है। धर्म के सब कुछ सम्भव हो जाता है। फल की प्राप्ति होती है। पापी नि:संतान मरता है। धर्मी स्वर्ग प्राप्त करता है। इसलिये संसार के लोगों को विष्णु का जप करना चाहिये।

ममां मदसूदन सूं मन करि, जाकी मया तरेव।
माया तै उरैह, रहै नीरंतरि भेव।
रहै निरंतरि भेव, साम्य पूरव सवाई।
सरब तीरै संसारि, सून्य मां रहै समाई।
रह हाजिर देख्य, देख्य साम्य का वानां।
विसन जपो संसारि, ममां मील्य मदसूदनां।29।

हे भक्तजनों! हमें मधुसूदन (परमात्मा) को मन में रखना चाहिये, जिसकी दया से सब कुछ सम्भव है। माया की वहां पहुंच नहीं और वह भेद को नहीं जानती। वह स्वामी तो हमेशा पूर्ण है। उससे सब संसार मुक्ति पाता है और वह शून्य में रहता है। इस संसार में रहते हुए भी सामने से सब कुछ साक्षात् दर्शन किये जा सकते हैं। अर्थात् विष्णु का ध्यान और स्मरण करने से इस संसार में असम्भव कर्म भी सम्भव हो जाते हैं।

यया जाण्य पीछाण्य कै, माहुवौ मनां न मेल्ह्य।
सो धन देखि न भुलीये, अे सब जायसी मेल्ह्य।
अै सब जायसी मेल्ह्य, जीव मत धरौ भरांती।
खरचि विसन के नांय, देखि सभ गत सुपांती।
इत दीन्हौ उत लाभसी, म करि दुनी की काण्य।
विसन जपौ संसारि मां, यया जाण्य पिछाण्य।30।[9]

हे प्राणी! जानते हुए अपने मन में भ्रान्ति मत रखो। इस धन को देखकर भ्रमित न हो, यह सब नाशवान है और वह स्थायी नहीं है। इसलिये जीव को भी भ्रम में न रहकर विष्णु का जप एवं भक्ति करते हुए जीवन को व्यतीत करना चाहिये। सुपात्र को दान दो। जो यहां देगा, वह वहां मिलेगा। इसी से लाभ की प्राप्ति दुगुनी होगी। अत: विष्णु का जाप करते हुए उन्हें पहचानने की आवश्यकता है।

ररा रह्या सविध्य रह्या, खरच्या नांय विसन।
वाव दवाव न लागई, फूल्या फळ्या सुपुंन।

फूल्या फळ्या सुपुंन, हिरण हरिया वन चीनां।
राजा हरै न चोर, अगन्य विर धन छीनां।
सुक्रत खेती नीपनी, जां दीन्हों तांही लह्या।
विसन जपौ संसारि, ररा रह्या सविध्य रह्या।31।[10]

संसार में रहते हुए विष्णु को जपो, जिससे किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता। उसके नाम के पुण्य से जैसे हरिण को हरा-भरा वन मिल जाता है, वैसे ही मनुष्य को फायदा होता है। इस पुण्य को न राजा हर सकता है, न चोर छीन सकता है। वे तो केवल सांसारिक धन को छीन सकते हैं। लेकिन अच्छे कर्मो से अच्छे फल की प्राप्ति होती है। जो देता है, उसे ही यह मिलता है। अत: विष्णु के नाम स्मरण से ही संशय की समाप्ति सम्भव है।

लला लख करोड़ि धन, संचे गया गिंवार।
विसन नांय खरच्यौ नहीं, बुरे गया असार।
बुरे गया असार, पुंन अरथाय न लग्गै।
ग्रभवास्य आवागुवण, जीवां सांसो न भग्गै।
विसन जपौ संसारि मां, वळि वळि वारौ वार।
लला लख करोड़ि धन, संचे गया गिंवार।32।[11]

हे मूर्ख! तूने लाखों-करोड़ों का धन संचित किया है लेकिन विष्णु के नाम के अभाव में वह व्यर्थ है। अब चिंता से क्या फायदा? इन्हीं कुकर्मो के कारण ही तुम्हारा संसार में आवागमन हुआ है। अभी भी समय है कि तूं संसार में निरन्तर विष्णु का स्मरण कर, जिससे तुम्हारी संपत्ति का अच्छा उपयोग हो सके।

ववा विसन रतन छै, पाया दाम नरेस।
काच कथीर न विणजीये, विणज सही राजेस।
विणज सही राजेस, मन माण्यक सूं लाया।
काच कथीर न राच, हरि सा हीरा पाया।
साध संगति हरि भगति सूं, राता रहै स मन।
विसन जपौ संसार मां, ववा विसन रतंन।33।[12]

हे भक्तजन! विष्णु रत्न है। जिसकी कीमत नरेशों के पास भी नहीं है। इसे काच या कथीर (बेकार धातु) के रूप में न पहचान। इसका ज्ञान राजेश (कुबेर) ही कर सकता है। ऐसे रत्न को हमें मन में मोती की भांति ही

रखना चाहिये और ऐसे हीरे रूपी रत्न को हल्का नहीं मानना चाहिये। साधु सज्जनों की भक्ति से ही हम ऐसे प्रभु में अनुरक्त हो सकते हैं। अत: ऐसे विष्णु को स्मरण रखना चाहिये।

ससा सतगुर भाखीयौ, सोई सत्य करि जाण्य।
मेल्ह मोह संसार कौ, म करि दुंनी की काण्य।
म करि दुंनी की काण्य, हाण्य हरि जप न होई।
विणस्य जाय संसार, नीछ न रहिसी कोई।
रहिसी एक विसन, अेधर गैणांयर राख्यौ।
विसन जपौ संसारि, मान्य सतगुर ऊं भाख्यौ।34।

हे भक्तजनों! तुम्हें सत्गुरु का व्याख्यान उन्हें सत्य जानकर ही मानना चाहिये। उसी ने हमें अपने अहंकार की अति के कारण इस संसार में भेजा है और अहं की अति से ही इस समय हम जप भी नहीं करते और शांति भी नहीं मिलती। लेकिन संसार में विष्णु के कारण ही अंधकार का नाश संभव है। अत: विष्णु का जप सत्य-स्वरूप का जप जानकर करना चाहिये, ऐसा सत्गुरु ने कहा है।

ष (ख), षा (खा) खाली जगत है, ताहि देख मत भूल।
पांच तंत मंडाण है, अंत धूल की धूल।
अंत धूल की धूल, तांह देख मत राची।
मात पिता बहण भतीजा, सभी देह यह काची।
प्रकेती रू पुरष की, एही रचना सगत।
विसन जपौ संसार, खखा खाली जगत।35।

यह संसार शून्य है। उसे देखना भूल (गलती) है। पांच तत्वों से विनिर्मित शरीर अन्त में मिट्टी ही है। उसे झूठ जानते हुए सच्चा नहीं मानना चाहिये। माता-पिता, भाई-बहन, भतीजा आदि सभी में दिखावा है। लेकिन प्रकृति-दत्त रचना ही सच है। इसलिये संसार को शून्य जानते हुए विष्णु का जप आवश्यक है।

ह हा हरि न विसारियै, जपियै हरि को जाप।
हरि सुकरथ गुण गांठड़ी, मिटे जनम का पाप।
मिटे जनम का पाप, करणी किरीया जे कमावै।
लाभै मोख दवार, अंचित अमर गढ़ पावै।

मनसा भोजन मनसवां, सुकृत सील न हारीयै।
विष्णु जपो संसार, ह हा हरि न विसारियै।36।

हे प्राणी, ईश्वर को मत भूलो, उसको हमेशा स्मरण करो, वह अच्छे गुणों का खजाना है, जिससे तुम्हारे जन्म के पाप नष्ट हो जायेंगे। इससे सत्कर्मों की कमाई बनेगी, जिससे मुक्ति होगी और स्वर्ग मिलेगा। वहां मन इच्छा का भोजन मिलेगा। इसलिये सत्कर्म और शील को मत हारो। हे प्राणी, विष्णु भगवान का स्मरण करो और उसे मत भूलो।

संदर्भ टिप्पणियां

1. (क) विष्णु निरगुण रूप अनूपा, विष्णु है विज्ञान सरूपा।
विष्णु निरंजण है निराकारा, भगत हेत धर हो साकारा।।7।।
ऊदोजी अड़ींग-विष्णु चरित
(ख) श्री विष्णु चरित, जम्भसार, प्रकरण सोलहवां, पृ. 8-11

2. पहलै ककै बन्यो इह इंडा, दूजै ककै रच्यौ ब्रह्मण्डा।
तीजै ककै कर्म जगाय, चौथे पांचू तत लगाय।3।
साहबराम-जम्भसार, प. 36-40

3. (क) घर आगी अत गोवळवासौ, कूड़ी आधोचारी।
काल्है मूवा आज दूजौ दिन छै, जे क्यों सरै त सारी।84।
जाम्भोजी का सबद
(ख) गोवळ आया गोवळी, गोवळ था दिन च्यारि।
सुरग हमारा झूंपड़ा, ह्यो है आधोचारि।
दीन सुंदरजी, साखी
(ग) गोवळ चाल्या म्हे सुण्यां नै, धणी ज आयो धाय।
भगवैं वानै विष्णु आयो, दर्शन दीन्हो आय।।
हरजी-साखी छंदां की

4. सीस धरणी धरि करत हूं, नमस्कार सो वार।
इष्ट देव मंम जंभ गुरु, लीला हित अवतार।144।
मयाराम-अमावस की कथा

5. (क) दससिर का दस मसतग छेदया, बाण भला निरताओ।
जाम्भोजी का सबद
(ख) दुहा-धवळ स लंका धड़हड़ै, खड़हड़ीया नवखंड।

लखमण बाण संजोवीयौ, करै धूप कोवंड।17।
सुरजनजी-राजस्थानी रामायण

6. दान सुपातां बीज सुखेतां, इम्रत फूल फळीजै।
काया कसौटी मन जोगूंटो, जरणां ढाकण दीजै।54।
जाम्भोजी का सबद

7. धधै धर्म भयो विस्तारा, दूजै धधै धंधा निवारा।
तीजै धधै धन धन जीवा, चौथे धधै पावै पीवा।22।
साहबराम जी-बाराखड़ी

8. निहचै छेह पड़ेलो पाळो, गोवळवास ज करणां।
गोवळवास कमायौ जीवड़ा, सो सुरगापुरी लहणां।51।
जाम्भोजी का सबद

9. जो जो नांय विसन कै दीजै, अनंत गुणां लिख लीजै।54।
जाम्भोजी का सबद

10. (क) उनमन मनवां जीव जतन करि, मन राखीलो ठाई।
जीव कै काजै खड़ो ज खेती, सा वाव दवाव न जाई।
न तैं हिरणी न तैं हिरणां, न चीन्हूं हरियाई।
न तैं मोरी न तैं मोरा, न ऊंदर चरि जाई।70।
जाम्भोजी का सबद
(ख) बाड़ी कीजै जतन नै, पालण नै हरियाव।
वाड़ी चरै ज खेत नै, करणौ क्यों ई न जाय।
हरियावां नै राजवी, खेत दियो मुळकाय।
करसण हरियाव चरि गया, हाथ गया धुड़ि मांय।।
अज्ञात कृत साखी

11. लला लाल अमोल मन हरना।
तन भंडार जतन करि धरना।
प्रभु लाला गुरदेव लखायो।
तृष्णा लोभ सब दूर गमायौ।27।
सुदामा-बाराखड़ी

12. आसा एक विसन की कीजै, दूजी आस निवारि।
दूजी आसा जे करै, तो कदै न उतरै पारि।10।
परमानन्द जी के दोहे

13. तेतीसां प्रतपाल धरणी धर अैसी धरो।
भव भांजण भूपाल, कायम जी किरपा करो।
गोकलदास-साखी छंदां की

10. कथा दूणपुर की (राग आसा)

दुहा

नंवण करुं गुर आपणौ, वंदूं चरण सभाय।
भगतां तारण भौ हरण, तीन्य लोक कौ राय।1।[1]

कवि वील्होजी सर्वप्रथम अपने गुरु जाम्भोजी के चरणों में शुद्ध भाव से वंदना करते हैं। वह तीनों लोकों के स्वामी हैं और दुष्टों का उद्धार करने वाले हैं।

जीण्य पहराजा उधर्यौ, लियौ संकट ता राखि।
सोई साहेब सींवरीयै, साधे दीवी (छै) साखि।2।[2]

जिन्होंने प्रह्लाद को संकट से बचाया, उन्हीं विष्णु भगवान का स्मरण करना चाहिये। यही संतों की सीख है।

सेवग नैं संकट पड़ै, गुर ता सरै न काय।
जींह गुर नै लांछैण्य चड़ै, सेवा निरफळ जाय।3।

जब सेवक कठिनाई में हो और गुरु से उसका कोई कार्य सिद्ध न हो, तो ऐसे गुरु को कलंक लगता है। ऐसे गुरु की सेवा करना व्यर्थ है।

चौपई

विसनोई एक दूणपुर रहै, भेद विचार धरम का लहै।
सतगुर सेती प्रीति पिछाण्यै, सेवै चरण गरु का जाण्यै।4।[3]

एक बिश्नोई दूणपुर में रहता है जो धर्म भेद जानता है। उसकी सत्गुरु से प्रीति है। वह श्री जाम्भोजी के चरणों की सेवना करता है और उन्हें पहचानता है।

जीव जन करि पाळै दया, मध्यम छाड़ि उतिम गुण लिया।
भागौ भ्रम नै पूजै आन, कर प्रभाति सुचील सीनान।5।

वह जीवों पर दया करता है। उसने दुष्ट कर्मो को छोड़कर अच्छे कर्म अपनाये हैं। उसका भ्रम दूर हो गया है और वह जाम्भोजी के सिवाय अन्य देव की पूजा नहीं करता है। वह सुबह-सुबह स्नान भी करता है।

विसन नांव हीरदै उचरै, अभख अकारण छोड़या परै।
राह बाहरि जाप वणी होय, सो भींटण न दीय रसोय।6।

विष्णु नाम को उसने अपने हृदय में धारण किया है। उसने अभक्ष्य (मांसादि) पदार्थो को छोड़ दिया है। यदि वह कहीं अन्यत्र भी जाता है, तो

अपनी रसोई अन्यों को छूने नहीं देता है।

दुरमति गई सुमति सांचरी, कारण कीरीया चालै खरी।
सुध्य सुपह सुमारिग वहै, अैसो साध एक दूणपुर रहै।7।

उसके बुरे विचार नष्ट हो गये हैं और उसके हृदय में अच्छे विचारों का संचरण हुआ है। वह अच्छे कार्य करता है। वह अच्छे रास्ते पर चलता है। ऐसा एक साधु दूणपुर में रहता है।

दुहा

वीदौ ठाकुर दूणपुरि, जोधावत राठौड़।
मेछ न मानै देव नै, गुर सूं चालै कूड़।8।[4]

दूणपुर का ठाकुर, बीदा जोधावत, राठौड़ कुल का है। वह दुष्ट गुरु को नहीं मानता है और गुरु के खिलाफ चलता है।

चाळ हुई दीवांण मां, नगरी कुण आचार।
उतिम तां छांटौ लियै, मध्यम नीच चमार।9।

उसके दरबार में यह प्रचार हुआ कि वहां एक चमार जाति का व्यक्ति है, तो उत्तम पुरुषों से भी छुआछूत करता है।

मेछ मुंह कुवचन कहै, कहर को पितर होय।
मारो मेघ जळाय करि, आपरि करै न कोय।10।

वह दुष्ट बीदा कुपित होकर कहता है कि इस मेघवाल को जलाकर मारो ताकि फिर ऐसा कार्य कोई न करे।

एक दयावन्त बोलीयौ, वीनती सुण्य राजान।
च्यार पहर री पछ दीयौ, अतरौ राखो मांन।11।

उस समय एक दयावान बोला-हे राजा, हमारी एक विनती है कि इसे चार पहर की मौहलत दो। यह कहना आप हमारा मानो।

साध कहै सुण्य साधवी, सिंवरौ सिरजणहार।
उबारै तौ उबरां, मरां तो मोख दवार।12।

अब वह साधु पुरुष अपनी स्त्री से कहता है कि उस विष्णु भगवान का स्मरण करो। वह बचायेगा तो बचेंगे, यदि मरेंगे तो मुक्ति हो जायेगी।

चौपई

सवा पहर जदि रैण विहाणी, जपतां उतरीयो रहमाणी।
साथरीया न कहि समझायौ, साध सेवग नै संकट आयौ।13।

जब सवा पहर रात्रि उसके जप करते हुए व्यतीत हुई तो भगवान जाम्भोजी को अनुभव हुआ कि अब उस सज्जन पुरुष पर संकट आ गया है, ऐसा उन्होंने साथरियों को भी बताया।

हुकम हुवौ वेवाण चलाया, तत वहंत दूणपुरि आया।
नगर नजीक थळी एक थाई, जींह सतगुर परगास्यौ आई।14।

जाम्भोजी तुरन्त अपनी शक्ति से विमान पर सवार होकर दूणपुर आये और नगर के पास एक रेत के टिले पर उन्होंने आसन लगाया।

नीरति हुई वीदो चड़ि आयौ, नी खर मतौ मन मांहि उपायौ।
एण्य पुरेष न सीस न नाऊं, मोर देखि ठोकर की लाउं।15।

जब जाम्भोजी के यहां आने की बीदे को सूचना मिली तो वह वहां आया। उस दुष्ट ने अपने मन में ऐसा सोचा कि इस पुरुष को शीश नहीं झुकाऊंगा और पीठ में ठोकर मारुंगा।

पल एक हुई सुमति मति आई, मतो कियौ पण्य लात न वाही।
मन्यसा फेरी वात वीयांसे, वाद रूप होय बैठो पासै।16।

परन्तु क्षणभर में ही उसके हृदय में शुद्ध विचार आया, तो उसने ठोकर नहीं मारी। अपने मन की बात को बदलकर वह वाद-विवाद करने के लिये गुरु महाराज के पास बैठा।

दुहा

मन्य माण तौ अति घणौ, घणौ वाद अहंकार।
किसन चिळत अवतार का, लहै न आळिगार।17।

बीदे के मन में अभिमान और वाद-विवाद भरा पड़ा था। लेकिन उसे जाम्भोजी महाराज की सच्चाई का पता नहीं था।

चौपई

को जोगी को सन्यासी, को तापस को तीरथवासी।
को सीध को साध कहावै, को भगत भगवंत धीयावै।18।

बीदा कहता है-कोई योगी है, कोई सन्यासी है, कोई तपस्या करता है, कोई तीर्थ करता है, कोई सिद्ध है, कोई साधु और कोई भक्त भगवान का भजन करता है।

थे आपे आप ज देव कहावौ, सो देवापण आज दिखावौ।
जींह आसत्य तूं देव कहावै, गत्य परमोधै दुनी नवावै।19।[5]

परन्तु आप खुद को देव मान रहे हो, उस देवपन को आज मुझे दिखावो। आप किस शक्ति से देव कहलाते हो और संसार में देव बने फिरते हो।

सतगुर कहै संभळीयौ लोई, अपरच जीव नै परचै कोई।
जीह परचै थारौ मन मांनै, सो परचौ तूं दाखवि म्हांनै।20।

जाम्भोजी महाराज कहते हैं-हे लोगों सुनो, मूर्ख कभी नहीं समझता है। उन्होंने बीदे से कहा-जो परचा तुम पाना चाहते हो, वह मुझे बताओ।

वीदो कहै ओ परचो दीजै, यां आकां र आंब करीजै।
जगदीस कहै अह आंबा होवा, ऊरा लीयो देखो जु जोवा।21।

बीदा कहता है कि इन आक के पेड़ों से आम के फल करो। तब श्री जाम्भोजी महाराज कहते हैं, ये तो आम हो गये, इन्हें इधर लाकर देखो।

भेदी कहै देव जी नहीं सोभा, आंब करै गोड़िया देव जांभा।
देव कहै सोह भरम रति मांगो, मन मानै सो परचो मांगो।22।

बीदा कहता है-यह परचा खास नहीं है। ऐसे कार्य तो गौड़ियां लोग भी करते हैं। तब जाम्भोजी महाराज कहते हैं-तुम्हारी इच्छा हो वैसा परचा मांगो।

जे तुं अकळ नै जइ कळीयौ, दीसै नींब नींबोळयां फळीयौ।
नींबोळी नारेल दीरावौ, एण्य परचै मोनै परचावौ।23।

आप यदि सामर्थ्यवान हैं तो नींबौलियों को नारेल बना दो। इस परचे से मुझे विश्वास होगा।

दुहा

मेर त सिरजणहार की, दुनियां कूड़ी मेर।
साध सेवग क कारणे, नींब कीया नारेल।24।

केवल भगवान की शक्ति ही सच है और संसार की सब शक्तियां झूठी हैं। गुरु महाराज ने अपने सेवकों के कारण नींब के भी नारेल लगा दिये।

चौपई

धन्य धन्य झांभा जे जे मन कीया, नींबड़ीयां नारेल थीया।
नफर मेल्ह नारेल हकार, आण्य सभा मां तुरति वोपार।25।[6]

जाम्भोजी महाराज को धन्य है, जिन्होंने नींब के भी नारेल लगा दिये।

बीदा ने अपने सेवकों से वे नारेल अपनी सभा में मंगा लिये।

भांनै जीमै लागै मीठौ, असो अचंभौ सुण्यौ न दीठौ।
वीदो कहै सोह को मिनख कहावै, नींबोळीयै नारेळ निपावै।26।

उन नारेलों को फोड़कर, वे खा रहे हैं। वे मीठे नारेल हैं। ऐसा चमत्कार उन्होंने न कभी सुना था और न कभी देखा था। बीदा कहता है कि नींबोलियों के नारेल तो मनुष्य भी बना सकता है।

एक सभा मां कहै अभेदी, आ तो छै गोड़ीयां री वेदी।
वीदो अभेदी कहीयै धीनुं, एण्य परचै म्हारौ मन न पतीनुं।27।

उस सभा में एक अज्ञानी कहता है कि ये सब गौड़ियों की विद्या है। अज्ञानी बीदा कहता है कि इससे हमारे मन में विश्वास नहीं होता है।

जीतरी कळा मिनख र दावै, अती करतो देवळ जावै।
तोनै छै झांभा देव रौ दावौ, उदबुद परचौ मोहि दीखावौ।28।

मनुष्यों के समान काम करने वाला देवता नहीं कहलाता है। हे जाम्भोजी, यदि आप वास्तव में देव हो तो मुझे कोई अनोखा चमत्कार दिखाओ।

दुहा

साध सेवग क कारणे, सतगुर आयो भाय।
दाखवि परचौ सो दिवां, (सो) थारै मन्य पतियाय।29।

अपने सेवक का संकट हरने के लिये श्री जाम्भोजी महाराज भावुक होकर कहते हैं कि तुम अपनी इच्छा से बताओ, हम वैसा ही चमत्कार दिखायेंगे।

जो तुं आप सति देव छै, करे पांणी ता दूध।
बकसूं साध ज मोतियौ, परचौ मांनू सूध।30।

बीदा, जाम्भोजी से कहता है–यदि तुम सच्चे देव हो तो पानी का दूध बना दो, तो मैं मोती मेघवाल को आपके परचे को सच्चा मानकर क्षमा कर दूंगा।

चौपई

नफर ताहरौ मेल्ह्य नीवाण्य, कळस छाल्या पाणी कौ आण्य।
आण्य पाणी ढ़कि मेल्ह्यो पास, सुध्य सबद सतगुर परगास।31।

जाम्भोजी कहते हैं–अपने नौकर को भेजकर पानी का घड़ा मंगाओ।

जब पानी गुरुजी के पास रख दिया तो उन्होंने शुद्ध सबदों का उच्चारण किया।

घणी भांति को दूध कहावै, किसो दूध थारै मन्य भावै।
जग मां उतिम गऊ कहावै, करौ दूध म्हारै मन्य भावै।32।

श्री जाम्भोजी महाराज कहते हैं कि दूध कई प्रकार के होते हैं, तुम्हें कौनसा दूध चाहिये। बीदा बताता है कि संसार में गाय का दूध श्रेष्ठ है, वही बना दो।

हुवौ दूध सभा मां आवौ, आप पीयो औरां न पावौ।
उजल दूध सुहावै दीठौ, सुवाय सुवादि सुहावै मीठो।33।

उसी समय जाम्भोजी ने सभा में उस पानी का दूध बना दिया और कहा तुम भी पीवो औरों को भी पिलाओ। वह दूध बहुत सफेद, स्वादिष्ट और मीठा है।

भोपा भरड़ा कहै स कूड़ौ, वीदो कहै औ मंत्र रूड़ौ।
ओह मंत्र म्हानै सीखावौ, थारै नफर सूं न करुं दावौ।34।

बीदा कहता है कि ये भोपे और पुजारी सब झूठ कहते हैं परन्तु आपका यह मंत्र सच्चा है। यह मंत्र आप मुझे सिखाओ, मैं तुम्हारे सेवक को तंग नहीं करुंगा।

दुहा

जे मति पांणी उपजै, वरसै आभै नीर।
गऊ ज खड़ पांणी चरै, उतिम उपजै खीर।35।

जब वर्षा होती है, तब गायों को चरने के लिये हरी घास मिलती है और पीने को पानी मिलता है, उससे उत्तम दूध होता है। यह स्वाभाविक है, किसी मंत्र से नहीं होता है।

जे मत्य जीव ज संचरै, पींड मां पींड उपाय।
जे मंत पांणी दूध हुवै, सो मंत सीख्यौ न जाय।36।

जाम्भोजी कहते हैं–जिस प्रकार से जीव के शरीर में दूसरा जीव पैदा होता है, इसी प्रकार ही पानी का दूध बनता है। यह मंत्र सिखाया नहीं जाता है, यह तो भगवद् कृपा से होता है।

चौपई

वीदो कहै गल्ल लेखण्य दोत मंगावै, कहि मुंहता नै मंत्र लीखावै।
ठाकुर कहै स कहीयो कीजै, कहो देव ज्यौं मंत्र लीखीजै।37।

बीदा अपने मंत्री को कहकर उस मंत्र को लिखने के लिये कलम-दवात मंगाता है और श्री जाम्भोजी से निवेदन करता है कि यह मंत्र लिखाओ।

तीन्य लोक का जीव जीवांर, सासि सासि जीवां नै सार।
अतरा रोजी पुरसोई, जीह क सबदि पाणी दूध होई।38।

जो तीन लोकों के जीवों का भरण-पोषण करने वाला परम पिता परमात्मा है, उसी के वचनों से ही पानी का दूध बनता है, ऐसा गुरुजी ने कहा।

सांभल्य मुहतौ मन्य मगसाणौ, थीर क्यौं मन न मीलीयौ टाणौ।
औं ठाकुर कळ लहै नै काई, ओह मंत्र म्हां लिख्यौ न जाई।39।

जाम्भोजी महाराज के ऐसे वचन सुनकर, मोहता मन में संकुचा गया और अपने डोले हुए मन को पुनः स्थिर किया। ये ठाकुर बुद्धिमान नहीं हैं, ये लिखने वाला मंत्र नहीं है।

पींड मां जीव रहै जीण्य थाई, जीव तणी थ्यत्य लही न जाई।
ओ लख चौरासी जाण जीवी, तिह की मन्यसा सूं पांणी दूध हुवी।40।

जैसे शरीर में जीव रहता है और इस बात के भेद को नहीं जाना जा सकता है लेकिन भगवान जो चौरासी लाख जीवों के व्यवहार को जानता है, उसकी मनसा से ही पानी का दूध बनता हैं।

दुहा

वीदो कह परचा दिया, (सो) म्हाने आया दाय।
सहंस डील्ह करि सांवठा, सहंस रूप दिखाय।41।[7]

बीदा गुरु जाम्भोजी से कहता है कि आपने जो परचे दिये हैं वे मुझे पसन्द आये हैं लेकिन हमें अब विराट रूप दिखाओ।

चौपई

सतगुर कहै सहंस डील्ह हुवौ, संहंस जणां नै दीखै दुवौ।
जो जण मुखता कूड़ न भाखै, इधकी कहै जै ओछी राखै।42।

जाम्भोजी तब सहस्त्र शरीर दिखाते हैं जो सबको अलग-अलग दिखते हैं। वह सतगुरु झूठ नहीं बोलता है और सत्य बात कहता है।

जो जो परचा सुध कहीजै, जीह कहीय थारो मंन धीजै।
जां जां गांवां जोति उपनां, तां ठावा मेल्ह्यौ परधानां।43।

यदि सच्चे परचे को जानना चाहते हो तो अपने विश्वास पात्र मनुष्यों

को उन गांवों में भेजो, जहां-जहां ज्योति है।

जे तौ जग मां आय अवतरीयौ, परचे बाझि न लाभै खरीयो।
परचौ दे म्हानै परचावौ, संहंस डील्ह एक ठोड़ दिखावौ।44।

बीदा कहता है यदि आपने इस संसार में अवतार लिया है तो हमें परचा अवश्य दिखाओ और सहस्त्र शरीर हमें एक स्थान पर ही दिखाओ।

सुत पुराण विचार जोयसी, चहूं जुगां मां हुई न होयसी।
वासदेव को अवतार ज सोई, एकै ठोड़ न मीलही दोई।45।

वेद और पुराणों में ऐसा लिखा है कि वासुदेव श्री कृष्ण के सिवाय ऐसा सहस्त्र शरीर वाला न कोई हुआ है और न होगा।

दुहा

कलम ज सिरजणहार की, परति न पाछी होय।
जो करिसी सो भुगति सी, भरम न भूलौ कोय।46।

उस रचनाकर्त्ता परमात्मा ने जैसा कर्मो का लेख लिखा है वैसा भुगतान ही होगा। भ्रमवश उस परमात्मा को न भूलो।

चौपई

एक मंत्री कहै पंच डील्ह करावौ, सहंस डील्ह कौ मतौ रखावौ।
पांच किया सो सहंस हु करिसी, ओह परचौ पांचे ही सरिसी।47।

तब एक मंत्री कहता है कि पांच शरीर आप बनाओ। जो पांच बना सकता है, वह सहस्त्र भी बना सकता है। ये परचा पांच शरीर बनाने से ही पूर्ण हो जायेगा।

सतगुर वायक जिंह की कलम फिरावै, आह कलम पाछी नहीं आवै।
संहस डील्ह हुकम सूं हुवा, थारै जुड़ति तां दयौ दुवा।48।

इस परमात्मा के जो वचन एक बार हो जाते हैं, वे सत्य होते हैं। उनकी कृपा से सहस्त्र शरीर हुए जो अलग-अलग दिखाई दिये।

घाटि वाध्य चालीस चलाया, किसन चिळत देखण परठाया।
जात प्रवाण्य सरूप क दीठौ, होम करै तौ सभा बइठौ।49।

बीदा ने चालीस आदमियों को जाम्भोजी का परचा देखने के लिये भेजा। जहां-जहां वे लोग गये, वहीं उन्होंने जाम्भोजी महाराज को हवन करते हुए बैठा देखा।

जैण माणस साम्यगरी सुधा, अकल्यवत नरनारी बुधा।
देव देव करि बोलै बाणी, परसै आय महापुरष जांणी।50।

वहां के बुद्धिमान स्त्री-पुरुष हवन की सामग्री लिये हुए वहां आते हैं। उन्हें महापुरुष जानकर वे लोग देव-देव कहकर उनके चरणों में नमस्कार करते हैं।

दुहा

चरण कंवळ करै वंदणां, परस्य विलगै पाय।
सहस डील्ह करि प्रगट्यौ, सो गुर ल्यौ नै जाय।51।[8]

वे लोग वंदना करते हुए गुरु के चरणों में लिपटते हैं। उस गुरु के सहस्त्र रूप हैं, उसकी शरण में जाओ।

चौपई

चरण वंदय जैण पूठा आया, घणै हरख सूं पूछै राया।
वीदो गुर दीवाण्य बइठौ, कहो भाई थे जिसड़ो दीठौ।52।

वे लोग जब गुरु महाराज की चरण वंदना करके वापिस आये तब बीदा बहुत हर्ष से पूछता है, तुम लोगों ने जो देखा है वह सत्य कहो।

छंदो राखि कूड़ मत भाखौ, जिसड़ी दीठौ तिसड़ौ दाखौ।
जांत प्रवाण सरूप क दीठौ, होम करै तो सभा बइठौ।53।

तुम लोग झूठ मत बोलना। जैसा देखा है वैसा कहो। वे बताते हैं कि हमने जाम्भोजी को वहां भी हवन करते हुए बैठा देखा है।

जैण माणस साम्यगरी सुधा, अकल्यवत नर नारी बुधा।
देव देव करि बोलै बाणी, परसै आय महा पुरिष जांणी।54।

वहां के बुद्धिमान स्त्री-पुरुष हवन की सामग्री लिये हुए वहां आते हैं। उन्हें महापुरुष जानकर वे लोग देव-देव कहकर उनके चरणों में नमस्कार करते हैं।

जो आवै सो विलगै पाए, उदबुद वात कही नहीं जाए।
औ पुरेष थळीया बइठौ, गांव गांव म्हेसर पर दीठौ।55।

वहां जो भी आता है, उनके चरणों में प्रणाम करता है। हम कोई झूठ नहीं कहते हैं। यही पुरुष जाम्भोजी जो यहां विराजमान है, इनको हमने वहीं प्रत्येक गांव में देखा है।

दुहा

सतगुर सेती वाद करि, कुवचन कह्या निसंक।
किसन चिरत परि देखि क, वीदे मानी संक।56।

बीदा ने सतगुरु जाम्भोजी से विवाद करके उन्हें कटु-वचन कहे थे। उनके अद्‌भुत चमत्कारों को देखकर बीदा बहुत लज्जित हुआ।

चौपई

काहे कदा रहीयो मुकराणौ, डर पैठो मन मां पछताणौ।
म्हे झांभाजी घणां खियार्‌यौ, काह नै का सुण होयसी म्हारौ।57।

बीदा सोचता है कि मैं इतने समय आपसे विमुख था। वह डरता हुआ, अपने मन में पश्चाताप करता है। हे जाम्भोजी महाराज, मैंने आपको बहुत कष्ट दिया है, अब मेरा क्या होगा।

तूं कोप रूप म्हां पास आयौ, त्यै निरख मतो मन मांहि उपायौ।
एण्य मूरिख नूं सीस न नाऊं, मोर देखि ठोकर की लाऊं।58।

जाम्भोजी कहते हैं, हे बीदा, तूं क्रोधित होकर हमारे पास आया था और मन में ऐसा सोचा था कि इस मूर्ख को मैं नमन नहीं करुंगा और पीठ में ठोकर मारुंगा।

आया पछै सुमति मति आई, मतौ कीयो पण्य लात न वाही।
मन्यसा पाप करम तोहि लागो, सतगुर तणौं न पाल्यौ तागो।59।

जब तुम मेरे पास आ गये तो तुम्हें सद्‌बुद्धि आ गई। तुमने ठोकर का मन तो बनाया था, लेकिन ठोकर नहीं मारी। इसलिये वह तुझे मनसा पाप लगा। क्योंकि तूनें सतगुरु की आज्ञा नहीं मानी।

अदीठ दुखणौ मगरे होयसी, जड़ीया बूंटी कहीं न जायसी।60।[9]

जाम्भोजी कहते हैं-इस अवमानना से तुम्हारे पीठ में अदीठ (अदृश्य फोड़ा) होगा, जो किसी भी उपचार से ठीक नहीं होगा।

दुहा

सतगुर सुंवरायती, कुबधी चड़यौ कलंक।
कहै क भव नीं छूटिसी, लिख्यौ खुदाई अंक।61।

बीदा ने सतगुरु जाम्भोजी से नाराजगी रखी, इसलिये वह कुकर्मी कलंकित हुआ। वह कई जन्मों तक इस पाप से नहीं छूटेगा, ऐसा भगवान ने उसके भाग्य में लिख दिया हैं।

परचै परचै पारखू, जां जांणियौ विमेख।
से क्यौ परचै मूरिखा, जां दोरै को लेख।62।

श्री जाम्भोजी महाराज के परचों को तो जो पारखी हैं, वे ही जानते हैं।

जिसके भाग्य में नर्क जाना लिखा है, वे मूर्ख कैसे समझेंगे।

कळह न कंकळ न कीयौ, न कराड़ि न खेढ़ि।
सहज्य छुड़ायो मोतियौ, करि अपणा की केढ़ि।63।[10]

जाम्भोजी महाराज ने कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं किया और न ही किसी को कष्ट दिया। उन्होंने सहज ही अपने भक्त मोती मेघवाल को अपना जानकर छुड़ाया।

ए वडो कोय न वाहरुं, जे जण साचो होय।
साचो सतगुर सिंवरता, पिसण न गंजै कोय।64।

यदि मनुष्य सच के रास्ते पर हो तो सतगुरु से बड़ा उसका मददगार और कोई नहीं है। सच्चे सतगुरु का स्मरण करने पर उसको कोई भी शत्रु वश में नहीं कर सकता।

सतगुर सेती बाद करि, कदे न जीतो कोय।
वील्ह कहै सेवा करौ, नव नव्य न्यजम होय।65।

सतगुर से कभी वाद-विवाद मत करो, उनसे कोई जीत नहीं सकता है। कवि वील्होजी कहते हैं उनकी सेवा करो और नवण करके अपने मन को शुद्ध करो।

संदर्भ टिप्पणियां

1. प्रथम वंदु गुर देव कूं, दुतियै वंदुं सब साद।
त्रितिये वंदु महा विसनुं कुं, कहुं चिरत पहलाद।1।
उदोदास-पहलाद चिरत, सं. 1868

2. धन जननी जिन जनमियो, प्रहलाद भक्त सुध संत।
पांच क्रोड़ ले उधर्‌यो, चल्यो विष्णोई पंथ।168।
साहबराम-जम्भसार

3. गोविन्द अग्रवाल ने चूरू मण्डल के शोधपूर्ण इतिहास में पृ. 401-404 पर द्रोणपुर क्षेत्र का वर्णन किया है।

4. (क) बात वीदे जोधावत की-एक समै वीदो जोधावत मोतीये साध ने रोक्यौ। झांभौजी मोतीये की मदत कीवी। वीदो वाद करि आयो। कोई जोगीअलख धीयावै। कोई जंगम-सन्यासी, सीव ने ध्यावै। कोई गोरख ने ध्यावै। कोई भगवंत ने ध्यावै। कोई परमेसर ने ध्यावै। सो कोई दूसरै देव री ध्यावना करै छै। तूं तो आप देव कहावै छै। सो देवपणो मनै दीखाळ। आज थारी सिद्धाई जाणी जायसी। देवजी कहै-थारै मन मानै सो पूछ। वीदो कह्यो, आके आंबा कीया। नींबे नारेल कीया। पाणी त दूध किया। वीदो कहै-आ थांहरै सोरंभ क्यांरी आवै। जांभोजी

श्री वायक कह-'मोरे अंग्य न अळसी तेल न मळीयो न परमळ पीसायो।'
परमानन्द जी का पोथा, पत्र 11

(ख) दूणपुर वीदो रहै, जोधावत तिणवार।
साध छुड़ावण कारणै, आयो देव दुवार।।
साहबराम-जम्भसार, पृ. 433-34

(ग) बीदा जोधावत का समय संवत् 1497-1568 का है। वह जाम्भोजी (1508-1593) का समकालीन था। जाम्भोजी की कृपा मोती मेघवाल पर हुई थी। मोती को वीदे की कैद से छुड़ाने संभवत: संवत् 1561 में जाम्भोजी दूणपुर आये थे।
बीदावत राठौड़ों का इतिहास-कु. राजेन्द्र सिंह पृ. 50

5. वीदो कहै सुण देवजी, अद्‌भुत परचो मोहि दिखाव।
जंभ कहै अब देखले, जो तेरे मन भाव।
जम्भसार-पृ. 247

6. (क) नींबे नारेल, आके आंब, तम बिण कुण करै गुर झांभ।
देवो कृत हरजस

(ख) मीठै मिल्य पालटियै खारा, गुर मिलियै रो अै उपगारा।
गुर पाणी हुंतो दूध पियावै, नींबड़ियां नारेळ निपावै।65।
वील्होजी-कथा जैसलमेर

7. जाम्भोजी की वाणी के प्रसंगों में भी द्रोणपुर की कथा का वर्णन है। यह प्रसिद्ध है कि उनकी वाणी का प्रसिद्ध शुक्लहंस सबद भी उन्होंने वीदा जोधावत के प्रति कहा था। देखिये-'श्री गढ़ आल मौत पुर पाटण भंय नागोरी, म्हे ऊंडे नीरे अवतार लियो।'
स्वामी रामानन्द गिरि, जम्भसार पृ. 433-445

8. (क) भगवद् गीता के अनुसार श्रीकृष्ण ने अर्जुन को द्वापर युग में अपने सहस्र रूप दिखाये थे।

(ख) कलयुग में श्री जाम्भोजी ने राव वीदो को अपने सहस्र रूप दिखाये थे।
तेता युग मां हीरा वीणज्या, दवापुर गउ डंवाळी।
वनरावन मां वंस बजायौ, कळियुग चारी छाली।।
जाम्भोजी का सबद

9. वाद कियो बीदै जोधावत, मरग्यो भूप रजा करके।
मरगे ऊंठ हुवो बणियेगो, टूटी टांग पड़यो करके।।
हिम्मतराय गायणा कृत छंद

10. (क) मोतीये की मदति कीन्ही, दूणपुर आयो।3।
दुरगदास हरजस

(ख) मोतीये की परतग्या राखी, परचा दिया अपार।
हासिम कासिम साध उबार्‌या, इसकंदर की वार।5।
साखी

11. परमोध रूपी छपइया

सुगर चवै सोह साच, सुगर सुकरत फुरमावै।
सुगर दया दत दखवै, सुगर जीव नहीं मरावै।
सुगर सीलवंत होय, सुगर मन सदा संतोषी।
सुगर सहज सुख लील, सुगर परजीवां पोखी।
सुगर सुमारग दखवै, जण तारण आपो तरण।
वील्ह कहै जी पारिखु, सुगर परखि वंदो चरण।1।[1]

सत्गुरु का कथन सत्य है। वह अच्छे कर्मो का परामर्श देता है। सत्गुरु के मन में अहिंसा, शील और संतोष सदा रहता है। सत्गुरु स्वाभाविक रूप से सुखों का आनन्द लेने वाला और दूसरे जीवों का पालन पोषण करने वाला होता है। सत्गुरु सुमार्ग को दिखाने वाला, दूसरों का एवं स्वयं का उद्धारक होता है। वील्होजी कहते हैं कि ऐसे गुणों वाले सत्गुरु के चरणों की हमें वंदना करनी चाहिये।

कुगर कहै कठे कूड़, कुगर कुमारगि लावै।
कुगर करै कुकरम, कुगर भोळा भरमावै।
कुगर भंग पोसती, कुगर मद मास अहारी।
कुगर दया दत हीण, कुगर परजीव संघारी।
कुगर कुकरणी दखवै, अकल्य हीण उब सहीये।
वील्ह कहै जी पारिखु, कुगर कुपात न वंदीये।2।

यहां कुगर अर्थात् अज्ञानी एवं आडम्बर में जीने वाले गुरु के लक्षणों की ओर संकेत है। वे झूठ बोलने वाले, कुमार्ग पर ले जाने वाले, अनैतिक कर्म करने वाले और भावुक लोगों को भ्रम में डालने वाले होते हैं। ऐसे अज्ञानी गुरु भांग, पोस्त, शराब, मांस आदि खाने-पीने और जीवों को मारने वाले होते हैं। ऐसे अज्ञानी गुरुओं की करनी (कर्म) हीन होती है तथा वे विवेकहीन भी होते हैं। वील्होजी कहते हैं कि ऐसे गुरुओं के पतित कर्मो को देखते हुए उनकी वंदना नहीं करनी चाहिये।

सुगर ध्यायां सुख होय, कुगर ध्यायां दुख पायस।
सुगर भेद क्रम छेद, कुगर भेद पाप कुमायस।

सुगर संग सुख रंग, कुगर संग साथ विगोवै।
सुगर उतारै पारि, कुगर डूबै अर डुबोवै।
सुगर सेवै लाभ सुरगां, कुगर दुख दोरै तणौ।
वील्ह कहै जी पारिखु, सुगुर कुगर अंतर घणौं।3।

सत्गुरु का ध्यान करने से सुख की एवं अज्ञानी गुरु के चिंतन से दु:ख की प्राप्ति होती है। सत्गुरु भेद को जानने वाला है, जबकि अज्ञानी गुरु पाप को जन्म देता है। सत्गुरु की संगति से सुख एवं कुगुरु की संगति से परमात्मा से वियोग ही सहना पड़ता है। सत्गुरु संसार से पार उतारता है, जबकि अज्ञानी गुरु उसे इस संसार के अंधकार में ही धकेलता है। सत्गुरु की सेवा से स्वर्ग व कुगुरु की भक्ति से नर्क की प्राप्ति होती है। वील्होजी सुगर एवं कुगर में अन्तर दर्शाते हुए सुगर की शरण में जाने की शिक्षा देते हैं।

लाभै इम्रत खीरि, जाण्य क्यौ जहर न पीजै।
मेल्ह सजणां की गोठि, पीसण सूं गोठि न कीजै।
लाभै सुध्य केकाण्य, टार वेछाड़ न चड़ीयै।
मेल्ह गोख सुख सेझ, देखतां कूप न पड़ीयै।
तारै सुगुर तरीयै भुंजळ, सुपह सुमारग अड़ीयै।
वील्ह कहै जी पारिखु, कुगुर कुमारग बूड़ीयै।4।

सत्गुरु की सत्संगति का लाभ अमृत रूपी खीर के समान है, जिसे छोड़कर जहर को न पीओ। अपने मित्रजनों की संगति को छोड़कर शत्रुओं की संगति न करो। अच्छे घोड़े को छोड़कर बेकार टट्टू पर नहीं चढ़ना चाहिये। भक्ति शैय्या को छोड़कर कुएं में नहीं पड़ना चाहिये। सत्गुरु भवसागर से पार करता है। उनका बताया हुआ रास्ता लेना चाहिये। कवि वील्होजी कहते हैं कि हे पारखी सज्जन, अज्ञानी गुरु के बताये रास्ते पर चलने से डूब जाओगे।

विसन मील्यौ मन सुध, हिरदै निरमल मुख दीठो।
सतगुर सुगुर पिछाण्य, भाव सूं भेद पईठो।
संभल्य गुर को ग्यान, जुगति सूं कर कुमाई।
चालै हक विचारि, जाण्य विष वसत पराई।
नांव जपै निरहार कौ, पर उपगारी प्रीति घण।

वील्ह कहै एक वीनती, विसन मिल्य गुणवत जण।5।[2]

विष्णु भगवान से साक्षात्कार होने से अन्तरात्मा शुद्ध, हृदय स्वच्छ तथा मुख चमकीला बन जाता है। इसी प्रताप से भक्तजनों को सत्गुरु की पहचान विचार भेद से ही करनी चाहिये। गुरु ज्ञान से युक्तिपूर्वक कमाई करनी चाहिये। जैसा परमात्मा देता है, उसे अच्छा मानते हुए पराये धन को विष की भांति मानना चाहिये। भक्तजनों को विष्णु के नाम का स्मरण करते हुए भलाई करनी चाहिये। वील्होजी विनती करते हैं कि मनुष्यों को विष्णु के नाम में अनेक गुणों की पहचान करनी चाहिये।

जे खर बोझ ठाण्य, पास्य कजीये के काणौ।
कण को रीड़ कजीयो चर, दिन प्रत्य दीजै दाणौ।
खरतर खिजमति दार, ख्यांति खुरहरो करीजै।
पाणी पणहटि जाय, नीर निरमल न्हावीजै।
छुटतो ओखर करै, उकरड़ी जाय लीटै।
वील्ह कहै कीसन चीळत वीण्य, नीहचै असली न पाल्टै।6।

इस पद में असली गुण की पहचान गधे और घोड़े की तुलना से की है। गधा बोझ ढ़ोने वाला जानवर है। यदि उसको घोड़े के पास बांध दिया जाये, उसको घोड़े के समान दाना दिया जाये, उसकी सेवा करने वाला नौकर उसको खुरहरा (घोड़े की धूल झाड़ने का उपकरण) करता है व पनघट पर ले जाकर उसे साफ पानी से नहलाता है लेकिन जब उसको छोड़ा जाता है तो वह गंदगी करता है और अकूरड़ी (गन्दगी का ढ़ेर) पर जाकर लेटता है। कवि वील्होजी कहते हैं कि विष्णु भगवान की कृपा के बिना निश्चय ही असली गुण नहीं छूटते हैं।

पुरख होय असलीक, जाण्य क असत न भाखै।
करै सुगुर की सेव, नीच ता आपो राखै।
पापां ता पूठो सीर, धरम की सदा दीलासा।
वह वरत अनहंत, अति साहेब की आसा।
मध्यम सेती न मीलै, उतिम की संगति रहै।
वील्ह कहै सत सुर नरां, अता वीड़द असली वहै।7।

जो सच्चा पुरुष होता है, वह जानबूझकर असत्य बोलता नहीं है। वह सत्गुरु की सेवा करता है और दुर्जनों से दूर रहता है। पापों से मुख मोड़ता है,

धर्म की हृदय में आशा रखता है, वह सत्य पर चलता है और अन्त में विष्णु की आशा करता है। जो बुरे लोगों की संगत न करे, उत्तम के साथ रहें, कवि वील्होजी कहते हैं कि ऐसे सत्यवादी देवपुरुष इसी तरह से वास्तविक ज्ञान के प्रति ही अपना जीवन यापन करता है।

देव न मेली दुज्य, पंथ ता पासै टळिया।
मेल्ह सुगर की गोठि, जाय सैताने भिळिया।
कूड़ घड़ै मन मांहि, जीभ ता अळीयो भाखै।
आप न करही धरम, अवर करतै नै राखै।
राता विष विकार सूं, आप सुवारथी परहती।
वील्ह कहै एक वीनती, विसन टाल्य वेदांनती।8।

जो परमात्मा के रास्ते को छोड़कर दूसरे कुकर्मियों के साथ चला गया। जो सत्गुरु की संगति छोड़कर शैतानों के साथ हो गया। संसार के लोग अपने मन में झूठ व जीभ से गलत प्रवचन करते हैं। स्वयं न कार्य करते हैं और न दूसरों को करने देते हैं। स्वयं विषय-विकारों में फंसे हुए, स्वार्थ के वशीभूत रहते हैं। वील्होजी यह विनती करते हैं कि हे विष्णु भगवान, मुझे ऐसे झूठे वेद-कथन कहने वालों से दूर रखिये।

पुरष एक प्रगटयौ, पाप पुंन स्यंध्य करंतौ।
नहीं भूख तीस नींद, रह निराकार नीरंतौ।
रूंख विरख विसराम, तजी मनहुं ता माया।
मंडप मैड़ी कोट, तज्या घर मिंदर छाया।
वील्हा देखि विवांस्य मन, साधां गुर साचौ मील्यौ।
झंभ सीरीसो अैसो गुर, को कल्य मां ओरा हुं सांभल्यौ।9।

भगवान जांभोजी के उस आदि रूप पर विचार करते हुए कहा है कि एक ऐसा पुरुष प्रकट हुआ है जिन्होंने पापों को पुण्य में बदल दिया है। उन्हें न भूख, न प्यास लगती है एवं वे निराहार रहते हैं। पेड़ के नीचे विश्राम करते हैं तथा मन से माया का त्याग कर दिया है। उन्होंने मंडप, चौबारा, किले, घर और मन्दिर आदि की छाया का त्याग कर दिया है। कवि वील्होजी कहते हैं कि सच्चा गुरु जांभोजी मिला है, जिनके समान कलयुग में और कोई नहीं हुआ है।

तपै गीणंदर सूर, चंद पण्य एको छाजै।
पांणी नाऊं एक, पवण पण्य एको वाजै।

मह पण्य एकाएक, वासदेव एक सवाई।
झंभ गुर पण्य एक, डरे जंपो भाई।
रूप घणां आगै कीया, माण गरब दैतां मल्यौ।
झंभ सीरीखो अैसो गुर, कल्य मां ओर न सांभल्यौ।10।

आकाश में एक सूर्य और चन्द्रमा है। पानी का, हवा का एक ही नाम है। पृथ्वी भी एक है और वासुदेव (अग्नि) भी एक ही है। सत्गुरु जाम्भोजी भी इस कलियुग में एक ही है, जिनको कुकर्म से बचने के लिये स्मरण करो। जाम्भोजी ने आदिकाल में अनेक रूप धारण किये हैं, जिन्होंने राक्षसों के अभिमान को चूर किया। जाम्भोजी जैसा सत्गुरु इस कलियुग में और कोई नहीं सुना है।

अंतरौ थळी सुमेर, नाडी अर मानसरोवर।
अंतरौ हंस'र काग, अंतरौ तुरंगम अर खर।
अंतरौ पायक पात्यसाह, अंतरौ तारा अर सिसिहर।
अंतरौ आक'र अंब, अंतरौ चंदण अर नखतर।
काच कथीर कंचण हीर, अहनिस जिसौ पटंतरौ।
और गुरां अर झंभ गुर, सूर अंधेरे अंतरौ।11।[3]

जैसे मरुभूमि और पर्वत में, छोटा तालाब और मानसरोवर में, हंस और कौआ में, घोड़ा और गधा में, प्रजा और राजा में, आक और आम में, चन्द्रमा एवं नक्षत्र में, सोना व हीरा में, दिन व रात में, सूर्य एवं अंधेरे में अन्तर है। वैसे ही दूसरे गुरुओं और सत्गुरु जाम्भोजी में अन्तर है।

केवल न्यानी देव, सही सूं सति करि जाणौ।
सुध्य सबद सरि वहो, जेज मन मांहि न आणौ।
खरो दया को धरम, सदा परतीते पाळौ।
ध्यावौ परउपगार, देखि परजीव दुखाळौ।
भाव सहेती साध सेव, करता करसन आणीयो।
भो सागर जीवड़ो तरै, जे तीन्य तत सति जाणीयो।12।

ब्रह्मज्ञानी जाम्भोजी को सही व सत करके जानो। उनके शुद्ध वचनों के साथ चलो। मन में देर न करो। सच्ची दया-धर्म की पालना करो। सदा जीवों से प्रीति रखो। हमेशा दूसरों की भलाई करो। दूसरों के दुःख को देखकर दुःखी होवो। इन जाम्भोजी महाराज की शुद्ध भाव से सेवा करो। ये

कृष्ण भगवान स्वयं ही आये हैं। हे जीव, तुम इस संसार रूपी सागर से पार उतर जाओगे, यदि तुम सत करके इनको जानोगे।

के के करै कुफरि कुन्याव, नांव नीरताय न मांनै।
चोरी लावै चित, साह सूं परचौ भांनै।
पाखंडी सूं प्रीति, वैर ज्ञानी सूं सारै।
हरि करि साच हारवै, आप अन्यायी न हारै।
पंथ मां पापी परवर्या, कुपह कीरीया छीज्यसी।
वील्ह कहै रे भाइयौ, कह्यौ कीसी पर कीज्यसी।13।

जो मानव काफिर (शैतान) होकर अन्याय करता है एवं परमात्मा का स्मरण नहीं करता है, मन में चोरी की भावना रखता है एवं परमात्मा का नाम भी नहीं लेता है, पाखण्डियों से स्नेह एवं ज्ञानी-जनों से दूर रहता है, परमात्मा के सत को छोड़कर अन्याय के रास्ते पर चलता है, वे रास्ते बताने वाले पापी लोग हैं, जो ऐसे दुष्ट कुकर्म करवाते हैं। वील्होजी कहते हैं कि ऐसे अन्यायी का भरोसा नहीं करना चाहिये।

भेदी सरसौ भेदि, गोठि ग्यानी सूं करीयै।
सुस बुध्य संध्य विचारि, पाप संगति परहरीयै।
झूठ वाद अहंकार, कळह तै कांठो लीजै।
ग्यान रतन कहे तास, जास मन्य खरो पतीजै।
अग्यानी सूं औळ्यजौ, काण्य काढ़ि टळि चालीयै।
वील्ह वीचरण गोठड़ी, मंन पहलाहुं पालीयै।14।[4]

अच्छे विचारों का चिन्तन करके, ज्ञानियों की संगति करनी चाहिये। बुद्धिपूर्वक विचार करके पापियों की संगति को त्याग दीजिये। असत्य, विवाद एवं झगड़ों से दूर रहना चाहिये। ज्ञान रूपी रत्न को ही खरा मानकर ग्रहण करना चाहिये। अज्ञानी से दूर रहें और उनसे बचकर चलना चाहिये। कवि वील्होजी कहते हैं कि यह सज्जनों की गोठ है, इसमें अवश्य शामिल होना चाहिये एवं दुष्टों से अलग रहना चाहिये।

अनंत वेर ओह जीव, भुंव्यौ चवरासी भीतरि।
आवागुंवण्य फिरेता, सह्या संगठ बोहली परि।
ऊंच नीच कुळ आय, कीया करम अविचारी।
वीक्यौ करम क हाथ्य, भोगव्या दुकरत भारि।

वील्हाजी विसन जंप्यौ नहीं, साधु गोठि न संचर्‌यौ।
पोह विण्य लाधा प्राणीयो, भव बोहला भूलौ फिरयौ।15।

अनेक बार इस जीव ने चौरासी लाख योनियों में भ्रमण किया है तथा अनेक दु:ख सहे हैं। तुमने ऊंच-नीच कुल में जन्म लेकर बिना विचारे कर्म किये। उन कर्मो के फलस्वरूप तुमने अनेक कष्ट भोगे। कवि वील्होजी कहते हैं कि तुमने विष्णु भगवान का स्मरण नहीं किया और न ही तुझे सही जानकारी मिली, इसलिये तू बहुत बार भवसागर में भूला हुआ घूमा है।

दीव दान दातार, दया पालग पण पूरौ।
साच सील संमरथ, पोहच्य पोरस सत सूरौ।
रहै पंच करि वस्य, कया अहार न पोखी।
जोग जुगति जागंत, सुगुर गुर सदा संतोषी।
कळंक नहीं निकळंक नर, अण गंजी अपरंपरौ।
वील्हा विसन न विसारीयै, आपति जांह पायो हरौ।16।

वह दान-दातार, दया-पालन के प्रण में पूर्ण है। सच, शील, समर्थ और पहुंच की शक्ति का शूरवीर है। पांचों शत्रुओं को उसने वश में कर रखा है और अपने शरीर का आहार से पोषण नहीं करता है। ऐसा गुरु योगी एवं समर्थवान है तथा हमेशा संतोषी वृत्ति का है। जिस पर किसी तरह का कलंक नहीं तथा स्वयं ही अजय और अपरम्पार है। कवि वील्होजी कहते हैं, हमें विष्णु भगवान को भूलना नहीं चाहिये जो विपत्ति में सहायता करते हैं।

कांय के काण्य परहरो, बारि रास्यप कै जावौ।
अंब वाढ़ि जड़ उखणौ, आक एरंड कांय वाहौ।
उखण्य नागरवेल्य कांय, विष वेली सींचावौ।
मेल्ह सुध्य मारग, असर उझड़ कांय धावौ।
प्रगटे सूर पगड़ो हुवौ, पंथ लाध भूला भुंवौ।
झंभ महागुर मेल्ह्य, कांय दोस गुरां भूतां नुंवौ।17।

हे जीव, तुम शुद्ध कर्म को किसलिये छोड़ रहे हो। तुम आम का वृक्ष काटकर, आक या एरंड को क्यों बो रहे हो? नागरबेल को उखाड़कर विष बेल क्यों लगाते हो? अच्छे मार्ग को छोड़कर कुमार्ग पर क्यों चलते हो। सत्‌गुरु जांभोजी महाराज सूर्य रूपी उदय हुए हैं, जिनके ज्ञान का प्रकाश है। वह सच्चा रास्ता बताने वाले हैं, उन्हें छोड़कर उन दोषी गुरुओं व भूतों को क्यों

नमन करते हो।

जहां कथीये कूड़, मन मान्य न हरावै।
हीय मंझ्‌य हुंकार, इंद दया न आवै।
आप थापी अयाण, जाय जाणे उनबूझै।
ओरां दे उपदेस, आप बूझे बो न सूझै।
सत्य भाष्य उथप करै, खोज कठि न आवै कहीं।
वील्हा केवळ झंभ विण्य, झूठा मन्य मांनै नहीं।18।

जहां झूठ का कथन होता है, वहां से अपना मन हटाना चाहिये। जिसके हृदय में अहं एवं क्रूरता का निवास है। जो व्यक्ति स्वयं अपने सिद्धान्तों को स्थापित करता है, ऐसे व्यक्ति पूछने पर स्वयं ही अज्ञानी सिद्ध होते हैं। दूसरों को उपदेश देते रहते हैं, स्वयं उस उपदेश से भी अनभिज्ञ रहते हैं। वे सच को झूठा बताते हैं, उनको सच्चा मार्ग कहीं भी नहीं मिलता। कवि वील्होजी कहते हैं कि सत्‌गुरु जाम्भोजी महाराज के अलावा हमें ऐसे झूठे लोगों का विश्वास नहीं करना चाहिये।

तिह कुसंगी को संग नीवारि, जांह नांव विसन को न भावै।
तिह कुसंगी को संग नीवारि, भूत भूतणी धीयावै।
तिह कुसंगी को संग नीवारि, सील साबितो न चालै।
तिह कुसंगी को संग नीवारि, धरम ध्यावतां पालै।
सुगुर सुमारग मेल्ह करि, साध संगति हूं टल्य रहै।
तिह कुसंगी को संग न कीजीयै, वील्हा सुपह छाड़ि कुपह गहै।19।

जहां विष्णु जी का नाम नहीं, उनकी संगति से, जहां भूत-प्रेत की उपासना हो, उनकी संगति से, जहां शील सदाचरण नहीं हो उनकी संगति से, जो धर्म के पालन में कंजूसी करते हो, उनकी संगति से, जो सत्‌गुरु, अच्छे रास्ते और साधुओं की संगति को छोड़कर चलता है, कवि वील्होजी कहते हैं कि हमें उनकी संगति नहीं करनी चाहिये जो सुमार्ग को छोड़कर कुमार्ग पर चलता है।

मध्यम की मति एह, नेह नीगुण सूं मंडै।
कर कुमल सूं भाव, भांग चरि देही भंडै।
साच कह्यौ न सुहाय, जाय झूठ नुं धीजै।
धरम दीसौ न धीयाय, पाप नुं खरौ पतीजै।

कुमल कुलखण पाकड़्या, वरज्यौ रहै न पालीयौ।
तेतीसां सूं तोड़ि करि वील्हा, चौतीसां दीस चालीयौ।20।[5]

अज्ञानी हमेशा बिना गुण वाले व्यक्तियों से प्रेम करते हैं। नशे से प्रेम करके भांग खाते हैं और अपने शरीर को कोसते हैं। उन्हें सच कहा अच्छा नहीं लगता और वे झूठ से प्रेम करते हैं। वे धर्म के मार्ग पर नहीं चलते। वे पापों में विश्वास करते हैं। वे नशे की बुरी आदत के शिकार हैं। मना करने पर भी वे नहीं रुकते। कवि वील्होजी कहते हैं कि वे तेतीस करोड़ देवताओं के मार्ग को छोड़कर चौतीसवें कुकर्मियों के मार्ग पर चलते हैं।

मूढ़ मुगध अग्यान, साध मंडळी न सोहै।
नंवण्य जाप न करै, बेस्य छौतीरा कचोहै।
विसन नांव जपीयै, तहां ढुकड़ो न आवै।
जे खीण्य बैसे आय, ठेक मसकरी चलावै।
जारी चोरी झूठ झगड़ौ, गुर वरजी सोई करै।
तांह सूं आपौ राखीयै वील्हा, गुर मेल्ह्या नीगुरा फीरै।21।

जो मूर्ख हैं, अज्ञानी हैं तथा साधुओं की संगति से प्रेम नहीं करते हैं, झुककर प्रणाम नहीं करते हैं और भांग पोस्त पीते हैं, विष्णु का नाम नहीं जपते तथा वे ही उनकी संगति करते हैं, वे मजाक चुगली आदि करते हैं। जारी, चोरी, झूठ झगड़े आदि, जिनको गुरु महाराज ने मना किया है, को वे करते हैं। कवि वील्होजी कहते हैं कि ऐसे लोगों से दूर रहना चाहिये। वे सब निगुरे हैं।

तांह न राची मन, झूठ अभखळ बोलीजै।
तांह न राची मन, जीवां उपरे दया न कीजै।
तांह न राची मन, पिंड स्वारथ सणाई।
तांह न राची मन, गरब जहां कूड़ बड़ाई।
साबण लाख मजीठ मन, मोमिण तां मन खंचीयो।
तांह कपट को हेत वील्हा, तांह नरां न रचीयो।22।[6]

हे मन! वहां मोहित न होना, जहां झूठ व अनर्गल बातें होती हैं, जहां जीवों पर दया नहीं है, जहां जीव स्वार्थ के वशीभूत जीवन-यापन करता है, जहां अहं एवं झूठी बड़ाई है। मन रूपी मजीठ (पक्का लाल रंग) को यदि लाख साबुन से धोया जाए तो भी वह साफ नहीं होता है। हे संतों, ऐसे मन वाले मनुष्यों के पास नहीं जाना चाहिये। कवि वील्होजी कहते हैं कि उनसे

कभी नहीं मिलना चाहिये, जिनके मन में कपट है।

परहरीयै सो गांव, नांव विसन कौ न भणीजै।
नहीं साध सूं गोठ, ग्यान श्रवणो न सुंणीजै।
घणौ वाद अहंकार, घणी पर नंद्या कीजै।
नहीं साच सूं प्रीति, मुखि अळीयो बोलीजै।
मेट्यौ सतगुर को कह्यौ, बुध्य सैतानी पाकड़ी।
वील्हा विलंब न कीजीयै, तींह नगरी एका घड़ी।23।[7]

उस गांव को त्याग देना चाहिये जिस गांव में विष्णु के नाम का स्मरण नहीं होता, जहां सज्जनों की संगति नहीं है, न कानों से ज्ञान सुना जाता है। जहां विवाद, अहंकार तथा दूसरों की निंदा होती है, जहां सच्चाई से प्रेम नहीं है और मुख से असत्य कहते हैं। जो सत्गुरु द्वारा बताये उपदेशों को नहीं मानते हैं, जिन्होंने शैतानों की बुद्धि को ग्रहण किया है, कवि वील्होजी कहते हैं कि उस नगरी में एक घड़ी भी नहीं ठहरना चाहिये।

जिह नगरी ध्रंम दिढ़ाव, सत सिंवरण नर सूरा।
सझै सुचील सिनान, जुगति जरणां पण पूरा।
मेल्ह्यौ मन्य भिरांति, भरम भोळावौ भांनै।
जपै एक विसन, भूत सेवा नहीं मांनै।
औळख्यो झंभ साचौ सुगुर, धन्य जीतब तांह कौ जीयो।
वील्हा जीको दीन जीविजै, तींह नगरी वासो लीयो।24।

जिस नगर में व्यक्ति धर्म पर दृढ़ हैं और सत्य स्मरण में शूरवीर हैं, जहां शुद्ध स्नान होता है, जिनके मन की भ्रान्ति मिट गई है और भ्रम नष्ट हो गया है, जो विष्णु नाम का जप करते हैं, भूत-प्रेत से दूर रहते हैं, सच्चे गुरु जाम्भोजी को पहचानते हैं, ऐसी नगरी में रहने वालों का जीवन धन्य हैं। कवि वील्होजी कहते हैं कि जीवन में ऐसी नगरी में ही निवास करना चाहिये जहां भगवान का निवास है।

जोग नहीं पाखंड, कोप काया मां वसै।
जोग नहीं पाखंड, जीव बोह विध्य तरसै।
जोग नहीं पाखंड, वीर जप गांव जळावै।
जोग नहीं पाखंड, कूड़ कथि दुनी डुळावै।
जोग पंथ जाणै नहीं, पाप करंतौ न डरै।

कान्यसी कौ करम न कर, क्रम कसाई कौ करै।25।

जिनकी कथनी और करनी में पाखण्ड है, वहां योग नहीं है, जो शरीर में क्रोध का संग्रह करते हैं, जीव को बहुत दु:ख देते हैं, पाखण्ड से अपने आपको वीर मानते हुए गांव जला देते हैं, झूठ का बखान करते हैं, वे स्वयं योग का रास्ता नहीं जानते और पाप करते हुए बिल्कुल नहीं डरते, स्वयं अच्छे कर्म न कर कसाई के कर्म करते हैं, इसमें भी योग नहीं है।

जहां जरणां तहां जोग, जोग जीवत मरीजै।
जीव दया तो जोग, जोग जो सति भाखीजै।
सहज सीलता जोग, जोग जे तिसनां वारै।
पंच वस्य तो जोग, जोग जो लोभ निवारै।
तज मान अभेमान, ग्यान ध्यान रातो रहै।
जोग तणां आरंभ अै, विसन भगत वील्हो कहै।26।

जहां धैर्य है वहां योग है। योगी जीवित ही मरते हैं। जहां जीव-दया है, वहां योग है। योगी सत्य वचन कहते हैं। योगी सहज एवं शील को अपनाते हैं। योगी तृष्णा से दूर रहते हैं। पांचों विकारों से योगी दूर रहते हैं। योगी वही है जो लालच का निवारण करते हैं। मान एवं अहं को त्यागकर ज्ञान के ध्यान में रचा रहे और योग प्रारम्भ करें, कवि वील्होजी कहते हैं कि वह विष्णु भगवान का भक्त हैं।

असतरी तंणौ गुमान, दोस लाखंण न दीयो।
चीतब चीत गुमान, भीषणां उपरि कीयो।
चळण कटाय चौरंगी, कोपि कूवै मां राल्यौ।
साध सुदरसण सेठ, पकड़ि सूळी दिस चाल्यौ।
नर देवां साधां सिधां, दोस दुनि दिनां घणां।
वील्ह न कीजै ओर तो, पांचौ वस्य करि आपणां।27।

स्त्री के गुमान से वशीभूत होकर राम ने लक्ष्मण को दोष दिया। चित्त में अभिमान के कारण रावण ने विभिषण को निकाल दिया। समय के प्रभाव ने हाथ-पैर काटकर मनुष्य को कुए में डाल दिया। समय ने ही शीलवंत सेठ सुदर्शन को सूली पर चढ़ाया। मनुष्यों, देवों, साधु-संतों को इस दुनिया में सत्य के कारण बहुत दु:ख उठाने पड़े हैं। कवि वील्होजी कहते हैं कि अपने पांचों विषयों को वश में करो। हमें और कुछ नहीं करना चाहिये।

चाकर गुणवंत होय, ठाकुर का छंदा छावै।
जे गुणवंति नारि, पुरेष का छंदा दीढ़ावै।
जे गुणवंतो पूत, मात पिता छंदो राखै।
जे गुणवंतो मीत, मीत को छंदो भाखै।
मीत पिता नाह न्रप, एता छंदो राखीयै।
वील्ह कहै जी ग्यांनीयो, दीने छंदो नित राखीयै।28।

जिस ठाकुर का सेवक गुणवान हो तो वह उसका मान रखता है। जिस व्यक्ति की पत्नी गुणवान हो, वह अपने पति का सम्मान करती है। जिसका पुत्र गुणवान है, वह माता-पिता का सम्मान करता है। जिसका मित्र गुणवान है, वह भी उसकी सहायता करने वाला होता है। मित्र, पिता, पति, ठाकुर आदि का गुनीजन सम्मान करते हैं। कवि वील्होजी कहते हैं कि हे ज्ञानी पुरुषों, हमें हमेशा भगवान से प्रीति करनी चाहिये।

धरम कियां सुख होय, लाछ लिछमी धन पावै।
धरम उतिम कुळ अवतरै, जळम दाळिद नहीं आवै।
धरम जीव जुग्य विल्हौ, रूप ओपम इधकारी।
धरम ता मान्य महंत, ग्यान सुं प्रीति पियारी।
संसार जुगति आगै मुगत्य, लाभ घणौ छै दहुं परि।
वील्ह कहै आळस म करि, जो गुर कह्यो स धरम करि।29।

धर्म कार्य से सुख व धन की प्राप्ति होती है। धर्म से ही अच्छे वंश में जन्म होता है एवं दरिद्रता से छुटकारा मिलता है। धर्म से ही जीव युग में रूपवान होता है। धार्मिक व्यक्ति को ज्ञान से ही प्रीति होती है। जो धर्म-सम्मत बात मानता है, उसे दोहरे लाभ अर्थात् सुख एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। अत: वील्होजी का कहना है कि आलस्य को त्यागकर गुरु के कहने के अनुसार धर्म को अपना लो।

पाप न करि मतिहीण, हळति हारिस जळम तरि।
पाप मध्यम कुल्य अवतर्‌य स, मान्य घटेसी नीखरी परि।
पाप भूख दुख भोग वस्य, भुंवस्यै परघरे रुळंतौ।
पग्य पालौ सिर भार, फीरस्यै पर सार पुळंतौ।
पाप तंण पोसाय करि, सीर मार्‌यौ भोजन लहस्यै।
वील्ह कहै हारिस हळति, पाप न करि बोह दुख सहस्यै।30।

हे अज्ञानी पाप न कर। पापी की बुद्धि नष्ट होती है तथा उसे जन्म जन्मान्तर तक दु:ख मिलता है। पापी नीच कुल में जन्मता है और उसे सम्मान नहीं मिलता। पापी भूख व दु:ख का भोग करता हुआ संसार में भटकता है, पैदल चलता है और सिर पर वजन लिये फिरता है। उस पाप के फल से उसे कठिनाई से भोजन मिलता है। कवि वील्होजी कहते हैं कि इस संसार में आने के बाद पाप कर्म नहीं करना चाहिये, क्योंकि पापों से दु:ख ही मिलता है।

जे निगुण सूं गुण करूं, तो गुण औगण करि मानै।
जे करूं मुरेख सूं मेळ, मान मरजाद न ग्यानै।
जे करूं भुंछ सूं भाव, वैर उपजै कुकठो।
जे करूं बंग सूं बोल, तो मन्यौ जाणीयै न रूठौ।
बंग भुंछ मुरेख निगुण, भलौ करंता दुख दहै।
वील्ह कहै पसग बती, पर पूठ भूंडी कहै।31।

यदि निगुण के भले की बात करें तो भी वह बुरा मानता है। यदि मूर्खों से मेल करें तो मान-मर्यादा मिटती है। यदि क्रोधी से कोई दया भाव करे तो शत्रुता ही उत्पन्न होती है। यदि उदण्ड से वचन किया जाए तो वह बुरा मानता है। बंग (कुकर्मी), मूढ़, मूर्ख व निगुण ये भला करने पर भी बुरा मानते हैं। कवि वील्होजी का मानना है कि ये लोग पीठ पीछे बुराई करते हैं, चाहे तुम इनकी कितनी ही भलाई करो।

धरमी करै धरम, सती न सत जो दीजै।
मन राखीजै भाव, मुख्यौ सुवचन बोलीजै।
वाखांणीयै विसन, आस उतिम की कीजै।
परखे पात सुपात, दान दयाईजै दीजै।
जां जां विसन न भावई, सांसो कुपरि न कीजीयै।
वील्ह कहै न विरचियै, धरम धको न दीजियै।32।

जो धर्मी हैं, वे धर्म करते हैं। जो सत रखते हैं उन्हें सत देना चाहिये। मन में भाव व मुख से अच्छे वचन कहने चाहिये। विष्णु का जप करके उत्तम की आशा करनी चाहिये। अच्छे एवं बुरे पात्रों को जानकर ही दान देना चाहिये। जहां-जहां विष्णु का भाव नहीं है, उनके मन में संशय रहता है। कवि वील्होजी कहते हैं कि विष्णु के नाम से दूर न होवो और धर्म को न छोड़ो।

खोज उलांडे पाप, पाप होय संग चालंतां।
मुख देखंतां पाप, पाप होय नांव लीयतां।
जीम्या साथे अगति, छोति जा भींट्यां लागै।
मेट गुर वायक, ग्यांन परमोध्य न लागै।
खांह्य कुमल पीवै बुध्यनास, कुचल चाल चालै अैसी।
वील्ह कहै जी ग्यानियौ, तांह दीन्हौ कित लाभ्यसी।33।

जो पापी हैं, उनके साथ चलने से भी पाप लगता है। उनका मुख देखने से और नाम लेने से पाप होता है। ऐसे लोगों के साथ खाना खाने से अगति एवं छूने से पाप लगता है। जो गुरु के वचनों को नहीं मानते हैं और ज्ञान की शिक्षा जिनको नहीं लगती है। जो नशा करते हैं उनकी बुद्धि का ही नाश होता है। जो गलत राहों पर चलते हैं, कवि वील्होजी कहते हैं कि हे ज्ञानियों, उन कुपात्रों को दिया हुआ दान हमें कहां मिलेगा।

जिसौ गऊ गळि सार, सिंघ स्यावज पोखीजै।
जिसौ हंस हतियाय, विटळ वायस भख दीजै।
जिसो चंदण करि छेद, वाड़ि धतूरै कीजै।
जिसौ सुरह दुहि दूध, दूध विसहर पाईजै।
जिसो कुपातां दान दे, जळम गुंमावै बुरी पर।
वील्ह कहै विचार वीण्य, सगति अगति नै जांहि नर।34।[8]

जो गाय को काटकर सिंह और सिंह के बच्चों को खिलाते हैं, जो हंस की हत्या करके कौओं को खिलाते हैं, जो चन्दन को काटकर धतूरे के चारों ओर बाड़ करते हैं, जो गाय का दूध निकालकर सर्प को पिलाते हैं, जो कुपात्रों को दान देते हैं, वे अपना जन्म नष्ट करते हैं। कवि वील्होजी का कहना है कि ऐसे विचारहीन व्यक्ति सद्गति को प्राप्त नहीं होते और अगति में जाते हैं।

पांच सात कुमती मीलै, मांडै गोठि विकारी।
करै पिसण सूं प्रीति, सैण की करै खुवारी।
मुरेख कौ मन भोळवै, घाति कुबध्य की पासी।
घणी ठेक मसकरी, घणी बाजी अर हासी।
परउपगारी सीख गुर, तीह कौ कह्यौ न मानही।
वरज्या पंथ अगति कै, वील्ह कहै चाल्या तंही।35।

पांच-सात दुर्बुद्धि व्यक्ति मिलकर विकार रूपी गोठ करते हैं।

शत्रुओं से प्रीति करते हैं व अपने मित्रों की निन्दा करते हैं। मूर्खों से मन मिलाते हैं और कुबुद्धि की फांसी अपने गले में डालते हैं। वे हंसी-ठठ्ठा करते हैं। वे सत्गुरु जाम्भोजी महाराज की परोपकारी शिक्षाओं को धारण नहीं करते हैं। कवि वील्होजी कहते हैं कि उनको सत्गुरु ने कुमार्ग पर जाने से रोका था, मगर वे उसी रास्ते पर चलते हैं।

जनम विणांस्यौ जेह, जे बुध्यनास ज पीयो।
नीज विसन को नांव, सोच करि कदे न लीयो।
जीवां उपरि जाण्य, दया करि कदे न दीठो।
भीतरि भेद्यौ पाप, ग्यान न लागै मीठो।
आप सुवारथ मनमुखी, कीया कुबधी पापड़ा।
वील्ह कहै भव सागरां, वह्यौ जांहि रे बापड़ा।36।

उनका जन्म नष्ट हो गया है, जिन्होंने बुद्धि नष्ट करने वाली चीज को पीया है। जिन्होंने विष्णु भगवान के नाम को सोच-विचार कर कभी नहीं लिया है। जो जीवों पर कभी जानते हुए भी दया नहीं करते हैं। जिनके मन में पाप है, उन्हें ज्ञान बुरा लगता है। जो स्वयं स्वार्थी एवं मनमुखी हैं, वे अपनी दुर्बुद्धि से पाप करते हैं। कवि वील्होजी कहते हैं कि-वे व्यक्ति इस भवसागर में बह जाते हैं।

वरज्या सतगुर साम्य, कुंमल कुकरमी करंतां।
मद मास पोसती, भांग खातां वीसरंतां।
वरज्या गोरखिनाथ, वरज्या अवळीयै पकंबर।
वरज्या किसन मुरारि, वरज्या केवळी तीर्थकर।
सूत कुराण पुराण मां, बोल साख्य सु जादमी।
अतरा सीख न मांनही, तेरो काळो मुंह रे आदमी।37।[9]

सत्गुरु जाम्भोजी ने नशे के कुकर्म को मना किया है। मद, मांस, पोस्त, भांग आदि खाना मना किया है। इन वस्तुओं का सेवन करना गोरखनाथ ने भी मना किया है और औलिये-पैगम्बरों ने भी मना किया है। कृष्ण भगवान ने भी मना किया है। केवली तीर्थकर ने भी मना किया है। वेद, पुराण व कुराण ने भी मना किया है। इन सबका एक ही सिद्धान्त है। तुम इतनों की शिक्षा नहीं मानते हो, हे मनुष्य तुझे धिक्कार है।

वरस सात संसारि, बाळलीला निरहारी।
वरस पांच बावीस, पाळ एता दिन चारी।

ग्यारै अर चाळीस, सबद कथिया अवनासी।
बाळ गुवाळ गुर ग्यान, मास तीन वरस पच्यासी।
पनरासै 'र तिराणवै, वदि मंगसर नुंवि आगळे।
पालटे रूप रहियो रिधु, इडग जोति संभराथळे।38।[10]

इस कवित्त में गुरु जम्भेश्वर के जीवन की काल क्रमानुसार व्याख्या है। उन्होंने सात वर्ष तक बाल-लीलाएं की। सताईस वर्षो तक पशुओं को चराया। इक्कावन वर्षो तक अविनाशी के शब्दों का कथन किया अर्थात् बाल्यकाल, ग्वाल जीवन और ज्ञान जीवन मिलाकर गुरुजी पच्यासी वर्ष तीन मास तक इस संसार में रहे और वि.सं. पंद्रह सौ तिरानवे में मार्गशीर्ष वदी नवमी को निर्वाण को प्राप्त हुए, जिनकी साधना का केन्द्र संभराथल रहा है।

किसौ दया बिण्य धम, ग्यान बाझो चतुराई।
किसौ खिमां विण्य तप, दान विण्य किसी वडाई।
किसौ साध विण्य गोठि, जप विण्य किसौ जमवारौ।
किसो अमर विण्य वास, मरण तांह किसौ पसारौ।
किसौ सुख सुरगां विनां, जां जां जम जोवे जिसौ।
वील्हा एकै केवळ झंभ विण्य, अपर जपै सो जन किसौ।39।[11]

दया के बिना धर्म कैसा, ज्ञान के बिना चतुराई कैसी, क्षमा के बिना तप कैसा, दान के बिना बड़ाई कैसी, साधु के अभाव में गोष्ठी कैसी, भगवान के जप बिना जीवन निरर्थक है। स्वर्ग के बिना निवास कैसा, मृत्यु निश्चित है, पसारा कैसा। स्वर्ग के बिना सुख कैसा और यहां जगह-जगह पर यम का भय है। कवि वील्होजी कहते हैं कि केवल ब्रह्म श्री जाम्भोजी महाराज के सिवाय और कौनसा जप है।

भाव देव तूठंता, भाव गुर विद्या आपै।
भाव मीत मया करै, भाव नर वैर न थापै।
भाव वरसै मेह, भाव संत साध संतोषै।
भाव वस्तु प्यारी विकै, भाव जनि पोषै।
भाव भलो संसार में, सिध सूरां मिनखां गती।
दया भाव जे संग्रह्यौ, ते पहुंता पारंगती।40।[12]

भाव से देव प्रसन्न होता है, भाव से ही गुरु की विद्या आती है, भाव से मित्र दया करता है, भाव से मनुष्य वैर नहीं करता, भाव से वर्षा होती है, भाव से साध

ु–सन्तों को सन्तोष मिलता है, भाव से वस्तु प्यारी बिकती है, भाव मनुष्य को भी संतोष देता है। ये भाव ही संसार में अच्छा है जो सिद्ध, शूरवीर व मनुष्य को मुक्ति देता है, जिन्होंने दया भाव का संग्रह किया है, वे भवसागर से पार हो गये हैं।

भूख नहीं भगवंत नै, भाव करि भोजन जिमाइयै।
तिस नहीं त्रिलोकीनाथ नैं, आणि उदक पाइयै।
उघाड़ौ नहीं आदिनाथ, आण पांगरण उढ़ाइयै।
पोढ़ै नहीं पारब्रह्म, पाथरि पिलंग बिछाइयै।
निराकार निरधन नहीं, देव बरतरि बरताइयै।
वील्ह कहै भगवंत को, किणि विधि भलो मनाइयै।41।

भगवान को कभी भूख नहीं लगती है लेकिन भाव से भोजन जीमाते हैं। उन्हें प्यास नहीं लगती है लेकिन भाव से पानी पिलाते हैं। वह आदिनाथ नग्न नहीं है लेकिन भाव से वस्त्र उढ़ाते हैं। वह पारब्रह्म सोता नहीं है लेकिन भाव से उसके लिये पलंग बिछाते हैं। वह निराकार निर्धन नहीं है लेकिन भाव से सत्य का प्रसाद चढ़ाते हैं। कवि वील्होजी कहते हैं कि भगवान को किस प्रकार प्रसन्न करें।

भूखै नै भोजन दियो, जाणि भगवंत जिमायौ।
तिसीये जण नै जळ दियो, जाणै आप नै पायौ।
उघाड़ै नैं पांगरण दियो, जाणिं पारब्रह्म उढ़ाइयौ।
निरधन नै धन दियो, जाणि आप मनि भायौ।
आदू आण न मेटिये, वायक मेटि न जाईये।
वील्ह कहै भगवंत को, इणि विधि भलो मनाईये।42।

भूखे को भोजन दिया मानो भगवान को जिमाया, प्यासे को जल पिलाया मानो भगवान को पिलाया, नग्न को वस्त्र दिया मानो पारब्रह्म को उढ़ाया, निर्धन को धन दिया मानो भगवान को दिया, पुरानी मर्यादा को नष्ट नहीं करना चाहिये और दिये वचन को भंग नहीं करना चाहिये। कवि वील्होजी कहते हैं कि भगवान इन बातों से प्रसन्न होते हैं।

नर चिंत कछु और, दई कछु और बणावै।
करण मतै जहां महल, दई तहां धूल उड़ावै।
होन करे धनवंत, दई दाळिद लिख दीनो।
दई करे सोई होय, चित मन कूड़ो कीनो।

देव भरोसो राखिये, नर चिंते पूरो खरो।
वील्ह कहै विसन जपो, भाग लिख्यो देसी परो।43।

मनुष्य सोचता कुछ और है, ईश्वर बनाता कुछ और है। जहां महल की इच्छा होती है, ईश्वर वहां धूल उड़ाता है। निर्धन को धनवान व धनवान को दरिद्र बना देता है। जो ईश्वर करता है वही होता है, जो इच्छा करते हैं वे मूढ़ हैं। ईश्वर पर भरोसा रखो व चिन्ता मत करो। कवि वील्होजी कहते हैं कि विष्णु भगवान का स्मरण करो, जो भाग्य में लिखा है वही तुम्हें मिलेगा।

तंत गुण दांवण्य तीन्य, मन करि जामण मरणां।
पुंन मांग्य पैंतीस, पांच सरणांगति सरणां।
आठ धरम नव भगति, जीव के काजै कीजै।
मन्यसा वाचा क्रमणां, पाक होय नांव जपीजै।
जंपीये जाप अजप्पा जीकर, भणत तारग मंत्र भण्य।
तीन्य तंत सत्य जांणीये, सुरग तणां सांसा नगण्य।44।

इस संसार में पांच तत्व (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) और तीन गुण (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण) एवं मृत्यु को ही ध्यान में रखना चाहिये। पुण्य पैंतीस, पांच शरणागति, आठ धर्म, नौ भक्ति है। ये सब जीव के उद्धार के लिये करने चाहिये। मानव को मन, कर्म और वचन से पवित्र होकर नाम का जप करना चाहिये।

देवजी सूं अरदास छै, सांभळीयो समरथ्य।
तेतीसां सूं मेळ दे, दे बारां को सथ्य।
दे बारां कौ सथ्य, दान जां खोड़े न होई।
मन्यसा भोजन कया रतन, पिसण न गंन कोई।
दयौ सुरां की गोठड़ी, दयौ अमरापुर वास।
वील्ह कह जी वीनती, देवजी तौ आगळि अरदास।45।[13]

हे समर्थवान देव श्री जाम्भोजी महाराज, आपसे विनय है कि मुझे बारह करोड़ जीवों के साथ मुक्ति प्रदान करो और उन तेतीस करोड़ों में शामिल करो। उन बारह करोड़ों के साथ कोई कष्ट नहीं होगा। वहां मन इच्छा का भोजन मिलता है और यह काया रत्न के समान हो जाती है। न ही वहां कोई शत्रु है। मुझे उन देवताओं में शामिल करो और स्वर्ग में स्थान दो। कवि वील्होजी कहते हैं कि हे देव जाम्भोजी महाराज, आपके आगे हमारी यही विनय है।

संदर्भ टिप्पणियां

1. सुगरा सोई जाणियै, गुरु के पाळै बोल।
नुगरा नासै जगत से, सतगुरु वाक्य अडोल।472।

साहबराम जी के दोहे

2. सतगुरु साहिब देव है, और देव नहीं ईश।
भव साधा भजन करो, जय गुरु जगदीश।444।

साहबराम जी के दोहे

3. सुरजनजी का एक ऐसा ही कवित देखिये–
एक सहै दुख भूख, एक उपगार पयपै।
एक चड़ै सुखपाल, एक सिर भार संमपै।
एक स काया सुचय, एक बेचे जळ दुरगंछी।
एक छुड़ावै बंदी, एक बेचे जळ मंछी।
एक मरै एक उधरै, ठाह बतावौ ठीव का।
एक गरु दोय अंतरा, प्रताप जको हरि नांव का।64।

4. मुगधां सेति ऊं टळि चालौ, ज्यूं खड़कै पासि धनूरि।69।

जाम्भोजी का सबद

5. (क) चौबीस चेड़ा काळिंग केड़ा, इधक कळावंत आयस्यै।90।

जाम्भोजी का सबद

(ख) राकस बोकस खेड़ खवीस, चड़ि चाल्या चेड़ा चौवीस।
दैत दुष्ट अंतर अभिवान, जिख झोंटिंग बड़ा सैतान।253।

केसोजी, कथा विगतावली

6. (क) साबण लाख मजीठ विगूता, थोथा वाजर घाणौं।
दुनियां राचै गाजै बाजै, तांह मां कणौं न दाणौं।
दुनियां कै रंगि सोह कोई राचै, दीन रचै सो जाणौं।
लोही मास विकारो होयसी, मुरिखो फिरै अयाणौं।
मागर मणियां काच कथीर न राचौ, कूड़ दुनी डफाणौं।66।

जाम्भोजी का सबद

(ख) सुगर सुवाणी दाखवी, अभखळ वरज्यौ आप।

केसोजी, कथा विगतावली

(ग) सकळ पाप मन ता परहरै, किरिया करि अभखळ उचरै।

केसोजी, कथा विगतावली

7. (क) परहरि गांव कुगांव, जास मां बसै कुठाकर।
परहरि सीण कुसीण, कहै पाछलौ आखर।।

गोपाल कृत सवैया

(ख) परहरियै संग जित, साध की संगत नांही।

परहरियै सो मीत, गुझि राखै मन मांही।

केसोजी का कवित

8. (क) कुपातां नै दान जै दीयौ, जाणै रैण अंधारी चोरै लीयौ।54।

जाम्भोजी का सबद

(ख) दान उतिम दीजियै, मधम माथै मारि।
सत संगति हरि नांव सूं, पावै मोख दवारि।।

परमानन्द जी के दोहे

9. लहै तमाकू आफू जाणि, मळ्य पोसत जळ पीवै छाणि।
वरजी भांग लीये जे बुरा, सहंस जूण होयस्यै सुकरा।।

केसोजी कथा विगतावली

10. (क) इस छपइयै में जाम्भोजी के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है। उन्होंने सात वर्ष बाललीला में, सत्ताईस वर्ष पशु चराने में और इक्यावन वर्ष सबद कथन में व्यतीत किये थे। स्वामी ईश्वरानन्द गिरी ने भी जम्भ संहिता पृ. 14, वि.सं. 1955 में (प्रकाशित) इस बात को स्वीकार किया है।

(ख) साहबराम जी राहड़ के विचार भी वील्होजी के इस सत्य कथन की पुष्टि करते हैं देखिये–
महाजोत गुरु जंभ, भक्त हित लीलाधारी।
सप्त वर्ष रहै मौन, सत्प विसूं गऊचारी।
इक्यावन कथ ज्ञान, सबद अगमे अधिकारी।
पच्चासी त्रिय मास, तेज ताई तारी।
आठम सोम अठोतरै, पंदरासौ अवतार।
ताणवै मिंगसर वद नवमी, साहब पहुंचे पार।।

11. किसो निगुण सूं नेह, नीच सूं किसो सगाई।
किसो सिंह सूं आल, साह सूं किसी ठगाई।
किसी परनारी सूं प्रीति, किसो मूरख सूं हासो।
किसो दासी को साथ, सांप सूं किसो तमासो।
विसहर जावंतो मत छेड़ि, फेर पूंछ पाछौ फिरै।
कवि गद कहै हो ठाकुरां, एता विसास मति को करै।

कवि गद के कवित–(सम्पादक) डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई

12. जोगी सो जिण जरणां जरी, भगति सोई जीण्य भाव सूं करी।

वील्होजी का हरजस (9)

12. वील्होजी का हरजस

(1) हरजस (राग आसा)

दिल दुरमति दुजै साध कहावै, ताको मोहि अचंभो आवै।1।टेक।
पढ़ गुण गति कूं परमोधै, रात्य दिवस वीखीया कूं सोधै।
बैस्य सभा मां ग्यान विचारै, भीतरि लखण बिली का धारै।2।
पीवणै सरप ज्यौं छळ करि पीवै, बुग ज्यौं ध्यान अवर कूं टीवै।
व्रन देखि ज्यौं म्रघ ठगावै, हीरण दोह की परख्य न आवै।3।
बाहरे सेत भीतरि मस्य वरणां, सैतानी का संग न करणां।
पर धन प्रीति लगी जड़ भागी, जांणे मूसै ध्यान बिलाई लागी।4।
मन थीर नांहि दोह दिस फिरणां, कहा भयो तेरे हाथ्य सींवरणां।
धरम ठगां का एह इहनाणां, वील्ह कहै मै देखि डराणां।5।1।

जिनके मन में कपट है और वे साधु कहलाते हैं, इस बात का मुझे अचम्भा है। जो पढ़ लिखकर मुक्ति चाहता है, परन्तु रात-दिन विषय-भोगों में लिप्त रहता है, सभा में बैठकर जो ज्ञान की बातें करता है, परन्तु उसके मन के अन्दर बिल्ली के लक्षण हैं। जैसे पीवणा सर्प छलकर पीता है और बगुला मछली को पकड़ने के लिये ध्यानास्थ रहता है, अपने जैसा वरण देखकर जैसे मृग धोखा खाता है और पालतू हिरण को नहीं पहचानता है। बाहर से सफेद दिखता है और अन्दर से काला है, ऐसे शैतान का संग नहीं करना चाहिये। जिसकी पराये धन में प्रीति लगी है, मानो चूहे को पकड़ने के लिये बिल्ली ध्यानास्थ है। जिनका मन स्थिर नहीं है और दोनों दिशाओं में घूमता है यदि ऐसे लोगों ने हाथ में माला ले ली है, तो क्या हुआ? धर्म को क्षति पहुंचाने वालों के ये चिन्ह हैं। कवि वील्होजी कहते हैं, मैं इनको देखकर डरता हूँ।

(2) हरजस (राग आसा)

दिल अवर मुखि अवर सुणांवै, दिल को कपट धणी कूं न भावै।1।टेक।
जां जां साधां ओ मन होइ, तां तां पारे न पुंहतो सोई।2।
मन्यसा वाचा नीरमळ होई, मीलै विसन जन तेरा सोई।3।
मन्यसा वाचा विसन ध्यावै, वील्ह कहै फीरि जलम न आवै।4।

दिल में कुछ और है, मुख से कुछ और कहता है। दिल में जो कपट

है, वह स्वामी को अच्छा नहीं लगता है। जिन साधुओं का ऐसा मन होता है, वे भवसागर से पार नहीं उतरते। जिनका मन और वचन शुद्ध होते हैं, उनको विष्णु भगवान अपना जानकर मिलते हैं। जो मन वचन से विष्णु का स्मरण करता है, कवि वील्होजी कहते हैं, उसका पुनर्जन्म नहीं होता।

(3) हरजस (राग रामकली)

अैसा मूळ खोजौ, भला तंत चीन्हौ, सतगुर सतपंथ बताय दीन्हौ।1।
घुरै नीसांण अंत्रीख धुन्य उपजै, सुध्य आवध विण्य वीण वाजै।
नाद सुर संख सुर ताळ सुर संभळौ, मेघ विण्य घरहरे गिगन गाजै।2।
एक मन्य जांचियै रूप विण्य राचियै, पोहम प्रमळा पखौ वास लीजै।
सुन्य मां सोझीयै अकळ पंथ खोजीयै, अगंम अतीत सूं प्रीति कीजै।3।
आनीध्य पाइयै को न दुखाइयै, आप पर आतमां जाण्य रहीयै।
व्रजीयै वाद अहंकार तज्य तामसी, एक ही एक दोय कुंण कहीयै।4।
अनीण नींदीयै अवर चख सोझियै, कठण करणी कुण साध्य कहीयै।
वील्ह अलाह अलेख क्यौ लखीयै, सबद सूं सुरति मीलाय रहीयै।5।

हमें ऐसे मूल को खोजना चाहिये और ऐसे सत्य मार्ग को पहचानना चाहिये, जो सतगुरु ने हमें बताया है। ब्रह्माण्ड में बाजे बज रहे हैं और दिल में तंत्रीकी (सारंगी) धुनें उत्पन्न होती है, वहां कोई बजाने वाला नहीं है, लेकिन वहां अपने आप वीणा बजती है, वहां नाद और शंख का स्वर सुनो, वहां बिना ही बादलों के गर्जना होती है। एकाग्र चित से इसकी जांच करो और बिना ही रूप रच जाओ। उस योग भूमि में निवास करो। शून्य में भी ढूंढ़ो और बुद्धि से निर्णय करो। उस अगम, अतीत पारब्रह्म से प्रीति करो। इस निधि को प्राप्त करो, कोई दु:ख नहीं रहेगा, स्वयं ईश्वर को पहचानो, वाद-विवाद, अहंकार और तामस प्रवृत्तियों को छोड़ो, वहां आत्मा और परमात्मा का एक रूप है, दो किसको कहेंगे। अन्यायियों की निन्दा करो और आंखों से देखकर सावधान रहो, कठिनाई में कोई साथ नहीं देता, वील्होजी कहते हैं कि अल्लाह और अलख को लखा नहीं जा सकता, इसे सबद में सुरता का मिलान करके प्राप्त किया जा सकता है।

(4) हरजस (राग गवड़ी)[1]

जन रे भरंम छाडि भज्य केसो,
जैसो फंध सुवा नलनी को, आन देव भ्रम अैसो।1।टेक।

भरम उपाय पांहण देव थरपै, साध सेवा नहीं जांणी।
निरजीव आगै सरजीव मारै, बूडि गया विण्य पाणी।2।
भरमी नारि भींति कूं पूजै, ले ले भोग लगावै।
भोग विलास स्वाद रस जांणै, ढ़िग ऊभौ विललावै।3।
भरमे लोग तीरथ कूं चाले, अठसठि घरि ही बताया।
लोक अजांण आन कै चाहूं, ढूंढ़त फिरत नै पाया।4।
भरम उपाय वीरजंण जोगण्य, छाडि भरम तुछ देवा।
पार गिराय तब पहुंचै प्यारा, क्रत विसन तत सेवा।5।
वील्ह कहै मुगध्य नर भरमे, कुंण किसे समझावै।
भरम छाडि जदि होय निभरमां, जण हरि चरणे आवै।6।

हे मनुष्य, तुम भ्रम को छोड़कर भगवान का स्मरण करो, जैसे तोता नलकी के भ्रम में फंसता है, ऐसे ही मनुष्य अन्य देवों के भ्रम में फंसता है। भ्रमवश लोग पत्थर को देव मानते हैं लेकिन साधुजनों की सेवा नहीं करते हैं, वे निर्जीव पत्थर के सामने जीवों की हत्या करते हैं, वे बिना पानी ही डूबेंगे। भ्रमवश स्त्रियां दीवारों पर मंडे चित्रों की पूजा करती हैं और उन्हें भोग लगाती है, लेकिन भोग-विलास को जानने वाले मनुष्य हैं, जो पास ही खड़े हैं, वे उनको नहीं पूजती हैं। भ्रमवश लोग तीर्थ जाते हैं लेकिन गुरु महाराज ने तीर्थ घर में ही बताये हैं। अज्ञानी लोग अन्य देवों को ढूंढ़ते हैं और उन्हें चाहते हैं, लेकिन वे देव उनको कहीं नहीं मिलते। जो भ्रमवश वीर, जोगनियों और तुच्छ देवों को मानते हैं, वे भवसागर से तभी पार होंगे, जब वे विष्णु भगवान की सेवा करेंगे। कवि वील्होजी कहते हैं कि लोग मोहवश भ्रम में फंसे हुए हैं, उन्हें कौन समझावे, जब उस भ्रम को छोड़कर वे भ्रम रहित हो जायेंगे तब ही भगवान के चरणों में उन्हें शरण मिलेगी।

(5) हरजस (राग गवड़ी)[2]

राम रहीम विसन विसमलाह, किसन करीम हमारै।
कुकरम जुलम गाय बकरी परि, रूस्यळ मीसल्य तुम्हारै।1।
बांभण वांचै वेद पुराणां, काजी कुतब कुराणां।
पाथर पूजै मसीत पुकारै, हरि तंत दहु न जाण्यां।2।
हिंदु हरि करि हारि न मांनै, तुरक तांबसी लीणां।
मेरी कहै हमारी जांणै, दोऊं लड़ि विड़ि खीणां।3।

हिंदू फिरि फिरि तीरथ धोकै, मुसलमान मदीनां।
अलाह नीरजण मन दिल भीतरि, अंतर डेरा दीनां।4।
हिंदू कै मन्य पूरब मानै, पछिम मुसलमाणां।
वीच वीच वील्ह को सांमी, सब दिल मांहि समाणां।5।

राम, रहिम, विसन, विसमिल्ला, किसन, करीम ये सब हमारे हैं, जब तुम गाय और बकरी पर जुल्म करते हो तो ये तुम्हारी लिखत झूठी है। ब्राह्मण वेद-पुराण पढ़ते हैं और काजी किताब-कुरान को पढ़ते हैं, ब्राह्मण पत्थर पूजते हैं और मुसलमान मस्जिद में आवाज लगाते हैं, इन दोनों ने ईश्वर के तत्व को नहीं जाना है। हिन्दू कहते हैं हमारे हरि हैं और मुसलमान कहते हैं हमारे खुदा हैं, दोनों के मन में मेर है और दोनों आपस में लड़कर मरते हैं। हिन्दू तीर्थ जाते हैं और मुसलमान मदीना जाते हैं, अल्लाह और निरंजन दिल के अन्दर ही हैं, इनका स्थान हृदय में है। हिन्दू पूर्व दिशा को शुद्ध मानता है और मुसलमान पश्चिम दिशा को मानता है, कवि वील्होजी कहते हैं, हमारा स्वामी सबके दिलों में समाया हुआ है।

(6) हरजस (राग गवड़ी)[3]

साधो घरे ही झगड़ो भारी,
राति दिवस मोहि उठि उठि लागै, पांच ढ़ोटा एक नारी।1।टेक।
भोजन पांचूं जूजवा चाहै, पांचूं पांच सवादी।
निळजी नारी कह्यो नहीं मांनै, अवरा ते आप मुरादी।2।
कियो उपाव पोखंण कै तांई, त्रपति कदे न सूता।
लरके लाज गंमी लज मारे, बोहळी वेर विगूता।3।
घरतै नीकसि स्यैण घरि न रहै, पर घरि क्यौं सच्य पाइयै।
अपणौ टाबर कह्यौ न मांनै, ओरां कै समझाइयै।4।
दुरमति दारी करूं दुहागण, झूठै थाप थपेड़ै।
वील्ह कहै सोई गुर मेरा, घर को न्याव नवेड़ै।5।

हे संतों, घर में बड़ा भारी झगड़ा है, मुझे पांच शैतान (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध) और एक कुलक्षिणी स्त्री (मनसा) रात-दिन तंग करती है। इन पांचों शैतानों को अलग-अलग भोजन की जरूरत है और ये पांचों पांच स्वाद भोगना चाहते हैं, वह निर्लज स्त्री कहना नहीं मानती है, वह अपने मन से चलती है। वे पांचों अपने भोजन का उपाय करते हैं लेकिन कभी तृप्त नहीं

होते हैं। वह स्त्री बहुत बार लज्जाहीन कार्य करके अपनी लाज खोती है। जो अपने सच्चे कर्म थे, वे सब घर में से निकल गये हैं और दूसरों के सच से कैसे कार्य सिद्ध होंगे, जब अपना बच्चा ही कहना नहीं मानता है तो अन्यों के बच्चों को क्या समझाते हो। जो कपटी होते हैं वे झूठे देवों की स्थापना कर लेते हैं, कवि वील्होजी कहते हैं- मेरे सच्चे सत्गुरु ने मेरे घर की कलह का फैसला किया है।

(7) हरजस (राग गवड़ी)

साधो गुर वताई एक बूंटी।
बूंटी परखि गांठ गह बांधी, जम भव वेदन्य तूटी।1।टेक।
जांकै रोग सदा अंग्य रहता, बोहत होती तपनाई।
या बूंटी रस धाप पीयो, ज्यौ बोहड़े संताप न पाई।2।
बोहत रोग तोड़या इण्य बूंटी, बोहतन कठह भाई।
अजूं अनंत कूं गुंण करता है, बूंटी खूटी न जाई।3।
धन्य ओ गुर साचे गुर कूं धन्य, बूंटी सरस बताई।
वां बूंटी जां संता साधी, अंग भई सितळाई।4।
अमर जड़ी अपरंपर बूंटी, कंटक हाथ न आई।
वील्ह कहै रही साधां पै, तिसनां तपति बुझाई।5।

हे संतों! मुझे गुरु ने एक सत्य की औषधि बताई है, उसको मैनें अपने पल्ले बांध लिया है, जिससे यम की मार और भवसागर की वेदना मिट गई है। जिनके शरीर में हमेशा रोग रहता था और बहुत कष्ट होता था, इस बूंटी का रस पीने से फिर कभी कष्ट नहीं आता है। इस बूंटी ने बहुत रोगों को नष्ट किया है और यह बहुत अद्भुत है, यह बूंटी अब भी गुणकारी है और यह कभी समाप्त नहीं होती है। उस गुरु को धन्य है, जिन्होंने हमें सत्य की बूंटी बताई, जिन संतों ने इस बूंटी का सेवन किया है, उनके अंग शीतल हो गये हैं। यह बूंटी अपरम्पार अमर करने वाली है जो अज्ञानियों को नहीं मिली, कवि वील्होजी कहते हैं-ये बूंटी संतों के पास है जिससे उनकी तृष्णा की गर्मी मिट गई है।

(8) हरजस (राग गवड़ी)[4]

अब मैं ग्यान रस्य रूच्य माणी, जदि गुर की पारिख जाणी।1।टेक।
सतगुर सोई असत न भाखै, सबद गुर का साचा।
छंद न मंद न सभा विवरजत, नित नीरोतरि वाचा।2।

मेरा गुर केवळ न्यानी, व्रंभ गियानी, माया मोह न कीया।
जागत जोगी नींद न सूता, वासा भोम्य न लीया।3।
मेरा गुर सदा संतोषी सहजे लीणां, जीती तिसनां आसा।
पवणां पांणी जीण्य वस्य कीया, तया नै भेड़ै पासा।4।
उध कुंवळ गुर सुधा कीया, मति अंतर गति जागी।
वील्ह कहै पूरा गुर पाया, मन की डिगमग्य भागी।5।

मैं अब ज्ञान के रस में रच गया हूँ और आदि गुरु विष्णु की मुझे पहचान है। सत्गुरु वही है जो झूठ नहीं बोलते हैं और उनके सबद सच हैं, उनकी सभा में छलकपट नहीं रहता है, उनके वचन नीतिपूर्वक हैं। गुरु केवल ब्रह्म के ज्ञानी हैं और माया से मोह नहीं करते हैं, वे हमेशा जागृत रहते हैं, वे भ्रम की नींद में कभी नहीं सोते हैं और न ही भूमि पर निवास करते हैं। गुरु सदा संतोषी और सहज में लीन है। उन्होंने आशा तृष्णा को भी जीत लिया है, उन्होंने पवन व पानी को वश में कर लिया है और उन्हें कभी प्यास नहीं लगती है। जिन्होंने उल्टे कंवल को सीधा कर लिया है, उनकी मति अंतर गति में लग गई है, कवि वील्होजी कहते हैं-मैंने पूर्ण गुरु पा लिया है और मेरे मन की डांवाडोल मिट गई है।

(9) हरजस (राग भैरू)[5]

अलाह अलेख निरंजण देव, किण्य विध्य करूं तुम्हारी सेव।1। टेक।
विसन कहूं जांकौ विसतार, किसन सोई सिरज्यौ संसार।
गोम्यंद सो व्रमंडा गहै, सोई सांमी जुगे जुग्य रहै।2।
अलाह सोई जो उंमति उपाय, दस दर खोलै सोई खुदाय।
लख चौरासी रौह परवरै, सोई करीम जो एती करै।3।
गोरख जो ग्यान गम की कहै, महादेव जो परमंन की लहै।
सिध सोई जो साझै अती, नाथ सोई जो त्रभुवंण पती।4।
जोगी सो जीण्य जरणां जरी, भगति सोई जीण्य भाव सूं करी।
आपा मुसस मुसळमाण, सतगुर कहै साच करि जांण।5।
सिध साधु पकंबर हुआ, जपै एक भेख जुजूवा।
अपरंपर का नांव अनंत, वील्हाजी सिंवरि सोई भगवंत।6।

हे अल्लाह, अलेख, निरंजन, देव, मैं तुम्हारी किस प्रकार सेवा करुं। अगर आपको विष्णु कहता हूँ तो इसमें बहुत विस्तार है, कृष्ण वही है

जिसने इस संसार की रचना की है, गोविन्द वह है जो ब्रह्माण्ड को ग्रहण करता है और श्याम वही है जो सभी युगों में रहता है। अल्लाह वह है जो उमति उत्पन्न करता है, दसवें द्वार को खोलता है–वह खुदा है, जो चौरासी लाख योनियों के संकट मेटता है–वह करीम है। गोरख वह है जो ज्ञान के रहस्य को जानता है, महादेव वह है जो दूसरे के मन को पहचानता है, सिद्ध वह है जो इतनी सब बातों को साधता है, नाथ वही है जो तीनों लोकों का स्वामी है। जोगी वह है जो धैर्य रखता है, भक्ति वह है जो शुद्ध भाव से की जाती है, जो स्वयं कष्ट सहन करता है वह मुसलमान है, जो सतगुरु कहते हैं उसे सत कर मानो। सिद्ध, साधु और पैगंबर हुए हैं वे सब एक ही ईश्वर है उनके वेस ही अलग–अलग हैं, उस अपरंपर ईश्वर के अनन्त नाम हैं, कवि वील्होजी ऐसे भगवान का स्मरण करते हैं।

(10) हरजस (राग भैरू)[6]

ओ संसार नदी जल पूरि, वीच अथघ ढ़िग पलो दूरि।1।टेक।
बोहता लोग घाट लगै आवै, विषम तीरण कोई विरला पावै।
जाकी नाव जरजरी खेवट जूड़ा, कोई जाण जल दोऊं बूडा।2।
गुर क सबद बंधी मन्य धीर, साच सही सूं उतरौ तीर।
आप तीरै संगति कूं तारै, वील्हाजी भेदग पार उतारै।3।

यह संसार जल से भरी नदी के समान है जिसमें अथाह जल है और किनारा दूर है। बहुत लोग इस घाट तक आते हैं मगर इस कठिन तैरने को कोई बिरला ही तैर सकता है। जिनकी शिक्षा भी गलत है और शिक्षा देने वाला भी अज्ञानी है, वे दोनों ही डूबेंगे। गुरु के सबदों से मन को धैर्य होता है और सत्य से पार उतर सकते हैं। जो सच्चा गुरु है वह स्वयं तो तैरता ही है अपने शिष्यों को भी पार उतारता है, कवि वील्होजी कहते हैं, जो भेद जानता है, वही पार उतरेगा।

(11) हरजस (राग विलावल)[7]

उनमंन सेती राचे मना, एक मतौ करि पांचे जणां।1।टेक।
परहरे ओर आंन के व्रणां, औह चित राख्य अनंत की चरणां।
इण्यसी सारि कछु थे तिन पाई, ओर नै खाटी थित्य गुंमाई।2।
जाता सूं राता मन्य मेरा, फिरि फिरि दुख सह्या बोहतेरा।
रहता सूं रहियौ लिवलाई, जातै ओ तंन विण्यस्य न जाई।3।

उनमन राता पुंहता सोई, वील्ह कहै फिर आवण न होई।4।

पांचों प्राणों (प्राण, बयान, अपान, समान, उदयान) को उनमुनी मुद्रा (चाचरी, भूचरी, खेचरी, अगोचरी, उनमुनी) में रचाओ। अन्य देवताओं के रूप को छोड़कर स्वयं ब्रह्म में चित्त लगाओ, अन्य देवों से कोई सार नहीं मिलता है तथा अपनी कमाई नष्ट होती है। जब इनमें मेरा मन मोहित हुआ तो घूम–घूम कर अनेक दु:ख सहे, अगर मेरा मन विष्णु भगवान में लगता तो यह तन अमर हो जाता। जो उनमुनी मुद्रा में रचता है वह पार पहुंचता है, कवि वील्होजी कहते हैं–उसका जन्म–मरण नहीं होता है।

(12) हरजस (राग आसा)

अवधू नै अभिमान न होई, दुनिया की मान्य न रीझै सोई।1।टेक।
बर सोल संम करि चालै, तसकर पांच पुलंता पालै।
परहरि देस दीप बोह रमणां, आसण मांडि गंगा विच जमणां।2।
सकल छाडि अकळ सू राचै, संक वीडारि मगन होय नाचै।
वील्ह कहै मुखि कूड़ नै कहणां, तज्य अभेमांन खाक होय रहणां।3।

हे योगीजन, अभिमान का त्याग करो, दुनिया में मान–बड़ाई की आशा न रखो। हे मूर्ख, आंखें खोल और समझ कर चल, पांचों चोरों को रोको और इस संसार के मोह–माया को छोड़कर ज्ञान मार्ग में रचो, ज्ञान गंगा में आसन जमाओ। सब अन्यों को छोड़कर ब्रह्म में लगो और सब शंकाओं का निवारण करके ब्रह्म में मस्त रहो, कवि वील्होजी कहते हैं कि मुख से झूठ मत बोलो और अभिमान को त्यागकर खाक के समान रहो।

(13) हरजस (राग आसा)

हरि को आरंणियौ मांडि रे लुहारा, कूड़ क्रतब छाडि गिंवारा।1।टेक।
तन करि अहरण्य रसना हथोड़ा, सास धुंवण्य करि सुरति अकोड़ा।
क्रम करि कोयला माया जाळी, व्रभ अगन्य मां ले पर जाळी।2।
क्रीया सार सहज सूं तांई, ता वरखि सूं तूटी न जाई।
घण करि ग्यान मन कुंवांरा, वारत वारत होय निसतारा।3।
वील्हा भल कारीगर सोई, घाट पड़तो खोट न होई।4।

हे मूर्ख लुहार, अन्य कर्त्तव्यों को छोड़कर हरि का अरणिया स्थापित करो। शरीर को ऐरण बनाओ और जिभ्या को हथौड़ा बनाओ, अपने श्वासों को धमनी बनाओ और सुरता को संडासी बनाओ, कर्मों के कोयले से माया

को ब्रह्म अग्नि में जलाओ। इस क्रिया को सहज ही में धारण करो और वर्षो तक मत छोड़ो, ज्ञान के घन से मन को मारो, इससे तुम्हारी मुक्ति हो जायेगी। कवि वील्होजी कहते हैं–वही अच्छा कारीगर है, जिसकी भक्ति में किसी प्रकार का कपट नहीं होता।

(14) हरजस (राग धनासी)[7]

संतो अैसा डर डरिये।1।टेक।
जीव कूं जम की तलब कहत है, हरि चरणां चित धरिये।2।
जारी चोरी अर परनंदया, अै तीन्यौ परहरीये।3।
वैर विरोध काहे कूं कीजै, जीवण नहीं अंति मरीये।4।
और अगन्य का बांण लीयावै, तो आपे जळ होय ठरीये।5।
विष हुंता इम्रत करि लीजै, अजर सबद जे जरीये।6।
डरणा है अबके डरि लीजौ, बोहड़ि उधारे न करीये।7।
वील्हा जाण्य सींवरि मदसुदन, साध संगति उबरीये।8।

हे प्राणी, ऐसे डर से डरो। इस जीव को यम की त्रास मिलेगी, इसलिए ईश्वर के ध्यान में मन लगाओ। चोरी, जारी और परनिंदा इन तीनों का त्याग करो। किसी से वैर विरोध न करो क्योंकि हमेशा के लिए नहीं जीना है, अन्त में सबको मरना है। यदि कोई क्रोध से कहे तो स्वयं को शीतल रहना चाहिये। विष को अमृत बनाओ, अजर (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) की जरणा करो। इस डर से इस समय ही डरो, उसमें उधार न रखो। कवि वील्होजी कहते हैं, विष्णु भगवान को पहचानकर स्मरण करो और संतजनों की संगति करो, जिससे उद्धार होगा।

(15) हरजस (राग आसा)

हरि का ढ़िकोलीया ढुळो मेरा भाई, अैसी सींचौ वाड़ी सूकि न जाई।1।टेक।
काया कूप चित चांच वणाई, पंवण नेज जीभ्या घड़ि लाई।2।
हरि नांव नीरकुळ सुर धारा, सहजे पाणी सींचत कीयारा।3।
सींचत सींचत जब रूत्य आई, फूली फळी वाड़ी बोहत सुवाई।4।
वील्हा विसन कण की वारा, संतजण लुण्य चुण्य उतरे पारा।5।

हे प्राणी, ईश्वर के नाम की ढ़ेकली ढ़ालो, ऐसी सिंचाई करो ताकि ये बाड़ी सूक न पाए। काया का कुआ बनाकर चित को चौंच बनाओ। पवन की रस्सी बनाकर, जिभ्या की घड़ी लगाओ। ईश्वर के नाम की जल धारा

बहाओ। इससे सहज ही में सिंचाई होगी। सिंचते-सिंचते जब समय आया तो यह बाड़ी फूलों और फलों से सुसज्जित हो गई। कवि वील्होजी कहते हैं–विष्णु भगवान के नाम की इस बाड़ी को इकट्ठी करके, भवसागर से पार उतर जाओ।

(16) हरजस (राग आसा)[8]

अमली रे भइया अमल चड़ावौ, अपणां अपणां संत बुलावौ।1।टेक।
वाड़ी न नीपनां मोल्य न लीया, सतगुर ले संतन कूं दीया।2।
पोता खोल्य संतन कै आगै, ल्यौह मेरे वीर जितो तन्य लागै।3।
भिळै नहीं अमल है चोखा, ल्यौह मेरे वीर हरै सब धोखा।4।
वील्हाजी अमल विसन लिव लागी, बोहत दिनां की वायड़ भागी।5।

हे अमली भैया, ऐसा अमल चढ़ावो और अपने-अपने संतों को बुलाओ। यह अमल न बाड़ी में पैदा हुआ है, न मोल लिया है, इसे सत्गुरु ने अपने संतों को दिया है। अमल का पोत (थैली) संतों के आगे खोल दिया, हे भाइयों इसे अपनी इच्छानुसार लो। इसमें किसी प्रकार की मिलावट नहीं है, यह अच्छा अमल है, हे मेरे भाइयों, इसे लो, जिससे तुम्हारे सब भ्रम मिट जायेंगे। कवि वील्होजी कहते हैं कि हमने तो विष्णु भगवान के नाम रूपी अमल को लिया है, जिससे मेरी सब इच्छाओं की पूर्ति हो गई है।

(17) हरजस (राग सोरठि)[9]

सुजिया सीवणौ सींविले सवारौ, दिन वरतै निस होय अंधियारौ।1।टेक।
कीरत करि कपड़ो गज गुर साखी, ग्यान कतरणी कुरपे न राखी।2।
व्यौत वखत मन साबेत रखीया, पेसवौ छाडि खांच्य ले बखीया।3।
सुरैत्य केरी सूई ध्यान धरि धागा, साहिबजी को नांव ले सींविले वागा।4।
वील्हा वागो विसन मन्य भांणौ, लागै मैल न होय पुराणौ।5।

हे दर्जी, जल्दी सिलाई करो, दिन बीत रहे हैं और रात्रि का अन्धेरा होने वाला है। सत्य रूपी कपड़े को, सत्गुरु के ज्ञान रूपी गज से मापो, उसे ज्ञान की कतरनी से काटो। बहुत समय तक मन को न डोलने दो और कुकर्मो को छोड़कर उसकी बखिया (कालर) खींचो। सुरता की सुई में, ध्यान के धागे को पिरोकर, विष्णु भगवान के नाम का कुर्ता सील लो। कवि वील्होजी कहते हैं कि यह कुर्ता विष्णु भगवान के मन को पसन्द है, इसे न मेल लगता है और न यह पुराना होता है।

(18) हरजस (राग मलार)[10]

तेरी मूरति कूं बळि जांव झंभजी, तेरी मूरति कूं बळि जांव।
उमंग्य उमंग्य मन मगन भयो, जन ले ले तेरो नांव।1।टेक।
जोग्य रूप आयौ जग मांही, नीरति सुरति ब्रंभ ग्यान।
मेल्य कलोभ राज गति तीरय सूं, जप तप धरम ध्यान।2।
सुरपति श्रीपति तीन्य लोकपति, अवगति जांकौ नांव।
भगतां क काज्य भेख धरि आयौ, दीण अमर पद दांन।3।
सील साच सत जीव दया जप, जरणां केवळ न्यांन।
वील्ह को सामी तरण तारण सोई, जाकां ए उपख्यान।4।

हे जांभाजी महाराज, आपकी सूरत पर मैं बलिहारी हूँ और मेरा मन आपका नाम लेकर प्रसन्न हो गया है। आप इस संसार में योग रूप धारण करके आये हैं और आपको निरति, सुरति और ब्रह्म का ज्ञान है, मुझे यह लोभ है कि आपके जप, तप, धर्म और ध्यान करने से मुझे मुक्ति मिलेगी। देवताओं के पति, लक्ष्मी के पति और तीन लोकों के पति विष्णु भगवान ही हैं, जिनका नाम अवगति (गति रहित) है, वे अपने भक्तों के लिये योग वेस धारण करके आये हैं और उन्हें मुक्ति दान देंगे। उनके पास, शील, सत, सत्य, जीवों पर दया, जप, जरणा और ब्रह्मज्ञान है, कवि वील्होजी कहते हैं कि हमारा स्वामी मुक्ति देने वाला है, उनका ऐसा वर्णन है।

(19) हरजस (राग गवड़ी)

गवरी का गीत न गाय, समझे मन चोरी है।
तूं गवरी नै गाल्य न देह, झोळ की झोरी है।1।टेक।
परहरि चुड़ी मूंदड़ी, लाल चटो अर खांन।
गरवा पंण अहळो गयौ, औ फोकट पहरांन।2।
ओढ़ण चौळी कांचळी, मांहे थूक विकार।
परहरि हींड हिंडौळणो, करि माळा को हार।3।
परमेसर रोप्पा तपा, जहां तूं पोंछ न बांध्य।
केवल न्यानी दाखवी, पाप धरम री सांध्य।4।
मूळ गुमांवै अंन कौ, देव न आवै दाय।
जे आ गवरी घरि रहै, घर की सत पत्य साह जाय।5।
वील्ह कहै सुण्य वावळी, वीसन करे वखांण।

विसन जपां सुख सांपजै, चूकै आवाजांण।6।

हे प्राणी, तूं गवरी के गीत गाकर सबके मन को क्यों मोहते हो, न ही तूं गवरी को गाली दे, यह झगड़े की जड़ है। चूड़ी, मूंदड़ी, लाल वेणी और आभूषण आदि का त्याग करो, तेरी युवा-अवस्था व्यर्थ जाती है और यह पहरावा फालतू का है। तूने चोली और कांचली धारण की है, लेकिन अन्दर मल-मूत्र है, झूले का झूलना छोड़ दो और विष्णु भगवान का स्मरण करो। विष्णु भगवान ने तप स्थापित किया है, उसे तुम डुलावो मत, ब्रह्मज्ञानी ऐसा कहते हैं कि पाप को छोड़ो और धर्म को ग्रहण करो। जो विष्णु भगवान रूपी अन्न है उसे वह खो रही है, जो देव को पसन्द नहीं, यदि यह कुमति इस शरीर में रहेगी तो घर का सब कुछ नष्ट हो जायेगा। कवि वील्होजी कहते हैं, हे मूर्खा, तुम विष्णु भगवान का स्मरण करो, जिससे सुख मिलेगा और मुक्ति मिलेगी।

(20) हरजस (राग गवड़ी)[11]

मोह न कीजै मानवी, मोह तां हुवै अकाज, म्हारा प्राणियां।
ग्रब गळ्यौ गजराज कौ, गयो रावण कौ राज, म्हारा प्राणियां।1।टेक।
एक मीरां दूजी मानकी, दोन्यौ बहण विकार।
घट घट भीतरि सांचरी, मूंठो सोह संसार।2।
मूंठा राणां राजवी, लीया अपणां वेरि।
मूंठा बांभण वाणियां, लीया खेरि खंगेर्य।3।
अंण जाग्या जोगी मुस्या, लीए खेड़य खंखेड़्य।
संन्यासी सर पर मुस्या, लीया झाड़ि झंझेड़ि।4।
मूंठा भगत वमेख विण्य, जां कुछि आई दाय।
नाद निरत्य कै नाचणौ, इह सेरी पैठी आय।5।
सेरी लाधी मानकी, मीरां मोहण साथ्य।
नीकछु थाते उबर्या, जां कुछि आई हाथ्य।6।
पिंडत मूंठा प्रगटा, गील्य करि पाया पेटि।
रूड़ा सीनांनी मोडीया, अै पणि लीया लपेटि।7।
तापस न्हाठा वन नै, उत पण्य पोहती जाय।
भेद वीहूंणां सह मुस्या, डाकण्य बैठी खाय।8।
मीरां मोहण मानकी, चौथी कहरां मांहि।

रूधै पंथ सुरग कौ, दोरै नै घीसांहि।9।
नी कछु कै घरि पैसि कै, जरणां ताक वणाय।
वील्ह कहै से उबर्‌या, आपौ रह्या छीपाय।10।

हे मनुष्य, मोह न करो, मोह से अकार्य होता है, गजराज का गर्व समाप्त हो गया और गर्व से रावण का राज नष्ट हो गया, हे संत जनों सुनो। एक माया और दूसरी तृष्णा ये दोनों बहनें विकार रूपी है, इनका सबके हृदय में संचार है और उन्होंने सब संसार को डूबो रखा है। इसमें राणा और राजवी डूबे हैं, जो माया को अपनी मानते हैं, ब्राह्मण और बणिये भी इसमें डूबे हैं, जिन्होंने अपने व्यापार को फैला रखा है। जो अज्ञानी योगी हैं वे भी इनमें डूबे हैं, जिन्होंने अपने आडम्बर फैला रखे हैं। सन्यासी भी अपने स्थान बैठे इनमें डूब गये हैं, जिनके हृदय में संशय है। भक्तजन विवेक के बिना इनमें डूब गये हैं, जो गाना नाचना करते हैं, इनमें मगन रहते हैं। जब सत्य की सीढ़ी मिल गई तब तृष्णा और माया भगवान में समा गई, जिनका हृदय शुद्ध हुआ उन्हें कुछ प्राप्त हुआ। पंडित जन अपने पेट पालन में लगे हैं, उनसे तो नित स्नान करने वाले ही अच्छे हैं, जो अपने को शुद्ध रखते हैं। तपस्वी लोग जंगल में चले गये हैं, परन्तु माया-तृष्णा वहां भी पहुंच गई है, जिनको इनका भेद नहीं है, उन्हें ये खा गई। माया, मोह, तृष्णा और क्रोध इन्होंने स्वर्ग के रास्ते को रोक लिया है, ये नर्क की ओर खींचकर ले जाती हैं। जो मनुष्य जरणा को ताकला बना लेता है, उसके घर इनका निवास नहीं होता है, कवि वील्होजी कहते हैं कि वे मनुष्य ही इनसे बचते हैं, जो अपने को खाक समझते हैं।

संदर्भ टिप्पणियां

1. (क) अवधु देखि भरम की बाजी, तातै अलाह विसन वेराजी।
सुरजन जी का हरजस

(ख) पहलै भ्रमै भ्रम निवारो, दूजै भूल जी मति मारो।
तीजै भटक भटक मति भूलो, चौथे भूल चौरासी झूलो।।
साहबराम-जम्भसार, पृ. 36-40

(ग) बाबा माइआ भरमि भुलाइ,
भरमि भूली डोहागणी, ना फिर अंकि समाइ।1।
श्रीगुरुग्रंथसाहिब, पृ. 60, सन् 1952

2. (क) हिन्दू तुरक करै सब सेव, दया रूप ओळखीयो देव।
चहुंच कामां हुवो चाव, राव रंक परच्या पतिसाह।47।
केसोजी, कथा चितौड़ की

(ख) क्या हिन्दू क्या मुसलमान, अर्थ खोज्यां गति पावै।
परमानन्द आस हरि पुरवै, एक मन एक चित ध्यावै।387।
जांभाणी सुभाषित-सम्पा. डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई (अप्रकाशित)

3. मोरा लाल नै अैसो हरजी रो, झूंबखै पांचूं परमल भारी।
ए पांचूं जे वस्य करै, सो पति वरता नारी।1।टेक।
आसानन्द-हरजस

4. भाई रै गुरु विनु गियानु न होइ,
पूछ हु ब्रह्मे नारदै वेद विआसै कोइ।1।
श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पृ. 59, सन् 1952

5. गोरख कह्यौ सो जोग निवास, दतात्री दाख्यौ सन्यास।
जैन धरम जीनवर की बाण, महमद कहीयै स मुसलमाण।6।
वील्होजी, कथा अवतारपात

6. ए दुनिया को थिर नहीं, चित चेति हिया रे।
नहीं थिर अंबर मेदनी, ससि सूरज तारे।टेक।
काजी महमूद के पद (ह.लि.प्र.) वि.सं. 1828

7. जे कोई हो हो होय करि आवै, तो आपण होइयै पाणी।105।
जाम्भोजी का सबद

8. मैं अमली हर नाम की, मुझ वाइड कावै।
पीया पीयाला पेम का, अवर नहीं मुझ भावै।1।टेक।
मीरा का पद, ह.लि.प्र., 18 वीं श., पत्र 2

9. सुजीया सोइ जुगि जुगि जीवै, विनही कपड़ै वागौ सीवै।1।टेक।
सुरजन जी का हरजस (38)

10. (क) बल्य जाऊं झांभजी रे नांव नै, साधां मोमिणां रो प्राण अधार।
वील्होजी की साखी, ऊमाहो।

(ख) बलि जाइयै लला तेरे दासन कूं, बलि जाइयै।1।टेक।
आलमजी का हरजस

11. (क) रे मन मोह मीठी खोड़ि,
उनमनी घर आवै अंधे, डारि तिणै ज्यौं तोड़ि।1।टेक।
केसोजी का हरजस

(ख) गजराज के जद फंदा काटे, नांव लीयो तेरो।
दुरगादास का हरजस

13. कथा जैसलमेर की (राग आसा)

दुहा

सतगुर आगळ्य विनती, करे विळगूं पाय।
इहि कारण गुर वीनऊं, आखर द्यौ समझाय।1।

सर्वप्रथम गुरु के चरणों को पकड़कर निवेदन है कि हे गुरु महाराज, आप मुझे यह काव्य लिखने का सामर्थ्य दो।

विसनवतार वखाणतां, कूड़ भीळक्यौ मांय।
बकस करे तूं बापजी, तीन्य लोक का राय।2।

विष्णु के अवतार जाम्भोजी महाराज का वर्णन करते समय कवि के मन में ऐसी शंका है कि कहीं कुछ गलत न कहा जाए, अत: हे परमपिता, तीन लोक के स्वामी, आप क्षमा करें।

जैसलमेर सुथांन गढ़, जादंम वंसी राज।
टीके रावळ जैतसी, राखे कुळ की लाज।3।[1]

जैसलमेर गढ़ जैसे शुभ स्थान पर यदु वंशियों का राज था, इस राज्य के अधिपति रावल जैतसी थे, जो अपने कुल की आन रखने वाले राजा थे।

दान दया जरणां जुगति, साच सील सुगीयान।
डरपै प्राछीत पाप तै, धार ध्रमै धीयान।4।

रावल जैतसी दान, दया, धैर्य, युक्ति, सत्य, शील, सुज्ञान, धर्म तथा ध्यान को धारण करने वाले तथा पाप-प्रायश्चित से डरने वाले थे।

जैत समंद पतीठ की, हरख उपनी मन्य।
उजवणौ सुकीयारथौ, आवै देव जिगन्य।5।[2]

रावल जैतसी ने जैतसमन्द नामक तालाब का निर्माण करवाया था, इस जैतसमन्द की प्रतिष्ठा करने के विचार से उनके मन में हर्ष उत्पन्न हुआ, इस उद्यापन (उजवणा) की सुसम्पन्नता के लिए यज्ञ में देव जाम्भोजी आये, ऐसा विचार रावल के मन में उत्पन्न हुआ।

जादम नै जगदीसरां, चरण कंवळ री चाहि।
उजवणौ हुवै उजळौ, सतगुर आवै माहि।6।[3]

यदुराज रावल जैतसी के मन में जगदीश के चरण कमलों की चाह है, उनका विचार है कि इस जैतसमन्द की प्रतिष्ठा का उद्यापन तभी उत्तम रीति से होगा, जब इस समारोह में देव जाम्भोजी आयें।

सीख दियै सांई करूं, पाप नीं सकै पोहि।
खरच करूं बरकति हुवै, तो जिग पूरो होइ।7।[4]

रावल की चाहना है कि वह जाम्भोजी की शिक्षानुसार ही कार्य करें, जिससे उसे पाप न दबा सके, रावल कहता है कि मैं ज्यों-ज्यों खर्च करूं, त्यों-त्यों कोष में वृद्धि होती जाए, तब यह यज्ञ पूर्ण हो।

चौपई

देव दीसी परधान चलायौ, देव दीवाण्य उमेद करि आयौ।
नीणे नीर निरमळौ दीठौ, चरण बंदि सनमुखि बइठौ।8।

जांभोजी को बुलाने के लिये रावल ने प्रधानमंत्री को भेजा। वह देव जाम्भोजी के दरबार में बड़ी आशा से आया। आंखों से निर्मल जल रूपी जाम्भोजी को देखकर उनकी चरण वन्दना की और उनके सामने बैठ गया।

कर जोड़े वीनवती सार, रावळ कह्यौ सो विण विचार।
तूं सतगुर हूं सेवक थारौ, इण्य अवसरि जैसलमेर पधारौ।9।

उसने हाथ जोड़कर सार रूप में विनती की और अपने रावल के विचार जैतसमन्द की प्रतिष्ठा के उजवणों के सम्बन्ध में कहे, आप सत्गुरु हैं और मैं आपका सेवक हूँ, अत: इस अवसर पर आप जैसलमेर पधारें।

धन्य धन्य ध्रमैं जुग मां अवतरीयौ, सतजुग ध्रम कल्य मां वापरीयौ।
जांता कुपह परचे पहे आण्यां, गुर क ग्यान अबूझ बुझाण्यां।10।

संसार आपके अवतार से धन्य हो गया, कलियुग में सत्युग का धर्म आ गया है, जितने बुरे कर्म राह में है, वे सब आपके आने से नष्ट हो जाएंगे, गुरु के ज्ञान से दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हो जाएगी।

गुर ओळख्य परथाय न भुल्ला, रीद कंवळ रा ताळा खुल्ला।
रीध्य सीध साच दया दरि सूरौ, तो आय जीग होयसी पूरौ।11।

गुरु को देखने से सनातन परम्परा का स्मरण हुआ, और हृदय-कमल के कपाट खुल गए, आप रिद्धि, सिद्धि, दया, सत्य आदि देवें और आपके आने से ही यह यज्ञ पूर्ण होगा।

दुहा

जीण री वाचा न टळै, वायक कूड़ न होय।
खरच रचत खता न पड़ै, जे जिग्य आवै सोय।12।

जिनके वचन अटल है और जिनकी वाणी झूठी नहीं होती है, इस यज्ञ रचना के व्यय में कोई विघ्न नहीं आएगा, यदि आप इस यज्ञ में आएंगे।

चौपई

देव कहै रावळ पूछावौ, मौ आयै नहीं अवर को दावौ।
मिलिस्यै राय घणी ठुकराई, जण परधान घणां छै माही।13।

देव जाम्भोजी ने कहा कि राव से पूछो कि मेरे आने पर किसी की दखलअन्दाजी नहीं होगी अर्थात् रावल को मेरी बात माननी होगी, वहां कई राय देने वाले व पंचायती करने वाले मिल जायेंगे, जिनमें कई प्रधान लोग भी है।

मिलिस्यै जोगी नै सन्यासी, मिलिस्यै तापस तीरथवासी।
मिलिस्यै पढ़िया पिंडत जोयसी, म्हारौ कहियो करणौ होयसी।14।

वहां कोई योगी, सन्यासी, तीर्थवासी, तपस्वी आदि मिल जायेंगे, पढ़े-लिखे, पण्डित, जोशी (ज्योतिषी) मिल जायेंगे परन्तु मेरे वहां आने पर मेरा कहा हुआ ही मानना होगा।

आयो सो आप कनै रखायौ, जण परधान आपको चलायौ।
आखर अकळि सूं मति रूड़ौ, कहिसी कह्यो न भाखै कूड़ौ।15।

इसके बाद जाम्भोजी ने जैसलमेर में आए हुए प्रधान को तो अपने पास ही रख लिया व अपने प्रधान को जैसलमेर भेजा, यह प्रधान बोलने में ज्ञान और बुद्धि से परिपूर्ण था और गुरु का कहा हुआ ही कहेगा, झूठ कुछ नहीं कहेगा।

मन वाचा अंत्र नहीं राखै, जां हीरदै सांई सति भाखै।
गुर दीवाण्य अैसो जोवीजै, जीण रे कह्यो सोह कोय पतीजै।16।

मन और वचन में यह अन्तर नहीं रखता, जिसके हृदय में स्वयं गुरु सत्य भाषण करते हैं। गुरु ने उसके हृदय में ऐसा मंत्र दे दिया है कि उसके कहे पर हर कोई विश्वास करता है, अर्थात् उसके वचनों को लोग जाम्भोजी के वचन मानते हैं।

दुहा

झंभ अैसो जंण मोकळ्यौ, आप दियो उपदेस।
रावळ नै रुड़ा कही, सतगुर तणौ संदेस।17।

जाम्भोजी ने ऐसे बहुगुणी व्यक्ति को भेजा जिसे आपने स्वयं उपदेश दिया था, उसने रावल से जाकर सत्गुरु जाम्भोजी का उपदेश कहा।

परधान कही जो गुर कही, रावळ आगै जांहि।
तुं माहरौ कहीयो करै, मत धरम रवो मांहि।18।

जो गुरु ने कहा था, वह प्रधान ने रावल के सामने जाकर कह दिया कि तुम मेरा कहा करो और मेरे धर्म व मत में रहो।

चौपई

भाव सहेत परधान चलायो, जैसलमेर हुकम सूं आयौ।
दुवागर दुव वापरीयो, साचौ बनो सभा सांचरीयो।19।

जाम्भोजी ने बड़ी भावना से प्रधान को भेजा, वह जैसलमेर गुरु के हुकम से आया, दुबारा दूत ने आकर सभा में सच्चे वचन कहे।

रावळ नै मिलियो सुगियानां, गुर का वचन सुणाया कानां।
देव कहै रावळ पूछावौ, मो आयां नहीं अवर को दावौ।20।

रावल ने गुरु के वचन सुने तो उसे ज्ञान की प्राप्ति हुई। रुड़ा ने कहा कि देवजी ने कहा है कि रावल से कहना कि मेरे आने पर किसी और की दखलअंदाजी नहीं होगी अर्थात् जैतसमन्द के प्रतिष्ठा समारोह यज्ञ में मेरा आदेश माना जायेगा।

मिळस्यै जोगी न सन्यासी, मिळस्यै तापस तीरथवासी।
मिळस्यैं राय घणी ठुकराई, जण परधान घणां छै मांहि।21।

वहां कई योगी सन्यासी मिल जायेंगे, तीर्थों पर रहने वाले तपस्वी मिल जाएंगे, बहुत सी राय देने वाले व ठकुराई करने वाले मिल जायेंगे, उनमें बहुत सारे प्रधान लोग भी होंगे।

मिळस्यै पढ़ीया पिंडत जोयसी, मांहरो कहीयो करणौ होयसी।
परधान कहै एह वचन विचारौ, मन रो मतौ कहो जी थारौ।22।

इसी तरह पढ़े-लिखे पण्डित व ज्योतिषी भी मिलेंगे परन्तु इन सबके होते हुए भी मेरा कहा करना होगा, प्रधान ने कहा कि जाम्भोजी के सन्देश पर विचार करो और आप अपने मन की बात कहो।

रावळ कहै-

दुहा

म्हे पढ़ीया पिंडतां पूछता, करता वांरी सेव।
म्है सोई सति थापस्यां, जो दाखविस्यै देव।23।

रावल ने कहा कि मैं पण्डितों से पूछकर भी देवजी की सेवा करता हूँ, मैं सांई के सत्य की स्थापना करुंगा अर्थात् सांई (जाम्भोजी) जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करुंगा।

चौपई

रावळजी वीनवती सारै, गुर चरणां री आरति म्हारै।
देवजी पोह कर साथरीयां, पहली निरति करता करीया।24।

रावलजी ने विनती करते हुए कहा कि मैं गुरु चरणों की आरती

करता हूँ। देवजी पधारकर उपदेश करने की कृपा करें, जिस प्रकार की कृपा वे पहले भी करते रहे हैं।

सीव संध्य जे सांम्हौ आऊं, चरण बंदि नै सीस नुवाऊं।
आए गुर आपौ परगासै, इण दीठां पातेग नासै।25।

मेरी यह इच्छा है कि मैं उनके जैसलमेर पधारने पर, सीमा पर उनको लिवाने जाऊं और चरणों की वंदना शीश झुकाकर करुं, गुरु यहां आकर अपना ज्ञान प्रकट करें। उनके दर्शन करने से मेरे पाप नष्ट हो जायेंगे।

रावळ कह्यौ रुड़ा सांभळीयौ, सीख्य मांग जण पाछो चळीयौ।
देव दीवाण्य विगसतौ आयौ, रावळ कह्यो सो आय सुणायौ।26।

रावल ने जो कहा उसको रुड़ा ने ठीक से समझा और आज्ञा मांगकर वापस चला गया, वह देव के दरबार में प्रसन्नता पूर्वक आया और रावल ने जो कहा था वह गुरुजी को सुनाया।

रावळ कौल कीयौ रळियाळ, कौल सुध होय वाचा पाळ।
थांहरो कहीयो रावळ करिसी, थे कहिस्यौ सोई आदरिसी।27।

रुड़ा ने कहा कि रावल ने खुशी-खुशी आपकी बातें मानने का वचन दिया है, उसका वचन शुद्ध है और वह वचन पालने वाला है, आप जो कहेंगे वह रावल करेगा और उसे आदर देगा।

दुहा

आसा पूरण दुख हरण, औसर सारण काज।
रावळ सारै वीनती, थां आयां गुर लाज।28।

रावल ने विनती करते हुए कहा कि आप आशा पूर्ण करनेू वाले, दु:ख को हरने वाले और अवसर विशेष पर कार्य को सिद्ध करने वाले हैं, हे गुरु! आपके आने से ही मेरी मान मर्यादा रहेगी।

चौपई

रावळ एक वीनवती सारी, घणी उमेद करूं छूं थारी।
देवजी पोह कर साथरीयां, पहली निरति करता करीया।29।

रावल ने एक विनती यह की है कि मैं आपसे बहुत आशा करता हूँ, हे देव! आप यहां (जैसलमेर) आकर सत्संग (उपदेश) करने की कृपा करें, जिस प्रकार से आप पहले करते रहे हैं।

देव कहतां निरति न दीजै, संगति पाप क्यौं मांहे लीजै।
साथ्य घणां रावळ र चड़िस्यै, जीव घणां खुरा तळ्य मरिस्यै।30।

देव ने कहा कि हम भोग-विलास में लिप्त रहकर, शक्ति रहते पाप

क्यों करें, यदि बहुत साथियों के साथ रावल के यहां चलेंगे तो घोड़े व बैलों के खुरों (पैरों) के नीचे आकर बहुत जीव मर जायेंगे।

जां जां गांवां मां नीसरिस्यै, थोड़ी घणी खीयारण करिस्यै।
घोड़ा ऊंठ मिनख दुख पायस्यै, मांहो मांही वेठि चलायस्यै।31।

जिन-जिन गांवों में से निकलेंगे, वहां लोगों को थोड़ा बहुत कष्ट भी होगा, घोड़े, ऊंट और मनुष्य दु:ख पाएंगे, इसलिए हम अपने आप ही चलकर आ जायेंगे।

देव कहै दुसण परि हरिस्यां, रावळ सूं गोठि निदोसी करिस्यां।32।

देव ने कहा कि हम तो दोषों को हरण करेंगे और रावल का साथ दोष रहित गोष्ठी करेंगे।

दुहा

जिण्य विध्य दुंसण नै चड़ै, दोष न लागै कोय।
रावळ सूं इम मिल्यस्यां, गोठि निदोसी होय।33।

जिस विधि से दोष न चढ़े, कोई दोष न लगे, रावल से इसी विधि से मिलेंगे, तभी दोष रहित गोष्ठी होगी।

जगत गुर जगदीस रो, भाटी ऊपरि भाव।
चल चल हुई चलण, संतो करो समझाव।34।

जाम्भोजी जगत गुरु जगदीश की भाटी रावल जैतसी पर कृपा है, उनके जैसलमेर चलने की तैयारी हुई, उन्होंने सन्तों को चलने के लिए समझावना दी।

चौपई

के के मोमीण दरग पूरा, पांच वखत अर करणी सूरा।
सीस टोपी जपमाली हाथे, के साथरीया चाल्या साथे।35।

इन चलने वालों में कई मोमिण और सिद्ध भी थे जो पांच समय परमात्मा की अराधना करने वाले थे, इनके सिर पर टोपी व हाथ में जप करने की माला थी, इस प्रकार के कई साथी साथ में थे।

उजळा वागा सुं हथेयारा, माता ऊंठ र घणौ सतारा।
कूंची साज नै वरगै सुधा, साम्य साथे संत समुंधा।36।

सफेद कपड़े से सजे हुए कई मोटे-ताजे ऊंट लिए गये, इन पर अत्यन्त सुविधाजनक कूंची (पलाण) सजाई गई, इन ऊंटों को सन्त लोगों ने सम्भाल रखा था।

सह सारीखी करै सझाई, कसणे सीरख डोरि वणाई।
पांणी प्रघळ छागळ हाने, भोजन भाव सुणीजै काने।37।

साथ में गद्दी लगाई गई, गद्दी को कसने के लिए डोर लगाई गई, ऊंट की कूंची के पिछले भाग में बंधी हुई पानी भरने की कपड़े की थैली में पानी खल-खल की आवाज करता है, जैसे भजन-भाव कानों को सुनाई देते हैं।

ऊंठ सिणगारि किया सह उभा, झोळ साथे सुहावै सुभा।
मने उछाह विवाणे चड़ीया, जैसलमेर पोह पंथे खड़ीया।38।[5]

श्रृंगार किए हुए सब ऊंट खड़े हुए हैं जो झोल (ऊंट को ढ़कने वाला बड़ा वस्त्र) के साथ शोभायमान हो रहे हैं, मन में भारी उत्साह से सब ऊंट रूपी विमानों पर चढ़े हुए हैं और जैसलमेर जाने वाले रास्ते पर चल दिए हैं।

ऊंठ तीन्य सै अवर पचीसा, महमां घणी करै जगीसा।
झोळौ झुलरि मुंहरै छाजै, अनंत कळा सूं आप विराजै।39।

ऊंटों की संख्या तीन सौ पच्चीस है, मन में गुरुजी की भारी महिमा जागृत हो रही है, ऊंटों पर झोल-झूलर व मोहरी शोभा दे रहे थे, यहां अनन्त कलायुक्त आप (जाम्भोजी) विराजमान हैं।

संत सांतरा सतगुर केरा, जाय वासणपी दीन्हा डेरा।40।

सत्गुरु के साथ अच्छे सन्त हैं, इस प्रकार जैसलमेर के लिए चलते हुए आखिर में उन्होंने गांव वासणपी में डेरा दिया।

दुहा

नफर न चाकर न कह्यौ, मिनख न दीन्हौं भेव।
गब सरूपी सांभळ्यौ, वासणपी आयौ देव।41।

सेवकों को कुछ न कहते हुए तथा अन्य मनुष्य को भेद दिए बिना सहज ही लोगों ने सुना जाम्भोजी वासणपी आए हैं।

चौपई

सांभल्य रावळ मन्य रसायौ, निरति हुई तिम वरो चलायौ।
चावळ मूंग र घीरत मीठाई, आटो आंण करै सझाई।42।

यह सुनकर रावल के मन में बड़ा हर्ष हुआ, रीतिपूर्वक रसोई का आयोजन करते हुए चावल, मूंग, घी, मिठाई तथा आटा लाकर रसोई बनाना शुरु किया।

लायक साथ कियो सोह भेळो, चालौ करां सुगुर सूं मेळो।
महमां दीठी मन्य रल्ययाळो, देसपती होय चाल्यौ पाळो।43।

रावल जैतसी ने योग्य लोगों को अपने साथ एकत्र करके कहा कि चलो सत्गुरु से भेंट करते हैं, उनकी महिमा को देखकर मन हर्षित हुआ, वे राजा होते हुए भी पैदल मिलने चले।

सनमुखि आया विळगौ पाए, बांह ग्रहेन मीलीयो साहे।
देवजी घणी मया रावळ सूं राखै, दया सरूप मया करि भाखै।44।

रावल सम्मुख आकर उनके पांवों में गिर पड़े, गुरुजी ने उनकी भुजाएं पकड़ कर प्रेम पूर्वक अपने गले से लगाया, जाम्भोजी ने रावल पर दया पूर्वक बहुत कृपा की।

विनुं हेत वधार जुवा, साम्हां आय दुखी कांय हुवा।
कांय संताया अतरा जीया, पोहण मिनख दुखी कांय कीया।45।

देवजी रावल को कहते हैं कि तुम विनयपूर्वक प्रेम धारण करके सामने आकर दु:खी क्यों हुए, इतने जीवों को क्यों परेशान किया और क्यों पशुओं व मनुष्यों को दु:खी किया।

केवळ वचन न जाई मेटा, काचौ घड़ो दियो एक भेटा।
थे तीन्य लोक रा नाथ कहावौ, मोमीन खरा तेड़या आवौ।46।

सत्य वचन अमिट होते हैं, ऐसा कह कर गुरुजी ने एक मिट्टी का घड़ा रावल को भेंट किया, रावल ने कहा कि आप तीन लोकों के स्वामी कहलाते हो और सच्चे भक्तों के बुलाने पर तुरन्त आते हो।

आं कूड़ां कुगरा ता सर न काई, तो आय मो इधक बड़ाई।
पांच कोस जे साम्हो नां आउं, कहो देव हूं कुंण कहाउं।47।

झूठे व निगुरे लोग आपकी शरण से वंचित रहते हैं, आपके आने से मेरा मान बढ़ा है, यदि मैं पांच कोस तक चलकर अगुवानी के लिए न आऊं तो क्या कहलाऊंगा।

दुहा

रावळ सारै विनती, वरो रखावौ ठांहि।
जीम'र संत संतोषिया, रळी हुवै मन मांहि।48।

रावल ने कहा कि आप स्थान पर पधारें, सन्त जब भोजन करके तृप्त हुए तो सबके मन में अपार खुशी थी।

चौपई

देव कहै ज्यग्य परज मीलेसी, थारो वरौ स कोई लेसी।
जत जुगति सूं पात परीखौ, वरौ लीयो तौ बांही सरीखौ।49।

देवजी ने कहा कि यज्ञ में जब लोग मिलेंगे तो सब आपसे वचन

लेंगे, प्रयत्न व युक्ति से पापों की परीक्षा कीजिये और उसके अनुसार वचन दीजिये।

मांहरौ वरो गरु उपदेसौ, भाव सहेत विगत्यस्यौ देस्यौ।
दया सरूपी बोह उपगारौ, देतां लेतां होय निसतारौ।50।

मैं आपसे यह वचन मांगता हूँ कि आप ज्ञान का उपदेश भाव सहित परम्परा के अनुसार दें, आपके उपदेश दया स्वरूप हैं, जिनको लेने से उद्धार होता है।

गुवाल कहै–

देवजी रै साथ्य संगाती, कुंण जाति नै कुंण नीयाती।
कुंण कुळी मांहि उतपनां, चारण कहै सुंणावौ कानां।51।

गवालों ने कहा कि देवजी के साथ कौन है, किस जात-नियात के हैं और किस वंश में पैदा हुए हैं, कृपया हमें बताएं।

तेजौ कहै–

प्रथमै तौ जाट कुळी उतपनां, गुर मिलियो ज्यौं हुवा सुग्यानां।
पात हुवा पाळटिया परिया, उतिम संगति हूं निसतरिया।52।

तेजोजी कहते हैं कि पहले तो जाट वंश में पैदा हुए थे और जब गुरु से भेंट हुई तो दिव्य ज्ञान हुआ, जिससे पाप दूर हो गए व उत्तम संगति से उद्धार हुआ।

सतपंथ मेल न जांही जूवा, कुळ पालटि नै न्रमल हूवा।53।

हमें सत्य का मार्ग मिल जाने पर ही हम अपने कुल को छोड़कर पवित्र हो गए हैं।

गुवाळ कहै–

दुहा

जीकारो जांणौ नहीं, खर कूकर री बांण्य।
बतळायां हो हो करै, न्रमळ कहि नै वखाण्य।54।[6]

जो सम्मान पूर्वक बोलना नहीं जानते और मूर्खों के समान बोलते हैं, यदि उन्हें बुलाये तो क्रोध करते हैं और मीठी बोली नहीं बोलते हैं।

सीसौ तौ सोहटौ बिकै, नहीं कंचण रै मोल्य।
जाट स जाटे जाट छै, बारट वीनां न बोल्य।55।[7]

कांच तो सस्ता बिकता है पर सोने का कोई मोल नहीं है, बोलने में जाट तो आखिर जाट ही है, बारहट विनयपूर्वक बोलता है।

आखर अकल्य सूं अखरौ, गुणवाय के सुजाण।
माथो कांय मुंडाड़ियौ, (तेजा) एथ कण्य हुवौ अजाण।56।

ज्ञान ध्यान पूर्वक ग्रहण करो और गुणों को अच्छी तरह परखो, केस

मुंडाकर तेजा अनजान क्यों हो रहा है?

तेजो कहै–

माथौ तो तिहुं अंगळा, उगै नहीं मुवाळ।
(म्हे) गुर मुखि मूंड मुंडाड़ियौ, अळियो मंचवि गुवाळ।57।[8]

माथा तो तीन ऊंगली का है, इस पर केस नहीं उगते हैं, सिर के बाल सत्य के लिए मुंडाए हैं, अनजान ग्वाले भ्रम में उलझे हुए हैं।

चौपई

मुद्रा देखि आदेस कहीजै, माळा देखि राम-राम करीजै।
मुसळमान सलामां लेख, राह मारग का एही भेख।58।

मुद्रा (कानों में कुण्डल) देखकर आदेश कहना, माला देखकर राम-राम करना, मुसलमान सलाम करता है, ये सभी अलग-अलग मार्गो से भगवान को प्राप्त करने के प्रतीक है।

निगुर सुगुर की परखि लहीजै, वांनौ देख्य वंदना कीजै।
मुंडत भेख भगत रो वानुं, यांनु नुवण्य करै सुगियानुं।59।

अच्छे व बुरे गुरु की पहचान कर उनकी वन्दना करें, मुंडित केस व भगवां धारण किए हुए को नमन करके ज्ञान प्राप्त करो।

मूंड मुंडाया खेचर नींदै, पळंतर की वात न वींदै।
कोड़ि निनाणवै नरपति राया, गुर मिलियो जां मूंड मुंडाया।60।

मुंडित केस वाले, खेचरी-निंद्रा में भी जागृत रहने वाले, भूत-प्रेतों को न मानने वाले, निन्यानवे करोड़ राजाओं के भी राजा गुरु जाम्भोजी मिल गए हैं, इस कारण मैंने अपने बाल मुंडवाये हैं।

गुर कै सबद सु अखर रीधा, कुळ पाळटि नै सतपंथ सीधा।
कुळ मांही म्हे हुंता मारण, करता अनरथ जुलम अकारण।61।

जब गुरु के सबदों का ज्ञान हुआ, तब अपने वंश को छोड़कर सत्य के सीधे मार्ग को अपनाया, अपने वंश में हम शूरवीर थे और अकारण ही अनर्थ व जुल्म करते थे।

कुळ पालटि नै किया जुवा, पाप परहरे नै चारण हूवा।62।

अपने वंश को छोड़कर उससे अलग हुए, पापों को छोड़ा और चारण (ज्ञानी, युग चेता) हुए हैं।

दुहा

मारण तां चारण हुवा, मन ता मेल्ही मार।
चारां पण्य मारां नहीं, (अै) सतगुर का उपगार।63।

अपने मन के अज्ञान को मारने के कारण चारण हुए और अपने मन पर नियंत्रण किया, पोषण करते हैं परन्तु मारते नहीं, यह सब गुरु कृपा का फल है।

रावळ कहै-

चौपई

चारण चंदण परीखा, नींब भी करि ले आपा सरीखा।
बीसर है चंदण कै खोह, अंत्र गांठी वास न पोह।64।

रावल कहते हैं कि चारण चन्दन के समान होते हैं, जो नीच को अपने जैसा कर लेते हैं, चन्दन के खोखलेपन में सांप रहते हैं, फिर भी उसकी सुगन्ध उन्हें मोहित नहीं करती है।

वास तणां गुण मन परवाण, सो सतगुर की परखि न जाण।
पारस मण्य तांबौ मेळीजै, कुळ पालटि कंचण होय सीजै।65।

वह वास मन व गुणों के अनुरूप सत्गुरु की पहचान नहीं करती, पारस के पास तांबा रखने पर वह सोना हो जाता है, इसी प्रकार सत्गुरु के संसर्ग से मुक्ति हो जाती है।

मीठा मिल्यै पालटियै खारा, गुर मिलियै रा उपगारा।
गुर पांणी हुंता दूध पियावै, नीबड़ियां नारेळ नीपावै।66।

मीठा मिलने पर खारे को छोड़ जाता है, यह गुरु कृपा का फल है, गुरु पानी को भी दूध करके पिलाता है और निंबोलियों को भी नारियल बना देता है।

कंचण करि पालटीया परीया, मध्यम हुंता उतिम करीया।
जैसलमेर रो धणी कहीजूं, कूड़ कुपातां हूं न पतीजूं।67।

उन्हें सोने के समान अच्छे आदमी बनाये और जो मध्यम दर्जे के थे उन्हें उत्तम बनाये, रावल कहता है कि मैं जैसलमेर का स्वामी कहलाता हूँ अत: झूठी बातों पर विश्वास नहीं करता।

अगुण कह्या स यांही नै छाजै, कहि दाखौ मनै न वीराजै।68।

ये गुण इन्हीं की शोभा है, कहते रहो पर मुझे ये अच्छे नहीं लगते।

दुहा

चारण रावळ नै वीनवै, करि सुं गुण संकळाप।
आखर जोड़यौ न जुड़ै, लागो कळंक सराप।69।

चारण रावल से निवेदन करता है कि गुरु के सभी उपदेशों को मानो, बिना गुरु कृपा के कोई काम नहीं होता और कलंक का श्राप लगता है।

चारण गयो जटाध्य मां, वाही चोट जेड़ंग।
विसहर कीया बारहट, विरत किया वेरंग।70।

चारण जाटों के बीच में गया, उन्होंने जैली से चोटें पहुंचाई, इससे बारहट आग-बबूला हुआ और उसका शरीर बेरंग हुआ।

चौपई

चड़ौ चड़ौ करि सेवग चड़ीया, जैसलमेर पोह पंथे खड़ीया।
रावळ मन्य रळेयाळौ दीस, दरसण दीठा खरो जगदीस।71।

चढ़ो-चढ़ो कहकर सभी सेवक जैसलमेर के रास्ते पर चल पड़े, जाम्भोजी के दर्शन करके रावल प्रश्नचित दिखाई दे रहा था।

पोहण पंथ घणां दुखाया, जैसलमेर सहज सूं आया।
जैत समद आय उतरीया, दरसण दीठ पातिग हरीया।72।

उन्होंने रास्ते में जीवों को अधिक दु:ख नहीं दिया और सहज ही जैसलमेर पहुंच गए, पापियों ने दर्शन करके अपने पापों को नाश किया।

जैजैकार सहर गढ़ मांहि, परजा आय विळगै पांए।
दरसण भैंटै राव ज राणां, सांभल्य पापां पड़ै भगाणां।73।

सारे गढ़ व शहर में जय-जयकार होने लगी, लोग आकर उनके चरणों में गिरने लगे, राव व राणा जाम्भोजी के दर्शन कर रहे हैं जिससे उनके पाप दूर हो रहे हैं।

कळा नूर वरत झांभाणौं, देव सभा देवलोक मंडाणौ।
जे जण औलखि पाय विळग्गा, जां जीवां रा सांसा भग्गा।74।

वहां सूर्य के समान उनकी कला व ज्ञान का प्रकाश है, जैसे देव लोक में देवताओं की कला का प्रकाश होता है, उसी प्रकार जाम्भोजी की कला का प्रकाश है, जिन लोगों ने उनको पहचान लिया वे उनके चरणों में गिर पड़े, जिससे वे भव बंधन से छूट गये।

दुहा

जिण्य घटि कूड़ न वापरै, बोलै साच सुजांण।
जप तप कीरीया गुर सुगुर, जाचेग करै वखांण।75।

अच्छे लोग झूठ को छोड़कर सत्य बोलते हैं, गुरु की शरण में जप-तप और क्रिया सब सम्पन्न होती है, इन बातों का गुणगान याचक करते हैं।

रावळ कहै-

चौपई

हूं तो मानूं वचन तुहारौ, हुकम करौ तौ वरौ हकारौ।

जां जां देवजी हुकम नहीं दीजै, तां तां मांहरौ मन न पतीजै।76।

रावल कहते हैं कि मैं आपको वचन दे चुका हूँ, मेरे लिए आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, जब तक आप हुकम नहीं करेंगे मुझे सन्तोष नहीं होगा। देवजी कहै–

थांहरै ठाकुर घणा आया, नगर नजीक तंगोट तणाया।
सैण सगा रळिमिळ आया, मींढ़ा बाकर भेंट लियाया।77।

जाम्भोजी कहते हैं कि तुम्हारे बहुत ठाकुर आए हैं, नगर के समीप ही कनात (तम्बू) लगाई है, इकट्ठे होकर सगा सम्बन्धी मिलने आए हैं और मींढ़ा व बकरे भेंट में लाए हैं।

आज तंगोटी दीसै तांण्या, मांहे जीव गुन्है विण्य आण्या।
अमर ताथे जीव रखाड़ौ, पहलौ वरौ सुक्यारथ म्हारौ।78।

भेड़ बकरियों के चारों ओर कनात लगा दी गई जिसके अन्दर बेगुनाह जीवों को एकत्र किया गया, जाम्भोजी कहते हैं कि इन जीवों को अमर छोड़ो, मेरे इस पहले वचन को मानो।

जां जां गाडर छाळी ब्यावै, तां तां हेज घणो करि आवै।
वर विछोह फरजन मारीजै, ताथै अखज अकारण कीजै।79।

जब–जब भेड़–बकरी बच्चे जनती है, तब–तब उनका मोह अधिक हो जाता है, लेकिन उनसे उनके बच्चे छीनकर मारे जाते हैं, यह कुकर्म न खाने योग्य को खाने के लिये करते हो।

वैम'र ताथे जीव रखाड़ौ, दूजौ वरो सुक्यारथ म्हारौ।
जितरी आण तुम्हारै दावौ, तितरी वावरी जीव रखावौ।80।

ब्यानै वाले जीवों की रक्षा करो यह मेरा दूसरा वचन मानो, जितनी आपकी सीमा है, उसके अन्दर के जीवों की आप रक्षा करो।

अतरी मांहे जीव उबरिस्यै, तां धरम काज घणा ही सरिस्यै।
अतरी रा थे जीव उबारौ, तीजो वरो सुक्यारथ म्हारौ।81।

जिस भूमि पर जीवों की रक्षा होगी, उस धर्म से बहुत ही कार्य सिद्ध होंगे, इस भूमि के जीवों की रक्षा करो, इस तीसरे वचन को मानो।

जाहि चोर चोरी करि आवै, थाहरी सींव मा ढ़ांढ़ो ल्यावै।
दाग दीठ जे हुवै झांभाणौ, चोर जाय हुवै ठाकुर वाणौ।82।

जो कोई चोर चोरी करके, आपकी सीमा में पशु आदि लेकर आए, यदि उस पर जाम्भाणा चिन्ह लगा हो और चोर ठाकुर हो तो भी आप ध्यान दें।

निरति हुवै वैठिगर आवै, आय खरौ दीवाण्य सुणावै।
उपर करि नै पाछो दीराड़ौ, चौथो वरो सुक्यारथ म्हारौ।83।

वे निश्चय ही किसी को ठग कर आते हैं और दरबार में सब खरी–खरी सुनाते हैं, इस प्रकार लाया हुआ धन वापस दिलवाओ यह मेरा चौथा वचन मानों।

अै च्यारि वरा सतगुर मांग्या, संकळप करि नै रावळ त्याग्या।
पांच हुं वरां रौ उपर करिसी, सो रावळ निहचै निस तरिसी।84।

जाम्भोजी ने रावल से ये चार वचन लिए, जिन्हें रावल ने संकल्प सहित माने, इनके अलावा पांचवें वचन का पालन करने पर रावल निश्चय ही तरेगा।

जो विसनोइ नाम कहावै, देस आप'र लध कर आवै।
उदर काज आजीवका कीजै, डाण जगायत माफ करिजै।85।

जो बिश्नोई कहलाते हैं और आपके राज्य में व्यापार के उद्देश्य से आते हैं, उनसे किसी प्रकार का कर नहीं लिया जाए।

यह धरम निहच छै थारो, पांचवों वरौ सुक्यारथ म्हारौ।86।

आप इस धर्म को निश्चय कर लीजिये, यह पांचवां वचन परमार्थ के लिए हमारा है।

दुहा

धन्य धन्य तूं धरमां धणी, पापां करण प्रहार।
तोड़तां जीव उबारया, केई एक जीव हजार।87।

हे सत्गुरु आप धन्य है, आप धर्म के धनी हैं और पाप का नाश करते हैं, डूबते हजारों जीवों को आपने बचाया है।

केहक आगळ्य वेमरी, बाळ विछोहे व्रज्य।
ढ़मके ढ़ंढ़ोरो फिर्यौ, सुणियौ सोह परज्य।88।

किसी भी माता (पशुओं आदि की माता भी) के बच्चे को उससे अलग मत करो, इस बात की घोषणा अपनी समस्त प्रजा में राजा ने करवाई।

ढ़मके ढ़ंढ़ोरो फिर्यौ, मेल्ही आण दिराय।
वावरि मत को मांडियौ, रावळ कह्यौ रिसाय।89।

रावल ने गुस्से से कहा–कोई भी शिकार के लिये जाल (कुड़का) नहीं फैलाएगा, इस बात की घोषणा की गई और शपथ भी दिलाई गई।

जीव मरता राखीया, पाप न सक्यौ पोहि।
सतगुर आयौ किम जांणीयै, जे उपगार न होइ।90।

जाम्भोजी ने जीवों को मरने से बचा लिया, क्योंकि वे पापों को सहन नहीं कर सकते थे, उनके आने की यही पहचान है कि वहां उपकार होने लगे।

कवत्त

भगति तंणी परि एह, प्रथम नांय तेड़ीजै।
कटोरां तेल कटोल, अंग मळ्य मरदन्य कीजै।
ताता पांणी तुरति, नीर न्रमळ न्हावीजै।
उजळ वागा पहराय, सोभा सीणगार सझीजै।
उतिम कुळ नै ऊंची चाल, मन मोट मदे से घणी।
आदे गरु तौ आवीयौ, अंति औपम डैरा तंणी।1।

सर्व प्रथम भक्तों की यह पहचान है कि वे नाम का स्मरण करते हैं। तेल से शरीर में मालिश करते हैं और शुद्ध गर्म पानी से स्नान करते हैं, स्वच्छ कपड़े पहनकर शरीर की शोभा बढ़ाते हैं, वे उत्तम कुल के हैं और उनके उत्तम आचरण है। उनके मन में स्वाभिमान है, वहां आदि सत्गुरु जाम्भोजी महाराज आये हैं, इसलिये उनके डेरे की शोभा बहुत है।

जान जीमण काज, राय आंगण्यै तेड़ीजै।
सींघासण सकळात, दोवड़ विछावणां कीजै।
विनुंवे गति संसारि, आगळ्य आडवणी ऊभीजै।
थाळी ऊपरे मेल्ह, भाय भोजन पुरूसीजै।
दाळ्य साल गेवर घीरत, छतीस भोजन सार्यजै।
प्रीतमां नै ढ़ोलै पुंवण, आगळ्य फड़का ढ़ाळ्यजै।2।

बारात को भोजन के लिये राजा के आंगन में बुलाया गया, वहां अच्छे आसनों को बिछाया गया था। निवेदन कर्ता वहां सब मौजूद थे और थाली रखकर भोजन उनमें डाल दिया गया था। दाल, साग, घेवर, मिठाई आदि छतीस प्रकार के व्यंजनों को परोसा गया। जो प्रेमी जन थे उनको पंखों से हवा दी जा रही थी। उनके आगे थाली रखने की चौकी रख दी गई थी।

तीवण तीस तीयार, सुवाय सुवाद सुभाव।
जीमै जांन आंगण, जांह सीर्य मोटा दाव।
करि झारी ग्रह जोय, भाय भावी क पतीजै।
राय आंगण री रीति, चळु जाय बारै कीजै।
सली दंतावळ्य फेरि, जळ सूं कुरला किया।
लूंग सुपारी पांन, मंहत महोछण दीया।
विनौ वडाई मंगले, मांन महुंत इधकी मया।

जीमी जांन राय आंगणै, सीख मांग्य थने थया।3।

तीस प्रकार की सब्जियां तैयार की गई जो बहुत स्वादिष्ट थी। राजा के आंगन में बारात बड़े स्वाभिमान से जीम रही थी। हाथों में जल के पात्र लेकर सेवक खड़े थे। राजा के आंगन में रिवाज थी कि बाहर जाकर हाथ धोवो। दांतों में दंतासली (अंगुली) फेरकर जल से उन्होंने कुरले किये। लूंग, सौपारी, पान और बहुत से उपहार दिए गये। उनका विनयपूर्वक बहुत मान-सम्मान किया गया। इस प्रकार राजा के आंगन में बारात जीमकर अपने डेरे में आ गई।

लाभ लगन्य पति देखि, महुरत मंडहो मंडांणौं।
खूंटी चौह दीस रोप, चंवरी ग्रह सूत फिरांणौ।
आदि कुंभ जळ पुर्य, आण्य कळस थापीजै।
वासदेव कीजै वंदना, घ्रत गूगळ होमीजै।
ज्यौं ज्यौं होम प्रगट, वास विगसै देवता।
सतगुरु सा विध्य दाखवै, ध्रम पुंन नै पड़खता।4।

शुभ लग्न का समय देखकर मण्डप में चंवरी का कार्यक्रम शुरू किया गया। चारों ओर खूंटी गाड़कर उनके चौतरफा सूत फिराया गया। जल का घड़ा भरकर कलश रूपी रखा गया और अग्नि देव की वहां पूजा की गई। घी, गूगल का होम करने से ज्यों-ज्यों सुगन्ध फैली त्यों-त्यों सब देवता प्रसन्न हुए। जिस प्रकार गुरु ने कहा उसी प्रकार से धर्म व पुन्य की परीक्षा करके किया गया।

प्रथमे औउंकार, आदि गुण निकत भणीजै।
विपर वेद उचरै, सुरति सुभ कान्य सुणीजै।
कामण्य सझ सीणगार, महुरति मंगल गावीजै।
हथलेवौ करि जोड़ि, ध्रम कन्या प्रणावीजै।
कंचण रूपा गज तुरी, चंवरी सीरि संकळप किया।
ए वड दान कन्या सहत, रावळ रळियाळै दिया।5।

सर्वप्रथम आदि औंकार का उच्चारण किया गया। ब्राह्मण वेद पढ़ रहे हैं, जिसे सब एकाग्र मन से सुन रहे हैं। स्त्रियां श्रृंगार से सुसज्जित होकर मंगल गायन कर रही है। हथलेवा (पाणिग्रहण) जोड़कर, धर्म सहित कन्या का विवाह किया गया। सोना, चांदी, हाथी-घोड़ा आदि का संकल्प करके राजा ने बड़े उत्साह से यह बड़ा दान दिया।

देव पूछै प्रभाय, पुंन प्रवाह मंडाणी ।
वरा दीयै जैतसी, मोकळा अंन ज पांणी।

गउ दान ब्राह्मणां, कुल आचार करीजै।
घ्रत आटा मौकळां, दान प्रथमादिक दीजै।
संन्यास्यां लोवड़ी, जोगीयां पतर पूरीजै।
पीरोज्या प्रवाह, दान जाचिगां दीजै।
भेर दमामां ढ़ोल दुड़बड़ी, जस रा वाजा वाजीय।
धन्य धन्य रावळ जति, च्यारे वरा गुर मुखि दीया।6।

सत्गुरु के कहे अनुसार पुण्य कार्य किया गया और खूब अन्न व पानी का दान किया गया। जिन ब्राह्मणों ने कुलाचार किये उनको गाय, घी, आटा, भूमि आदि दान दिए। सन्यासियों को कम्बल दिए गये व योगियों के भिक्षा-पात्रों को भरा गया। नृतकियों व मांगने वालों को दान दिया गया। भेरी, ढ़ोल-नगाड़े आदि यश के बाजे बजने लगे, हे रावल, तूं धन्य है, जिसने गुरु महाराज को चार वचन दिये।

धन्य धन्य रावळ जति, जेण्य ए वड मति आई।
जगत मरु तेड़ाय, नींव धरम री दीराई।
जीग चड़यौ परवाण्य, जग्य जसकार भंणीजै।
कवीयण वना वधार्य, सुरति सुभ कान्य सुंणीजै।
सत सुकरत कारज सरयौ, लहि लाध लाहौ लीयौ।
जैकार जग्य सौ वापरयौ, कळजुग्य कन्या हळ कीयौ।7।

जाम्भोजी ने इस मरुभूमि के रावल जैतसी को इस धर्म पर चलने की शिक्षा दी। उस राजा को धन्य है, जिसने उनके सिद्धान्तों को माना। इस यज्ञ से राजा को संसार में बहुत यश प्राप्त हुआ। कवियों ने उस यश का विस्तार पूर्वक वर्णन किया, जिसे राजा ने भी अपने कानों से सुना। यह बहुत अच्छा कार्य हो गया और सर्वप्रथम उसे ही लाभ मिला। संसार में इस यज्ञ के यश से, कलियुग में कन्या के लिये बहुत बड़ा परमार्थ हुआ।

जिम पिता काज्य पंडवां, जीग हथणापुरे थायौ।
कुळबंद होय किसन, जुग जीग मांहे आयौ।
पंचबुत होय साथ्य, काज पंडवां सार्यौ।
आप दया करि देवजी, जीग जादवां पधार्यौ।
जीसौ भाव दवापुर मां, राव दहुठळ सेती दखीयौ।
अैसो भाव कळजुग मां, रावळ सेती रखीयौ।8।[9]

जिस प्रकार अपने पिता की मुक्ति के लिये पाण्डवों ने हस्तिनापुर में यज्ञ का आयोजन किया था और श्रीकृष्ण प्रेमपूर्वक इस यज्ञ में आये थे। उन

पांचों के साथ मिलकर कार्य को सिद्ध किया। अब आप दया करके इस यज्ञ में यदुवंशी रावल जैतसी के राज्य में पधारे हैं। जो भाव द्वापर युग में आपका राव युधिष्ठिर के प्रति था, ऐसा ही भाव अब कलियुग में रावल जैतसी के प्रति आपने रखा है।

सतगुर आगळ्य आय, रावळ एक वीनती सारै।
मांग छै एक पसाव, उमेद उपनी मन्य म्हारै।
केहक विसनोई देव, देस म्हारै वसावौ।
राख्या स रूड़ै भाय, वांरौ मं करिस्यौं दावौ।
रावळ कहै चुकिस नहीं, कोल बोल रूड़ा वहिस्यै।
अमांणां तुहारा देवजी, साच सील तागै वहिस्यै।9।

जाम्भोजी के सामने आकर रावल एक विनती करता है-मेरी एक मांग है, मेरे मन में एक उमंग पैदा हो गई कि इन बिश्नोइयों को मेरे देश में आबाद करो। मैं उनको बहुत अच्छी तरह से रखूंगा। यह मैं दावे के साथ कहता हूँ और यह वचन देता हूँ कि हमारा और तुम्हारा यह वचन सच, शील सहित है, जिसे मैं पूरा निभाऊंगा।

वायक फीरयौ जमाति मां, कौल सतगुर कौ पाळै।
रावळ सारै वीनती, साई वीनती संभाळै।
लखमण पांडव धन्य, कह्यो सतगुर कौ कीयौ।
तज्य बाप दादै री भौम्य, जांण्य देसोटो लीयौ।
कुटम कड़ुंबौ छाड़ि के, गुर वायक माथै वंदीयो।
भोम्य छाडि प्र भौमे गया, वास खरींघै मंडीयौ।10।

अपने अनुयायियों को जो कहा गया, उस कथन का वे पालन करते हैं। राजा का जो निवेदन था, उसके लिए कहा गया, लक्ष्मण और पाण्डव धन्य है, जिन्होंने गुरु महाराज के कहने से, अपने पुरखों की भूमि को छोड़कर, एक प्रकार से अपना देश त्यागकर, अपने परिवार जनों को छोड़कर, रावल जैतसी के देश में रहना स्वीकार किया। वे खरिंगा गांव में रहने लगे।

राह चालै राहीक, आण सतगुर की मांनै।
जपै एक विसन, आन तोफान न मांनै।
अजर जरै जीव काज्य, वैर भरंम सह भग्गा।
लखमंण पांडू दोऊं, आय गुर पाय विलग्गा।
जांह संहस भुज हुव संतोषीयां, सतगुर संभळाये कही।
रावळ अंमाण छै आपणी, यांसुं परि विना रूड़ा वही।11।

वे अपने रास्ते चलते हैं और सत्गुरु की शिक्षा को मानते हैं, केवल विष्णु भगवान का स्मरण करते हैं और अन्य पाखण्ड को नहीं मानते हैं। जीवों की रक्षा के लिये वे स्वयं कष्ट उठाते हैं, क्योंकि उनका भ्रम दूर हो गया है। लक्ष्मण और पाण्डु दोनों ने आकर जाम्भोजी के चरणों में नमन किया, जिस प्रकार श्रीकृष्ण भगवान ने विराट रूप करके अर्जुन को सन्तोष दिलाया था, उसी प्रकार जाम्भोजी ने राजा को सन्तोष दिलाया कि ये मेरी अमानत है, इन दोनों को सम्भाल कर अच्छी तरह रखना।

थारा म्हारा सूं दिल भीळी, ताग ज्यौ पाळ्यस ताग।
पुंन वध्यसी परवाह, लछण प्राछीत न लाग।
न हुवै तुरकां रो तेज, आंण जो जादम जेती।
भाटीयां भोम्य पत्यसाह, आय नै लीय कोई एती।
जैतसी झंभ जांण्यौ सही, खरी आसीसा एम खट।
एक किसन चिरत कान रह्यौ, गढ़ जैसलमेर न पालट।12।

हे राजा, तुम्हारी और हमारा दिल मिल गया, जैसे दूध व पानी मिल जाते हैं। तुम्हारा पुण्य बढ़ेगा और कोई भी प्रायश्चित का दोष नहीं लगेगा। किसी भी मुसलमान बादशाह का पराक्रम तुम्हारे से ज्यादा नहीं बढ़ेगा। जितनी तुम्हारी राज्य की सीमा है, उसको कोई भी बादशाह आकर नहीं ले सकेगा। जैतसी ने जाम्भोजी को सच्चे अर्थो में जान लिया। अत: उसे इन आशीर्वादों का लाभ मिला। इन आशीर्वादों के फलस्वरूप जैसलमेर का गढ़ हमेशा स्थापित ही रहेगा।

सतगुर आगळ्य आय, रावळ नुंय पाय विळग्गो।
त्रीकम तौ परसादि, मोहि कुजस कळंक नहीं लग्गो।
अंन धन खरचीया, भंडार रीता नहीं हुवा।
दरसण थांहरै देव, पाप सह परलै हुवा।
जेम थे कहीयौ तिम कीयौ, मांग्य मांग्य तोपै दुवौ।
आदि गरु तौ आवीया, मांहरौ उजवणौ पूरौ हुवौ।13।

जाम्भोजी के समीप आकर राजा ने नमन करके पांव छुए। हे देव! आपकी कृपा से संसार में मेरा अपयश नहीं हुआ और अन्न-धन का भण्डार अखूट हो गया। तुम्हारे दर्शन मात्र से मेरे सब पाप दूर हो गये। आपने जैसी आज्ञा दी वैसा ही मैनें किया और आपसे वर मांग-मांग कर मैं कृत-कृत हो गया। हे आदि गुरु जाम्भोजी, आपके शुभ आगमन से मेरी सब आशाएं पूर्ण हुई।

सतगुर आगळ्य आय, रावळ पाय विलग्गौ।
तो आया भगवंत, जीव रौ सांसौ भग्गौ।
हूं ज करंतो वर, वर तो आय वढ़यौ।
हूं ज करंतौ पाप, थां पाप मां कळतौ कढ़यौ।
भाग भलौ छै मांहरौ, तै तड़गो लागण न दियौ।
तूं साहेब हूं सेवग थांहरौ, तै मो सुगुण मुं कीयौ।14।

जाम्भोजी के सम्मुख आकर राजा ने नमन करके पांव छुए और कहा हे भगवान, आपके आने से मेरे इस जीव का दु:ख मिट गया। मैं अगर झूठा वचन करता तो इससे मेरे पाप बढ़ जाते। आपने मुझे पापों में डूबते हुए को निकाला है। ये मेरा भाग्य अच्छा था सो मुझ पर आपने पाप का कोई आरोप लगने नहीं दिया। आप हमारे मालिक हैं और मैं आपका सेवक हूँ। आपने ही मुझे सद्बुद्धि दी और आपने ही मुझे सद्गुण प्रदान किए।

रावळ सारै एक वीनती, सांई एक अैसी सुंणीजै।
कळ्यजुग मां जौ जीव, मुकति तीण नुं न कहीजै।
साक्यौ म्हानै होय, म्हे पापी अपराधी।
दरसण थाहरौ दीठ, आह नीध मोटी लाधी।
मांगूं छूं जूण्य मिरघ री, हवान मत घातौ कहीं।
खड़ चूंटि नै व्रंभसरि पाणी पीऊं, बीहुं पैण्य बीहाडु नहीं।15।

राजा ने जाम्भोजी से एक निवेदन किया कि कलियुग में जो जीव हैं, उनकी मुक्ति नहीं होगी, ऐसा हमने सुना है, हमें शक है कि हम पापी और अपराधी हैं। आपके दर्शन लाभ से इस समय हमें बड़ी भारी सम्पति मिली है। मैं मृग योनी में जन्म लेना चाहता हूँ, मुझे शैतान की योनी से बचाओ। मैं पान-पत्ते खाऊंगा और किसी भी जीव जन्तु को तंग नहीं करुंगा।

जांहरी धोती रैहती अधर, सेऊ सीधकार नै पायौ।
क्रंन बड़ो दातार, नी कुछ पण्य पाछो आयौ।
कुंडरीक संजम लीयो, सोऊ सीधकार न लग्गौ।
सहंस वरस तप कीयौ, नीछ आपौ करि भग्गौ।
धन्य धन्य रावळ जति, जैनैं मुकति दान सतगुर दीयौ।
आवागुवण्य चुकाय करि, कौल सुरग कौ कीयौ।16।

जो नग्न रहता है उन्होंने भी सिद्धता प्राप्त नहीं की है, कर्ण महादानी हुआ है लेकिन वह भी जन्म-मरण से मुक्त नहीं हुआ। कुण्डरीक ने संयम सहित भजन किया, लेकिन उसे भी सिद्धी प्राप्त नहीं हुई। और भी हजारों वर्ष

जिन्होंने तप किया उनका भी भ्रम दूर नहीं हुआ। इस रावल जैतसी को धन्य है, जिसे गुरु जाम्भोजी ने मुक्ति प्रदान की और उसको आवागमन के चक्र से मुक्त करते हुए स्वर्ग का वचन दिया।

सतगुर पारिख एह, प्रथम मुख कूड़ न भाखै।
झुरै नहीं दसूं दवार, पंच इंदी वस्य राखै।
खुध्या तिसनां नींद, ताहु रै मूळि न वियापै।
परत्य न छीपै पाप, पुंन छीपै गुर आपै।
कुपह कुमारग वरज्य करि, सुपह साच करणी रहै।
सहनाण सुगर तणां सुरता सुणै, प्रमन की प्रगट कहै।17।

सतगुरु की प्रथम पहचान यह है कि वे मुंह से कभी झूठ नहीं बोलते हैं। दस द्वारों को शुद्ध रखते हैं और पांचों ज्ञानेन्द्रियों को वश में रखते हैं। भूख, प्यास, नींद आदि के वश में नहीं होते हैं। पाप उनसे कभी छिप नहीं सकता और वे पुण्य और गुरु की ओर लगे रहते हैं। वे बुरे रास्ते से हटकर अच्छे और सच्चे रास्ते पर लगाते हैं, अच्छे गुरु की यही पहचान है कि जो दूसरों के मन की बातें प्रकट करते हैं।

दिल्ली सिकन्दर साह, दे परचो परचायौ।
महमंद खांन नागौरि, परचि गुर पाए आयौ।
दूदो मेड़तियो राव, आय गुर पाय विलग्गो।
रावल जैसलमेर, परचतां सांसौ भग्गौ।
सांतिळ सनमुखि आय, सुचील तां हुवौ सिनानी।
सांग रांण सुण्य सीख, जका गुर कही सै मानी।
छव राज्यंदर के के अवर, आचारे औळखियौ।
वील्ह कहै मांगौ पुन्ह, जांह मुगति नै हाथो दीयौ।18।[10]

दिल्ली के बादशाह सिकन्दर को परचा देकर विश्वास दिलाया, महमद खां नागौरी भी विश्वास करके गुरु की शरण में आया, मेड़ते का राव दूदा ने भी गुरु के चरणों में आकर नमन किया, जैसलमेर के रावल जैतसी ने भी गुरु पर विश्वास किया, जिससे उसके सब कष्ट दूर हुए, जोधपुर का राव सांतिल भी गुरु के सम्मुख आकर शुद्ध मन से नित्य स्नान का नेम लिया, मेवाड़ के महाराणा सांगा ने भी गुरु की शिक्षा को शिरोधार्य किया, इन छः राजाओं और कई अन्यों ने भी जाम्भोजी के नियमों को ग्रहण किया। कवि वील्होजी कहते हैं कि मैं तो ऐसे गुरु से मुक्ति प्राप्ति का पुण्य मांगता हूँ।

प्रथम दया करि भाव, आप पर एक गीणीजै।

दूजै सहज घरि आव, जास सीध अपणां लीजै।
तीजै खीमा करि तप, जास गुर अजर जरीजै।
चौथै चवीजै साच, साच सुवचन बोलीजै।
पांचवै पुन करि सत सुं, छठै सील संग्रहि सही।
सातवै साध संतोषि क, विसन नांव रातो रही।19।

सर्व प्रथम, हृदय में दया का भाव रखना चाहिये, अपने-पराये को एक समान मानना चाहिये। दूसरा कोई अपने घर अतिथि आये तो उसे अपना ही मानकर उसका समान करो। तीसरे क्षमा को धारण करना चाहिये, जिससे किसी कटु वचन को सहन करने की शक्ति बनी रहे। चौथे, सत को धारण करते हुए हमेशा सत्य बोलना चाहिये। पांचवें सत से पुण्य करना चाहिये और छठे शील का संचय करना चाहिये। सातवें, सन्तोष को धारण करके विष्णु भगवान के नाम का स्मरण करते हुए, मस्त रहना चाहिये।

धन्य धन्य रावळ जति, जास जीग्य सतगुर आयौ।
आप मत मां होय, जति सरि सूत फीरायौ।
जीव मरंता राखि, अभै दान दैतां दीयो।
माया मुकति खरचि, पुंन प्रथीपति कीयो।
वीखरी मेळ प्रथी पहे, दे आसीसा चलीया।
जे ठाकुर जांह गांव रा, सीख मांग्य डेरे थीया।20।

रावल जैतसी को धन्य है, जिसके यज्ञ में सत्गुरु का शुभ आगमन हुआ। उसको अपने सिद्धान्तों से पुण्य के रास्ते पर लगाया। जीवों पर दया करके उनको मरने से बचाया तथा दुष्टों को अभयदान दिया। खूब धन खर्च करके उस राजा ने पुण्य किया। जाम्भोजी महाराज ने स्वयं राजा को आशीर्वाद दिया और वहां से चले गये। वहां जो भी विभिन्न गांवों के ठाकुर थे, वो आज्ञा लेकर अपने-अपने डेरे गए।

साम्य करै छै सीख, रावळ सुथान्य सीधावै।
रावळ सुं रखि भाव, साम्य साथरीयां आवै।
साथरीय सुभकार, नूर थळीयां अवास्यौ।
जाणी ज जुग मांहि, पोहसै वौ सूर प्रगास्यौ।
निराकार नूर प्रगट्यौ, मिलिया साध सोहावणां।
आदि गुर तौ आवीया, वीगस्या वन रळ्य आवणां।21।[11]

जाम्भोजी महाराज से रावल आज्ञा लेकर अपने स्थान में जाते हैं। उस रावल से दया भाव रखते हुए, जाम्भोजी भी अपने स्थान को प्रस्थान करते

हैं। वह स्थान (थळी) बहुत ही शुभ है, जहां विष्णु का रूप प्रकट हुआ है। उनका अवतार ऐसे है, जैसे प्रभात के समय सूर्य उदय हुआ हो। ये निराकार भगवान संसार में बहुत ही भाग्यशाली संतों को मिले हैं। इनके आने से जैसे सूर्य को देखकर कमल खिलते हैं, उसी प्रकार संसार के जीव भी खिल उठे।

दुहा

वील्ह कहै जी वीनती, आवागुवण्य निवारि।1।
सरब रसी स कथा हुई, साहब के दरबारि।

कवि वील्होजी कहते हैं कि सब रसों से परिपूर्ण यह कथा जाम्भोजी के दरबार में हुई थी, जिसके स्मरण से मानव के आवागमन का चक्र मिटता है।

थारौ दीठो दान द्यौ, जिह दान खोड़ि न होय।
पारगीराएं वास द्यौ, कळंक न लागे कोय।2।214।

हे स्वामी, मुझे तुम्हारे नित्य दर्शन का दान दो, इस दान से मेरा पुनर्जन्म न हो, मुझे इस भवसागर से पार करके मुक्ति दो ताकि मुझे कोई कलंक न लगे।

संदर्भ टिप्पणियां

1. (क) वि.सं. 1212, सावण वदि 2, राव जैसे भाटी जैसलमेर बसायो।
प्राचीन ह.लि. ग्रन्थ, 19 वीं श. केसोजी देहडू संग्रहालय
(ख) जम्भगीता, स्वामी सच्चिदानन्द, पृ. 227 पर भी जाम्भोजी और रावल जैतसी का प्रसंग है।
2. (क) श्री जम्भदेव चरित्र भानु, स्वामी ब्रह्मानन्द, पृ. 100-117 पर इस कथा का विस्तृत वर्णन है।
(ख) जम्भसागर, स्वामी रामानन्द गिरि, पृ. 502-503 पर आये प्रसंग से भी जैतसी के उद्यापन की बात सिद्ध होती है।
(ग) जम्भसार, साहबराम, प्रकरण 12 पृ. 67 में भी इस बात की पुष्टि है।
3. (क) राव कीयो उजीवणो, जैसलमेर सुथान।
जाम्भैजी कूं ल्यावस्यां, लेस्यां कछु गुर ज्ञान।।
जाम्भैजी महाराज का जीवन चरित्र, सुरजनजी, पृ. 24
(ख) जादव वंसी जैसलमेर, जंभ रच्यो यज्ञ बहु बहुतेर।248।
सुरजनजी कथा औतार की।
4. जम्भसार, प्रकरण 12, पृ. 32-50

5. साढ़ियां रा सिणगार, बाहुवे बोह रेखा झळहळे।
सोवन जड़त पलाण, कान सरवी झळहळे।128।
डेल्हजी-कथा अहदावणी (ह.लि.)
6. (क) जाटां हूंता पात करीलो।
जाम्भोजी का सबद
(ख) जाटे जीकारौ भणी, नर बोलंता होकारि।
सुसबुध्य संध्या विचारि, लैणां पुरुष अथवा नारि।
वील्होजी की साखी
7. (क) मोख मुक्त दीसताणियां, नै किया परउपकार।
जाटां ऊपर झुक पड़ा नै, हमें कले अवतार।।
हरजी की साखी
(ख) जाम्भोजी के पंथ में जाट भी आए थे-
मन जो प्रसंन भयौ, पंथ की तो मैमा सुन।
बांभण बाणियां परच्या जाट करसानीयै।
सेवादास का इंदव छंद
(ग) जीकारौ जिभ्या कै ताणि, सिरजणहारै कह्यौ सुवाणि।
देव दया करि दीन्हौ दान, गुरमुखि खोजो केवळ ग्यान।।
केसोजी, कथा विगतावली
8. मुंडत होय सतपंथ पइठा, फटारस जीव भविक दीठा।
वील्होजी, कथा रावण-गोयंद की
9. दवापुर मांहि दहूठळ राय, सती द्रोपदी कुंती माय।
असत न भाख्यौ राजा आप, जग जीवण जल पायौ आप।572।
केसोजी-प्रहलाद चिरत, सं. 1907
10. जाम्भोजी (वि.सं. 1508-1593) के समकालीन शासक कवित नं. 18 में उल्लेखित-
(१) दिल्ली का सिकन्दर लोदी-
(क) सिकन्दर लोदी का समय वि.सं. 1546-1574 रहा है।
डॉ. के.एस. गुप्ता, उदयपुर पत्राचार नोट्स
(ख) केसोजी विरचित 'कथा इसकंदर की' से भी इस बात की पुष्टि होती है।
विविध कथा काव्य (ह.लि. ग्रन्थ वि.सं. 1944)
(ग) गज के जद फंद काटे, नांव लीयो तेरो।
दिलीपति कूं दियो परचो, सुजीया की वेरो।4।
दुरगादास हरजस
(घ) इसकंदर कीवी आ करणी, दुनिया फिरी दुहाई।7।

केसोजी साखी

(ड़) कटक खंधार जुड़ गढ़ दिलड़ी, लसकर हुई आवाजां।
पछिम तै घण ओल्हरि आयो, वरस्य करे घन गाजा।।

अज्ञात कृत साखी

(२) नागौर का महमद खान नागौरी-

(क) मंहमंद खां अरु मुल्ला सधारी आय परसे पाय।

हीरानन्द कृत हिंडोलणां

(ख) मंहमंद खान कहिये पठान, चल्यो न्याय अरु सार पिछाण।

सुरजनजी, कथा औतार की

(ग) अरोड़ी मानै अर और, मंहमंद खां मानै नागौर।22।

केसोजी कथा चितौड़ की

(घ) मंहमंद खां नागौरी परच्यौ, चाल्यौ गुर फुरमाई।9।

केसोजी साखी

(ड़) मंहमंद खां नागौर मठी, सांभळी वात लीळंग सठी।

सुरजनजी कथा परिसिध

(च) मंहमंद खां हारण खां सेख सदो, इसकंदर बाबर जाण।

साखी

(छ) ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ. 114

(३) मेड़ते का दूदा मेड़तिया-

(क) 'राजस्थान के मेड़तिया राठौड़' हुकमसिंह भाटी ने राव दूदा का जाम्भोजी से सम्बन्ध स्वीकार किया है।

(ख) भगवंत दीठो भगवैं वेस, दूदैजी कियो आदेस।
कर जोड़े दूदैजी कही, दूदैजी ओळखियो दई।57।

केसोजी कथा बाळलीला

(ग) दूदै ने देसूंटो दियो, मन में घणो अधीर।
कोहर ऊपर निरखियौ, जुग तारण जंभ वीर।3।

हीरानन्द हिण्डोलणो

(घ) दूसरी आरती पीपासर आये, दूदैजी नै प्रभु परचो दिखाये।2।

ऊदोजी नैण-आरती

(ड़) दूदै नै गढ़ मेड़ते, परचै पेम लहंत।

सुरजनजी, कथा परसिंध

(च) दूदै नै गढ़ मेड़तो, हुकम चरावै पाळ।

साखी

(छ) विश्नोई धर्म विवेक, स्वामी ब्रह्मानन्द, पृ. 24 संवत् 1971

(४) जैसलमेर का रावल जैतसी-

(क) रावळ जैतसी वि.सं. 1549 में गद्दी पर बैठा, 1570 में जैत समन्द बांध बनाया और 1585 में उसकी मृत्यु हुई।

जैसलमेर री ख्यात-परम्परा, भाग 57-58

(ख) अजमेर पुंवार मानै करमसी, जैसलमेर रावळ जेतसी।22।

केसोजी कथा चितौड़ की

(ग) जैतसी राण जैसाण जग, लाख सोभा लीख पाय लग।

सुरजनजी, कथा परसिध

(घ) जादमवंसी जैसलमेर, झंभ बुलायो जिगन सवेर।

सुरजनजी, कथा औतार की

(ड़) सुरजनजी का एक ऐसा ही कवित देखिये-
इसकंदर औळखियौ, परचि लागो पहली परि।
सेख सदौ सारिखा, किया सुर झांभेसरि।
मक मीरां काजियां, हुवा राजी गुर अग्गै।
तिमर लिंग बाबरा, पुराण छड़ै पग लग्गै।
सातिल जोध दूद मेड़त, सांग राण सिधारिया।
जैतसी भेंट जगत गुर, जीव सींघार उबारिया।123।

(५) जोधपुर का राव सांतिल-

(क) रावल सांतल संवत् 1545 में जोधपुर की गद्दी पर बैठा और कोसाणा के युद्ध में वि.सं. 1548 में उसकी मृत्यु हुई।

-मारवाड़ का इतिहास, प्रथम भाग-पण्डित विश्वेश्वरनाथ रेउ, सन् 1938, पृ. 104-107

(ख) टाड कृत राजस्थान में, पृ. 38 की पाद टिप्पणी में, वि.सं. 1548 में राव सांतल की मृत्यु लिखी हुई है।

(ग) राव सांतल का समय वि.सं. 1494-1548 है।

जगदीश सिंह गहलोत-मारवाड़ राज्य का इतिहास

(घ) मीरांबाई का ऐतिहासिक व सामाजिक विवेचन, हुकमसिंह भाटी ने राव सांतल की मृत्यु चैत्र शुक्ल 3, वि.सं. 1548 मानी है।

(ड़) दूदो मेड़तीयो सांतिल राव, जग तागो पाळै पतिसाह।23।

केसोजी-कथा चितौड़ की

(च) सांतल राव से सम्बन्धित जाम्भोजी ने ये सबद कहा-
धवणा धूजै पाहण पूजै बेफरमाई खुदाई।

-सबदवाणी जम्भसागर-ईश्वरानन्द गिरी, वि.सं. 1955 पृ. 88-89

(छ) सांतिल कहे सुंणो सुरराय, मोहि करणी फुरमावो भाय।
राज करो सगळा सह सुत, पारब्रंभ दीजै एक पुत।93।

(६) चित्तौड़ का राणा सांगा-

(क) राणा सांगा का समय वि.सं. 1565-1584 रहा है।
-वीर विनोद-कविराज श्यामलदास, भाग प्रथम, पृ. 354-72

(ख) केसोजी की 'कथा चितौड़ की', से भी जाम्भोजी और राणा सांगा के सम्बन्धों पर प्रकाश पड़ता है।

(ग) 'श्री जम्भदेव चरित्र भानु' में स्वामी ब्रह्मानन्द ने जाम्भोजी व राणा सांगा के सम्बन्धों की पुष्टि होती है।

(घ) सांगे राणे सतगुर ओळखियो, चित चोखै चितौड़ी।
झाली राणी जगत पिछाणी, तन की तिसना तोड़ी।5।
हरिनन्द कृत हरजस

(ड़) राणा सांगा की माता झालीराणी के प्रसंग में जाम्भोजी ने यह सबद (63) कहा था-
आतर पातर राही रुखमणि, मेल्हा मन्दिर भायो।
-श्री जम्भगीता भाष्य-स्वाती सच्चिदानन्द वि.सं. 1985

11. जैसलमेर जगत सोह जाणै, रावळ नै परचायो।
काचो कळस कियो महमांणी, सतगुर सरणै आयो।6।
हरिनन्द कृत हरजस

प्राचीन हस्तलिखित प्रति के अनुसार बिश्नोइयों का धर्म क्या है-

बिश्नोइयां धरम जोय, रौंख पर भंजै काया।
बिश्नोइयां धरम जोय, म्रिग क्यूं मारै भाया।
बिश्नोइयां धरम जोय, सब दुनियां सूं न्यारा।
बिश्नोइयां धरम जोय, सिनान पणि करै सवारा।
विसन भजन छाड़ै नहीं, सावधान अति होय।
जन हरजी संसार मैं, बिश्नोइयां धरम जोय।।
हरजी कृत साखी

14. कथा झोरड़ा की (राग आसा)

दुहा

करूं सुगुर सूं वीनती, मेटै अघ अपराध।
मधिमां ते उत्तिम कीया, चोरां हूंतै साध।1।[1]

मैं अपने सच्चे सतगुरु को नमन करता हूँ, उनकी कृपा से मेरे सब पाप मिट गये हैं। जिन्होंने मध्यम से उत्तम बना दिया है और चोरों को साधु बना दिया है।

झोरड़ वासी सोत का, गोयंद रावण नांय।
करम कुकरमी व्रसणी, चोरी आध्यौ खाय।2।[2]

रावण और गोविन्द झोरड़ जाति के सोतर गांव के निवासी थे। वे कुकर्म करते थे और चोरी का धन खाते थे।

कहीं भवंतर गुण कीया, साधां सूं उपगार।
इणि भवि भेंट्यो भाव करि, साहिब को दीदार।3।[3]

उन्होंने किसी पूर्व भव में संतों का भला किया था जिसके फलस्वरूप उनकी इस जन्म में गुरु जाम्भोजी से भेंट हुई और उनके दर्शन हुए।

चौपई

सील सिनान सुचील कराया, परहरि आंन देव दरि आया।
फटारसी न भावै दीठा, मुंडित होय सत पंथ पईठा।4।

वे शील को धारण करके और अन्य देवों को छोड़कर, जाम्भोजी की शरण में आये। वे केश मुंडाकर उनके पंथ में शामिल हो गये और बुरे कर्म छोड़कर अपने भव को सुधारने लगे।

चरणे आय चळू म्हे लीयो, गुर पारिखो कोई न कीयो।
जोलो एक रहै मन मांही, कांय जाणां देव होय क नांही।5।

सतगुरु के चरणों में आकर उन्होंने पाहळ (पवित्र अभिमंत्रित जल) लिया, मगर उन्होंने गुरु की परीक्षा नहीं ली। उनके मन में यह भ्रान्ति थी कि न मालूम ये देव है या नहीं।

गोयंद कहै पारखा करस्यां, वसत पराई छलकरि हरस्या।
आ चोरी जे लाधी कही, तो जाणां सति देवजी सही।6।

गोविन्द कहता है कि हम गुरु की एक परीक्षा करेंगे, कोई पराई वस्तु छल से लायेंगे। यदि वे इस चोरी को बता देंगे तो वे सच्चे गुरु हैं।

वळद वेगड़ो घणो सतारो, धोळो वरण धणी ने प्यारो।
बळल हराणो वेठगर सार्‌यौ, ठाण देखि वड साद पुकार्‌यौ।7।

उन्होंने एक बैल को चुराया जो तेज चलने वाला था, सफेद रंग का था और मालिक को बहुत प्यारा था। बैल को वे चोर चुराकर ले गये। जब मालिक ने उस बैल को ठाण (स्थान) को खाली देखा तो लोगों को पुकारा।

दुहा

सावधान होय वाहरू, लीयो खोज पुलाय।
वाहर सिरहारै चड़ी, धीरी धरी न जाय।8।

सावधान होकर वाहर (खोज करने वाले) उनके पीछे चले। खोजियों को भी साथ ले लिया। वाहर जब अपने गन्तव्य पर पहुंची तो उनके धैर्य की सीमा न रही।

चौपई

वाहर आणि चड़ी सिरहारै, सांचौ धणी ज आज उबारै।
आई कुबधि आलि इक खेली, देव नहीं चोरां को बेली।9।

जब वाहर उन चोरों के नजदीक पहुंची, उन्होंने सोचा कि आज तो सच्चा सत्‌गुरु ही बचा सकता है। उनके मन में एक विचार आया कि देव पुरुष होते हैं वे चोरों के मित्र नहीं होते हैं।

चोर सही ऊं क्यौं ऊबरीयै, असड़ो खून कुमरणी मरीयै।
जोर न ताण न जाई करणों, सांचा धणी तुहारो सरणों।10।

हमने चोरी की है तो कैसे बचेंगे। यह तो खून करने के बराबर है अब तो हम बिना मौत आने से भी मरेंगे। जोर के बल पर भी हम बच नहीं सकते। हे सच्चे देव, अब हम आपकी शरण में है।

पंथ की लाज हुवो रूखवाळो, धोळै हुंता कीयो काळो।
वेगड़ हुंतै हुवो भीलाणों, वेठगर देखि खरों विलखाणों।11।

हे प्रभु, हम आपके पंथ के हैं आप हमारी रक्षा करें। उन्होंने सफेद बैल को काला बना दिया। जो तेज था उसे धीमा बना दिया। वे खोजी उनको देखकर मन में अधीर हुए।

सींगे डोरी गांठि करि सारी, वेठगर कहै आ दीन्ही म्हारी।
खोज न भूला बळध न होई, देखो पंचों इचरज कोई।12।

बैल के सींगों में रस्सी की जो गांठ लगी है, उसको बैल के मालिक ने पहचान लिया। वे कहते हैं न हम खोज भूले हैं लेकिन यह वह बैल नहीं है। हे पंचों यह कैसा आश्चर्य है।

दुहा

सिरि टोपी करि तसबी, मुंडित दीठा जोय।
पूछ्या विश्नोई कहै, चोट न दीजो कोय।13।

उन चोरों के सिर पर भगवीं टोपी है और हाथ में माला है। उनके केश मूंडै हुए हैं। पूछने पर उन्होंने अपने को बिश्नोई बताया। वे कहते हैं हमें चोट न मारना।

चौपई

करि अलोच देव दरि आया, चोर बलध ने साथे ल्याया।
लाधी भेद बळ्द रै पगां, वाहरू आय पांय विलगा।14।

बाहर के लोग मन में कुछ सोचकर देवजी के पास आये, साथ में चोरों और बैलों को भी लाये। बैलों की खोज उनके पैरों से हुई है। वे वाहरू सतगुरु के चरणों में गिर पड़े।

बळद हराणों वाहर चड़ीया, चोर बलद नै आय आपड़ीया।
खोज न भूला बळद न होई, आ गति मनिखा न जाणै कोई।15।

बैल-चोरों को पकड़ने हम वाहर चढ़े थे। हमने चोर एवं बैलों को पकड़ लिया। हम खोज नहीं भूले परन्तु ये बैल वो नहीं हैं। इस बात को मनुष्य नहीं जानता है।

बलद छो धोळौ औ छै काळौ, देवजी भोळो थे निरवाळो।
सींगे डोरी गांठि करि सारी, वेठगर का दीन्ही म्हारी।16।

वह बैल सफेद था, यह काला है। हे देवजी हमारी इस भूल को आप ठीक करो। बैल के सींगों में दी हुई गांठ और वह रस्सी भी हमारी थी ऐसा उसका मालिक कहता है।

देवजी बळद आंतरै क जाओ, वाहरू वाकौ भलौ मनायो।
काळै हुंतै कीयो धोळौ, किसन चिरत होय भागो भोळौ।17।

देवजी कहते हैं तुम बैलों से कुछ दूर जाओ। वाहरूओं ने ऐसा किया।

देव कृपा से काला बैल सफेद हुए। ये सब उस प्रभु की माया से ही हुआ।

दुहा

धोळै तैं काळौ करै, काळै सेत व्रग।
जितरा आया वाहरू, इतरा दीया स्व्रग।18।

गुरुजी ने उन बैलों को सफेद से काले और काले से सफेद वर्ग के किये। जितने लोग वाहरू आये थे उन्हें स्वर्ग दिया।

कौंण स करणी कौंण तप, लाधो अमर विवांण।
वानो दीठो साध को, मानी गुर की आंण।19।

इस अच्छे कार्य और तप से स्वर्ग जाने का रास्ता मिला। देव पुरुष की शरण में आने और गुरु की बात मानने में यह सब हुआ।

गोयंद चोरी न करे, कलंक न लागो राह।
वार वार होयसी नहीं, सेत व्रन अर स्याह।20।

गोविन्द ने फिर कभी चोरी न की और अपने सच्चे रास्ते पर कलंक न लगने दिया। उसने इस बात को ध्यान में रखा कि हमेशा सफेद रंग काला नहीं हो सकता।

सीख दीया सतगुर कहै, सांभलि रावण झोर।
दरगै दादि न पावही, दयाहीण अर चोर।21।[4]

सतगुरु जाम्भोजी महाराज शिक्षा देते हुए कहते हैं–हे रावण झोरड़ सुनो, दयाहीन और चोर को स्वर्ग में भी खुशी नहीं मिलती।

रावण राह वाहरि थकै, कीया करम करुंट।
चवदा वीसी चोरियां, घोड़ा घोड़ी ऊंट।22।

रावण ने उन वाहर के लोगों के होते हुए सतगुरु के सम्मुख अपने बुरे कर्मों को कबूल किया। उन्होंने एक सौ अस्सी घोड़ा–घोड़ी और ऊंट की चोरियां भी स्वीकार की।

चौपई

एक चोरी को अवगुण दाखूं, सांभलि भाया कूड़ न भाखूं।
एक ज चोरी तुरंग वछेरी, पैल्है भव बहण थी तेरी।23।

रावण सुनो, मैं तुम्हारी चोरी का अवगुण बताता हूँ इसे तुम सत्य जानो। तुमने पहले जन्म में एक बछेरी (घोड़ी की बच्ची) चुराई थी। पूर्व जन्म में वह तेरी बहन थी।

तैं ज बहन कै थाप लगाई, जिण सूं वछेरी पूठी आई।
तिण पापे तूं दिसा ज भूलो, वाहड़ि पूठो आयो भूलो।24।

तुमने बहन के चांटा लगाया था। उस वैर से वह वछेरी रूप में आई। उस पाप से तूं दीशाहीन हो गया और भूला हुआ चोर रूप में पुनः आया।

वछेरी वेठगर तूं ज लाधो, चोर चोर कहि पकड़े बाधो।
कीयो क्रतब मांही आयो, तिण पापे तेरो हाथ कटायो।25।

उस वछेरी के मालिक को जब तूं मिला तो उसने चोर–चोर कहकर पुकारा और तुम्हें पकड़ लिया। तुम्हारा किया कर्म तुम्हारे सामने आया और इस कारण तुम्हारा हाथ काटा गया।

जे तूं गुर के कह्यौ न मानै, तौउ्यौं सहनाण सही औगानै।
जाल नजीक थंभाई घोड़ी, उतर दिसा तैं कांबड़ी तोड़ी।26।

यदि तूं गुरु का कहा नहीं मानता है तो यह तेरे अज्ञान की निशानी है। तुमने जाल के पास घोड़ी को रोका और उतर की ओर से एक पेड़ की टहनी तोड़ी।

औ सहनांण हुवै सांचाणी, तौ गुर कौ कह्यौ सही कर जाणी।
कीयो वैर ज हिरदै आण्यौ, गुर को कह्यौ साच करि जाण्यौ।27।

यदि यह पहचान सच है तो तुम गुरु की बात को सत्य समझना। यदि वह दुश्मनी दिल में है तो गुरु का कहा हुआ सत्य ही जानना।

दुहा

जा दिन तेरो कर कट्यौ, पूगी वीसी सात।
सात वीसी वले चोरियां, जदि साझो एक हाथ।28।

जिस दिन तुम्हारा हाथ कटा उस दिन तुम्हारी एक सौ चालीस चोरियों का फल मिला। जब तुमने फिर एक सौ चालीस चोरियां की, तब तुम्हारा एक ही हाथ था।

जाकां तैं पोहण हर्या, पेटां घाती दाह।
दुख दीन्हां दुख लाभसी, विण दीन्हा सुख काह।29।

जिनके तुमने पशु चुराये थे, उनके पेट में आग लग गई थी। दुख देने से दुख मिलेगा, सुख दिये बिना सुख कैसे मिलेगा।

तू जाणै वाहर पली, वैर न लागो कोय।
वैर ज भवे भवंतरे, नवे नवेरा होय।30।

वाहर से पहले तूं जानता है कि किसी प्रकार की दुश्मनी नहीं हुई है। परन्तु वैर एक भव से दूसरे भव में चलता है और यह दूसरे भव में पुनः नया हो जाता है।

रावण चोरी परहरी, आयो गुरु की सांव।
लाधो लख न लाभई, पापां पालण नांव।31।

रावण झोरड़ ने चोरी छोड़ दी और वह गुरु की शरण में आ गया। विष्णु भगवान के स्मरण से उसे ऐसा लाभ मिला है जो पापों को नष्ट करने वाला है।

जप तप ध्यान खवणी खवणा, साधां की करि सेव।
पांचूं पालण पाप का, केवल न्यानी देव।32।

जप, तप, ध्यान, क्षमा और संतों की सेवा, ये पांचों पाप को नष्ट करने वाले हैं। इनका पालन कोई ज्ञानी पुरुष ही करता है।

साध संगति अर सतपंथ, भाग परापति लाध।
वील्ह कहै धनि औ गुरु, चोर ज कीया साध।33।[5]

सत-संगति और सच्चा रास्ता, भाग्य से ही मिलते हैं। कवि वील्होजी कहते हैं कि उस सत्गुरु को धन्य है, जिन्होंने चोरों (रावण-गोविन्द) को भी साधु बना दिया था।

क्रमांक-10 (81), कथा झोरड़ा की-वील्होजी (छंद-33) पत्र 28-29, लि.क. हरजी, तुलसीदास, ध्यानदास, लि.का. 1832-1839 (व्यक्तिगत संग्रह)

संदर्भ टिप्पणियां

1. वील्होजी ने बत्तीस आखड़ी में भी चोरी का त्याग बताया है।
   'चोरी जारी त्याग, कुदृष्टा नहीं जोइये।'
2. रावण सासे ओळै आण्या, गोयंद सा गुर भाइये।
   जम्भसार साखी, पृ. 2
3. स्नान ध्यान संध्या समय, उचरत मंत्र अचंभ।
   पावन किये ग्रामीण जन, वंदो श्री गुरु जंभ।3।
   श्री जम्भेश धर्म दीपावली, वि.सं. 1993

4. (क) बिश्नोई धर्म के नियम दस ग्यारह में जीवों पर दया और चोरी न करना बताया है।
   कल्याण भक्त चरितांक, पृ. 456-457
   (ख) राघवदास विरचित भक्तमाल में भी, पृष्ठ 514-15 पर यही बताया गया है।
5. (क) चोरी निंद्या झूठ जे बरजिया, वाद न करणो कोय।
   श्री जम्भसागर अंतिम पृष्ठ
   (ख) रावण गोयंद लखमण पांडू मोती एकै भाय।
   हीरानन्द, कृत हिण्डोलणो

पंथ जांभाणो सतकर जाणों, असत न मानो लोई।
हरि का नाम धियावो एक मन, नाम दियो विश्नोई।
परहरि पाप विरजण जोगण, विष्णु विष्णु वखाणो।
निभ्रम देव निरोत्तर वाचा, सतपंथ जांभाणो।
सुरजन जी कृत साखी

15. छूटक साखी (दुहा)

डांग ठहूको कड़ि हथो, नैणां ऊपर हथ्थ।
वील्ह बुढ़ापो आवियौ, गयो ज धींगड़ सथ्थ।1।[1]

वील्होजी कहते हैं–जब मनुष्य लाठी का सहारा लेता है, कमर पर हाथ रखता है और आंखों पर हाथ करता है, तो यह बुढ़ापा आने का संकेत है। अब वे धींगा–मस्ती के दिन नहीं रहे हैं।

नीं को मांगै दूध घी, नीं को चौपड़ चाह।
वील्ह कहै विखै समै, चौपड़ अंन ही मांह।2।

वील्होजी कहते हैं–कठिनाई के समय में कोई दूध नहीं मांगता है, न कोई घी मांगता है। ऐसे समय में दूध–घी, अन्न में ही शामिल होते हैं।

जुनूं वैर पुराणां रिण, मरत वियावर गाभ।
आगि बळतै खोल्हड़ै, जो नीकळै स लाभ।3।[2]

पुरानी दुश्मनी, पुराना कर्ज, गर्भ में मरा हुआ बच्चा और जलता हुआ झौंपड़ा आदि से बाहर निकलना अथवा छोड़ना ही अच्छा है।

जब लग मेरु अडग है, तब लग ससि अरु सूर।
जब लग आ पोथी सही, रहज्यो गुरु भरपूर।4।

जब तक सुमेर पर्वत अटल है, सूर्य और चन्द्रमा विद्यमान है, तब तक यह ग्रन्थ भी गुरु कृपा से रहेगा।

वसुधा सब कागज करुं, सारदा लेख बणाय।
उदध घोरि मिस कीजिये, हरि गुण लिख्यो न जाय।5।

यदि पृथ्वी को कागज मानूं, सरस्वती को लेखनी बनाऊं और समुद्र को घोलकर स्याही करुं, तो भी ईश्वर के गुण लिखे नहीं जा सकते।

अपना नांव चौपदा, जोखी गळ खिसि जाय।
बोहत दिनां का बिछड्या, दाग पिछाणौ आय।6।

मैं आपका चौपाया हूँ, जिस पर आपके नाम का निशान है, मेरे गले में आपके नाम की डोरी है, बहुत दिनों से मैं आपसे बिछड़ा हुआ हूँ, अब निशान को पहचानकर मुझे अपना लो।

अपणां किया उबारल्यौ, मेटो अगला पाप।
दरगे सूं दागल हुवा, मसतगि दीन्ही छाप।7।

हे प्रभु अपना विरत संभालो। पहले मैं पापों से दागी हो गया था परन्तु अब मेरे मस्तक पर आपके नाम की छाप लग चुकी है और आपने मुझे

अपनी शरण में ले लिया है। अत: अब मेरे आगे के पापों को समाप्त करो।

जो आये नूतन रचै, घर गढ़ नगर समाज।
पूरे काहूं नीं न किये, सब जगत कै काज।8।

इस संसार में जो भी आया, उसने नये मकान, गढ़, नगर और समाज आदि बनाये, परन्तु वे पूरे नहीं किये जा सके। वे सब तो अब सारे संसार के लिये ही हैं।

ग्यान दगधी गुर निंदणा, पात्रियळ आन उपास।
ऐता सबद न दीजिये, दाखै विठळदास।9।

जिनको वाचक ज्ञान है लेकिन आत्म–ज्ञान नहीं है, वे गुरु की निंदा करते हैं। जो लोग अन्य अपात्र देवों की उपासना करते हैं, कवि वील्होजी कहते हैं–ऐसे लोगों को आप गुरु ज्ञान न देवें।

अड़वो चुगै न चुगण द्यै, माणस की उणियार।
वील्ह कहै रे भाइया, सूम बड़ो संसार।10।[3]

पशुओं से फसलों की रक्षा के लिये किसान मनुष्य का नकली रूप बनाते हैं– उसे अड़वा कहते हैं। वह न खुद चरता है और उसके डर से पशु भाग जाते हैं। कवि वील्होजी कहते हैं–इस संसार के लोग भी इस अड़वे की तरह हैं जो स्वयं न भगवान का नाम लेते हैं और न अन्य किसी को लेने देते हैं।

गुर निरमल निकलंक गुर पर उपगार करंत।
वील्ह कहै गुर दाखव्यौ, मुकति खेत को पंथ।11।

गुरु निर्मल स्वभाव के हैं। उन पर किसी प्रकार का कलंक हीं लगा हुआ है। वे हमेशा दूसरों का भला करते हैं। वील्होजी कहते हैं कि गुरु जाम्भोजी ने मुक्ति प्राप्त करने का रास्ता बताया है।

गुर वाचा पूरी हुई, रह्यौ मेल्हाण संतोख।
वील्ह कहै जपो विसन, तूठो देसी मोख।12।

गुरु से किये हुए वचन पूरे हुए हैं। इससे सबको संतोष हुआ। वील्होजी कहते हैं ऐसे विष्णु का स्मरण करो जो तुम्हें मोक्ष प्रदान करेगा।

न कोई मांगै दूध घी, न कोई चौपड़ चाहि।
वील्ह कहै वीखै समै, चौपड़ अंन ही मांहि।13।

वील्होजी कहते हैं मुश्किल (अकाल) के समय में न कोई दूध–घी मांगता है और न ही चुपड़ी हुई रोटी की इच्छा होती है। ऐसे समय में तो भोजन मिल जाये उसमें ही सब कुछ शामिल है।

अमियां गरुड़ दवार थी, ज्यौं विख निर्विख होय।
विसन जपंता पाप ख्यौ, बोहड़ि न करियौ कोय।14।

कुण्डलिनी के जाग्रत होने से जो अमृत का झरना बहता है उससे शरीर में व्याप्त विष समाप्त हो जाता है। कवि वील्होजी कहते हैं कि यह सब विष्णु का स्मरण करने से होता है। ऐसे पाप समाप्त होने के बाद पुनः किसी को भी पाप नहीं करने चाहिये।

संदर्भ टिप्पणियां

1. कंत बुढ़ापो आवियो, सबळी लागी खोड़ि।
   हाथे लोह मरोड़तो, तिणु न सक्कै तोड़ि।।5।।

   कवि गद्द के पद्य

2. जाणो थे बाहर पहेली, वेर न लेसी कोय।
   वेर भव भवन्त्रे, नव नवन्त्रो होय।।35।।

   वील्होजी-बत्तीस आखड़ी

3. अड़वो चरै न चरण द्यै, माणस की उणियार।
   कहि केसो ओ पारिखो, सूम अैसो संसार।।

   केसोजी, साखी (दुहा)

⋆ छूटक साखी (दूहे) जम्भसार, साखी संग्रह एवं लोक से संग्रहित किये गये हैं।

16. कवत परसंग का

आप कहै थे इम सुंणौ, रंग काला कदे न रता।
कायंम कहै वळि कलंम, खरा खत चीत बचीता।
झूठली नै झांभाणी तंणी, मांडियौ बिहुवा तंणा माहेमता।
उण नै लिखिया भारी भूख दुख, उणनै इधक सुरग सुख अनंता।
सुंणही होयसी सूकरी, लंहणी पूरी न लहै।
आळीग करेसी सुरग मां, गुण अवगुण ए गुर प्रछ कह्यौ।1।

कायम श्री जाम्भोजी महाराज कहते हैं- हृदय में झूठ को धारण मत करो बल्कि सच को धारण करो, झूठ और सच के फल को देखो, झूठ बोलने वाले को नर्क का दुःख मिलता है और सच बोलने वाले को स्वर्ग का अनन्त सुख प्राप्त होता है, जो गुरु के वचनों को ग्रहण नहीं करता है, उसे सुणही और सूकरी की योनियों का त्रास भुगतना पड़ता है। गुरु कहते हैं-गुण-अवगुण के परिणाम स्वरूप ही स्वर्ग का सच्चा सुख मिलेगा।

सुजस सुंणाई सोभ, पंथ ओपम चड़ै इधकाई।
धन्य धंम दियै सो धन्य, विधि सैंई लहै वड़ाई।
वळे को चेतै जीव, चेतिस्यौ चेतणहारो।
वीणां वीगसै मंन, लखंण उजाळै लारो।
वाहियै बीज नीपज निछै, वीणि वाह्यौ रहियै बुसा।
साखि कुसाखि दहुवां तिणी, औसर वैण सुणिजै असा।2।

जिन्होंने सत्गुरु श्री जाम्भोजी महाराज के सुयश का वर्णन किया है और पंथ में मिले हैं, उनकी शोभा बहुत अधिक है। धर्म की शिक्षा देने वाले और धर्म को धारण करने वाले धन्य है, जो चेतने योग्य हैं, वे ही चेतेंगे, प्रत्येक प्राणी उन्हें नहीं चेत सकता है, बिना मन के चेते प्रकाश नहीं होता है। जब खेत में बीज बोया जाता है, तब ही अन्न उत्पन्न होता है। बिना बीज बोये कुछ उत्पन्न नहीं होता अर्थात् जो सत् कर्मो से करनी करता है। उसे ही लाभ मिलता है, बिना किये कुछ नहीं मिलता। इन दोनों भावों का ऐसा निर्णय है, जिसे जानो।

एक हत्या को पेच, एक आय लागी अमावस।
हथणी सूंघ्या हाथ, देख जिन कियो तपावस।
एक सुगरे की भेंट, तीन विन खूटी मूवा।
जो कुछ किया बुरा, बुरा तिनही का हूवा।
भले बुरे को पटन्तरो, कहो किण आगे ले कूकसी।
पाप न कर रे प्राणियां, आखर तो दिन ऊगसी।3।[1]

इस कवित्त में एक हथिनी और तीन हत्यारों की अन्तर कथा की ओर संकेत हैं। चार मित्र कहीं जंगल में निकले, उन्हें बहुत भूख लगी। वहां उन्हें एक हथिनी का बच्चा मिला। उन्होंने उसे मारने की सोची, परन्तु एक मित्र नहीं माना। उन तीनों ने उस बच्चे को मारकर खा लिया और अपने रास्ते चल पड़े। जब हथिनी आई तो अपने बच्चे को वहां न देखकर, वह भी उनके पीछे दौड़ पड़ी। उसने उन तीनों दुष्टों को पहचानकर मार दिया और उस एक सज्जन को छोड़ दिया। कवि कहता है–हे मनुष्यों, पाप न करो, भले बुरे का निर्णय अवश्य होगा और ऐसा दिन आयेगा।

दूदा देसूंटो दीयो, मन में घणो सधीर।
कूवै ऊपर निरखियो, जग तारण जंभवीर।।
थळीये उठ दूदा मिल्या, तूठा सारा काज।
जबलग खाण्डो राखसी, तबलग निश्चल राज।।
दूदा दुरजन पाल्टै, जे चढ़ आवै भूप।
आज्ञा छै जंभदेव री, अग्नि दीजै धूप।4।[2]

जब दूदा मेड़तिया को देश निकाला मिला तब वह अपने मन में बड़ा बैचेन था। उसने संसार को तारने वाले जाम्भोजी महाराज के दर्शन कुएं पर किये। उस मरुभूमि (थळी) में दूदा ने जाम्भोजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया, इससे उसके सब कार्य सिद्ध हुए। जाम्भोजी ने उसे एक कैर का खाण्डा दिया, उन्होंने कहा–जब तक तुम इसे रखोगे, तुम्हारा राज्य अटल रहेगा। हे दूदा, यदि कोई भी राजा बुरी इच्छा से, तुम्हारे ऊपर आक्रमण करे, तब तुम हमारा नाम स्मरण करके, इस खाण्डे को धूप देना, तुम्हारे सब कार्य सिद्ध होंगे।

संदर्भ टिप्पणियां

1. पाप मति कर प्राणियां, देख अंधारि राति।
सूर सवारो उगसी, पत पड़सी परभाति।।3।।
जम्भ महिमा, संत कनीराम

2. (क) दूसरी आरती पीपासर आये, दूदैजी नै प्रभु परचो दिखाये।।2।।
ऊदोजी नैण–आरती (ह.लि.प्रति.)
(ख) दूदै नै गढ़ मेड़तो, हुकम चरावै पाळ।
साखी
(ग) दूदो मेड़तीयो सांतिल राव, जग तागो पाळै पतिसाह।।23।।
केसोजी–कथा चितौड़ की

17. बत्तीस आखड़ी

छंद

सेरा उठै सुजीव छाण जल लीजियै।
दांतण कर करै सिनान, जिवाणी जल कीजियै।1।[1]

कवि वील्होजी कहते हैं कि सुबह जल्दी उठकर, पानी को छानकर लेना चाहिये, दांतुन करके, जीव–रहित जल से स्नान करना चाहिये।

बैस इकायंत ध्यान नांव हरि रस पीजियै।
रवि उगै तेहि वार चरण सिर दीजियै।2।

एकान्त स्थान में बैठकर विष्णु भगवान का स्मरण करना चाहिये, सूर्य जब उदय हो तो उसे नमस्कार करना चाहिये।

गऊ घृत लेवे छाण होम नित ही करो।
पंखै से अग्न जळाय फूंक देता डरो।3।

गाय के घी को छानकर लो और हमेशा होम करो, उस अग्नि को पंखे की हवा से जलाओ, मुख से फूंक न दो।

सूतक पातक टाळ, छाण जल पीजियै।
कर आत्म को ध्यान आरती कीजियै।4।[2]

सूतक (बच्चा होने पर 30 दिन तक) पातक (मृत्यु होने पर 3 दिन तक) में भी छानकर पानी पीएं। मन में विष्णु भगवान का ध्यान करके आरती करनी चाहिये।

मुख बोलीजै सांच, झूठ नहीं भाषियै।
नेम झूठ सूं जाय, जीभ बस राखियै।5।

मुख से हमेशा सत्य बोलना चाहिये, झूठ नहीं बोलना चाहिये। झूठ बोलने से नियम छूटता है, इसलिये अपनी जीभ को वश में रखना चाहिये।

निज प्रसुवा गाय चूंगती देखियै।
मुखां बताइयै नाहीं और दिस पेखियै।6।

अगर गाय को उसका बछड़ा चूंघता है तो उसे बताना नहीं चाहिये और अन्य दिशा की ओर देखना चाहिये।

अमावस व्रत राख खाट नहीं सोइयै।
चोरी जारी त्याग कुदृष्ट नहीं जोइयै।7।[3]

अमावस का व्रत रखना चाहिये और पलंग पर न सोएं। चोरी जारी का त्याग करें और न ही किसी पर कुदृष्टि डालें।

नेम धंम गुरु कहै कदे नहीं छोड़ियै।
लाधी वस्तु पराई बोल दे वोड़ियै।8।

गुरु महाराज जाम्भोजी ने जो धर्म नियम बताए हैं, उन्हें कभी न त्यागें। यदि कोई दूसरों की वस्तु मिल जाए तो उसे बोलकर बता दें।

जीव दया नित राख पाप नहीं कीजियै।
जांडी हिरण संहार देख सिर दीजियै।9।

जीवों पर दया करो और पाप न करो। खेजड़ी और हिरण की रक्षार्थ अपने प्राण दो।

वधिया करै तो बैल जु देख छोड़ाइयै।
बरजत मारै जीव तहां मर जाइयै।10।

यदि कोई बैल को सूधा (नपुंसक) करते हैं तो उस बैल को छुड़ाएं। यदि कोई मना करने पर भी जीव हत्या करे तो वहां स्वयं अपने प्राण दे देवें।

ऋतुवंती होवे नार पलो नहीं छुइयै।
पांचूं कपड़ा धोय न्हाय सुधि होइयै।11।[4]

ऋतुवंती स्त्री से परहेज रखो, अगर उसके कपड़े से स्पर्श हो जाए तो अपने पांचों कपड़े धोकर और नहाकर शुद्ध हो जाओ।

सूतक पातक अंत घरहूं लिपवाइयै।
गऊ घृत सुध छाण जु होम कराइयै।12।[5]

सूतक-पातक के अंत में घर को लीप-पोत कर साफ करें, गाय के घी को छानकर लें और उससे होम करें।

जल छाणै दोय वार सांझ सवेर ही।
जीवांणी जल जोड़ कुवै जाय गेर ही।13।[6]

सुबह और सांय दोनों समय पानी को छानकर लें, उसमें जो जीव है, उन्हें पुनः कुएं में डालें।

राख दया घट मांहि वृक्ष घावै नहीं।
घर आवै नर कोय भूखौ जावै नहीं।14।

अपने हृदय में दया रखो और हरे वृक्ष न काटो। अपने घर पर आए

हुए अतिथि को भूखा न जाने दो।

अमावस दिन धर्म इता नित पाळियै।
गाय'र बच्छो बैल बेचण सूं टाळियै।15।[7]

अमावस के दिन ये नियम रखो कि गाय, बच्छा और बेल न बेचो।

पंथ न चालै भूल खाट नहीं सोइयै।
ऊखळ खड़वै नाहीं चाकी नहीं झोइयै।16।

अमावस के दिन न रास्ते चलो और न चारपाई पर सोवो। औंखली में कोई चीज न कूटो और न चाकी से कोई अन्न पीसो।

वस्त्र धोवै नाहिं सीस नहीं धोईयै।
जुंवां लीखां नांव लिया पुंन खोइयै।17।

इस दिन कपड़े और सिर को न धोएं। जूंएं और लीखों को न मारें।

औळै अमावस दूध दधी नहीं मथ्थियै।
साखी हरिजस गाय ग्यान गुंण कथ्थियै।18।

अमावस के दिन दूध-दही को नहीं बिलौना चाहिये, साखियां और हरिजस गाएं, ज्ञान का प्रचार करें।

दाती कसी गंडासी बांण नहीं वाइयै।
रकत बहै निरधार नरक में जाइयै।19।

इस दिन दांती, कस्सी, गंडासी और तीर का प्रयोग नहीं करना चाहिये। इनके प्रयोग से जीव हिंसा होगी और फिजुल में ही खून बहेगा। ऐसा करने से नर्क भोगना पड़ेगा।

आन जात को पाणी भूल नहीं पीजियै।
विन मांज्या बरतन कबहुं नहीं लीजियै।20।

बुरे कर्म करने वालों के घर का पानी भूलकर भी न पीएं और न ही बिना साफ किये बर्तनों का प्रयोग करें।

चौके बिना रसोई कबहुं मत करो।
गऊ बैठक सतग्रेह करत तुम जन डरो।21।

जगह साफ करके रसोई करें। बैसकै (शक्तिहीन) पड़ी गाय को सहारा देकर उठाओ। ऐसे भलाई के कामों में मना न करो।

बांभण दस प्रकार तीन सुध जानियै।
अमल तमाखू भांग लील नहीं ठानियै।22।

वैसे तो ब्राह्मण दस प्रकार के हैं, लेकिन उनमें तीन ही शुद्ध हैं। जो अमल, तम्बाखू, भांग और नील का प्रयोग नहीं करते हैं।

इह औगण नहीं होय विप्र सुध है सही।
और छतीसूं पूंण एक सम गुरु कही।23।

जिनमें ये अवगुण नहीं होते हैं वह शुद्ध ब्राह्मण हैं और छतीसों जातियां एक समान हैं, श्री गुरु जाम्भोजी महाराज ने ऐसा कहा है।

वैअस्नाने कोय जो पलो लगावही।
न्हाये तैं सुध होय गुरु फरमावही।24।[8]

बिना स्नान किये हुए मनुष्य से स्पर्श हो जाए तो नहाने से शुद्धि होती है, ऐसा गुरु महाराज ने कहा है।

अपनै घर में बैठ निंद्या नहीं कीजियै।
देख्यां सुण्यां अदेख जु अजर जरीजियै।25।

अपने घर बैठकर किसी की निन्दा न करें, अगर किसी का दुष्कर्म भूल से देखा-सुना जाए तो उसे अपने मन में रखो, प्रकट न करो।

त्रिधादेवां साधां सूंस न कीजियै।
गुरु ईश्वर की आंण नहीं भानीजियै।26।

त्रिधादेवां (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) और संतों से प्रेम करो। ईश्वर तथा अपने गुरु की मर्यादा भंग न करो।

हल गाठो अरु गाडी बैल नहीं वाहियै।
जीव मरै जेहि काम कदे न कराइयै।27।

बैलों को अमावस के दिन हल, गाठा (गाहटन-काटी हुई फसल के ढ़ेर पर बैल चलाना) और गाडी में नहीं जोतना चाहिये। जिन कामों में जीवों की हत्या हो वे कभी नहीं करने चाहिये।

अमावस को दूध जू भूल न विलोय है।
कदे न उतरै पार रक्तसम होय है।28।

अमावस के दिन भूलकर भी दूध को नहीं बिलौना चाहिये। ऐसे लोग कभी पार नहीं उतरते हैं। ऐसा दूध रक्त के समान अपवित्र होता है।

होकै पाणी आग कदे नही दीजियै।
अमल तमाखू नांम भूल न लीजियै।29।[9]

होके के लिये अग्नि और पानी नहीं देना चाहिये। अमल और

तम्बाखू का भूलकर भी नाम नहीं लेना चाहिये।

जूंवां लिखां काढ़ छाछ में डारियै।
इन मार्यां सुख होय पुत्र क्यूं नहीं मारियै।30।

जूंवों और लीखों को काढ़कर छाछ में डाल दें। यदि इन्हें मारने से सुख मिले तो अपने पुत्र क्यों नहीं मारते।

घर को बकरो भेड़ थाट संग कीजियै।
बेच्यो कूट्यो बैल उलट नहीं लीजियै।31।

अपने घर का बकरा और भेड़ थाट (अमर छोड़े हुए भेड़-बकरों का समूह) के साथ मिला दें। बेचे हुए बैलों को वापस न लेवें।

तीसां ऊपर दोय आखड़ी गुरु कही।
जो विश्णोई होय धंम पालै सही।32।[10]

ये बतीस शिक्षाएं गुरु महाराज जाम्भोजी ने बताई हैं। जो बिश्नोई हैं उन्हें ये धर्म-नियम अवश्य पालने चाहिये।

गहै धंम बतीस तीरथ सब न्हाइया।
अड़सठ तीरथ पुन्य घरां चल आविया।33।

इन बतीस धर्म नियमों को जो धारण करता है, उसे सब तीर्थों के नहाने का फल मिलता है। मानो अड़सठ तीर्थों का पुन्य उसके घर ही चलकर आ गया है।

गहै गुनतीस बतीस विष्णु जन जानियै।
इकसठ सातूं छोत अड़सठ एहि मानियै।34।[11]

ये उनतीस नियम और बतीस धर्म विष्णु प्रेमियों को जानने चाहिये। इन इकसठ के बाद सात छोत का त्याग, ये ही अड़सठ तीर्थ है।

देखा देखी तीरथ और नांही कीजियै।
मन सुरती कूं जीत परम पद लीजियै।35।

हमें देखा-देखी से तीर्थ नहीं करने चाहिये। अपने मन और सुरति पर काबू करके परमपद को प्राप्त करना चाहिये।

पालै गुरु का कवल जंभ गुरु ध्याव है।
घाटो भूख कुरूप कदे नहीं आव है।36।

जो मनुष्य श्री जाम्भोजी महाराज के वचनों को पालता है और उनका ध्यान करता है उसके घर कभी भूख, दरिद्रता, कुरूपता नहीं आती है।

दुहा

या विधि ध्रम सुनाय, के कह्यौ गुरु जगत नै।
अग्यानी लाग डांस, प्रियै ग्यांनी भक्त नै।37।

इस प्रकार गुरु महाराज ने ये धर्म संसार को बताया। ये धर्म अज्ञानियों के लिये डांस (शूल) और ज्ञानियों के लिये प्रकाश हैं।

या विधि धर्म सुनाय कै, किये कवल किरतार।
अंन धन लिछमी रूप गुण, मूवां मोख दवार।38।

अन्त में कवि वील्होजी कहते हैं कि इस प्रकार गुरु महाराज ने धर्म नियम सुनाकर अपने वचनों को पूरा किया। इनके पालन से अन्न, धन, रूप, गुणों आदि की प्राप्ति होगी और मृत्यु के बाद मोक्ष की प्राप्ति होगी।

संदर्भ टिप्पणियां

1. किरत खेत की सींव में लीजै, पीजै ऊंडा नीरूं।
   जाम्भोजी का सबद
2. इंधण पाणी बोलणौ, कह्यौ जगत गुर जाण्य।
   देव दया करि दाखवै, अह तीन्यौ तत छाण्य।108।
   केसोजी, कथा विगतावली
3. (क) चोरी निंदा झूठ बरजियो, वाद न करणो कोय।
   अमावस्या व्रत राखणो, भजन विष्णु बतायो जोय।
   साहबराम जी राहड़, जम्भसार
   (ख) देख हरीड़ा बाग, चोरी बंदा ना करीयै।7।
   समसदीन कृत साखी
4. टाळी छोति कही जगदीस, रूति पांच जापै दिन तीस।
   जां जां काया रहै असूध, तां तां घणां न दुहियै दूध।227।
   केसोजी, कथा विगतावली
5. छोति एक मिरत की गिणी, धारी धरम बतायो धणी।225।
   केसोजी कथा विगतावली
6. 'पाणी अणछाणियां मत पीई'
   धर्मसी, सवा सौ सीख (ह.लि. ग्रन्थ, 18 वीं श.)
7. (क) वेदों में अमावस्या का वर्णन देवता के रूप में हुआ है।
   वैदिक देवता दर्शन-प्रो प्रभुदयाल अग्निहोत्री
   (ख) अमावस व्रत पालणौ, विष्णु विष्णु करो सोय।
   दूध दही सब ओळियो, पाप न लागै कोय।21।
   साहबराम जी कृत दोहा

8. कथा सुरगारोहिणी में भगवान कृष्ण युधिष्ठिर को बताते हैं कि कलियुग में क्या होगा?
   'बिन अस्नान अंन ही खांही, हरि पूजा नहीं चित धरांही।
   केसोजी कथा सुरगा रोहिणी
9. (क) भांग तमाखू छोतरा, इनका कीजै त्याग।
   मद्य मांस को त्याग कै, करि ईश्वर अनुराग।23।
   नाथोजी, कृत धर्म नियम
   (ख) राजस्थान में नेम की भी परम्परा रही है। 'मूंजा सांगरण की बात' से स्पष्ट होता है कि मूंजा सांगरण के 84 नेम थे।
10. (क) गुणतीस धर्म की आखड़ी, हिरदे धरियो जोय।
    जाम्भैजी किरपा करी, नांव बिश्नोई होय।
    जाम्भोजी, 29 धर्म नियम
    (ख) आखड़ी एक प्रतिज्ञा सूत्र का नाम है। राजस्थान में यह परम्परा लम्बे समय से चली आ रही है।
11. (क) बतीस आखड़ी के नियम, जाम्भोजी द्वारा बताये गये उनतीस नियमों के अन्तर्गत ही हैं। जाम्भोजी के उनतीस धर्म नियम, वील्होजी की बतीस आखड़ी और सात छोत (29+32+7=68) ये ही अड़सठ तीर्थ हैं। परन्तु इनमें सर्वश्रेष्ठ जाम्भोजी द्वारा बताये गये उनतीस धर्म नियम ही हैं। इस बात की पुष्टि जाम्भोजी की वाणी से होती है।
    (ख) अड़सठ तीरथ हिरदै भीतरि, बाहरि लोकाचारुं।
    जाम्भोजी का सबद

★ १. सबदवाणी जम्भसागर, वि.सं. 1993, पृ. 76-82
★ २. ज्ञान भजन संग्रह (साखी, आरती कीर्तन) स्वामी ज्ञान प्रकाश जी, श्री बिश्नोई मंदिर, ऋषिकेश, वि.सं. 2025

रे विश्नोई निरमल होई, विष की गांठ चुकावो।
परहरि वाद विरोध न कीजै, हाक हुकम सिर आवो।
गुरवट चालै ते जन साचा, कुलवट भूला लोई।
सुरजनदास विष्णु के सरणै सोई खरा विश्नोई।
सुरजन जी कृत साखी

18. वील्होजी का आप्तोपदेश[1]

दुहा

गजी धोवायरु सुधकर, गलणा ढ़ाकण देह।
सुध सकल बरतण करै, समिधा छाण ज लेह।।

छंद

संत आ अक्षरी बुलाय, जोड़ कर पूजियै।
अगनि होत्र की विधि, गुरु महाराज नैं बूझियै।।
सामग्री सुध लाय, घृत गउ का आणियै।
जव तिल सुगंध नैवैद, सकल बिधि ठाणियै।।
सुध चौकी बिछवाय, अगन कुण्ड अैसे धरो।
पूरब दिस वा पछिम, उतर मुख करो।।
गुरु कूं गद्दी विछाय, परम गुरु जाणियै।
जो मुख से बोले बोल, सतकर मानियै।।
जिग मंडप के मांही, झूठ नहीं कीजियै।
निज चौके से बाहर, जिमाय जिमिजियै।।
जोड़ी भींट अरु झूठ, अलग गहि डारियै।
खर कूकर सूकर काग, बिली अलग निवारियै।।
जिग दीक्षा कूं धार, बहुत नहीं बोलियै।
क्रोध न कीजै भूल, अभिमान नहीं तोलियै।।
इष्ट देव सिर राख, सुभियागत सोधियै।
निंवकरि खिंवकरि, सांत मन परमोधियै।।[2]
जैसे देखे अधिकार, तिस विधि दीजियै।
सतगुरु अरपण करै, मोल करि लीजियै।।
एहि विधि दसबंध टाळ, अरु जलम सुधारियै।
अमल तमाखू भांग, मद मांस निवारियै।।[3]

दुहा

इस विधि करणी कीजिये, पाळो गुरु के बोल।
पाप कटै पुंन गति लहै, कूड़ा नाहीं (गुरु) कोल।।

यह आप्तोपदेश 'कथा जैसलमेर की' का है। जाम्भोजी जब 'जैत

समन्द' प्रतिष्ठान पर किये गये यज्ञ में पधारे, तब उन्होंने रावल जैतसी को विधि विधान से यज्ञ करने का संदेश दिया था।

वे कहते हैं–मोटे कपड़े को धोकर साफ करो, शुद्ध बर्तन में पानी डाल कर उसे ढ़क दो, समिधा को साफ करके लो।

सब संतजन को मिलकर और हाथ जोड़कर, अपने इष्टदेव के प्रति प्रणाम करना चाहिये। होम की विधि अपने गुरु महाराज से पूछनी चाहिये। यज्ञ के लिये शुद्ध सामग्री और गाय का घी लेवें, इसमें जौ, तिल और सुगन्ध की सब वस्तुएं डालनी चाहिये। शुद्ध चौकी बिछाकर, हवन की सिगड़ी को ऐसे स्थान पर रखो कि आपका मुख उत्तर दिशा की ओर होवे तथा हवा पूर्व से पश्चिम की ओर हो। गुरु के लिये आसन बिछाओ, उन्हें परम गुरु मानो, वे जो सत वचन कहें, उन्हें सत ही जानो। यज्ञ मंडप में झूठी बातें न करो, मुख्य चौक के बाहर ही आगन्तुकों को भोजन करवाओ और फिर भोजन करो। जूठन को अलग डालें, कुत्ता, बिल्ली, कौवा आदि पशु–पक्षियों के लिये अलग ही भोजन रखो। यज्ञ का विचार करके मौन धारण करो, गुस्सा न करो और न ही अपने मन में अभिमान रखो। अपने ईष्ट देव को सिर–माथे पर रखो, अतिथियों का सत्कार करो, झुककर नमन करो, क्षमा धारण करो और अपने मन को शान्त रखो। जिसका जो अधिकारी हैं, उन्हें वैसा ही देवो, जो सतगुरु के नाम देता है, उसे उसका फल अवश्य मिलता है। इस प्रकार अपने दसबन्ध को टालकर, अपने जन्म को सुधारो अमल, तम्बाखू, भांग, मद्य–मांस से दूर रहो।

वे कहते हैं–इस प्रकार करनी करो और सतगुरु के वचन मानो, इससे पाप नष्ट होंगे और पुण्य मिलेंगे, ये गुरु के वचन हैं, जो सत्य हैं।

संदर्भ टिप्पणियां

1. (क) श्री जाम्भाजी महाराज का जीवन चरित (महात्मा सुरजनदास जी रचित) प्रकाशक– श्रीरामदास जी, बीकानेर, वि.सं. 2007
   (ख) जम्भेश्वर दैनिक स्तुति–संत कनीराम, रुड़कली, सन् 1997
2. निंवणी खिंवणी वीणती, सबसूं आदर भाव।
   कह केसो सोई बड़ा, जिंह मां घणां समाव।।2।।
   केसोजी का दोहा
3. होवे तमाकू आफू जाणि, मल पोसत जल पीवे छाणि।
   वरजी भांग लीये जे बुरा, सहस जूणी होय सूकरा।।
   जम्भसार–साहबराम जी राहड़

परिशिष्ट

(क) वील्होजी के सम्बन्ध में अन्य कवियों के विचार

1. जाम्भोजी (वि.सं.- 1508-1593) का नाथोजी (वील्होजी के गुरु) को और नाथोजी का वील्होजी को धर्मोपदेश।

दुहा

मास एक सूतक कहूं, रजस्वला दिन पांच।
जो इनको पालै नहीं, लगै धरम की आंच।1।
प्रातः काल ऊठणों, उसी समय को स्नान।
या विधि जो वरते सदा, हो जहां तहां मांन।2।
सील संतोष पालन करै, उज्ज्वल राखै अंग।
बाहर भीतर एकरस, कहै मुनिजन संग।3।
दोनों काल संध्या करै, समन करै मन धीर।
इंद्रियगण को रोकणों, दम भाखत बुध वीर।4।
सांयकाल में जायके, ढूंढ़ै निरंजन देस।
विष्णु नाम रसना जपै, लोग करै आदेस।5।
दत्तचित्त से होम कर, राखै बहुत आचार।
मन में धारै विष्णु को, तब उतरै भव पार।6।
बाचा निस दिन बोलियै, सत्य सहित सुन वीर।
जनम मरण से छूटकर, बनो आप गंभीर।7।
पांणी पी तूं छाणकर, निरमल बांणी बोल।
इन दोनों का वेद में, नहीं मोल कुछ तोल।8।
समिधा लीजै देखकर, कृमी बचाकर वीर।
स्थावर जंगम आत्मा, देखै सकल सरीर।9।
चोरी निंदा झूठ को, तजिया सभ्य सुजांण।
खिमां दया उर धारिके, पहुंचा पद निर्वाण।10।
सुष्क वाद नहीं कीजिये, मनु बतायो जोय।
श्रद्धा लज्या धारके, सुख पावो सब कोय।11।
सुने बहुत उपवास मैं, इनमें नहीं कुछ सार।
व्रत अमावस को सही, कियो वेद निरधार।12।

व्रत अमावस के कियै, मल विक्षेप को नास।
मल विक्षेप के नासन तै, होत है बुद्धि प्रकास।13।
इनके खंडन की दवा, तुझे बताई जोय।
याके राखै जगत में बहुरि न आना होय।14।
विष्णु विष्णु जपते रहो, जब लग घट में प्रान।
इसी नाम के जपन तै, मिलै विष्णु भगवान।15।
जीव दया नित पालणी, सदाचार यह जाण।
तन मन आत्म बस करै, पहुंचै पद निर्वाण।16।
हरा वृक्ष नहीं काटणा, यह सबका मंतव्य।
रक्षा में तत्पर रहै, जाण यही कर्त्तव्य।17।
अजर काम अरू क्रोध है अजर लोभ को जान।
इनको जो निसदिन जरै, सौ पावै संमान।18।
संस्कार से रहित जन, सो वह सूद समान।
पाहल दीजै तांहि को, कीजै ब्रह्म समान।19।
तिसकै हाथ का अन्न जल, असन करो सब वीर।
अथवा अपने हाथ से, पाक बनाओ धीर।20।
छेरी भेड़ी आदि को, पर उपकारी मान।
रक्षा मैं तत्पर रहै, सोई बुद्धिवान।21।
इनसे अधिक जूं बैल है पर उपकारी जोय।
ताको बधिया नहीं करै, ब्रह्मवेता है सोय।22।
भांग तमाखू छोतरा, इनका कीजै त्याग।
मद्य मांस को त्याग कै, कर ईश्वर अनुराग।23।
स्वेताम्बर धारण करै, नहीं नीलाम्बर होय।
धरम कहै उनतीस ये, धारै वैष्णव सोय।24।

।।इति श्री जम्भेश्वर भगवान प्रणीतं एकोनत्रिंशसद्धर्म समाप्तम्।।

सबदवाणी जम्भसागर-रामदास, वि.सं. 1993, पृ. 64-71

2. सुरजनजी पूनियां (वि.सं. 1640-1748) विरचित वील्होजी के सम्बन्ध में कवित्त

ओ३म् धरम जप धारणां, ग्यांन भारी गुण सागर।

सहज सील संतोष, कियो पंथ महा उजागर।
मुख दीठां दुख जाय, दुख सह मिटै दुरजण।
लख गुण लभतां, कीया दोय वील्ह अवगण।
दुरिजणां साल सणां दई, जोती सरी देवा जयौ।
वीछड़ जीव लागी विरह, अजे सांसो न गयो।1।
ग्यान गुसटि गुण आतमां, तिल अध नहीं अधूरी।
जा पूछतां पूछै, पूछी सारी तो पूरी।
च्यारि वेद री वात, कुळी सुध काढ़ि सुणावै।
नाद वेद गुण जान, कंठि'स रसौ सरि गावै।
प्रमोध्य एक प्रीतम अैसो, गल्ह गुझ न कौ बियौ।
वील्ह मरण फटो नहीं, है है बज्र पथर हियौ।2।
तीरथ झांभोलाव, चैत चीठीये मीलायो।
मेळौ मंड्यो मुकाम, लोक आसोजी आयो।
अमर थाट बाकरा, कैर खेजड़ी रखावै।
अग्यानुं उथपे गति, सोह ग्यान मिलावे।
बंधिया सील पोथी कथा, सुपह पंथ संवारीयौ।
सीझत आठ साका किया, वील्ह वैकुंठि सिधारियौ।3।
मकड़ांण मेटि, दांण अधकरी करावै।
वन वाढ़ै राजसी, महंत करि मेर छुड़ावै।
जो गुर कथियो ग्यान, ग्यान सो गति सुणावै।
कियो जिग रामसरि, न्यौति जिणि जगत जिमावै।
धेन परि नीर आसीस द्यै, पोहमी निवाण किया पसा।
सुरजमाल संसार मां, पांच भरम किया असा।4।
अनंत जोत्य गुर आप, जा संगति लखी न जाई।
रेड़ो नांव रतन, जेण्य गुर भंति बताई।
नाथो मोती नाम, हरि गुण वीठलराया।
सोनु सुरेजमाल, कलंक नहिं लागै काया।
सुरजन रूप बांधा सरस, भांति भांत्य कण जुजवा।
वांसली वात जांण विसन, हमें हरि सार हुवा।5।
दादा गुर दीवाण्य, तरे गुर वील्ह ततखण।

मरण सुरेजमाल, गयो वैकुंठि विचखण।
करि पोह केसोदास, वास मांडीयौ अगौतरि।
नेतो नीज तलाय, विसन भज्य गयौ वडधरि।
उधौ औळखियौ अलख, काया भंज कीया किसन।
सुरजन सरसी वीनती, वाग्य मेल्य मोटा विसन।6।

परमानन्दजी का पोथा, वि.सं. 1818-19, पत्र सं. 135-154

3. गोविन्दराम जी (1850-1950) विरचित वील्होजी की स्तुति

दुहा

मानुष तन इस काम कूं, गुन हरि जी के गाय।
कै संतन गुन गाइयै, तातैं ब्रह्म समाय।1।
एक समय मंदिर भयो, आये गोविन्दराम।
अस्तुति गुरु वील्ह की, करत भये निष्काम।2।
कुंडलियां-पूरण गुरु परमात्मा, जंभेश्वर जगदीश।
आदि पुरष अविचल तुं ही, तोहि नवाऊं सीस।
तोहि नवाऊं सीस, शरण मैं लीन्ही तोरी।
शरणागत कूं मान, पालना कीजै मोरी।
तृष्णा प्रवल प्रवाह अति, धारा बहै अपार।
गोविन्दराम की विनय सुन, लीजो मोहि उबार।3।

कवत

भव भय नासन एक भूंम रवि कोट प्रकासा।
सस्त्रा जुधकर चार, नील घन आभा भासा।
कनक रुचिर पट पीत, रतन मणि कुंडल राजत।
अमल कमल दल नेत्र, बाहु आजान विराजत।
विश्व व्यापक विष्णु सोई, अस्म देह त्रिया उद्धरिये।
गोमंदराम लीये प्रेम सूं, हाथ जोड़ बंदन किये।4।

सवइया

वील्ह जी महाराज राज सतन के सिरताज,
आग्या मांन जांभै जी की देह जिन धारी है।

पंथ मां प्रगट भये क्रिया धर्म हाथ लिये,
लोगन निहार टेर दया विस्तारी है।
काम क्रोध लोभ मोह मद मास दूर किये,
पाप छुटवाय कर धर्म अनुसारी है।
गोमिंदराम सुख मांन सरण आय लीन्हीं जांन,
बार-बार वील्हजू कूं बदना हमारी है।5।
रवि के प्रगट जैसे निसा दूर छिन मांहि,
वील्ह जु वचन किरन हृदय तम भान्यो है।
प्रात काल जल छान नित ही स्नान करै,
होम जाप नेम कर हृदय सुख मान्यो है।
विष्णु भजन अंति प्रकट बताय दियो,
भजन प्रताप कर अंतरजामी जान्यो है।
गोमंदराम निसकाम कहां लू बड़ाई करै,
वील्ह देव पंथ धर्म आय छान्यो है।6।
बीकानेर फलोधी जु देस देस धर्म धारे,
छिमा हूं संतोष जिन सील विस्तारे हैं।
गंगापार देस अरु कालपी कन्नोजपुर,
तहां वील्ह देव गुरु धर्म निज धारे है।
और हूं अनेक जीव वील्ह जी मिलाये सीव,
अज्ञानो उथाप पुनि जोधाणैं पधारे हैं।
सूरसिंघ राजा परचौ पाय कै मगन भये,
कहै गोमिंदराम हाव भाव जु वधारे है।7।
वील्ह देव महाराज धर्म धार बांधी पाज,
गुड़ै गांव लोगन कूं दर्शन आय दिये हैं।
और गांव जहां तहां शिक्षा को स्थाप करै,
अज्ञानौं उद्धार अरु उपदेस किये हैं।
ऐसे हू अनेक भांत पंथ मांहि कीनी शांत,
सार क्रिया धार कर लोग सब जिये हैं।
वील्हदेव अंति रामड़ास धांम मान,
लोक मान चाव सूं वधार कर लिये हैं।8।

छपइया

जिण नगरी धर्म दृढ़ाय संत सिंवरण नर सूरा।
सझै सुचील सिनांन, जुगति जरणां पण पूरा।
मेल्हि मन्यौ भिरांति, भरम भोळावै भानै।
जपै एक विसन, आन की सेव न मानै।
ओळख्यौ गुर जांभो सही, जांको धन्य जीवत जियो।
वील्हाजी को दीन जीविजै, तो जिण नगरी वासो लियो।9।

सवइया

वील्ह गुरु देव जू की पारहु ने पावै कोऊ,
सेस हू महेस सुक सनकादिक मोहे हैं।
अैसे इस रामड़ास गांव में आनंद किये,
जीय लोग भक्ति हूं प्रेमरस मोहे है।
सिष्य हूं सेवक जाकी आग्या हू न मेटे कोऊ,
खान सुलतान राजा रंक हूं विमोहे हैं।
रामड़ास गांव के जु नाम के अर्थ सुनो,
जहां वील्ह देव जु विराजमान सोहे हैं।10।
राजा जु निवास कियो तातै भयउ रामवास,
राम अवतार जंभदेव जु बखानिये।
सोइ जंभ आय रामड़ास मांहि धाम कियो,
जंभ को स्वरूप वील्ह देव जु प्रमाणिये।
वील्हैजी को धाम सो तो अधिक अनूप,
मथुरा की छिव जैसी बृज भूमि जानिये।
और हु अनेक कोउ तीर्थ जगत जेते,
अैसे वील्ह धाम जग प्रसिद्ध सु मानिये।11।

कुंडलियां

सिरै सिरोमणि रामड़ास, जहां वील्हैजी को धाम,
जांकै पद रज परसतां, मनसा पूरण काम।
मनसा पूरण काम, तास कोउ सीस नवावै,
मिटै अखल अघ नास, जास कोउ सरणै आवै।

पंथ सुधारण कारणै, वील्हो कियो निज धाम,
जाको दरसण करत ही, मनसा पूरण काम।12।

सवइया

वील्हजी महाराज तब धामहि सिधारे,
जब संवत सोलासै अरु तिहत्तरो वखाणिये।
सूरज उत्तर दिस काल सोई जानो,
रितुहि बसंत मधु मास जु प्रमाणिये।
विष्णु वरत सुदी सोउ एकादसी तिथी,
मानो वार मे सु आदितवार आदित्यवार मानिये।
उतरा नखत मानो धुरव कर जोग जानो,
तुल सो लगन काल अमृत सूं जानिये।13।
संत जो गुलाबदास वील्है जु की सेवा करै,
वील्है जु क्रिपाल होय प्रेरणा सु किये हैं।
मिन्द्र बनाइबे की मन में विचारी येहू,
आरंभ रचाय मन साथ कर दिये हैं।
वील्हैजी महाराज संत मन की जु लई जांन,
अपनो भगत मान हृदै लाय लिये है।
साध ही साहबराम उनकी अज्ञा मान,
ध्रम हू कि पाज जान हुलसाये हिये है।14।
साध ही साहबराम सुंदर बनायो धाम,
आठों जाम विष्णु नाम मंदिर में गाइये।
मिंदर की सुंदरता नित ही है छवि रूप,
इंडो ही अनूप रूप समाधि को ध्याइये।
संवत उन्नीस सो जु इज्ञारै की साल मिंदर,
क्वार सुदी पुन्युं वार सुक्र हू सुनाइये।
साहबराम जु की भेंट, ये ही मानो मेरे प्रभु,
टैलहि सों नित चित चरणां में लाइये।15।
वील्ह धाम आय कर जप तप कर नेम,
तन मन कर वस चित कूं लगाइये।
नर नारी सब आय मेवा मिष्ठान लाय,

होम जाप धूप खेय, चित कूं लगाइये।
सात परकमां देवै सब दुख हर लेवै,
मान मद दूर कर पाप कूं बहाइये।
कहै साध गोमिंदराम सबन को सारै काम,
वील्ह जु कै धामहि कूं सीस आय नवाइये।16।

कुंडलियां

नमो नमो श्री वील्ह जु, सतचित सरल सुभाय,
गोमिंदराम गरीब की, विनय सुनो चितलाय।
विनय सुनो चितलाय, तुम्हारो मैं हूं दास,
अति आतुर तुम सरण लियो मैं तुम्हारे पास।
सरणागत सुख करन कूं, तुम्हारी विड़द विराज,
अपनो ही जन जान कै, क्रिपा करो महाराज।17।
दुहा-यह विधि अस्तुति करी, मंदिर में गुरु वील्ह,
मुक्ति वर देते भये, कछुवन लागी ढ़ील।18।

साहबराम जी राहड़, जम्भसार, प्र. 23, पृ. 27-32

4. स्वामी ब्रह्मानन्दजी (1910-1985) विरचित वील्होजी का जीवन चरित्र

प्रसिद्ध है कि वील्हाजी पुरी उपाधि वाले एक गोसांई के शिष्य रिवाड़ी के रहने वाले थे, इनका नाम वील्हापुरी था। इनके पिता का नाम श्रीचन्द (साहबराम जी ने इनके पिता का नाम परसराम बताया है संभवत: यह उनका उपनाम होगा) और माता का नाम आनन्दा बाई था। शीतला रोग से इनके नेत्र जाते रहे थे। बाल्यावस्था से ही इनका चित परमार्थ मार्ग की ओर लग गया था। 18 वर्ष की आयु में यह साधुओं की मण्डली के साथ अलवर गये और वहां इन्होंने एक सेठ की प्रार्थना से चातुर्मास्य किया। वहां से ये कार्तिक मास की पूर्णिमा को पुष्कर स्नान करने को गये, वहां इन्हें एक हठयोगी मिल गये। उनके समीप पुष्कर की कंदरा में दो वर्ष तक रहे, योगाग्नि से कल्मषों का नाश होकर इनका आत्मिक ज्ञान बढ़ा। भाषा कवित्त में भी कुछ अभ्यास हो गया था। आधुनिक वेदान्तियों के मत खण्डन में आप पूर्ण योग्यता रखते थे और इस मत को महानिंदित कहा करते थे जैसा कि

उनका यह वचन है-

देव न मेली दुज्य, पंथ ता पासै टळिया।
मेल्ह सुगर की गोठि, जाय सैताने भिळिया।8।

विक्रम सं. 1601, फागुन वदि अमावस्या (यह तिथि साहबराम राहड़ ने अपने ग्रंथ जम्भसार में बताई है जो सत्य प्रतीत होती है।) में ये पर्यटन करते हुए जोधपुर राज्य के धूंपालिया नामक गांव में पहुंचे। उन दिनों वहां बिश्नोई लोग रहा करते थे। अमावस्या के दिन इन पुरीजी ने बिश्नोई और बहुत से साधुओं को होम करते सुना और शब्द-साखियों को सुनकर, चित द्रवीभूत होकर, बिश्नोई पंथ रूप अमृत सागर में जा मिला। आपने मुदित होकर महात्मा नाथोजी से प्रार्थना करी कि मुझे भी अवश्य इस पवित्र मत में मिला लीजिये। नाथोजी ने इनकी परम श्रद्धा-भक्ति देखकर पाहल पिलाकर अपना चेला बना लिया। पुरी उपाधि दूर कर 'वील्हा' ही नाम शेष रखा।

उन्होंने अपने उपदेश सिद्धि परिचय से जोधपुर के चन्द्रसेन और उदय सिंह को प्रसन्न कर, उनसे धर्म भ्रष्ट हुओं को सुधारने के लिये सहायता मांगी। नरेन्द्र जोधपुर ने इस सन्त की महिमा से परिचित होकर, प्रसन्नतापूर्वक वील्हाजी से कहा कि जैसा आप सहायता चाहें वैसी ही हम सोत्साह देने को तैयार हैं। क्योंकि इस मत के सुस्थिर रहने से प्राणियों को सर्वोत्कृष्ट सुख प्राप्त होगा। हमारी प्रजा धर्मशील होकर हमें भी पुण्य फल का भागी करेगी। इस पर श्री वील्होजी ने कहा कि जगत में तीन भय मुख्य है-लोक भय, राज भय, ईश्वर भय। ईश्वर भय के मानने वालों की संख्या बहुत ही कम है। रहा लोक भय, सो जिसने अधर्म से पूर्ण विध मित्रता की और धर्म, कर्म, जाति को तिलांजलि दे दी तो उसका लोक भय क्या कर सकेगा-इस दिशा में राजभय से ही वह लोग अपनी सन्मर्यादा पर चल सकते हैं। अन्य कोई उपाय उनके सुधारने का नहीं दिख पड़ता है।

तब वील्हाजी की रक्षा के लिये राजा ने अपनी ओर से कई राज सेवक नियत किये और आज्ञा दी कि जो कोई विषय में इनकी अनुज्ञा का पालन न करे, उसको यथोचित दण्ड दिया जाये, जैसा कि वील्हाजी महाराज करें। फिर धर्मशील राजा चन्द्रसेन से विदा होकर वील्हाजी ने जोधपुर प्रान्त के फलोधी के परगने में, सहस्रों जाटों को, जो बिश्नोई धर्म छोड़ने लगे थे,

उपदेश और ताड़नादि, युक्ति बल से पुनः इस मत पर यथायोग्य रीति से स्थिर किया। संवत् 1648 में आपने जम्भसरोवर मेले का आरम्भ किया। खेजड़ी और कैर आदि वृक्षों के न कटने की, राज दरबार से आज्ञा प्रचलित करवाई।

ज्ञानचंद, एक अद्वैतवादी नास्तिक को परास्त कर, उसको और उसके बिगड़े हुए कई मनुष्यों को, अग्नि-होत्रादि सत्-कर्मों की ओर लगाया। आश्विन मास की अमावस्या को प्रतिवर्ष मेला मुकाम अर्थात् श्री जम्भदेव की समाधि-स्थान पर स्थापन किया, जो इनके स्थापन करने से पहले नहीं होता था, किन्तु फाल्गुन की अमावस्या को तो संवत् 1593 ही से होता था। अनेक मनुष्यों को, जो कल्पित देव्यादि के निमित बकरा आदि, जीवों का वध किया करते थे, उस घोर हत्या से बचाया। उन्हें एक निष्पाप अविनाशी परब्रह्म की भक्ति में लगाया एवं अग्निहोत्री बकरों और गौ आदि पशुओं की रक्षा की। राज्य से भूमि प्रदान कराई और थाट की रक्षा का पूरा प्रबन्ध किया। इस प्रकार उपदेश करके, आप चैत्र मास की एकादशी विक्रमी संवत् 1673 में, रामड़ास नामक ग्राम में, इस असार संसार को त्याग कर, परमपद को प्राप्त हुए। इनके पश्चात् इनके दोनों शिष्य महात्मा सुरजनदास जी और केशवदास जी ने उपदेश करना प्रारम्भ किया।

(स्वामी ब्रह्मानन्द जी का वील्होजी के सम्बन्ध में कथन कि वे वि. सं. 1632 में कुंवर चन्द्रसेन से मिले, ठीक प्रतीत नहीं होता। क्योंकि कुंवर वे संवत् 1620 तक ही थे, अतः सम्भवतः यह घटना वि.सं. 1611-12 की है।)

⋆ श्री महर्षि स्वामी वील्हाजी का जीवन चरित्र, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, प्रकाशक श्रीरामदास जी, कानपुर, 6.11.1913

(ख) 1. वील्होजी की शिष्य परम्परा

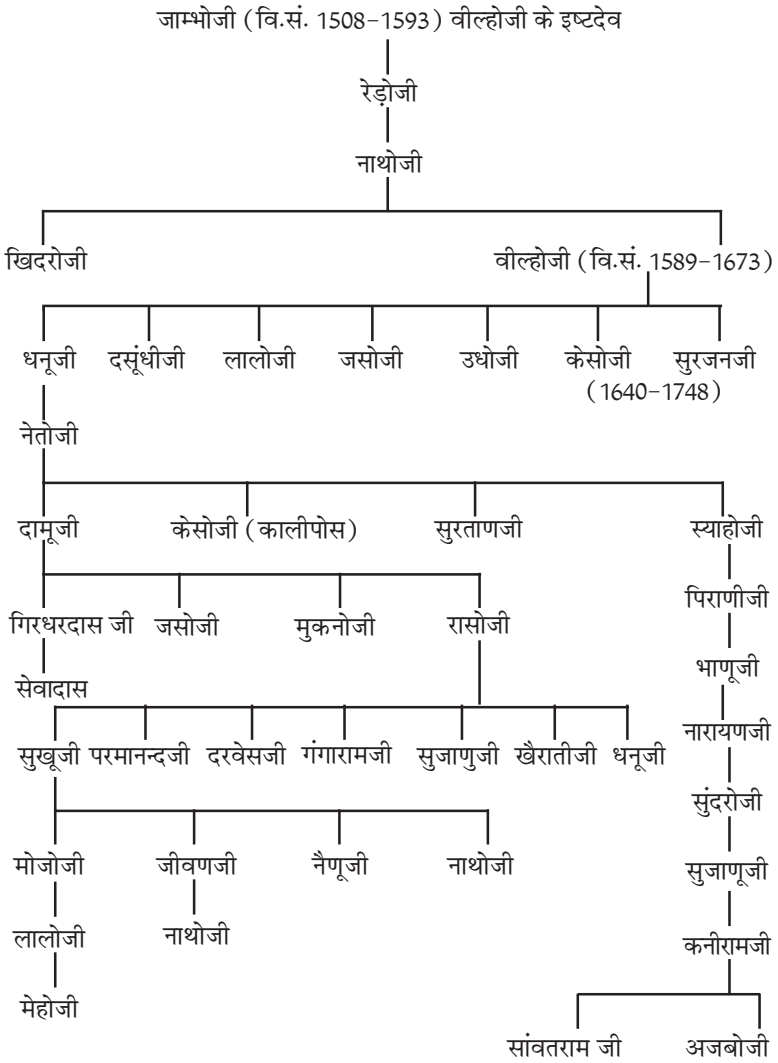

नाथै मुख ग्यान सुणि, परचे विठळदास।
पंथ उजाळण आवियो, वील्ह नाम परकास।।

साधां री वंशावली (प्रा. ह. लि. ग्रन्थ)

खिदरोजी की शिष्य परम्परा परिशिष्ट (ख) 2 पर है।

(ख) 2. वील्होजी के गुरुभाई खिदरोजी की शिष्य परम्परा

जाम्भोजी–रेड़ोजी–नाथोजी–वील्होजी, खिदरोजी– मनीरामजी– धनूजी–मेहोजी–रामचन्दजी–साजनजी–पूरोजी–ताजोजी, रूपोजी–हरिकृष्णजी, लालोजी–विष्णुदासजी– पीताम्बरजी– खेमदासजी– जगरामदासजी– रमणीकदासजी–रामनारायणजी– बखतारामजी–**गोपालदासजी (वर्तमान में रामड़ावास के महन्त)**

वील्होजी की शिष्य परम्परा पूर्व परिशिष्ट (ख) 1 में हैं।

पूरोजी के दूसरे शिष्य ताजोजी की शिष्य परम्परा–गंगारामजी–सुरतारामजी–रामकृष्णदासजी–स्वामी रामदासजी–स्वामी ब्रह्मानन्दजी (1910–1985)

रूपोजी के दूसरे शिष्य हरिकृष्णजी की शिष्य परम्परा– जयकृष्णजी–गोविन्दरामजी– साहबरामजी– राजारामजी– जीयारामजी– जयनारायणजी–गाढूरामजी– कौशलदासजी–जीसुखदासजी, भजनदासजी।

संदर्भ–
1. परमानन्दजी का पोथा वि.सं. 1810–19
2. हरिकिसनदासजी रो पत्र (साधांरी वंशावली, वि.सं. 1873)
3. फुटकर हस्तलिखित पत्र, 19 वीं–20 वीं श.
4. विविध जांभाणी कथा–काव्य (साधांरी वंशावली, विसं. 1944)
5. विवाह पद्धति एवं साखी संग्रह 20 वीं श., पत्र 108
6. श्री जम्भसार (प्रथम एवं द्वितीय खण्ड) साहबराम जी राहड़ वि.सं. 1978
7. श्री जम्भदेव चरित्र भानु–स्वामी ब्रह्मानन्द, कांट, वि.सं. 1985

(ग) संदर्भ सूची

(1) परमानन्द जी का हस्तलिखित पोथे (वि.सं. 1810-19) में वील्होजी की एवं अन्य विविध रचनाएं

क्र.	रचना का नाम	कर्त्ता	पत्र संख्या	छंद संख्या
1.	बारामासा (प्रथम पत्र)	-	1	13
2.	दुहा जवानी का	-	1	21
3.	आदि सबदवाणी (125 सबद, गद्य प्रसंग सहित)	जाम्भोजी	2-21	125
⋆ 4.	ग्यानचरी	**वील्होजी**	21-24	132
⋆ 5.	जम्मै की साखियां (विविध) (वील्होजी की साखियां-पत्र-40,24,27,29,44,51(2),31,55-56,53)		24-56	116
⋆ 6.	धड़ाबन्ध चौहजुगी	**वील्होजी**	51-52	53
⋆ 7.	मंझ अखरा दूहा	**वील्होजी**	52-53	27
8.	कथा बाललीला	केसोजी	56-58	73
⋆ 9.	कथा अवतारपात	**वील्होजी**	58-61	142
10.	कथा लोहा पांगल	केसोजी	61-64	143
⋆ 11.	कथा गूगलियै की	**वील्होजी**	64-66	81
12.	कथा चितौड़ की	केसोजी	66-69	132
13.	कथा उदै-अतली की	केसोजी	69-71	77
14.	कथा विगतावली	केसोजी	71-81	376
15.	पहलाद चरित	केसोजी	81-97	592
16.	चौजुगी	केसोजी	97-98	48
⋆ 17.	कथा पूल्हैजी की	**वील्होजी**	98-99	23
⋆ 18.	सच अखरी विगतावली	**वील्होजी**	99-100	50
⋆ 19.	विसन छतीसी	**वील्होजी**	100-102	36
⋆20.	कथा द्रोणपुर की	**वील्होजी**	102-104	62
21.	कथा सैंसे जोखाणी की	केसोजी	104-106	106

क्र.	रचना का नाम	कर्त्ता	पत्र संख्या	छंद संख्या
22.	कथा हरिगुण	सुरजनजी	106-111	197
23.	कथा उषा पुराण	सुरजनजी	112-117	223
24.	व्याह श्रीकृष्णजी रो	पदम	117-123	262
25.	कथा ग्रन्थ विसन विलास	तेजोजी	123-128	63
26.	छंद सुरजनजी का	सुरजन जी	128-130	73
⋆ 27.	छपइया	**वील्होजी**	130-133	41
28.	छपइया	ऊदोजी	133-135	55
29.	कवित्त	सुरजन जी	135-154	308
30.	कवित्त रामरासै रा	सुरजन जी	154-162	176
⋆ 31.	हरजस	**वील्होजी**	162-164	20
32.	हरजस	सुरजन जी	164-170	48
⋆ 33.	कथा जैसलमेर की	**वील्होजी**	170-173	116
34.	कथा मेड़ते की	केसोजी	173-178	172
35.	कथा गजमोख	सुरजन जी	178-180	71
36.	कथा चित्रामणी	सुरजन जी	180-180	27
37.	कथा धर्मचरी	सुरजन जी	180-182	82
38.	चेतन कथा	सुरजन जी	182-183	31
39.	कथा ग्यान महातम	सुरजन जी	183-189	200
40.	ग्रन्थ ग्यान तिलक	सुरजन जी	189-191	105
41.	फुटकर कवि-साखी (अंतिम पत्र)	हरीनंद, कील्हो नानक, फरसा	192	9

2. वील्होजी सम्बन्धित मूल प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ (जांभाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर)

1. **जे.पी.ई.जी. नं.-1, बस्ता नं.-1, ह.लि.ग्रं. क्रमांक - 2**
(क) उमाहो-वील्होजी, 21 दोहे, पत्र-4, पंक्ति प्रति पृष्ठ-9, अक्षर प्रति पंक्ति-32, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श. सुपाठ्य।

2. **जे.पी.ई.जी. नं.-1, बस्ता नं.-1, ह.लि.ग्रं. क्रमांक - 4**
उमाहो-वील्होजी, 22 दोहे, पत्र-2, पंक्ति-10, अक्षर-28, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श., सुपाठ्य।

3. **जे.पी.ई.जी. नं.-1, बस्ता नं.-1, ह.लि.ग्रं. क्रमांक - 5**
अवतार चरित जाम्भाजी का-वील्होजी, छंद संख्या-140, पत्र-9, पंक्ति-9, अक्षर-33, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श., सुपाठ्य।

4. **जे.पी.ई.जी. नं.-1, बस्ता नं.-1, ह.लि.ग्रं. क्रमांक - 10**
दूणपुर की कथा-वील्होजी, छंद संख्या-60, पत्र-4, पंक्ति-8, अक्षर-36, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श.।

5. **जे.पी.ई.जी. नं.-1, बस्ता नं.-1, ह.लि.ग्रं. क्रमांक - 15**
वील्होजी का कवित, संख्या-44 (अपूर्ण) पत्र-5 (1-4 तथा 8 वां) पंक्ति-11, अक्षर-32, लि.क. साधु गुमानीराम P/O श्री गंगाराम जी, लि.का. सम्वत् 1888, भादवा सुद 14, मंगलवार, लि.स्था. रासीसर,

आदि-लिखते कवित वील्हैजी का-
धर्म कियां सुख होय, लाछ लिछमी धन पावै।
धर्म उतिम कुल अवतरै, जनमि दाळद नहीं आवै।
अंत- आप सवारथ मन मुखि, कीया कुबधी पापड़ा।
वील्ह कहै भव सागरां, बह्यौ जाहि रे बापड़ा।44।

6. **जे.पी.ई.जी. नं.-1, बस्ता नं.-1, ह.लि.ग्रं. क्रमांक - 27**
झांभैजी का अवतार चिरत कथा-वील्होजी, छंद-140, पत्र-26 आकार-6.5%3.25, इंच लि.क. पीतांबर, लि.का. संवत् 1880, सुपाठ्य।

आदि-श्री हनुमते नमः।।दोहा।।
नमनि करुं गुर आपनै, नऊं निरमलै भाव।
कर जोड़े बंदु चरण, सीस नवाय नवाय।।1।।
अंत-लिपीकृत पीतांबर श्री 102 विष्णुदास जी तस्द्दिस्यश निवाश्रेष्वा जपुर मध्ये।

7. **जे.पी.ई.जी. नं.-2, बस्ता नं.-2, ह.लि.ग्रं. क्रमांक 65**
(ट) गूगळियै की कथा-वील्होजी (छंद 86) (ठ) सच अखरी विगतावली-वील्होजी, (छंद-48) (ड) कथा दूणपुर की-वील्होजी छंद-60, पत्र-8 (ढ़) कथा जैसलमेर की-वील्होजी, छंद-111, पत्र-23, लिपि-अस्पष्ट (ण) कथा झोरड़ा की-वील्होजी, छंद-33, पत्र-6, लि.का. संवत् 1848-1853।

8. **जे.पी.ई.जी. नं.-1, बस्ता नं.-1, ह.लि.ग्रं. क्रमांक - 66**
(च) धड़ाबन्ध-वील्होजी, छंद-30, पंक्तियां प्रति पृष्ठ-26, (इ.) साखियां-101, इनमें वील्होजी की साखियां है (101) उमाहो-वील्होजी, लि.क. हरजी वणियाळ, लि.का. संवत् 1826, भादवा सुदी-2, थावरवार (उ) पूल्हैजी की कथा-वील्होजी, छंद-23, इस पोथी का लि.का. संवत् 1820-1825 लि.क. चार व्यक्तियों की लिखावट।

9. **जे.पी.ई.जी. नं. 2, बस्ता नं. 2, ह.लि.ग्रं. नं. 71**
(क) कथा दुणपुर की-वील्होजी, छंद-60 (ड़) कथा झोरड़ा की-वील्होजी छंद-32 (छ) कथा गूगळिये की-वील्होजी, छंद-68, पत्र-39, आकार 9%4 इंच, पंक्ति-13, अक्षर-35, लि.क. साधु श्री हरकिसन जी P/O फरसराम जी, लि. का. 1878।

आदि-श्री विष्णुजी।।सत्य सही।। लिखते कथा दूणपुर की।।राग आसा।।
दोहा-नवणि करुं गुर आपणै, बंदू चरण सुभाव।
भगता तारण भो हरण, तीन लोक को राव।।1।।

★ 10. **जे.पी.ई.जी. नं.-2, बस्ता नं.-2, ह.लि.ग्रं. क्रमांक 81**
(क) औतारपात का वखाण-वील्होजी, छंद-140, (ख) गूगलीयै की कथा-वील्होजी छंद-86, कथा औतारपात का अंतिम एवं कथा

गूगलीयै की कथा का प्रथम पन्ना सिलाई करते समय कथा जैसलमेर की में सिला गया है। (ग) सच अखरी विगतावली-वील्होजी, छंद-48, (घ) कथा दूणपुर की-वील्होजी, छंद 60, (ड़) कथा जैसलमेर की-वील्होजी, छंद-89 (च) कथा झोरड़ा की-वील्होजी, छंद-33 (छ) कथा पूल्हैजी की-वील्होजी, छंद-25, कुल पत्र-152, आकार 10%7, इंच, पंक्ति-29, अक्षर-24, लि.क. हरजी, तुलसीदास, ध्यानदास, लि.का. 1832-1839, लि.स्था.-जाखाणीया, गोर सहर, दुगाली, पाठ्य।

11. **जे.पी.ई.जी. नं.-3-4 (4), ह.लि.ग्रं. क्रमांक -141**
साखी संग्रह (जांभाणी) साखी सं.-69 (अपूर्ण) पत्र-26, अप्राप्त पत्र-2,23,24,4 (4) आकार 9%4 इंच, पंक्ति-16, अक्षर-41, पाठ्य। लि.क. पीताम्बरदास, लि.का. संवत् 1890, विभिन्न कवियों की साखियां हैं, जिनमें वील्होजी की भी साखियां हैं।

12 **जे.पी.ई.जी. नं.-4, ह.लि.ग्रं. क्रमांक -142**
साखी संग्रह, साखियां-63, पत्र-43, आकार 9%4 इंच, पंक्तियां-11, अक्षर-31-35, पाठ्य, लि.क. रामदास P/O साध कनीराम, लि.का. संवत् 1886 लि.स्था.-अलाय, विभिन्न जांभाणी कवियों की साखियां हैं, जिनमें वील्होजी की भी साखियां है।

13. **जे.पी.ई.जी. नं.-4, ह.लि.ग्रं. क्रमांक -143**
साखी संग्रह, साखियां-14 (अपूर्ण) पत्र-11, आकार 9%4 इंच, पंक्ति-11, अक्षर-30, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श., विभिन्न जांभाणी साखियों में वील्होजी की भी साखियां हैं।

14. **जे.पी.ई.जी. नं.-4, ह.लि.ग्रं. क्रमांक -151**
उमाहो-वील्होजी, छंद-21, पत्र-2 आकार 9%4 इंच, पंक्ति-11, अक्षर-30, सुपाठ्य लिपि, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श.।
आदि-श्री विष्णुजी सत्य छै लिख्यते उमाहौ।
बाबो जांबू दीपै प्रगट्यौ चौहचकि कीयो उजास।

15. **जे.पी.ई.जी. नं.-4, ह.लि.ग्रं. क्रमांक -154**
(क) कथा जैसलमेर की-वील्होजी, छंद-154 (घ) औतार कथा-वील्होजी (च) कथा गूगलिये की-वील्होजी (छ) कथा पूलजी

की-वील्होजी (ज) कथा दूणपुर की-वील्होजी, प्रति खंडित, अपूर्ण, आकार 8.5%3.75 इंच, पंक्ति-13, अक्षर-20, लि.क. अमेद थापन P/O सोभजी, लि.का. संवत् 1940, लि.स्था. मुकाम।
आदि-श्री विसनजी सत सही।।लिखतु कथा जैसलमेर की, राग आसा दुहा।।
सतगुर आगल्य वीनती, करे विळगूं पाय।
राह कारण्य गुर वीनऊ, आखर दयौ समझाय।।1।।
अन्त-सतगुर सेती वाद करि, कदे न जीतो कोय।
वीहल कह सेवा करौ, नव नव नेजम होय।।63।।कथा दूणपुर की।।

16. **जे.पी.ई.जी. नं. 3-4 (4) पोथी क्रमांक-178**
(ग) कवित-2, पत्र-1 (जीर्ण) आकार- 10.75%5.75 इंच, पंक्तियां-14, अक्षर-20, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श.
आदि-जांभेसर जीवां धणी.....दातार भव भांजण जीयां भणी।
अंत-केई केई कुपर कुन्याव।।.....व निरताह न जाणै चोरी लावै चित साह सूं परचो।

17. **जे.पी.ई.जी. नं.-3-4 (4), ह.लि.ग्रं. क्रमांक 191**
(क) साखियां-80, वील्होजी की साखियां भी है। फो.-128, आकार-9.5%6.25 इंच, पंक्ति'19, अक्षर-13, लि.क. बिहारीदास P/O विष्णुदास, लि.का. संवत् 1975, लि.स्था. गांव भगतासणी, सुपाठ्य, मशीन के कागज।
आदि-श्री जंभगुरुवे नमः।।अथ साखी लिख्यते।।राग सुहब।।
साधे मोमणै कियो अलोच। जमो रचावीयो।।1।।
अंत-इति श्री प्रहलाद चरित्र ऊधवदास कृत समाप्तम्।

18. **जे.पी.ई.जी. नं. 3-4 (4) ह.लि.ग्रं. क्रमांक-203**
विवाह पद्धति बिश्नोई समाज, फो.-80 (खंडित) आकार 6%4.25 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-7, अक्षर प्रति पंक्ति-17, लि.का. संतोषदास, लि.क. संवत् 1952, इस प्रति में (क) से (म) तक रचनाएं हैं। (म) में कवित-13 हैं जिनमें वील्हैजी के 7 कवित है।
आदि-ॐ श्री गणेशाय नमः अथ गांठ रो मंत्र लिख्यते।
ऊं एकदंतो महाबुद्धि सर्व गुणो गणनायक।

सर्व सिद्धि करो देव गवरी पुर विनायक।।
अंत-सम्वत् 1952 रा मिती आसोज सुदी 10 पोथी गायणै रामचन्द धीराणी री छै, लिख.सा.सं.दा. कानै रे खातर लिखी छै दुजै रो दावो नी छै।।

19. **जे.पी.ई.जी. नं. 3-4 (4) ह.लि.ग्रं. क्रमांक 208**
(च) कवित-तेजोजी-वील्होजी, (क) से (ण) तक रचनाएं हैं। आकार 8%7 इंच, अक्षर प्रति पंक्ति 17-20, पंक्ति प्रति पृष्ठ 13-16, लि.क. वसता थापन, लि.का. संवत् 1881-1907, भद्दी लिखावट, कई जगह अपाठ्य।
आदि-श्री विष्णुजी।।श्री गुरभ्यो नमः।। विष्णु चरित लिख्यते।।
चौपई-श्री गुर संत चरण सिर नाउं, अज्ञा होय विष्ण जस गाउं।
अंत-ईती श्री ग्रंथा ग्रंथ कथा पहलाद चरित संपूरण...थापन वसता वेट मोटजी र जात रा वणियाळ व्रषे मती असड वदे आठ संमत 19 सात र वरस।

20. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8,बस्ता 1-14, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-227**
(थ) हरजस-वील्होजी-19 (ध) छूटक हरजस-11, वील्होजी, इसमें (क) से (श) तक रचनाएं हैं जिनमें (थ) एवं (ध) में वील्होजी की रचनाएं हैं। फो. 204, (अपूर्ण) जीर्ण, आकार 6.5%7.75 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ 24-33, अक्षर प्रति पंक्ति 19-34, लि.क. परमानन्द बणिहाल, लि.का. संवत् 1833-1838, पाठ्य लिपि।
आदि-श्री विसन जी सत्य सही।।ल्यखतु साखी।।न्यमसकार प्रसंग।।
पहली नुवण्य निरंजणां, सबका सिरजणहार।
सिरज्या कूं विसर नहीं, दियण चुगो दातार।1।
अंत-क्रिषे दस भागेण षट भागेण च पति ग्रहे।
वोपारेसू षोड भागेण करता कर्म्म न लिखते।1।
जला रषेत स्थला रषेत् सीथल वंधना।
मूर्ष हस्ते न दातंव्य एवं वंदति पुस्तक।2।

21. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8, बस्ता-1-14, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-236**
साखी-3, वील्होजी, केसोजी, खंडित पत्र, आकार 9.5%4.25 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-10, अक्षर प्रति पंक्ति 29-34, लि.क. अज्ञात, लि.

का. 19 वीं श. लिपि-सुपाठ्य।
आदि-श्री विष्णुजी।।साखी लिख्यते।।
बाबो सांभलजै सै वागड़ देस जी, यो पोमी पितंबर आवियो।
कहि पूरवलै सै क्रम नरेसो जी रो रांक रतन धन पावियो।
अंत-पार गराये देव वासो मिल सुर नर कांमणी।
कह केसो सुणो साधो मारी अरज सुणो मोटा धणी।5।

22. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8, बस्ता-1-14, ह.लि.ग्रं. क्र. 247**
अवतार चीरत झांभजी का-वील्होजी, छंद-140, पत्र-11, आकार 9%4 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-11, अक्षर प्रति पंक्ति-25-27, लि.क. सदाराम P/O पराजजी, लि.का. 19 वीं श.
आदि-श्री श्री विसनजी लिखतू अवतार चीरत झांभजी का-
दोहा-नवनि करुं गुर आपनै, नऊं निरमल भाव।
कर जोड़े वंदु चरन सीस नवाव नवाव।112।
अंत-धनि दिहाड़ौ रैण धनि गुर परगट संसार।
वील्ह कहै जां ओलख्यो, ति उतरसि पार।140।

23. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8, बस्ता 1-14, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-251**
कथा दूणपुर की-वील्होजी, छंद-59, पत्र-3, आकार 10.25%4.25 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-11, अक्षर प्रति पंक्ति-38-41, लिपि-पाठ्य, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श.
आदि-श्री विसन जी लिख्यते कथा दूणपुर की राग आसा।
दोहा-नविणि करुं गुर आपणै, बंदुं चरण सुभाव।
भगतां तारण भो हरण तीन लोक को राव।1।
अंत-सतगुर सेती वाद कर, कदै न जीता कोय।
वील्ह कहै सेवा करो, निंव निंव निजमय होय।55।

24. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8, बस्ता-1-14, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-257**
पूल्हैजी की कथा-वील्होजी, साथ में बड़ी नवण, जीर्ण-अपूर्ण, पत्र-1, आकार 9.75%4.25 इंच कुल पंक्तियां-17, अक्षर प्रति पंक्ति 30-39, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श.
आदि-सेती सीख सुण पूल्हो चालणहार।
चौपई-पूल्है मतौ करि सैण हकार्या, नीवतो मांग्य वचन कहि सार्या।

केती एक गाय कितौ एक नाणौ, कापड़ चौपड़ धन झांभाणौ।18।
अंत-विष्ण भणियौ विष्ण मन रहियो, तेतीस कोड़ पार पहुंती साचे सतगुर को मंत्र कहियौ।इतिश्री वड़ी नुंवण।

25. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8, बस्ता नं. 1-14, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-263**
साखी संग्रह (37-84) इसमें वील्होजी की साखियां हैं। ग्रंथ-अपूर्ण, जीर्ण, खंडित है। पत्र-16, आकार 8.5%4 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-16, अक्षर प्रति पंक्ति 38-41, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श.
आदि-वनहेड़ा आयो, जी। काढ़े तेग गरदन वाई, सीस उतारि भुय थायो।4।
आपे खड़ीयो आपे खतरी, आपे आप सिझायो।
अंत-घर मिंदर माता पिता। भूवा भतीजा वीर।
तजि तीरथ नू नीसरी। सकल चुकायो सीर।6।
मतो करे मौमण मिल्या। पैंडै चल्या पुलाइ।

26. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8, बस्ता नं. 1-14, ह.लि. ग्रं. क्रमांक-272**
वील्हैजी के कवित-11 तथा अल्लूजी के कवित-3, पत्र-4, खंडित आकार 9%4 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-8, अक्षर प्रति पंक्ति-21-24, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श., लिपि-पाठ्य।
आदि-श्री विष्णुजी लिखते सवीया वील्हजी कहया का-1
अनंत वेर यो जीव भुंयो चौरासी भीतर।
आवावण फिरंत सहया संघट बहोली पर।
अंत- आनंद थयो मंन मांहर जीव तणो पायो जतन।
नारायण नाम मेलस नहीं अलु रंक हाथ पायो रतन-3

27. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8, बस्ता नं. 1-14, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-290**
नवण तथा वील्हजी के दो छप्पय, पत्र-1, जीर्ण, त्रुटित, कुल पंक्ति-23, अक्षर प्रति पंक्ति 20-22, लि.क. साध संकरदास, लि.का. 20 वीं श.
आदि-श्री विष्णुजी श्रीरामजी अथ नवणि लिख्यते।
विष्णु-विष्णु तूं भणि रे प्राणी।
अंत-आप सवारथ मनमुखि, कीया कुबधी पापड़ा।
वील्ह कहै भव सागरां, वह्यौ जंहि रे बापड़ा।2।

28. **जे.पी.ई.जी.नं. 7-8, बस्ता नं. 1-14, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-291**
साखी-2, केसोजी, वील्होजी, पत्र-1, खण्डित, कुल पंक्तियां-25, अक्षर प्रति पंक्ति-43-45, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श., लिपि- पाठ्य।
आदि- श्री विष्णुजी! वुचै वार कोडि सूं कीयो वैकुण्ठै वास।
अंत- वील्ह कहै गति सांभलौ, साधा तणां बषाण।17।
सुरग पोहोता सांसो गयो, मिट गई आवागोंण।18।

29. **जे.पी.ई.जी. नं. 3-4, ह.लि. ग्रं. क्र.-312**
कवित सवैए-23, वील्होजी-18, मधुसूदन-1, अज्ञात-2, ऊदोजी-3, मशीन के 6 पन्ने, आकार-8.25%5.25 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-10, अक्षर प्रति पंक्ति- 18-24, लि.क. अज्ञात, लि.का. 20 वीं श. लिपि. सुपाठ्य
आदि-अथ कवत ऊं विष्णूवे नमः ऊं। धर्म कीया सुख होय, लाछ लिछमी धन पावै।
अंत- उधव वै जन ऊधरै भव सागर भरमै नहीं।23।

30. **जे.पी.ई.जी. नं. 5-6, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-316**
वील्होजी के कवित-14, पत्र-1, जीर्ण, खंडित, आकार, 11.5%5.5 इंच, कुल पंक्तियां 31, अक्षर प्रति पंक्ति 48-50, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श., लिपि पाठ्य।
आदि-श्री विसनजी, कवत-धर्म कीयां सुख होय, लाछ लिछमी धन पाव।
अंत-भलो वखाण आपको, पराइ पुंणी कह।
वील्हा विरतो ना भलो, सण कीयौ दुणौ दह।14।

31. **जे.पी.ई.जी. नं. 5-6, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-330**
(ग) कथा जैसलमेर की-वील्होजी, छंद-149, इस ग्रंथ में (क) से (ड़) तक रचनाएं हैं। पत्र-13, आकार 10.75%5.5 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-9, अक्षर प्रति पंक्ति 26-28, लिपि. सुन्दर-सुपाठ्य, लि.क. श्रीमाली ब्राह्मण रावलदास, लि.का. संवत् 1936, मिंगसर सुद पंचमी ब्रहस्पतिवार, लि.स्था. डोली (जोधपुर) गांव, साध गंगाराम जी रा चेला मोतीराम (पठनार्थ)

आदि-श्री विसनजी सती सही लिखतु कथा लोहा पांगल की, राग हंसो।

दुहा-निरहारी पहली नऊं, उरि मेटो अपराध।

सिवरूं सिरजणहार नै, जिंह सिमरै सुर साध।1।

अंत-जन सुरजन की वीनती, अरज करुं लिव लाय।

पांच सातां नव बाहरां, इबके मोही मिलाय।201। इति ग्यान महात्म संपूरण।

32. जे.पी.ई.जी. नं. 5-6, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-348

उमाहो-वील्होजी (अपूर्ण) तथा कवित (गूगल मंत्र) तेजोजी, पत्र-1 खंडित, आकार-8.75%4 इंच, कुल पंक्तियां-13, अक्षर प्रति पंक्ति-28-30, लिपि सुपाठ्य, लि.क. साधु परसराम, लि.का. 19 वीं श.

आदि-मन रातो साम सूं गूदड़यो गुणां रो गहीर 16 निरधनीयां धनवाल हो, किरपण वाल्हो दाम। विखियां नै वाल्ही कांमणी, तेरा साध विसन के नाम।17। वील्होजी

अंत-कव तेज पयंपै जोड़ि कर आसा पूरण अभेमण।

भगवान भगत भो भंजबा महर पधारो महमाण (तेजोजी)

लिख्यते साध फरसराम।

33. जे.पी.ई.जी. नं. 5-6, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-349

ज्ञानचिरी-वील्होजी, छंद-129 (अपूर्ण) पत्र-4, आदि के 1-5, 9 वां पत्र नहीं है। आकार 9%4 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-10, अक्षर प्रति पंक्ति 28-29, लिपि सुपाठ्य, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श.

आदि-री कहै कर्द करारी धार मुख तैं बोले मारो मार।62।

तिल तिल कर सौ काटै पिंड काट कपट करे खंड कुखंड।

बाट बिहंच करै जूजवा तौऊ जीव न छूटै मूवा।63।

अंत-(सोरठा)-सत सूं धरम विचार, धरमा ऊपर भाव है।

दोन्यों पंथ संवार, मन मानै जिह जावह्।।129।।

इतिश्री ज्ञानचिरी संपूर्णम्।

34. जे.पी.ई.जी. नं. 5-6, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-399

वील्होजी के कवित-44, पत्र-5, जीर्ण, खंडित, आकार-9%4 इंच,

पंक्ति प्रति पृष्ठ-13, अक्षर प्रति पंक्ति-36-40, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श. लिपि सुपाठ्य।

आदि-श्री विष्णवे नमः लिखते कवत वील्हैजी का।

धर्म कीयां सुख होय लाछ लिछमी धन पावै।

धर्म उत्तम कुलि अवतरै जन्म दालद नहीं आवै।

अंत-आप सवारथ मनमुखी कीया कुबधी पापड़ा।

वील्ह कहै भव सागरां, बह्यौ जाहि रे बापड़ां।44।

इति श्री वील्हाजी का कवित संपूर्णम् समाप्तम्।21।

35. जे.पी.ई.जी. नं. 3-4 (4), ह.लि.ग्रं. क्रमांक-160

आदि वंशावली-अज्ञात, पत्र-2, आकार-9%4 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-13, अक्षर प्रति पंक्ति 36-40, लिपि-सुपाठ्य, लि.का. 19 वीं. श.

आदि-श्री विष्णवे नमः अथ आदि वंशावली लिख्यते, प्रथम आदि विष्णु।

अंत-मुकनैजी कै जगनाथजी, जगनाथजी कै कुसलोजी, कुसलोजी कै छबुजी, छबुजी कै दलोजी।

इसमें वील्होजी के सम्बन्ध में लिखा है-

सोळा सै ज्ञारोतरै, सुदी सात ऊर्ज मास।

नाथैजी को ज्ञान सुण विठळदास।।

36. जे.पी.ई.जी. नं. 3-4 (4) ह.लि.ग्रं. क्रमाक-168

आदि वंशावली-अज्ञात, पत्र-2, आकार 9%4 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-13, अक्षर प्रति पंक्ति 32-36, लिपि सुपाठ्य, लि.का. 20 वीं श.

आदि-अथ आदि वंशावली लिख्यते, प्रथम आदि विष्णु १, विष्णु के ब्रह्मा सुत २

अंत-अठारै सत निनाणवै वद पांचै मधु मास।

हरिकृष्णजी हरिसरण भयो समीपे वास।4।श्री।

37. जे.पी.ई.जी. नं. 3-4 (4) ह.लि.ग्रं. क्रमांक 170

गीत केसोजी एवं वंशावली (वील्होजी की परम्परा) पत्र-1, अपूर्ण, कुल पंक्तियां-19, अक्षर प्रति पंक्ति 22-30, लिपि सुपाठ्य, लि.क. अज्ञात, लि.का. 20 वीं श.

आदि-तिरथ वडो कीयो कल डीकम जन तारण जांभेसर जाइ।
अंत-ग्यानैजी का चेला अमरदास जी।।1।। फतोजी।2।।

38. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8, ह.लि.ग्रं. क्रमाक-244**
आदि वंशावली (आदि विष्णु से जाम्भोजी तक) पत्र-1, खण्डित आकार-9%4 इंच, कुल पंक्तियां-11, अक्षर प्रति पंक्ति-25-27 लिपि-पाठ्य, लि.क. अज्ञात, लि.का. 1878
आदि-श्री विष्णुजी प्रथम आदि वंसावली लिखत, प्रथम आदि विष्णु १, विष्णु को ब्रह्मा २
अंत-सेतराम रो रोलो 26, रोलै को लोहट 27, लोहट को श्री झांभोजी।

39. **जे.पी.ई.जी. नं. 7-8, ह.लि.ग्रं. क्रमांक-255**
पुन्न और लूर, पत्र-1, किनारे खंडित, आकार 9%4 इंच, कुल पंक्तियां-26, अक्षर प्रति पंक्ति-35-39, लि.क. अज्ञात, लि.का. 20 वीं श., इसमें (क) से (ड़) तक रचनाएं हैं। (ड़) प्रणाली (जाम्भोजी से लेकर) सांवतराम तक शिष्य परम्परा।
आदि-।।श्री विष्णु।। लिखतु पून्है पैतीस की। डूमै भादू की पु. वूडै खिलेरी की पु. 1
अंत-सुजाणजी का चेला कनीरामजी ११।२। कनीरामजी का चेला अजबोजी।१२।१। सांवतराम।२।

40. **जे.पी.ई.जी. नं. 3-4 (4) ह.लि.ग्रं.-304**
वंशावली-अज्ञात, पत्र-1, आकार 8.25%4 इंच, 22 पंक्तियां, अक्षर 26-30, लिपि सुपाठ्य, लि.क. साधु हरकिसन, लि.का. 19 वीं श. , इस पत्र में शंकर स्तुति, कवित-अज्ञात एवं नवण है।
आदि-श्री विष्णुजी।।कवित।। जटा जूट सिर गंग चंद्र सेखर चख हुत वह।।
अंत-तेतस कोड़ि वैकुठ पहुंता साच सतगुर का....कहियो।

41. **जे.पी.ई.जी. नं. 3-4 (4) ह.लि.ग्रं. 309**
वंशावली-अज्ञात, पत्र-1, खण्डित, आकार 4.25%4.5 इंच, कुल पंक्तियां-9, अक्षर प्रति पंक्ति 16-17, लिपि-पाठ्य, लि.क. अज्ञात, लि.का. 19 वीं श.

आदि-श्री विसनजी झांभैजी को चेलो रेड़ोजी १ रैडैजी को चेलो नाथोजी।
अंत-मनरूप जी का चेला सांवलजी पुरोजी।।श्री....।।

42. जम्भसार-साहबराम, पत्र-900, आकार-12%6 इंच, पंक्ति प्रति पृष्ठ-11, अक्षर प्रति पंक्ति-24-27, लिपि-सुपाठ्य, इसमें (क) से (ड़) तक अन्य रचनाएं हैं, जिनके पत्र-47 हैं। (च) में जम्भसार ग्रंथ है, जिसमें 24 प्रकरण और 2450 रूपक हैं। इसमें 24000 दोहे, चौपाई आदि विभिन्न छंद है। इसमें जाम्भोजी के सबद एवं प्रसंग भी हैं। इसमें विभिन्न जांभाणी कवियों की रचनाएं भी हैं जो साहिबरामजी से पूर्व हो चुके हैं। इसे साहिबरामजी ने संवत् 1908 में लिखना शुरू किया था और 1924 में पूर्ण किया था। इसमें वील्होजी सम्बन्धित वर्णन प्रकरण 21, 22, 23 में हैं। लि.का. संवत् 1947
आदि-।।6।। श्री प्रमात्मने नमः।। श्री गुरभ्यो नमः।। श्लोक।। प्रणंम्यं प्रभातंमानं।। प्रणंम्यं पुरुशोत्मं।। प्रणम्यं प्रं ब्रिह्म प्रणंम्यं परापरं।।1।।
अन्त-इति श्री जंभ शारेणै।।साध श्री साहबरामेणै।।वृरंचतेयां।। नीत धरम महात्म संजुक्तो नाम चत्रुवीयो प्रकणं संवत् 1947 रा मीती जेष्ठ सुदी 12 लिपिकृतं शारी शाहबरामेणै।
(यह मूल प्रति श्री धौंकलराम-विसनदत बिश्नोई (राहड़) गांव-दुतारांवाली-पंजाब में सुरक्षित हैं। साहबराम जी इनके पूर्वज थे। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई (लेखक) ने इस ग्रंथ को सन् 1992 में उनके घर जाकर देखा था।)

(3) वील्होजी और उनके साहित्य से सम्बन्धित प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ (व्यक्तिगत संग्रह)

1. प्रहलाद चरित्र–जनगोपाल, वि.सं. 1811, पत्र 25
2. पिंसण सिंघार–सेवादास P/O गिरधरदास, वि.सं. 1811, पत्र 137–146
3. सबदी (काजी महमूद के 15 पद) वि.सं. 1828, पत्र 3
4. अमावस की कथा (छंद 143) मयाराम, लि.का. 1851, पत्र 9
5. वील्हैजी का कवित– वील्होजी, लि.का. 1858, पत्र 5
6. कथा सुरगारोहिणी–लि.क. विसनदास, लि.का. 1871, पत्र 11
7. हरिकिसनदास जी रो पत्र (साधांरी वंशावली) वि.सं. 1873, पत्र 1
8. कथा अहदावणी (छंद 728) डेल्हजी, लि.क. नारायणदास P/O कान्हड़दास, लि.का. 1873, पत्र 36
9. पहलाद चरित–केसोजी, लि.क. कनीराम P/O रामदास, लि.का. 1882
10. सबदवाणी जाम्भैजी की (बिना प्रसंग) सं. 1889, पत्र 51
11. विविध फुटकर साखियां, लि.का. 1889, पत्र 1–21
12. सबदवाणी जाम्भैजी की, लि.क. केसोदास जी P/O रावल जी, लि.का. 1892, पत्र 14
13. जाम्भैजी विसन रो सिलोको (छंद 32) लि.क. भगवानदास, लि.का. 19 वीं श., पत्र 2
14. विविध हरजस (पद 111) लि.का. 19 वीं श., पत्र 28
15. सबदां रा प्रसंग (120)–लि.क. मनीराम साध, लि.का. 19 वीं श, पत्र 17
16. ज्ञान बारखड़ी–सुदामा, लि.का. 19 वीं श., पत्र 7
17. वील्होजी के कवित (24)–वील्होजी, लि.का. 19 वीं श., पत्र 5
18. विविध जांभाणी साखियां (35), 19 वीं श, पत्र 3–22
19. कवित और मंत्र–उदो, गद्द, वील्होजी आदि, 19 वीं श, पत्र 47
20. बिश्नोई धर्म के विविध मंत्र–19 वीं श, पत्र 13–26
21. जोगग्रंथ पिसण सिंघार–सेवादास P/O गिरधरदास, 19 वीं श, पत्र 48–62
22. कथा जाम्भोजाव, आरतियां, पाहळ–मंत्र आदि 19 वीं श., पत्र 10
23. कवि गद्द के पद (कवित, दोहे, पहेलियां, कुण्डलियां) 19 वीं श., पत्र 25
24. जांभाणी सुभाषित (संकलन ह.लि. ग्रन्थों से)

25. फुटकर हस्तलिखित पत्र (हरजस, भजन, गीत, हिण्डोलणा, कळश पूजा मंत्र, आरतियां दोहे आदि) 19–20 वीं श., पत्र 100
26. पहलाद चरित–केसोजी, वि.सं. 1907, पत्र 12
27. श्री पहलाद चरित, उधो, लि.क. भगवानदास, वि.सं. 1907, पत्र 29
28. रुक्मणी मंगल–पदम, लि.का. 1907, पत्र 110
29. सबदवाणी जाम्भैजी की (प्रसंग सहित), लि.क. साहबराम P/O गोविन्द राम, लि.का. 1910, पत्र 45
30. भगवद्गीता–टी. साहबराम P/O गोविन्दराम जी, लि.का. 1910 लि. स्था. गुडा मध्य, पत्र 91 (किसी बिश्नोई कवि की गीता पर राजस्थानी में एक मात्र टीका)
31. विविध जांभाणी कथा–काव्य–लि.क. श्रीराम मिश्र, लि.स्था. फतैपुर, लि.का. 1944, पत्र 36 (वील्होजी की कथा अनहरपात, कथा गुगलिये की, कथा पूल्हैजी की, कथा दूणपुर की, कथा जैसलमेर की, साधां री वंशावली आदि)
32. कक्का सैंतीसी–उधवदास, लि.क. नृसिंहदास P/O मोतीराम, लि.का. 1948, पत्र 14
33. ब्याहलो रुकमणी रो–पदम, लि.क. साध बिहारीदास, गांव–चारण वासणी, लि.का. 1952
34. साखियां–वील्ह बिश्नोई, 20 वीं श., पत्र 40
35. सुरजनजी रा हरजस (20) सुरजन जी, 20 वीं श., पत्र 3
36. विवाह पद्धति एवं साखी संग्रह (कुल 80 साखियां) 20 वीं श, पत्र 108
37. रुक्मणी मंगल–लि.क. स्वामी रामनारायणजी दादू–पंथी, लि.स्था. जोधपुर, 20 वीं श.
38. जाम्भैजी की सबदवाणी (12 सबद, गद्य प्रसंग सहित) लि.का. 20 वीं श. पत्र 106
39. पहलाद चरित–उधवदास, र.का. 1868 लि. क. मानदास दादू पंथी, लि. का. 20 वीं श.

(4) वील्होजी एवं उनके साहित्य का प्राचीन प्रकाशित पुस्तकों व पत्रिकाओं में उल्लेख (व्यक्तिगत संग्रह)

1. श्री जम्भसागर-टी. श्री ईश्वरानन्द गिरि, प्रका. मुंशी प्यारेलाल, हिन्दू प्रेस दिल्ली, वि.सं. 1949
2. जम्भ संहिता (धर्म बोधिनी टीका)-स्वामी ईश्वरानन्द गिरि, प्रका. पं. रामगोपाल, प्रयाग, वि.सं. 1955
3. शब्दवाणी अर्थात् जम्भसागर (151 शब्द)-स्वामी ईश्वरानन्द गिरि, प्रका. पं. रामगोपाल, प्रयाग, वि.सं. 1955
4. जम्भाष्टक प्रकाश-स्वामी ब्रह्मानन्द, प्रका. श्री रामदास जी, जम्भसरोवर धाम, संवत् 1968
5. जम्भदेव लघु चरित्र-सम्पा. श्री रामदास जी, जम्भसरोवर धाम, संवत् 1969
6. भजन चालीसा-छेदीलाल आत्मज देवीदयाल बिश्नोई, लाडवापुर, जिला-कानपुर, वि.सं. 1970
7. ⋆ श्री महर्षि स्वामी वील्हाजी का जीवन चरित्र-स्वामी ब्रह्मानन्द, प्रकाशक श्री रामदास जी, विष्णोई मंदिर गणेशगंज, कालपी, संवत् 1970
8. साखी संग्रह प्रकाश-संग्रा. व प्रका. स्वामी ब्रह्मानन्द जी, सं. 1971
9. बिश्नोई धर्म विवेक-स्वामी ब्रह्मानन्द जी, प्रका. श्री रामदास जी, कानपुर वि.सं. 1971
10. श्री स्वामी वील्हाजी कृत वाणी- संग्रा.व प्रका. श्रीरामदास जी, सं. 1975
11. ऊदोजी का कवित-मय वील्होजी (जम्भसार), संग्रा. व प्रका. रामदास जी, सं. 1978
12. श्री जम्भसार (1, 2) साहबराम जी राहड़, सं. 1978
13. ⋆ श्री स्वामी वील्हाजी का जीवन चरित्र (जम्भसार प्र. 23 वां) साहबराम जी राहड़, प्रका. श्रीरामदास जी, सं. 1978
14. ⋆ श्री स्वामी वील्हाजी कृत कक्का सैंतीसी, श्रीरामदास जी, प्र.सं. संवत् 1979 द्वि.सं. संवत् 2003
15. ⋆ श्री वील्हाजी कृत जम्भदेव जीवन चरित्र (जम्भसार प्र. 10 वां) प्रका. श्री रामदासजी, संवत् 1979, द्वि.सं. संवत् 2023
16. अखिल भारत वर्षीय विष्णोई महासभा, कानपुर के तृतीय अधिवेशन के

सभापति स्वामी ब्रह्मानन्द जी का भाषण, प्र. स्वामी ब्रह्मानन्द जी सं. 1981
17. श्री 108 श्री जम्भेश्वर धर्म दिवाकर-श्रीरामदासजी, सं. 1984
18. श्री जम्भसार प्रकरण 24 वां साहबराम जी कृत एवं साखी संग्रह, प्रका. श्रीरामदास जी, सं. 1985
19. श्री जम्भगीता, भाषा भाष्य, स्वामी सच्चिदानन्द, हरदा (होशंगाबाद) संवत् 1985
20. श्री जम्भदेव चरित्र भानु-स्वामी ब्रह्मानन्द, कांट, वि.सं. 1985
21. श्री स्वामी वील्होजी कृत रावण गोयंद का जीवन चरित्र, प्रका. श्रीरामदास जी, सं. 1986
22. शब्दवाणी जम्भसागर (गुटका) प्रका. श्रीरामदास जी, तृ. सं. संवत् 1992
23. ⋆ शब्दवाणी जम्भसागर-संशोधक-श्रीरामदास जी, प्रका. स्वामी ब्रह्मानन्द जी टीबा, जिला-फिरोजपुर, संवत् 1993
24. बिश्नोई नित्यकर्म विधि-बिश्नोई नत्थूराम, महमूदपुर माफी, डॉ. कांट, संवत् 1993
25. श्री जम्भेश धर्म दीपावली-संग्रा. श्रीरामदासजी, प्रका. स्वामी ब्रह्मानन्द जी, टीबा, (फिरोजपुर) सं. 1993
26. यज्ञ महिमा पदावली-सम्पा. रामलाल वर्मा, नोखामंडी (बीकानेर) सं. 1995
27. बिश्नोई धर्म वेदोक्त-श्रीमुंशी रामलाल, मुहम्मदपुर (बिजनौर) सं. 1996
28. श्री स्वामी वील्होजी कृत भजन दीपावली, संग्रा. व प्रका. श्रीरामदास जी, संत प्रेमदास जी बिश्नोई मंदिर कोलायत, संवत् 1997
29. भजन जम्भदेव चरित्र भानु-किशोरीलाल, प्रका. श्रीरामदासजी-प्रेमदास जी बीकानेर, वि.सं. 1998
30. श्री जम्भसार साखी संग्रह (तृतीय संस्करण), श्री रामदास जी, संवत् 2000
31. ⋆ श्री जाम्भाजी महाराज का जीवन चरित्र (महात्मा सुरजनदास जी रचित) श्री रामदास जी संवत् 2007
32. श्री विष्णु चरित्र (उधवजी अडीग) जगन्नाथ गेदर, नीमगांव वि.सं. 2007
33. बिश्नोई नित्य कर्म पद्धति-स्वामी जगदीशनन्द, साधूवाली (श्रीगंगानगर) वि.सं. 2009
34. जम्भसागर (शब्द निर्णय टीका समेत)-स्वामी रामानन्द गिरि, प्रका. बिश्नोई सभा, हिसार, सम्वत् 2011

35. श्री जम्भदेव आरती व साखी (हरजस उनतीस नियम), स्वामी शोभाराम जी-कृष्णराम जी, डोली कला, डॉ. धवा (जोधपुर) विक्रम संवत् 2013
36. राजू भजनावली, पं. राजूराम, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, श्रीगंगानगर (राज.)
37. श्री बिश्नोई जागरण महात्म्य-पद्यावली, सुखदेव अर्हत, प्रका. अर्जुन-भीयां गायणा, हंसाणिया (जोधपुर)
★ 38. ज्ञान भजन संग्रह (साखी, आरती, कीर्तन) स्वामी ज्ञानप्रकाश जी, श्री बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश, वि.सं. 2025
39. जाम्भाणी साखी संग्रह-स्वामी विवेकानन्द, जाम्भाणी साहित्य प्रकाशन बिलाड़ा (जोधपुर) वि.सं. 2035

पत्रिकाएं

1. शोध पत्रिका, वर्ष 18, अंक 1, सन् 1967, 'वील्होजी कृत कक्का सैंतीसी' पृष्ठ 57-65
2. अमर ज्योति- बिश्नोई सभा, हिसार, मई 1975, 'वील्होजी की साखी गुर तार बाबा'
3. संगोष्ठी वाणी, बिश्नोई धर्मशाला, रातानाडा (जोधपुर), जनवरी 1989, 'वील्होजी को शत् शत् नमन्'
4. जागती जोत (बीकानेर) वर्ष 21, अंक 2, मई-जुलाई 1992 में डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई का आलेख 'संत कवि वील्होजी अर वांरी वाणी' (कवि परिचय)
5. विश्वम्भरा-प्रका.-हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर, वर्ष 24, अंक 2 जुलाई-सितम्बर 1992, डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई का आलेख कवि वील्होजी विरचित 'सच अखरी विगतावली'
6. 24 से 26 मार्च 1993, जोधपुर में, राजस्थान का संत साहित्य, राष्ट्रीय संगोष्ठी में 'संत कवि वील्होजी और उनकी वाणी' पर डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई द्वारा पत्र वाचन।
7. अमर-ज्योति, बिश्नोई सभा हिसार, वर्ष 44, अंक 7, जुलाई 1993, डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई का आलेख 'कथा पूल्हैजी की (राग आसा) मूल एवं टीका'।

प्रथम ग्रंथ समर्पित : श्री केसोजी देहडू (लेखक के पूर्वज)

केसोजी देहडू गांव सळूंडिया, तहसील-नोखा, जिला-बीकानेर के निवासी थे। आप बिश्नोई धर्म के संस्थापक भगवान जाम्भोजी महाराज (वि. सं. 1508-1593) के समकालीन हजूरी-कवि थे और आयु में उनसे बड़े थे। इनका स्वर्गवास कवि तेजोजी चारण (वि.सं. 1500-1575) के बाद हुआ। अत: इनका समय अनुमानत: वि.सं. 1500-1590 रहा है।

वि.सं. 1542 में जब जाम्भोजी महाराज ने बिश्नोई धर्म की स्थापना की, तब ये पाहळ (दीक्षा) लेकर बिश्नोई बन गये। हीरानन्द विरचित 'हिंडोळणो' और 'जाम्भैजी रै भक्तां री भक्तमाळ' में भी कवि केसोजी का नाम शामिल है।

महलाणा गांव के देहडूओं के भाटों की बहियों से देहडू-वंशावली का पता चलता है। इसके अनुसार देहडू वंश का प्रारम्भ जाट जातीय दड़ियाजी से हुआ। इस वंशावली के अनुसार देहडू गौत्र के जाटों की उत्पति वि.सं. 1114 में भाटी राजपूतों से हुई। यह शाखा भटी क्षत्रियों के देहवड़ से निसृत है। जसहड़ एवं देहवड़ भाटियों में बहुत ख्याति प्राप्त व्यक्ति हुए हैं। भाटी यदुवंशी थे और इनकी नौ राजधानियां यथा-मथुरा, काशी, प्रागवड़, गजनी, भटनेर, दिगम, दिरावल, लोद्रवा तथा जैसलमेर रही है।

एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति के अनुसार जैसलमेर दुर्ग का निर्माण महारावल जैसल ने वि.सं. 1212 में करवाया था। भाटियों की राजधानी जैसलमेर में बहुत से गांव जाटों के थे। कहते हैं देहडू फलौदी तहसील के गांव चौखू के रहने वाले थे परन्तु बाद में किसी कारण से इनके वंशज नोखा के पास माथासुख (माधिया) गांव में आकर रहने लगे। कालान्तर में देहडूओं ने इस गांव को भी छोड़ दिया और सळूंडिया गांव में रहने लगे। यह गांव देहडूओं के मुखिया सळूंडाराम देहडू ने बसाया था। सळूंडिया अथवा सळूंडा गांव में आज भी देहडू एवं जाखड़ गोत्र के बिश्नोई रहते हैं। कहते हैं जाखड़ गोत्र में देहडूंओं की बहन ब्याही हुई थी, जिसके पति का स्वर्गवास हो गया था। उसके एक लड़का था जो अपने मामाओं के साथ ही रहता था। इस कारण जाखड़ गोत्र के बिश्नोई भी वहां रहने लगे थे।

केसोजी देहडू इसी सळूंडिया गांव में एक साधारण कृषक थे। वे जाम्भोजी के पास हमेशा संभराथल जाते थे और उनके आध्यात्मिक ज्ञान से आप बहुत प्रभावित हुए। जाम्भोजी के सबदों ने उन पर इतना गहरा प्रभाव डाला कि वे कालान्तर में पाहळ लेकर बिश्नोई धर्म में दीक्षित हो गये थे। उस समय भावावेश में आकर आपने 14 पंक्तियों की एक कणां की साखी कही,

जो राग सुहब में गाई जाती है। यह जम्मे की तीसरी साखी है, इससे इस साखी का महत्व स्वत: स्पष्ट है।

इस साखी में मनुष्य को जागरण में आने, सृजनकर्त्ता का जप करने, मन की बुरी प्रवृत्तियों को छोड़ने, अवसर को व्यर्थ न खोने और सतपंथ को पहचानने आदि का वर्णन किया गया है। आगे कवि की मूल साखी द्रष्टव्य है।

साखी कणां की (राग सुहब)

आवौ मिलौ जुमलै जुलौ, सिंवरौ सिरजणहार।।1।।
सतगुर सतपंथ चालव्यौ, खरतर खंडा धार।।2।।
झांभेसर जिभिया जपौ, भीतरि छोड़ि विकार।।3।।
संपति सिरजणहार की, विध सूं करो विचार।।4।।
अवसरि ढ़ील न कीजियै, वळै न लाभै वार।।5।।
जम राजा वांसै वहै, तलबी कियौ तियार।।6।।
चहरी वसत न चाखियै, उरि परहरि इहंकार।।7।।
वाड़े हुंता वीछड़या, जांरी सतगुरु करिसी सार।।8।।
सेरी सिंवरण प्राणियां, अंतरि वडो उधार।।9।।
पर नंद्या पापां सिरै, कांय भूलि उठावौ भार।।10।।
परळै होयस्यै पाप तां, मुरिख सहिस्यै मार।।11।।
पाछै ही पछतायसी, पापां तणी पहार।।12।।
औगणगारो आदमी, इळा रहै उरवार।।13।।
केसो कहै करणी करौ, पावो मोख दवार।।14।।

भावार्थ- 1. हे लोगों आओ, सभी सत्संग में बैठो और सृजनकर्त्ता विष्णु का स्मरण करो।

2. सत्गुरु (जाम्भोजी) ने यह सत्य का पंथ चलाया है, जिस पर चलना खांडे (तलवार) की धार पर चलने के समान है।

3. जम्भेश्वर भगवान का स्मरण करो और अपने अंदर जो विकार (काम, क्रोधादि) हैं, उन्हें छोड़ो।

4. यह बात आप भली प्रकार जान लें कि यह धन दौलत विष्णु भगवान की है।

5. आपको मनुष्य जन्म मिला है इस समय आप ढ़ील न करें और प्रभु का स्मरण करें।

6. यमराज वहां से आप को लेने चल पड़े हैं और वह तुरंत आपको तलब (लेखा-जोखा) करेंगे।

7. अखाद्य पदार्थो को न खाएं एवं अपने मन के अहंकार को छोड़ें।

8. जो व्यक्ति प्रभु शरण से दूर हो गये हैं उनकी भी सार प्रभु स्वयं लेंगे।

9. हे प्राणियों, प्रभु को नित्य स्मरण करो, तुम्हारे स्मरण से ही तुम्हारी मुक्ति होगी।

10. दूसरों की चुगली करना बड़ा पाप है, यह काम भूलवश भी नहीं करना चाहिये।

11. एक दिन ऐसे पाप कर्मो से ही तूं मृत्यु को प्राप्त होगा और ऐसे मूर्ख लोगों को यमदूतों की मार सहनी होगी।

12. हे प्राणी, तुझे पहाड़ जैसे इन पापों से बाद में पश्चाताप होगा।

13. ऐसे अवगुणों से भरा हुआ मनुष्य इस पृथ्वी पर भार है।

14. कवि केसोजी देहडू कहते हैं कि अपने कर्तव्य करो, इससे ही तुम्हें मुक्ति प्राप्त होगी।

संत कवि श्री केसोजी देहडू का वंश-वृक्ष

श्री केसारामजी-किशनारामजी-कानारामजी-कम्मारामजी-धन्नारामजी-कुसळारामजी- जैसारामजी-दूदारामजी-हिम्मतारामजी-रावतारामजी-बिशनारामजी-भागीरामजी

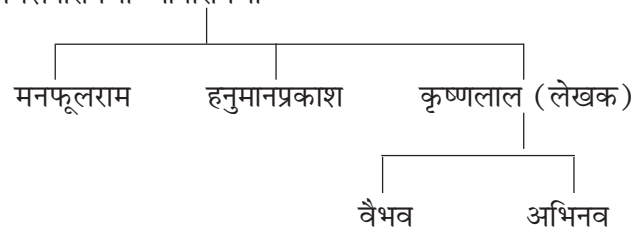

धूप-मन्त्र

जंभ गुरु जगदीस ईस नारायण स्वामी।
निरपेख क निरळेप घट अंतरजामी।।
पेट पूठ नहं ताहि सकळ कूं सनमुख दरसै।
पाप ताप तन जरै जाहि पद पंकज परसै।।
अखै अडोळ अनादि अज अवगत अलख अभेव।
स्वयं सरूपी आप है जंभ गुरु जग देव।।

वील्होजी की आरती

(स्व. हरभजजी लटियाल, वि.सं. 1965-2024, जसरासर)

जय वील्ह सन्त देवा, स्वामी जय वील्ह संत देवा।
दोऊं कर जोड़े विनऊं, संतन की सेवा।।टेक।।
सुरपति साथ सुरां सूं, मिलकै अैसी अग्या करी।
हरि विष्णु ध्रंम ऊबारण, वील्हजी देह धरी।1।
जब-जब हानि होय ध्रम की, अवनी अर्ज करै।
विष्णु का दीपक लेकर, ग्यान का तेल भरै।2।
एक समै महाराज संत मिल द्वारापुरी धाया।
संत समागम करते लालासर आया।3।
गहकर चरण परस संतों के, नाथोजी ग्यान दियो।
गुरु मंत्र सुध लेकर, वील्होजी शिष्य भयो।4।
पूर्व पंथड़ा छोड़ संतजन, ग्यान खड़ग लीन्हां।
सोलह सौ से रूद्र साल का, पंथ काढ़ लीन्हां।5।
मरुधीस मरुधरा बीच में वील्होजी ग्यान दीयो।
जगत सुधारण कारण वील्हाजी हुकम लीयो।6।
रामड़ास सुभ धाम नगर में, पहुंचै तपधारी।
मन इंच्छा फल पावै, पूजै नर नारी।7।
संवत् सोलह सौ साल तिहोतर, चैत सुदी लीन्हां।
सुकलाम्बर इग्यारस, सुरगवास कीन्हां।8।
ऊंचा दुरग दीखै परबत ज्यूं, मंदिर है भारी।
झिग-मिग जोत इंद्रपुरी रामड़ास भारी।9।
संभराथळ के पास पूर्व दिस जसरासर बासी।
हरिभज हरख भया है मुक्ति फल पासी।10।
वील्हजी महाराज की आरती जो कोई नर-नारी गावै।
नर संपति अरु नारी पुत्र फल पावै।11।

वील्होजी विरचित कथा ज्ञानचरी प्रथम पत्र

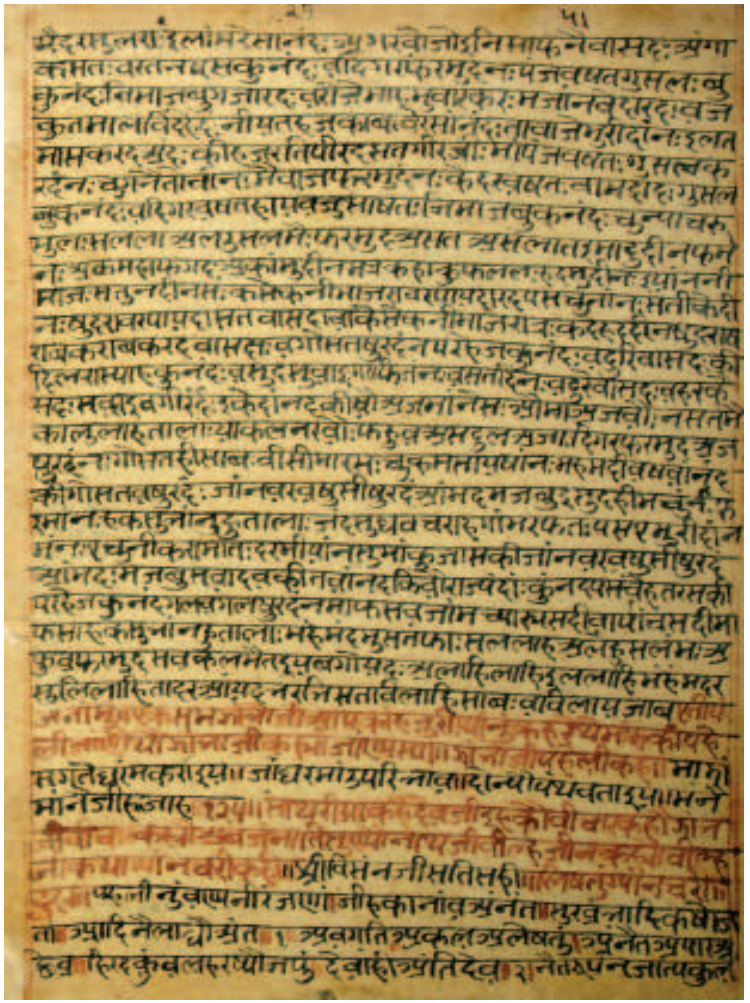

परमानन्द जी का पोथा पत्र सं.-41

वील्होजी विरचित कथा ज्ञानचरी अंतिम पत्र

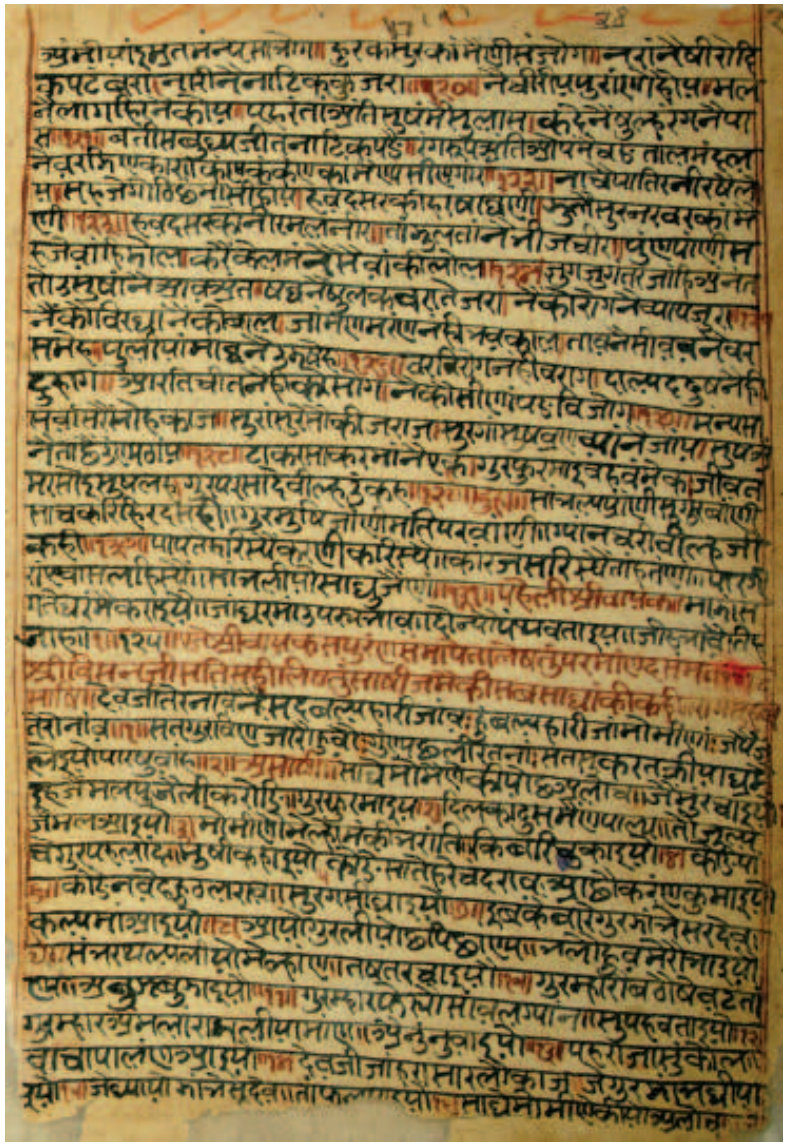

परमानन्द जी का पोथा पत्र सं.-47

वील्होजी विरचित कथा झोरड़ा की प्रथम पत्र

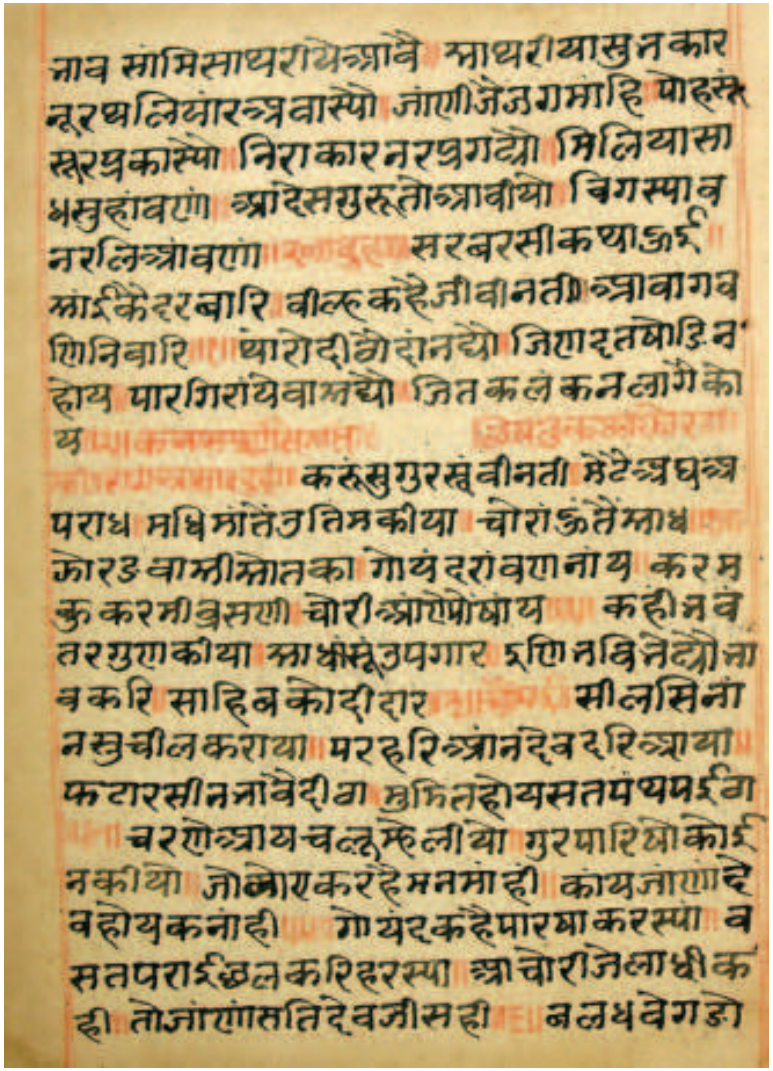

हस्तलिखित ग्रंथ क्रमांक 81 (च), पत्र सं. 49

वील्होजी विरचित कथा झोरड़ा की अंतिम पत्र

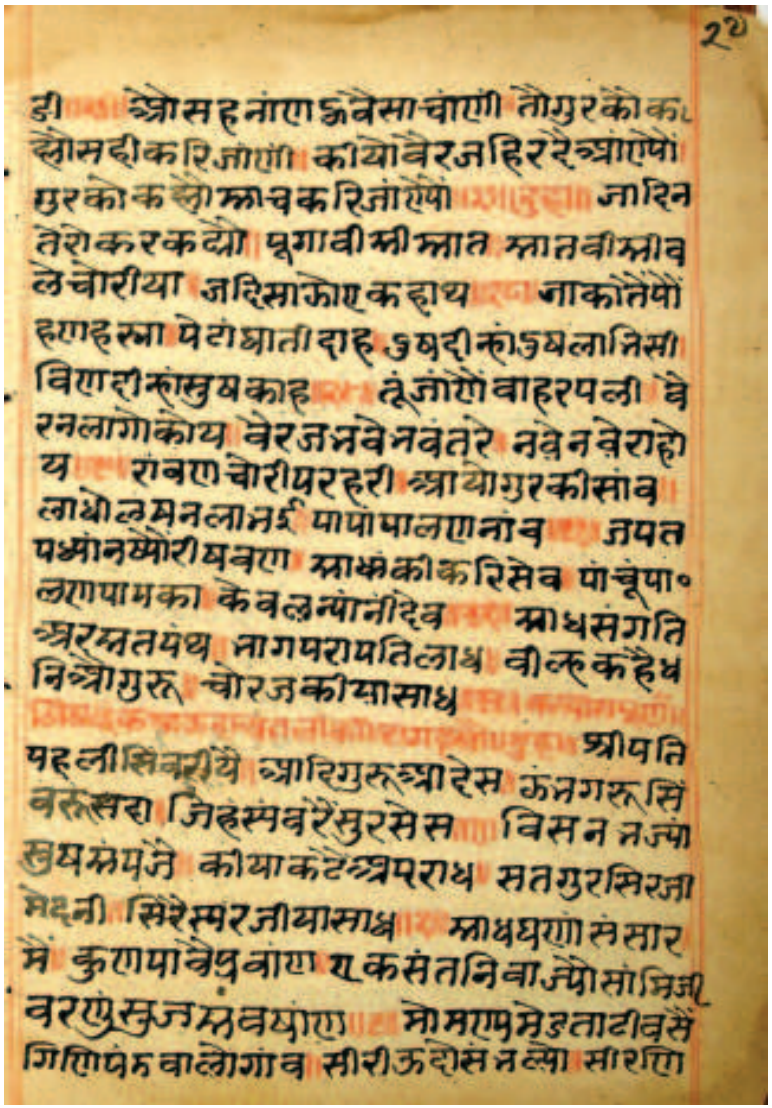

हस्तलिखित ग्रंथ क्रमांक 81 (च), पत्र सं. 52